

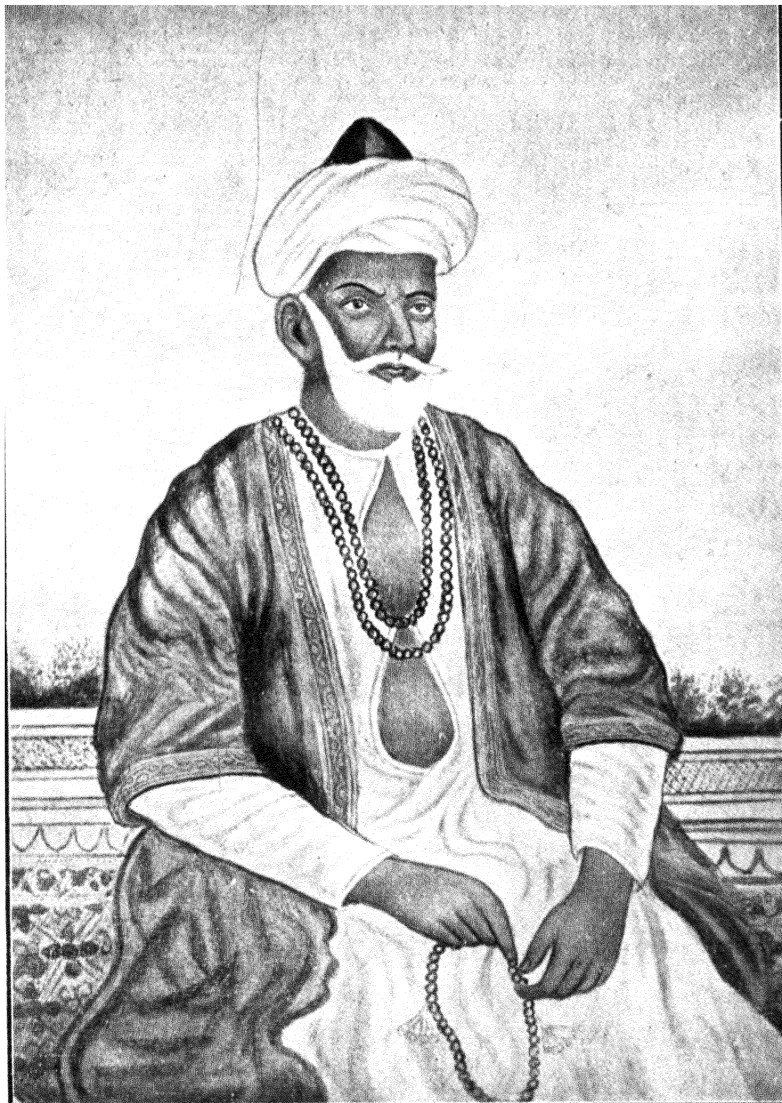
**THE BOOK WAS
DRENCHED**

**TEXT FLY WITHIN
THE BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182679

UNIVERSAL
LIBRARY



तानसेन

(काशी के स्वर्गीय चिन्तामणि वापुलि महाशय जी के संग्रहों में से प्राप्त,।)

ध्रुपद्-स्वरलिपि

प्रथम भाग



श्रीहरिनारायण मुखोपाध्याय



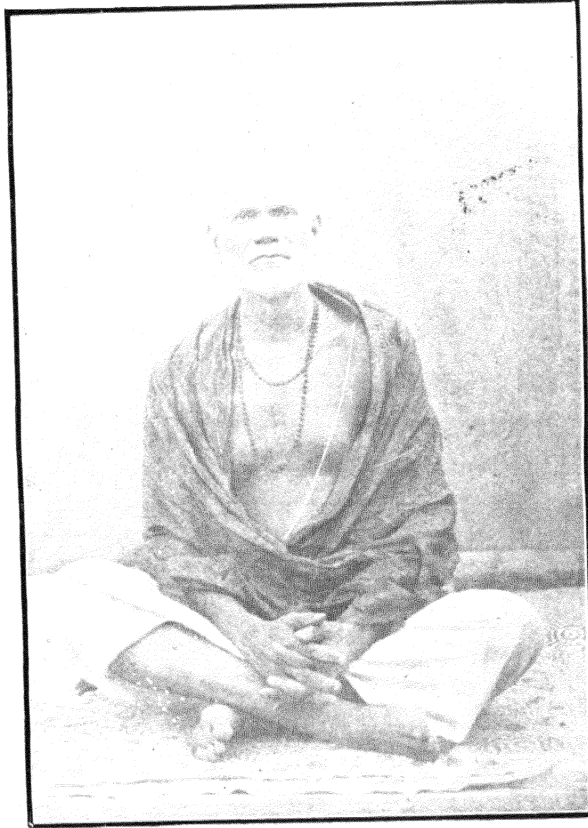
प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९२८

सर्वोदय साहित्य मन्दिर
हुसैनीअलम रोड, हैदराबाद (दक्षिण).

Printed and published by K. Mitra, at the Indian Press, Ltd., Allahabad.



श्रीहरिनारायण मुखोपाध्याय ।

भूमिका

“गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवमहेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

ध्रुपद-स्वरलिपि का प्रथम भाग निकालना पड़ा। मुझे अभी तक स्वरलिपि-प्रथा में कोई विश्वास नहीं है क्योंकि न मैंने स्वयं इस प्रथा से सीखा था और न किसी को सीखते देखा। गुरु के सम्मुख बैठ कर उनके उपदेशों के अनुसार कठोर परिश्रम करने से तब रागों के स्वरूप दिखाई पड़ते हैं और अपने स्वर व गीत की अशुद्धियाँ ठीक हो सकती हैं। प्रथम शिष्यार्थी के लिये तो स्वरलिपि है ही नहीं। कोई भी राग हो और शिष्यार्थी कितना ही जानता क्यों न हो नये राग को सीखने के लिये उसको गुरु के पास जाना ही पड़ेगा, न कि स्वरलिपि के पास। हाँ, अच्छी तरह सीख लेने के बाद भविष्यत् स्मरण के लिये कोई एक नियम मानकर गीत को लिपिवद्ध कर लेना प्रयोजनीय है और इसके लिए, शास्त्रों में भी नियम दिये हुए हैं। इन्हीं शास्त्रानुमोदित नियमों के अनुसार और अनेक मित्रों के विशेष अनुरोध से कोई १६० ध्रुपदों के स्वरलिपि इस ग्रन्थ में प्रकाशित किये गये हैं।

मेरे पास और भी कुछ ऐसे ध्रुपद हैं जो नये और अप्रचलित हैं। अवसर मिले और साधारण की इच्छा होगी तो उनको एक दूसरे भाग में निकालूँगा।

सूचना में शिष्यार्थी के लिये आवश्यक बातें संक्षेप से दी गई हैं। पाठक कृपया स्मरण रखें कि मैं साहित्यिक व लेख-व्यवसायी नहीं हूँ, इसलिए ऐसी पुस्तक मैं अशुद्धियों का गूह जाना कुछ अस्वाभाविक नहीं है। पाठक यदि कृपा करके अशुद्धियों को मेरे गोचर करेंगे तो मैं कृतज्ञ हूँगा।

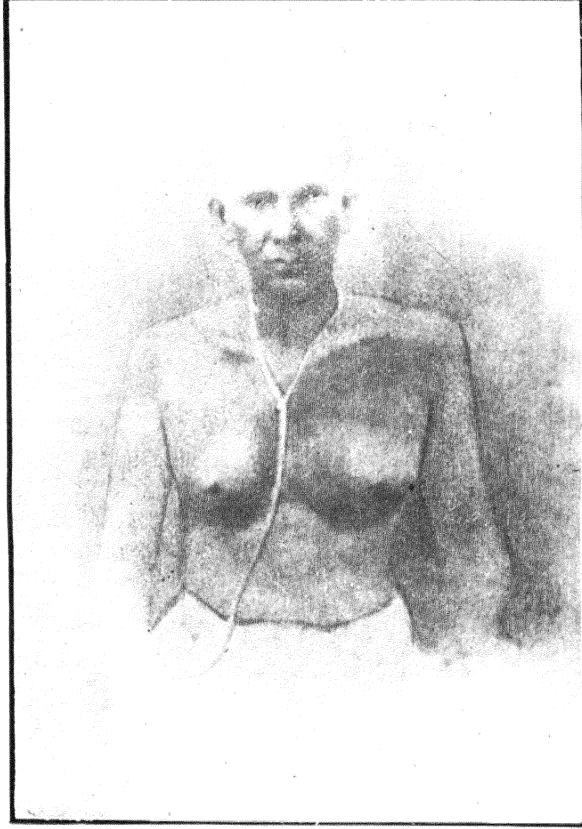
बड़े यत्न, परिश्रम व अर्थव्यय से इंडियन प्रेस ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया है इसलिए मैं उनको आन्तरिक कृतज्ञता व आशीर्वाद ज्ञापन करता हूँ।

प्रयाग
अप्रैल १९२६ }

श्रीहरिनारायण मुखोपाध्याय

सूचीपत्र

विषय	५०
सूचना—(१) नाद ...	१॥
(२) श्रुति व स्वर ...	२॥
(३) मूर्च्छना ...	३॥
(४) स्वर-प्रस्तार अथवा तान ...	४॥
(५) मूर्च्छनालंकार व वर्णालंकार ...	५॥
(६) राग ...	६॥
(७) वादी, विवादी और संवादी स्वर ...	७॥
(८) ताल व काल ...	८॥
(९) शिक्षार्थियों के लिये उपदेश ...	९॥
(१०) रागों के भेद ...	१०॥
स्वरलिपियों के संकेत । ...	११॥
तालों के संकेत । ...	१२॥
स्वरलिपि—(१) भैरव व भैरवांग राग ...	१
(२) हिरडोल व हिरडोलांग राग ...	२६
(३) मालकोष व अंगीभूत राग ...	७५
(४) पंचम व अंगीभूत राग ...	६६
(५) श्री व अंगीभूत राग ...	१२५
(६) मेघ व अंगीभूत राग ...	१५१
(७) विविध राग व रागमाला ...	१७५
शुद्धिपत्र ...	२०७



स्वर्गीय रामदास गोस्वामी ।

सूचना ।

(१) नाद

संगीत का आदि अथवा मूल ग्रन्थ वेद है परन्तु उसके अनुसार आज-कल कोई भी शिष्या प्राप्त नहीं करता । जिस प्रकार सृष्टि का प्रसार अणु व परमाणु के संयोग से पंचभूतादि से हुआ है उसी प्रकार संगीत भी आदि शब्द के प्रसार से हुआ है यह कोई असंभव विश्वास नहीं है । “आदि नाद प्रणव रूप”—सुरतसेन के इस गान से मालूम होता है कि प्रणवध्वनि सारे जगत् में व्याप्त है और इसी प्रणवध्वनि के प्रसार से छः स्वर उत्पन्न हुए हैं । ईश्वर का कोई रूप नहीं है परन्तु वह सर्व प्रकार के रूप में विराजमान है । इसी लिए मानव-स्वर के उच्चारण के विचार से मान लिया गया है कि ईश्वर के शीर्ष, नेत्र, मुख, कण्ठ, नाभि और गुह्य से क्रमानुसार ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद ये छः स्वर उत्पन्न हुए और हिंडोल, दीपक, भैरव, मालकोष, श्री और मेघ ये छः राग उत्पन्न हुए ।

प्रणव शब्द पहले तीन भाग में विभक्त होकर पुनः तीन और भागों में विभक्त हुआ है । सुरतसेन के ऊपर लिखे हुए गान में जो “त्रिविध गुणनिधान” उक्ति है उससे विदित होता है कि ओड़व, षाड़व और सम्पूर्ण यही तीन आदि राग हैं । इन्हीं ओड़व, षाड़व और सम्पूर्ण की प्रतिकृति से मालकोष, मेघ और भैरव रागों की सृष्टि हुई और इन तीनों के प्रसार से हिंडोल, दीपक और श्रीरागों की उत्पत्ति हुई । तथा इन्हीं मूल रागों से क्रमशः बहुत से रागों का विस्तार हुआ है ।

ब्रह्मा के मतानुसार महादेवजी के सद्योजात मुख से श्रीराग, वामदेव मुख से वसन्त, अघोर मुख से भैरव, तत्पुरुष मुख से पंचम, ईशान मुख से मेघ, और गिरिजा मुख से नटनारायण रागों की उत्पत्ति हुई और निषाद, गान्धार, मध्यम, धैवत, ऋषभ और पंचम स्वर के द्वारा क्रमशः शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, शरद्, वर्षा और हेमन्त ऋतु के नाट्यारम्भ में गीत आरम्भ हुआ था अर्थात् शिव-पार्वती ने एक साथ नृत्य करते करते इन रागों को गाया था । किसी किसी का मत है कि भैरव राग प्रथम राग है । इसी आशय का एक गीत है—“प्रथम गाइए सद्योजात मुख सों” । राजबहादुर नाम के किसी भक्त ने भैरवी की रागमाला में “पंचवदन पंचराग सर्वप्रथम उक्ति कीन्हि” यह कहा है और यह भी कहा है कि इसी से क्रमशः भैरव, मालकोष, हिंडोल, मेघ और श्रीराग उत्पन्न हुए हैं । इससे मालूम होता है कि सबका यही मत है कि महादेवजी के पंचमुख से पाँच रागों की सृष्टि हुई है । परन्तु किस मुख से किस राग की उत्पत्ति हुई है इस विषय में जो मतभेद देखा जाता है उसकी मीमांसा का कोई उपाय अब नहीं दिखाई देता । भरत का मत यह है कि महादेव और पार्वती के मुख से भैरव, श्री, मेघ, दीपक, हिण्डोल और मालकोष ये छः राग उत्पन्न हुए हैं । वे कहते हैं कि अघोर (दक्षिण) मुख से भैरव, तत्पुरुष (पश्चिम) मुख से श्री, सद्योजात (आकाश) मुख से मेघ, वामदेव (पूर्व) मुख से दीपक,

ईशान (उत्तर) मुख से हिंडोल और पार्वतीजी के मुख से मालकोष राग की सृष्टि हुई है। ये छः राग छः स्वर से अर्थात् मध्यम, निषाद, धैवत, गांधार, ऋषभ और पंचम स्वरों से गाये गये थे। केवल यही नहीं वरन् छः राग छःओं ऋतुओं में गाने की विधि है और इसके परिणाम-स्वरूप वर्षा (मेघ का), अग्नि (दीपक का) इत्यादि भिन्न-भिन्न प्राकृतिक क्रियाओं की उत्पत्ति होती है, लोगों का यही विश्वास है।

बैजूबावरे के “प्रथम आदि शिवशक्ति नाद परमेश्वर”—इस गीत से भी मालूम होता है कि महादेव और पार्वतीजी का गीत ही आर्य संगीत का आदि अथवा मूल है।

महादेव जी के पंचमुख से पाँच स्वर और पार्वतीजी के मुख से छठे स्वर के द्वारा जो छः राग गाये गये उनका मूल वा आदि कारण प्रणव ही है और यह प्रणवध्वनि सारे विश्व में व्याप्त है। शिव पार्वती के मुख से निःसृत छःओं स्वरों की समष्टि इस विश्वव्याप्त स्वर में मिलकर षड्ज नाम से प्रसिद्ध हुई है। और यही प्रथम अथवा आदि स्वर है। आत्मतत्त्वदर्शी सुधी इसी को अनाहतेत्पन्न प्रणवध्वनि अथवा षड्ज स्वर कहते हैं। इसी षड्ज से ऋषभ आदि स्वरों की सृष्टि हुई है और वे इसी में मिले हैं। इसीलिए इसका नाम षड्ज है। शास्त्र में इसको मयूरध्वनि कहा है। बैजू बावरा ने जो “षड्ज सुर मेह” गीत बनाया है उसमें मेंह शब्द से वृष्टि का शब्द ही समझा जाता है।

नादविन्दु-उपनिषद् में प्रणव को चार मात्राओं में विभक्त करके उसकी हर एक मात्रा का एक एक अधिष्ठाता देवता मान लिया गया है। जैसे अकार का देवता अग्नि, उकार का देवता वायु, मकार का देवता सूर्य और नाद विन्दु का देवता वरुण। फिर इनमें से हर मात्रा को तीन तीन भागों में विभक्त करके कुल १२ खंड-मात्राओं में विभक्त किया गया है। इसी प्रकार खंड-मात्राओं को लेकर प्रणव १२ भागों में विभक्त हुआ है। यथा—

अ	उ	म	
अग्नि	वायु	सूर्य	वरुण
घोषिणी	घायुवेगिनी	वैष्णवी	ध्रुवा
चिन्त्युन्माली	नामधेया	शांकरी	मौनी
पतंगो	ऐन्द्रो	महती	ब्राह्मा

जब यह प्रणव शरीरस्थ बाह्याकाश (ether) में आहत होकर अपना रूप गोपन करके ध्वनि का रूप धारण करता है तब वह ध्वनि संगीत का मूल धातु स्वर माना जाता है। प्रत्येक सप्तक में ५ तीव्र ५ कोमल और २ अच्युत स्वर अर्थात् १२ स्वरांश अथवा भाग रहने के कारण उपनिषद् में लिखे हुए प्रणव के १२ अंशों के साथ बहुत सुन्दर सामञ्जस्य दिखाई पड़ता है।

प्राचीन ग्रन्थों का देखने से प्रतीत होता है कि सबसे पहले केवल ३ ही राग अर्थात् ओड़व, षाड़व और सम्पूर्ण गाये जाते थे। ओड़व राग में मालकोष (स गा मा धा ना) षाड़व राग में मेघ (स र मा प ध ना) और सम्पूर्ण राग में भैरव (स रा ग मा प धा न) प्रचलित थे। हिंडोल राग मालकोष राग का व्यत्यय मात्र है। अर्थात् हिंडोल राग में जितने स्वर प्रयोग किये जाते हैं वे

तीव्र हैं परन्तु मालकोप में वे सब कोमल हैं । श्री और भैरव राग में मध्यम स्वर का भेद है अर्थात् भैरव में कोमल मध्यम और श्री राग में तीव्र मध्यम का प्रयोग होता है । दीपक राग प्रचलित नहीं है । परन्तु इसके रूप के सम्बन्ध में हम कुछ अनुमान कर सकते हैं । जिस प्रकार एक ही प्रस्तार के अर्थात् ओड़व प्रस्तार के कोमल और तीव्र से दो राग मालकोप और हिंडोल बने हैं और सम्पूर्ण प्रस्तार में मध्यम के भेद से भैरव और श्री, उसी प्रकार पाड़व प्रस्तार में मेघ और दीपक का होना कुछ असम्भव नहीं है । यदि दीपक राग प्रचलित होता तो यह बात ठीक ठीक समझ में आती । सर्वसाधारण से प्रार्थना है कि इस विषय पर ठीक ठीक विचार करें ।

षट् चक्रादि विषय पर विचार करने से देखा जाता है कि प्रथम चक्र के दो अंगुल ऊपर और द्वितीय चक्र के दो अंगुल नीचे एक अंगुल के बराबर अग्रशिखावत् एक चक्र है जिसके ८ अंगुल ऊपर एक वर्गाकार स्थान है जिसकी हर एक भुजा ४ अंगुल है । इसी को नाभिकन्दर*अथवा ब्रह्मग्रन्थि कहते हैं । शेष चक्र मस्तिष्क के नीचे और मुखगद्दर के ऊपर के स्थान में स्थित है । इसको ब्रह्मतालु कहते हैं । बाकी चक्र शरीर के विभिन्न स्थानों में स्थित हैं । शरीर में बहुत सी नाड़ियाँ हैं जिनमें इड़ा, सुषुम्ना, और पिंगला प्रधान हैं और इनमें भी सुषुम्ना सर्वप्रधान है, क्योंकि प्राणवायु सुषुम्ना के आश्रय से ब्रह्मग्रन्थि से ब्रह्मतालु तक चढ़ती और उतरती है । जिस प्रकार मकड़ी अपने जाले का विस्तार करके उसके बीच में रहती है, निकल नहीं सकती उसी प्रकार जीव मनुष्यशरीर में जन्ममृत्यु-रूप जाले में फँसकर आता जाता रहता है, बाहर निकल नहीं सकता । इस भव-बन्धन (यम-जाल) से मुक्त होने के लिए नाना प्रकार की उपासना है और उनमें नादोपासना एक मुख्य है । अनाहत नादोपासना (प्राणायाम क्रियादि योग) कठिन और नीरस होने के कारण लोगों का पसन्द नहीं होती । आहत नादोपासना (संगीत क्रियादि योग) मनोरंजक और भवभयभंजक और सुखदायक समझी जाती है । नादोपासना करने से ब्रह्मा, विष्णु और महेश की उपासना होती है और इसके द्वारा चारों फल प्राप्त होते हैं । जिस प्रकार सुषुम्ना-प्राण-वायु न रहने से इड़ा-पिंगला का कार्य नहीं हो सकता उसी प्रकार षड्ज न रहने से मध्यम, पंचम आदि स्वरों का व्यवहार नहीं हो सकता । इसलिए षड्ज का निश्चय करना और उससे छः स्वरों का ज्ञान और अभ्यास करना सबसे अधिक आवश्यक है । इन्हीं ७ स्वरों के आधार पर मूर्च्छना आदि विषयों की सृष्टि हुई है । रचना-कौशल के द्वारा इसको सजाने से और इसमें पदों की योजना करके कण्ठ से गान और वाद्ययन्त्रों से वादन करने से संगीत होता है । नृत्य भी इसका एक अंग है । शिव-पार्वती ने पहले नृत्य करते करते स्वर और राग की सृष्टि की और संगीत किया यह पहले ही कहा जा चुका है । आज-कल योगनृत्य प्रायः लुप्त हो गया है । इसी को नादोपासना कहते हैं । प्राचीन गीतों से प्रतीत होता है कि इसका प्रयोग आरम्भ में भगवान् की आरा-

धना में ही और सात्विक भाव से होता था। धीरे धीरे इसका रूप परिवर्तित हो गया है और ख्याल, टप्पा, ठुमरी, गज़ल आदि उत्पन्न हुए हैं। वह भी एक प्रकार की नादोपासना कही जा सकती है परन्तु इसमें राजसिक और तामसिक भाव ही अधिक दिखाई पड़ते हैं। मूल अथवा आदि ग्रन्थ आज-कल कोई भी नहीं मिलता और जो कुछ मिलता है वह भी भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न टीकाकारों के बनाये हुए हैं। परन्तु सबके सब नाद ही को आदि मानकर शिवशक्ति के संयोग से संगीत की उत्पत्ति स्वीकार करते हैं।

(२) श्रुति व स्वर

नाद से श्रुति और श्रुति से स्वर की उत्पत्ति हुई है। अणु-परमाणुओं की जिस समष्टि से आकाश बना है उसके कम्पन से नाद की उत्पत्ति हुई है। एकाधिक नाद के प्रकम्पन से अनुरणन होता है और चूँकि एकाधिक अनुरणन सुना जा सकता है इसलिए उसे श्रुति कहते हैं। कई श्रुतियों की समष्टि को स्वर कहते हैं। सब स्वरों को यंत्र अथवा कंठ के द्वारा प्रकाश करना असम्भव है इसलिए उन स्वरों को जिनका व्यवहार सहज है संगीत का आदि अथवा मूल स्वर मानते हैं। ये ७ हैं, यथा—षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद। इनकी संज्ञा क्रमशः **स र ग म प ध और न** हैं। गाने के समय **र** और **न** को **रि** और **नि** उच्चारण करते हैं। इन सातों स्वरों के किसी दो के बीच में जिन नादों का अनुरणन होता है अर्थात् एक स्वर से द्वितीय स्वर तक उच्चारण करने में जो आंशिक स्वर कंठ अथवा यंत्र में निहित रहते हैं वे भी संगीत-शास्त्र में श्रुति कहलाते हैं। ये आंशिक स्वर (पर्याय) गाने के समय स्पष्टरूप से यद्यपि प्रकाशित नहीं होते परन्तु जिन लोगों का संगीत में विशेष ज्ञान है, उनके कानों में और वाद्य-यंत्रों में (वीणा आदि में) प्रतीत होते हैं।

संगीतरत्नाकर ग्रन्थ में लिखा है—“रंजयति यस्मात् श्रोतृचित्तं तस्मात् सस्वरः इति निरुक्तिः।” अपि च “स्वयं हि राजते यस्मात् तस्मात् स्वर इति स्मृतः।” इससे मालूम होता है कि स्वर में स्निग्धत्व गुण न रहने से अनुरणनहीन प्रतीत होता है और उससे रंजकक्रिया नहीं हो सकती। श्रुति अथवा अनुरणनयुक्त स्वर के व्यवहार करने से स्निग्ध अथवा मधुर भाव उत्पन्न होता है। किसी किसी संगीत-ग्रन्थ में लिखा है कि नासिका, कंठ, हृदय, तालु, जिह्वा और दंत इन ६ स्थानों से नाभिस्थ वायु आहत होकर उच्चारित होता है इसलिए इसको षड्ज कहते हैं। नाभि से वायु उत्थित होकर कंठ और शीर्ष में आहत होकर ऋषभ की सी ध्वनि पैदा होती है इसलिए उसे ऋषभ कहते हैं। इसी प्रकार और और स्वरों की उत्पत्ति के विषय में जो बातें इन ग्रन्थों में लिखी हैं उनसे हम लोगों का कोई काम नहीं निकलता। कदाचित् योगियों का इन बातों से अपने साधन में सहायता मिल सकती होगी। स्वरों के नाम के विषय में गुरु के पास हम लोगों की जो शिक्षा प्राप्त हुई है वह यह है—सप्त स्वर के पहले स्वर से बाकी छः स्वर क्रमशः निकलते हैं इसीलिए उसको षड्ज कहते हैं। सप्तस्वर के

प्रथमार्द्ध **स र ग मा** इन चार स्वरों में द्वितीय स्वर उसी प्रकार बलवान् है जैसे कि गाभीदल में वृषभ । इसी लिए सोपानक आर्य ऋषियों ने उसका नाम ऋषभ रक्खा है । षड्ज स्वर में तृतीय स्वर का स्वरूप स्वयं प्रकाशित अथवा भङ्कृत होता है इसलिए उसे गान्धार (भङ्कार अथवा गङ्कार) कहते हैं । सप्त-स्वर के बीच के अर्थात् मध्यम और पंचम स्थान के स्वरों को मध्यम और पंचम कहते हैं । प्रथमार्द्ध में जैसा ऋषभ वैसा ही द्वितीयार्द्ध, **प ध न स**, में धैवत स्वर बलवान् है । षड्ज के अनुवर्त्ती सातों स्वरों के शेष स्वर को निषाद कहते हैं । सप्त स्वरों का अर्थ चाहे कुछ भी हो संगीत-क्रिया में उनका प्रयोग ठीक ठीक होना चाहिए । चाहे जिस विधि से चलें अपना लक्ष्य स्थिर रख के साधना करने से उद्देश्य सिद्ध हो सकता है । यही गुरुमुखी शिक्ता का प्रथम सोपान है । **शिष्यों को चाहिए कि गुरु के समीप बैठ कर स्वर साधना करें ।** ऐसा करने से धीरे धीरे स्वर का ठीक ठीक बोध हो जायगा । प्राचीन गुरुओं से सुना है कि एक ही स्वर का एक हजार बार साधना करने से उसका स्वरूप मालूम होता है । और इसी प्रकार किसी एक गीत का एक हजार बार साधना करने से उस राग की मूर्ति अथवा छाया दिखाई देती है । आज-कल इस प्रकार की साधना किसी का रुचती नहीं । हारमोनियम की सहायता से स्वर की शिक्ता और साधना करते हुए आज-कल लोग दिखाई पड़ते हैं । सातों स्वरों के बीच में जितने अनुरणन होते हैं उनका संगीत-शास्त्र में यद्यपि श्रुति कहते हैं परन्तु उनमें जिनको कंठ अथवा यंत्र में स्थापित कर सकते हैं संगीत के आचार्यों ने उनके भिन्न-भिन्न नाम रक्खे हैं । **स** और **प** को अचल अथवा (Standard) कहते हैं और **र ग म ध** और **न** इनमें से हर एक के चार चार पर्याय मान लिये हैं, यथा अति कोमल, कोमल, तीव्र और अतितीव्र । इससे यही मालूम होता है कि हमारे संगीत-शास्त्र में सब मिलाकर २२ श्रुतियों का व्यवहार किया जाता है । कोई कोई कहते हैं कि अति कोमल और अतितीव्र स्वर हां नहीं सकता । परन्तु मैंने मुसलमान तंत्र-कारों से यह स्वर सुना है और कुछ सीखा है । वे कहते हैं कि हमने हनुमन्त-मत के अनुसार इन स्वरों की शिक्ता पाई है । पारिजात ग्रन्थकर्त्ता पंडित अहोबल शास्त्री ने भी अनेक स्थान पर हनुमन्त-मत के अनुसार इन स्वरों को लिपिबद्ध किया है । इस ग्रन्थ में लिखा है कि “पूर्वकोमलतीव्रश्च तथा तीव्रतरेण च । अतितीव्रतमेनैव सर्वे रागा उदीरिताः ।” प्राचीन हिन्दुस्तानी नियम के अनुसार स्वर-स्थापना इसी प्रकार होती है ।

बाईसों स्वरों का व्यवहार करना कठिन है इसलिए लोग १२ स्वरों का व्यवहार करते हैं । यथा—षड्ज, (अचल), ऋषभ कोमल और तीव्र, गान्धार कोमल और तीव्र, मध्यम कोमल और तीव्र, पंचम (अचल), धैवत कोमल और तीव्र, निषाद कोमल और तीव्र । परन्तु इन सबका मूल सप्त-स्वर हैं । और इन सातों स्वरों के प्रस्तार से रागरूप अथवा राग-रंग प्रकट करने का कौशल देखा जाता है । संगीत-शास्त्र में ऐसे कौशल अनेक प्रकार के हैं परन्तु उनमें से मूर्च्छना, तान और अलंकार यही तीन प्रधान हैं । ये पृथक् होते हुए भी तुल्यार्थबोधक हैं । मूर्च्छना के माने हैं संचेप करना और तान का विस्तार करना । तान और मूर्च्छना से अलंकार बनता है । ये सबके सब स्वर के काम हैं ।

शिक्षार्थी को पहले पहल इन्हीं तीन विषयों का साधन करना कर्त्तव्य है। इनमें से चाहे जिसको वे अभ्यास कर सकते हैं परन्तु सबसे पहले स्वर अर्थात् षड्ज का निश्चय करना उनका कर्त्तव्य है। उसके बाद साधना के द्वारा और और विषयों की ओर बढ़ना चाहिए।

(३) मूर्च्छना*

पहले षड्ज के निश्चय होने से ऋषभ आदि छत्रों स्वरों का क्रमोच्चारण (उच्च भाव से) स्वभावतः प्रतीत होता है और इसी को “आरोहण” कहते हैं। इसके विपरीत क्रम को (निम्नभाव से) “अवरोहण” कहते हैं। शिक्षार्थी का कर्त्तव्य है कि इन स्वरों की शिक्षा व अभ्यास किसी तंत्रकार अथवा गायक के समीप करें, न कि अन्य किसी उपाय से। आरोहावरोह-क्रमयुक्त सप्तस्वर को मूर्च्छना कहते हैं। प्रायः संगीत पुस्तकों में “स र ग म प ध न स—स न ध प म ग र स” इस क्रम को मूर्च्छना कहा गया है परन्तु वास्तव में यह केवल सप्तस्वरों का आरोहण और सप्तस्वरों का अवरोहण ही है, न कि आरोहावरोह—क्रमयुक्त—सप्तस्वर। सप्तस्वरों का आरोहांश म प ध न और अवरोहांश म ग र स है। मध्यम स्वर दोनों अंशों में होने के कारण उसको एक ही बार रखने से और दोनों अंशों को एकत्र करने से सप्तस्वर स र ग म प ध न होता है और आरोहावरोह-क्रमयुक्त भी होता है। केवल यही नहीं परन्तु इस प्रकार से मूर्च्छना का साधन करने से निम्न और उच्च ‘मन्द्रतार’ सप्तकों का ठीक ठीक बोध व ज्ञान होता है अर्थात् आरोहणांश (म प ध न) में स र ग मिला देने से उच्च सप्तक और अवरोहणांश (म ग र स) में नं धं पं मिला देने से निम्नसप्तक का बोध होता है। इसी प्रकार मूर्च्छना के विचार ही से वीणादि यंत्रों की सृष्टि हुई है। पहले त्रितंत्री का व्यवहार था फिर धीरे-धीरे बहुतंत्रीयुक्त यंत्रों का व्यवहार होने लगा। अब देखते हैं कि संगीत में भी भाव का परिवर्तन और यथेच्छाचार आ गया है।†

*इसके सम्बन्ध में संगीतरत्नाकर ग्रन्थ की मतंग और भरत की टीकाओंको देखने से यथार्थ ज्ञान होगा।
पूनानिवासी पं० अन्नापुरुषोत्तम धारपुरेजी का भी यही मत है।

आरोहावरोहन क्रमेण स्वरसप्तकम् ।
मूर्च्छना शब्दवाच्यं हि विज्ञेयं तादृचक्षणैः ॥

—संगीतपारिजात

†प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न प्रकार के वीणादि यंत्रों की सहायता से संगीत होता था। और ध्रुपद को छोड़कर और किसी प्रकार का गाना रुचिविरुद्ध समझा जाता था। धीरे-धीरे सितार, एससार इत्यादि का व्यवहार और ख्याल, टप्पा, ठुमरी, गज़ल, इत्यादि गाना का प्रचार हो गया। केवल ध्रुपद का सम्मान दिखाने के लिए ख्याल, टप्पा गान के पहले थोड़ी-सी आलाप और दो एक ध्रुपद का स्थायी गाते हैं। कोई अच्छे सितारी हों तो सितार ही के आलाप से राग का विस्तार दिखाते हैं। परन्तु उनका वीणाकार नहीं कह सकते। वीणा का काम और ही प्रकार का है और इसी लिए वीणाकारों को तंत्रकार कहते हैं। तंत्रकार आलाप ध्रुपद ख्याल, टप्पा आदि सब प्रकार की शिक्षा दे सकते हैं। परन्तु आज-कल कुछ विपरीत ही नियम दिखलाई देता है अर्थात् जो सितारी हैं

मूर्च्छना के अभ्यास करने से मीड़ का ज्ञान होता है। कंठ में एक स्वर को अव्यक्त रखकर उसके परवर्त्ती अथवा पूर्ववर्त्ती स्वर के उच्चारण को मीड़ कहते हैं। तार के यंत्र में इसको आकर्षणान्तर आघात और आघातान्तर आकर्षण कहते हैं। जैसे प म ग अथवा प ग के उच्चारण करने के लिए पंचम स्वर कंठ में अव्यक्त रहता है फिर ग व्यक्त होता है अथवा तार के यंत्र में गान्धार के स्थान पर आकर्षण करके पंचम स्वर को निकाल कर गान्धार में स्थित और गान्धार स्थान पर आघात करके पंचम स्वर तक आकर्षण करना। इसी को अनुलोम (आघातान्तर आकर्षण) और विलोम (आकर्षणान्तर आघात) कहते हैं।

मूर्च्छना कुल ६३ हैं और उनमें प्रधान ७ हैं। चित्र क देखिए।

चित्र क—मूर्च्छना

- १—स र ग म स नं धं पं स र ग स नं धं स र स नं
 २—र ग म प र स नं धं र ग म र स नं र ग र स
 ३—ग म प ध ग र स नं ग म प ग र स ग म ग र
 ४—म प ध न म ग र स म प ध म ग र म प म ग
 ५—प ध न स प म ग र प ध न प म ग प ध प म
 ६—ध न स र ध प म ग ध न स ध प म ध न ध प
 ७—न स र ग न ध प म न स र न ध प न स न ध
 १—स र ग म नं धं पं मं स र ग नं धं पं स र नं धं
 २—र ग म प स नं धं पं र ग म स नं धं र ग स नं
 ३—ग म प ध र स नं धं ग म प र स नं ग म र स
 ४—म प ध न ग र स नं म प ध ग र स म प ग र
 ५—प ध न स म ग र स प ध न म ग र प ध म ग
 ६—ध न स र प म ग र ध न स प म ग ध न प म
 ७—न स र ग ध प म ग न स र ध प म न स ध प

वे अपने को ध्रुपदी कहते हैं और ध्रुपद की शिखा भी देते हैं। सुनने में आता है कि बनारस के स्वर्गीय महेश-चन्द्र सरकार महाश जी की वीणा को सुनकर प्रसिद्ध वीणाकार बन्दे अलीखान ने उसको “सितार की तालीम” कहा था। महेश बाबू ने नामी सितारी वा. पेयीजी के पास वीणावादन सीखा था। फिर खां साहबों से उपदेश लेकर वीणा का हाथ तैयार किया था। अमीर खुसरो, अदरंग, सदारंग, आदि गुणी ख्याली थे और सितार बजाते थे। इन्होंने ध्रुपद की भी रचना की है परन्तु वे ध्रुपदी नहीं हो सके थे। इनके रचित ध्रुपद में और उनके पहले के ध्रुपद में बहुत भेद दिखाई पड़ता है।

पं धं नं स र ग म—षड्ज मूर्च्छना—मं पं धं नं स र ग म—षड्ज मूर्च्छना
 धं नं स र ग म प—ऋषभ मूर्च्छना—पं धं नं स र ग म प—ऋषभ मूर्च्छना
 नं स र ग म प ध—गांधार मूर्च्छना—धं नं स र ग म प ध—गांधार मूर्च्छना
 स र ग म प ध न—मध्यम मूर्च्छना—नं स र ग म प ध न—मध्यम मूर्च्छना
 र ग म प ध न स—पंचम मूर्च्छना—स र ग म प ध न स—पंचम मूर्च्छना
 ग म प ध न स र—धैवत मूर्च्छना—र ग म प ध न स र—धैवत मूर्च्छना
 म प ध न स र ग—निषाद मूर्च्छना—ग म प ध न स र ग—निषाद मूर्च्छना

इन मूर्च्छनाओं को एक साथ लिखने से पं धं नं स र ग म प ध न स र ग अथवा मं पं धं नं स र ग म प ध न स र ग होता है। इन स्थानों का व्यवहार वीणादि यंत्रों में मेरु अथवा सारिका के द्वारा होता है। जिन यंत्रों में परदा नहीं है उनमें इन स्थानों का विशेष विचार यदि वादक चित्त में रखें तो सहज ही में सब स्वरों को निकाल सकेंगे।

ऊपर लिखी हुई मूर्च्छनाओं में से हर एक के और ८ प्रस्तार नीचे दिये जाते हैं। इनकी साधना अच्छी तरह करनी चाहिए।

- | | |
|---|---|
| १ स र ग म स नं धं पं र ग म स नं धं र ग स नं | ५ स र ग म स नं धं पं स र ग नं धं पं स र धं पं |
| २ स र ग म स नं धं पं र ग म स नं धं ग म स नं | ६ स र ग म स नं धं पं स र ग नं धं पं स र नं धं |
| ३ स र ग म स नं धं पं र ग म नं धं पं ग म धं पं | ७ स र ग म स नं धं पं र ग म नं धं पं र ग नं धं |
| ४ स र ग म स नं धं पं र ग म नं धं पं र ग धं पं | ८ स र ग म स नं धं पं र ग म नं धं पं ग म नं धं |

षड्ज का एक मूर्च्छना पहले दे चुके हैं इसलिए इन आठों को लेकर ६ मूर्च्छनाएँ हुईं, इसी प्रकार बाकी ६ स्वरों में से हर एक की ६ मूर्च्छनाएँ शिष्यार्थी स्वयं बनाकर कुल ६३ मूर्च्छनाओं का अभ्यास कर सकते हैं।

षड्ज ग्राम मूर्च्छना

उत्तर मन्द्रा स र ग म प ध न
 रजनी नं स र ग म प ध
 उत्तरायता धं नं स र ग म प
 शुद्ध षड्जा पं धं नं स र ग म
 मत्सरी कृता मं पं धं नं स र ग
 अश्वक्रान्ता गं मं पं धं नं स र
 अभिरुद्रता रं गं मं पं धं नं स

मध्यम ग्राम मूर्च्छना

सौवीरी म प ध न स र ग
 हरिणाशवा ग म प ध न स र
 कलोपनता र ग म प ध न स
 शुद्ध मध्या स र ग म प ध न
 मार्गी नं स र ग म प ध
 पौरवी धं नं स र ग म प
 हृष्यका पं धं नं स र ग म

षड्ज ग्राम और मध्यम ग्राम के अन्तर्गत जो मूर्च्छनायें संगीतशास्त्र में दिखाई देती हैं उनमें षड्ज ग्राम में केवल २ स्थान (मध्य और मन्द्र) पाये जाते हैं और मध्यम ग्राम में भी दो स्थान (मध्य और तार) पाये जाते हैं । यह भी देखा जाता है कि षड्ज ग्राम के प्रथम चार मूर्च्छना और मध्यम ग्राम के शेष चार मूर्च्छना एक ही हैं । मूर्च्छनाप्रस्तार में ३ स्थानों का व्यवहार होना उचित* है । मन्द्र और तार सम्पूर्ण व्यवहार किये जायँ तो अच्छा ही है नहीं तो कम से कम हर एक में ३-४ स्वरों का रहना आवश्यक है । ग्रामों में षड्ज ग्राम ही मुख्य है । और आरोहण अवरोहण क्रमयुक्त सप्तस्वर का मूर्च्छना कहते हैं । इस प्रकार सप्तस्वर के विस्तार द्वारा ऊपर दिखाये हुए सप्त मूर्च्छना और शास्त्रोक्त मध्यम मूर्च्छना एक ही हैं केवल विपरीत भाव के हैं अर्थात् उल्लिखित षड्ज मूर्च्छना मध्यम ग्राम की हृष्यका मूर्च्छना है । किसी किसी ने एक आठवाँ स्वर अर्थात् अन्य स्थान के प्रथम स्वर का भी प्रयोग किया है । क्योंकि इससे कुछ सहायता मिलती है । ये सब बातें साधन-काल में काम में आती हैं ।

सप्तस्वर के आरोहण और सप्तस्वर के अवरोहण के क्रम का मूर्च्छना-प्रस्तार कहते हैं । इसका शुद्ध व मिश्र दो भाग हैं और फिर शुद्ध के ३ और मिश्र के ८ भाग होते हैं । और ये ही रागों के मूल अथवा हेतु हैं । चाहे कोई भी राग गाया या बजाया जाय उसका परिचय इन १२ प्रस्तारों में किसी न किसी में पाया जायगा ।

१ शुद्ध ओड़व १५	} कामल मिलाने से बहुत होते हैं ।	७ मिश्र षाड़वौड़व ८०
२ शुद्ध षाड़व ६		८ " षाड़वषाड़व ३०
३ शुद्ध सम्पूर्ण १; कामल मिलाने से ३१		९ " षाड़व सम्पूर्ण ६
४ मिश्र ओड़वौड़व २१०		१० " सम्पूर्णौड़व १५
५ " ओड़व षाड़व ८०		११ " सम्पूर्ण षाड़व ६
६ मिश्र ओड़व सम्पूर्ण १५		१२ " सम्पूर्ण १; कामल मिलाने से ३२

विस्तारित विवरण के लिए चित्र ख देखिए ।

चित्र ख । मूर्च्छना प्रस्तार अथवा राग-हेतु

शुद्ध			मिश्र		
१	२	३	४	५	६
ओड़व	षाड़व	सम्पूर्ण	ओड़वौड़व	षाड़वौड़व	सम्पूर्णौड़व
१५	६	१	२१०	८०	१५

*मध्यसप्तकेन मूर्च्छना निर्देशकार्यो मन्द्रतार सिद्ध-
र्थ (भरतटीका)

†मध्यम स्वरेण वैणवेन मूर्च्छना निर्देशः (संगीतरत्ना-
कर की मतङ्ग टीका ।)

सरगमप	सरगमपध	सरगमपधन	ओड़व षाड़व	षाड़व षाड़व	सम्पूर्ण षाड़व
सरगमध	सरगमपन		८०	३०	६
सरगमन	सरगपधन		ओड़व सम्पूर्ण	षाड़व सम्पूर्ण	सम्पूर्ण
सरगपध	सरमपधन		१५	६	६
सरगपन	सगमपधन				
सरगधन	सरगमधन				
सरमपध					
सरमपन					
सरमधन					
सरपधन					
सगमपध					
सगमपन					
सगमधन					
सगपधन					
समपधन					

१—१५ ओड़व मेंनों में पहला, तीसरा, छठा, दसवाँ और पन्द्रहवाँ मेल के विचार करने से देखा जाता है कि लगातार दो स्वर वर्जित होने के कारण बहुत-सी श्रुतियों का अभाव होता है और इस अवस्था में राग बनाने से कर्ण कटु हो जाता है। कदाचित् मिश्र रागों में इनका व्यवहार में लाने से कर्ण प्रिय हो सकते हैं बाकी दस ओड़व रागों में कुछ प्रचलित हैं जैसे चौथा (भूपाल, विभाव,) पाँचवाँ (हंसध्वनि) आठवाँ (सारंग) नवाँ (पुलिन्दिका) बारहवाँ (मालश्री) ग्याहवाँ (हिंडोल, मालकाष)

२—तीसरा (देशकार) छठा (पुरिया, मारुवा, सोहिनी) चौथा (गौड़, मेघ)

३—देखिए रागमंला

मिश्र रागों में बहुत हो सकते हैं उनमें से कुछ प्रचलित हैं।

जैसे—

ओड़व षाड़व	स र मा प न	ना ध प मा र स	(सुरट)
ओड़व सम्पूर्ण	स र मा प न	ना ध प मा ग र स	(देश)
ओड़व सम्पूर्ण	स र मा प ना	ना धा प मा गा रा स	(आसावरी)
षाड़व सम्पूर्ण	स र ग म प न	न ध प म ग र स	(श्याम)
ओड़व सम्पूर्ण	स ग मा प न	न ध प मा ग र स	(बेहाग)

ओड़व सम्पूर्ण.....स गा मा प ना.....ना ध प मा गा र स (भीम पलश्री)
 ओड़व सम्पूर्ण.....स गा म प न.....न धा प म गा र स (मुलतान)
 इत्यादि

इस प्रकार के और कुछ रागमेला में दिवाये गये हैं ।

ओड़वौड़व (२१०)

आरोही	अवरोही	इसी प्रकार से आरोही और अवरोही में क्रमशः
१ स र ग म प	ध म ग र स	स्वरां के अदल बदल से १५ × १४ अर्थात् २१०
२	न म ग र स	प्रस्तार बन सकते हैं ।
३	ध प ग र स	
४	न प ग र स	ओड़व षाड़व—इसी प्रकार यदि हम आरोह में ५
५	न ध ग र स	और अवरोह में ६ स्वरां का क्रम से
६	ध प म र स	रक्खें तो देखेंगे कि ओड़व षाड़व के
७	न प म र स	कुल ६० प्रस्तार हो सकते हैं ।
८	न ध भ र स	ओड़वसम्पूर्ण—इसके १५ प्रस्तार हो सकते हैं ।
९	न ध प र स	षाड़वौड़व—इसके ६० प्रस्तार हो सकते हैं ।
१०	ध प म ग स	षाड़व षाड़व—इसके ३० प्रस्तार हो सकते हैं ।
११	न प म ग स	षाड़व सम्पूर्ण—इसके ६ प्रस्तार हो सकते हैं ।
१२	न ध म ग म	सम्पूर्णौड़व—इसके १५ प्रस्तार हो सकते हैं ।
१३	न ध प ग स	सम्पूर्ण षाड़व—इसके ६ प्रस्तार होते हैं ।
१४	न ध प म स	मिश्र सम्पूर्ण—१ प्रस्तार, कामल मिलाने से ३२ । नीचं देखिए ।

शुद्ध रागमेला

(आरोह और अवरोह दोनों समान)

संख्या

१ स र ग म प ध न	कल्याण	५ स र ग म प धा न
२ स रा ग म प ध न	त्रिवन बरारी	६ स र ग म प ध ना
३ स र गा म प ध न		७ स रा गा म प ध न
४ स र ग मा प ध न	बेलावल, अलाहिया	८ स रा ग मा प ध न जयन्ती

• ६ स रा ग म प धा न श्री, पुरवी, धानश्री	२१ स रा ग मा प ध ना
१० स रा ग म प ध ना	२२ स रा ग म प धा ना
११ स र गा मा प ध न	२३ स र गा मा प धा न
१२ स र गा म प धा न	२४ स र गा मा प ध ना काफो, वागेश्री
१३ स र गा म प ध ना	२५ स र गा म प धा ना
१४ स र ग मा प धा न	२६ स र ग मा प धा ना
१५ स र ग मा प ध ना क्रिष्ण	२७ स रा गा मा प धा न
१६ स र ग म प धा ना	२८ स रा गा मा प ध ना
१७ स रा गा मा प ध न	२९ स रा गा म प धा ना बहादुरी टोड़ी
१८ स रा गा म प धा न दरबारी टोड़ी	३० स रा ग मा प धा ना जोगिया
१९ स रा गा म प ध ना	३१ स र गा मा प धा ना दरबारी कानड़ा
२० स रा ग मा प धा न भैरव, गमकंलि	३२ स रा गा मा प धा ना भैरवी

रागमेला मिश्र—आरोह और अवरोह में भिन्न-भिन्न

१ स रा र ग म प ध न	
२ स र गा ग म प ध न	
३ स र ग मा म प ध न	कंदारा, हम्बीर
४ स र ग म प धा ध न	
५ स र ग म प ध ना न	
६ स रा र गा ग म प ध न	
७ स रा र ग मा म प ध न	
८ स रा र ग म प धा ध न	
९ स रा र ग म प ध ना न	
१० स र गा ग मा म प ध न	
११ स र गा ग म प धा ध न	
१२ स र गा ग म प ध ना न खम्बाजी कानड़ा	
१३ स र ग मा म प धा ध न	
१४ स र ग मा म प ध ना न	
१५ स र ग म प धा ध ना न	
१६ स रा र गा ग मा म प ध न	

- १७ स रा र गा ग म प धा ध न
 १८ स रा र गा ग म प ध ना न
 १९ स रा र ग मा म प धा ध न
 २० स रा र ग मा म प ध ना न
 २१ स रा र ग म प धा ध ना न
 २२ स र गा ग मा म प धा ध न
 २३ स र गा ग मा म प ध ना न
 २४ स र गा ग म प धा ध ना न
 २५ स र ग मा म प धा ध ना न
 २६ स रा र गा ग मा म प धा ध न
 २७ स रा र गा ग मा म प ध ना न
 २८ स रा र गा ग म प धा ध ना न
 २९ स रा र ग मा म प धा ध ना न
 ३० स र गा ग मा म प धा ध ना न
 ३१ स रा र गा ग मा म प धा ध ना न

पंचम, जय जयन्ती

रागसागर

दृष्टान्त-स्वरूप दो चार रागों के ठाठ नीचे दिये गये हैं—

शुद्धौड़व

मा न हीन, भूपाली स र ग प ध	विभाष स रा ग प धा
र प हीन, हिंडोल स ग म ध न	मालकांष स गा मा धा ना
र ध हीन, मालश्री स ग म प न	पलश्री स गा मा प ना
ग न हीन, सामन्त स र मा प ध	गुणकली स रा मा प धा
म ध हीन, हंसध्वनि स र गा प ना	दुर्गा स र ग प न
र न हीन, नागध्वनि स गा मा प धा	
ग प हीन, पुलिन्दिका स र मा ध ना	
ग ध हीन, सारङ्ग स र मा प न	

शुद्ध षाड़व

र हीन, टंक स गा म प ध ना
 ग हीन, मेघ स र मा प ध ना—इस ठाट में गौड़ भी गाते हैं
 म हीन, देशकार स र ग प ध न

धवलश्री स रा ग प धा न
 प हीन, ललित स रा ग मा म धा न
 पुरिया, मारूवा स रा ग म धा न, स रा ग म ध न
 सोहिनी स रा ग मा ध न
 ध हीन, तिलक स र ग मा प न
 कुमारी स रा ग म प न
 न हीन, मेघनाद स र ग मा प ध
 मालवी स र गा मा प धा

पूना निवासी अन्ना साहब ने टङ्क, जेतक, कुमारी, मेघनाद, और मालवी राग मुझे सुनाया था। परन्तु समयभाव के कारण मैं भली भाँति सीख नहीं पाया।

शुद्ध सम्पूर्ण कुल ३१ हैं। उनमें से प्रथम तीव्र स र ग म प ध न यह शुद्ध कल्याण का ठाट है और शेष कोमल स रा गा मा प धा ना यह भैरवी का ठाट है। रा गा मा धा और ना इन पाँचों के योग से पाँच मेल होते हैं। उनमें से दो का नाम मुझे मालूम है। मा के योग से बेलावल और ना के योग से हरशृङ्गार। दो कोमल के योग से १० मेल होते हैं। उनमें रा धा से श्री, पुरवी और धनाश्री और मा ना से भिभिष्ट हुआ है। तीन कोमल के योग से ६ मेल होते हैं। उनमें रा गा धा से विलासखानी टोड़ी; गा मा ना से सिन्धु, वागश्री; रा मा धा से भैरव, रामकली, गौरी हुए हैं। चार कोमल के योग से ५ मेल होते हैं जिनमें रा गा धा ना से बहादुरी टोड़ी; रा मा धा ना से जांगिया (योगिया) गा मा धा ना से दरवारी कानड़ा हुए हैं। शुद्ध सम्पूर्ण रागों के यही ३१ मेल होते हैं। और इन्हीं सम्पूर्णों को षाड़व अथवा ओड़व कर सकते हैं। जैसा कल्याण मेल (स र ग म प ध न) से र प गिरा देने से हिंडोल राग का ठाट (स ग म ध न) होता है; र ध गिरा देने से मालश्री का ठाट (स ग म प न), म न गिरा देने से भूपाली का ठाट (स र ग प ध) होते हैं। भैरव मेल (स रा ग मा प धा न) में से म न निकाल देने से विभाष राग का ठाट होता है। भैरवी मेल (स रा गा मा प धा ना) में से र प निकाल देने से माल-कोष राग का ठाट बन जाता है। इसी प्रकार ग गिरा देने से गौड़, मेघ; प निकाल देने से मारूवा, ललित, पुरिया हो जाते हैं। मिश्र मेल से भी बहुत से रागों का विस्तार हो सकता है। और इसी प्रकार प्रस्तार के द्वारा दिन और रात के रागों का भेद माना गया है।

स र ग मा प ध न (यमन बेलावल) दिन का कल्याण
 स र ग म प ध न (शुद्ध कल्याण) रात का कल्याण
 स रा ग मा प धा न (दिन का) भैरव
 स रा ग म प धा न (सन्ध्या की) श्री

स र गा मा प ध ना (सिन्धु) (दिन का) कानड़ा

स र गा मा प ध ना (रात की) बागश्री

इसी प्रकार दिन में असावरी रात में दरबारी कानड़ा, दिन में गौड़ सारङ्ग रात में विहाग, दिन में सुहा, सुघराई और रात में आड़ाना समझना चाहिए ।

(४) स्वर प्रस्तार अथवा तान

सप्तस्वरों को हर एक प्रकार से विस्तार करने से ५०४० सम्पूर्ण तान होते हैं और इसी प्रकार छः स्वरों के ७२० षाड़व तान, पाँच स्वरों के १२० आड़व तान, चार स्वरों के २४, तीन स्वरों के ६, दो स्वरों के २ और एक स्वर का १ होता है । एक और दो स्वर से तान नहीं होता । तीन और चार स्वर से खण्ड-तान होता है । पाँच, छः और सात स्वर से आड़व, षाड़व और सम्पूर्ण तान होते हैं । जिस प्रकार राग तीन जाति के होते हैं उसी प्रकार तान भी तीन श्रेणी के होते हैं । तान दो प्रकार होते हैं, शुद्ध तान और कूट तान । शुद्ध तान में कूट तान निहित है । सप्तकांष्ठ में उनका श्रेणीबद्ध करना पड़ता है और एक ही तान दो बार किसी कांष्ठ में न आवे इसका विचार रखना चाहिए, इसी का कूट तान कहते हैं । अन्ना साहब ने मुझे यह उपदेश व संकेत बतलाया है । देखिए चित्र ग ।

चित्र ग—स्वर प्रस्तार

आर्चिक अथवा एक स्वर का प्रस्तार नहीं होता ।

गायिक अथवा दो स्वरों के २१ प्रस्तार होते हैं ।

१	२	३	४	५	६
स र	स ग	स म	स प	स ध	स न
र स	ग स	म स	प स	ध स	न स
७	८	९	१०	११	
र ग	र म	र प	र ध	र न	
ग र	म र	प र	ध र	न र	
१२	१३	१४	१५		
ग म	ग प	ग ध	ग न		
म ग	प ग	ध ग	न ग		
१६	१७	१८			
म प	म ध	म न			
प म	ध म	न म			

१६ २०
प ध प न
ध प न प
२१
ध न
न ध

सामिक अथवा तीन स्वरों के ३५ प्रस्तार होते हैं ।

१	२	३	४	५	६	७	८
स र ग	स र म	स र प	स र ध	स र न	स ग म	स ग प	स ग ध
र स ग	र स म	र स प	र स ध	र स न	ग स म	ग स प	ग स ध
स ग र	स म र	स प र	स ध र	स न र	स म ग	स प ग	स ध ग
ग स र	म स र	प स र	ध स र	न स र	म स ग	प स ग	ध स ग
र ग स	र म स	र प स	र ध स	र न स	ग म स	ग प स	ग ध स
ग र स	म र स	प र स	ध र स	न र स	म ग स	प ग स	ध ग स

इसी प्रकार से क्रमानुसार स ग न से आरम्भ करके स्वरों का रखने से और ८ प्रस्तार बनेंगे ।

र ग प से आरम्भ करके क्रमानुसार रखने से ७ और र ग न से और ७ अर्थात् कुल मिला कर १४ प्रस्तार बनेंगे फिर ग ध न से आरम्भ करके स्वरों का रखने से ५ प्रस्तार और बनेंगे इस लिए ३ स्वरों के कुल ८ + ८ + १४ + ५ = ३५ प्रस्तार होते हैं ।

इसी प्रकार से हम ४ स्वरों के ३५ प्रस्तार (इसका स्वगन्तर कहते हैं), ५ स्वरों के १२० ओड़व प्रस्तार और ६ स्वरों के ७२० षाड़व प्रस्तार बना सकते हैं । ग्रन्थ विस्तार के कारण मैंने सबको यहाँ पर नहीं दिखलाया । अभ्यासार्थी का उचित है कि धैर्य के साथ इनका अभ्यास करें । ये सब के सब शुद्ध तान हैं । इनमें कुछ तान ऐसे हैं जिनका कूट तान कहते हैं । कुछ लोगों का विचार है कि कूटतान का अर्थ कांटी तान है परन्तु मेरे विचार में शब्द का बदल कर उसका दूसरा अर्थ करने की कोई आवश्यकता नहीं है । आगे ७ स्वरों के ४६, ६ स्वरों के ३६ और पाँच स्वरों के २५ कूटतान का चित्र दिया जा रहा है ।

I-III

(संख्याओं का संकेत—१=स, २=र, ३=ग, ४=म, ५=प, ६=ध और ७=न)

१	४	७	३	६	२	५
३	२	५	१	४	६	७
६	५	३	२	७	४	१
७	१	६	४	२	५	३
४	६	१	७	५	३	२
५	३	२	६	१	७	४
२	७	४	५	३	१	६

२	३	६	४	५	१	७
४	१	७	२	३	५	६
५	७	४	१	६	३	२
६	२	५	३	१	७	४
३	५	२	६	७	४	१
७	४	१	५	२	६	३
१	६	३	७	४	२	५

४	७	१	६	३	५	२
६	५	२	४	७	३	१
३	२	६	५	१	७	४
१	४	३	७	५	२	६
७	३	४	१	२	६	५
२	६	५	३	४	१	७
५	१	७	२	६	४	३

५	३	२	७	१	६	४
७	६	४	५	२	१	३
१	४	७	६	३	२	५
३	५	१	२	६	४	७
२	१	५	३	४	७	६
४	७	६	१	५	३	२
६	२	३	४	७	५	१

७	५	४	१	२	३	६		३	६	२	५	७	४	१
१	३	६	७	५	२	४		५	४	१	३	६	७	२
२	६	१	३	४	५	७		७	१	५	४	२	६	३
४	७	२	५	३	६	१		२	३	७	६	४	१	५
५	२	७	४	६	१	३		६	७	३	२	१	५	४
६	१	३	६	७	४	५		१	५	४	७	३	२	६
३	४	५	६	१	७	२		४	२	६	१	५	३	७

६	१	५	२	४	७	३
२	७	३	६	१	४	५
४	३	२	७	५	१	६
५	६	४	१	७	३	२
१	४	६	५	३	२	७
३	२	७	४	६	५	१
७	५	१	३	२	६	४

किसी प्रकार से बनाया जाय सात स्वरों के कुल ४८ कूटतान होते हैं। इसकी विशेषता यह है कि हर एक तान नया होना चाहिए। इनका व्यवहार सब सम्पूर्ण रागों में हो सकता है।

सम्पूर्ण तानों से षाड़व और ओड़व तान निकाले जा सकते हैं। ये आगे दिये जा रहे हैं।

६ स्वर के ३६ कूटतान

१	३	५	२	४	६		४	६	२	५	१	३
४	२	६	१	५	३		१	५	३	४	२	६
२	६	३	४	१	५		५	३	६	१	४	२
६	४	२	५	३	१		३	१	५	२	६	४
५	१	४	३	६	२		२	४	१	६	३	५
३	५	१	६	२	४		६	२	४	३	५	१
२	६	४	३	५	१		५	१	३	६	२	४
५	३	१	२	६	४		२	६	४	५	३	१
३	१	४	५	२	६		६	४	१	२	५	३
१	५	३	६	४	२		४	२	६	३	५	१
६	२	५	४	१	३		३	५	२	१	४	६
४	६	२	१	३	५		१	३	५	४	६	२
३	५	१	४	६	२		६	२	४	३	५	१
६	४	२	५	१	५		३	१	५	६	४	२
४	२	५	६	३	१		१	५	२	३	६	४
२	६	४	१	५	३		५	३	१	४	२	६
१	३	६	५	२	४		४	६	३	२	५	१
५	१	३	२	४	६		२	४	६	५	१	३

पहले दिखा चुके हैं कि ६ स्वर के ७ प्रस्तार होते हैं। उनमें से हर एक के ऊपर लिखे हुए प्रकार से ३६ कूटतान होते हैं। षाड़व रागों में इन तानों का प्रयोग किया जाता है।

५ स्वर के २५ कूटतान

१	३	४	५	२		१	४	३	५	२		१	५	३	४	२
३	२	५	१	४		२	१	५	३	४		२	४	५	१	३
५	४	३	२	१		३	२	१	४	५		३	१	२	५	४
२	५	१	४	३		५	३	४	२	१		४	३	१	२	५
४	१	२	३	५		४	५	२	१	३		५	२	४	३	१

५	१	३	२	४		५	२	१	४	३						
२	३	१	४	५		२	४	३	१	५						
४	५	२	३	१		३	१	५	२	४						
१	२	४	५	३		१	५	४	३	२						
३	४	५	१	२		४	३	२	५	१						

५ स्वर के २१ प्रस्तार होते हैं और उनमें से हर एक के उक्त प्रकार से २५ कूटतान होते हैं ।
आड़ब रागों में इन तानों का प्रयोग किया जाता है ।

ये तीन प्रकार के तान गमकयुक्त होने से “गमकतान” कहलाते हैं । विधि व नियम मानने वाले इन्हीं तानों का प्रयोग करते हैं, यों तो मनमाना तान सभी कोई व्यवहार करते हैं ।

(५) सूच्छनालंकार व वर्णालंकार

पहले कह चुके हैं कि सप्तस्वरों के उच्चारण से उनका क्रमोच्च भाव समझ में आ जाता है । और इसके विपरीत करने से निम्नक्रम भी समझ में आ सकता है । और इसी का आरोहण व अवरोहण कहते हैं । पहले ही सातों स्वरों का आरोहण न करके यदि स्वर के स्थिति-काल का दीर्घ उच्चारण करें तो उसे स्थायी वर्ण कहते हैं; फिर उसके बाद आरोहण और अवरोहण आना चाहिए । इन दोनों के मेल से संचारी वर्ण होता है । आलाप में यही चार वर्ण प्रयोग किये जाते हैं । मुख्य वर्णालंकार ३६ हैं । इन अलंकारों के व्यवहार से नाना प्रकार के छन्द व ताल बनते हैं । देखिए चित्र घ ।

चित्र घ वर्णालङ्कार

गानक्रियोच्यते वर्णः स चतुर्धा निरूपितः ।
 स्थाय्यारोह्यवराही च संचारीत्यथ लक्षणम् ॥
 स्थित्वा स्थित्वा प्रयोगः स्यादेकस्यैव स्वरस्य यः ।
 स्थायी वर्णः स विज्ञेयः परावन्वर्थे नामकौ ॥
 एतत्संमिश्रणाद्वर्णः संचारी परिकीर्तितः ।
 विशिष्टवर्णसन्दर्भमलंकारं प्रचक्षते ॥
 येषामाद्यन्तयोरंकः स्वरस्ते स्थायी वर्णकाः ।
 प्रसन्नादिः प्रसन्नान्तः प्रसन्नाद्यन्तसंज्ञकः ॥
 ततः प्रसन्नमध्यः स्यात् पंचमः क्रमरंचितः ।
 प्रस्तारोऽथ प्रसादः स्यात् सप्तैता स्थायिनी स्थिता ॥
 मन्द्रः प्रकरणेऽत्र स्यान्मूर्च्छना प्रथमस्वरः ।
 स एव द्विगुणस्तारः पूर्वः पूर्वोऽथवा भवेत् ॥
 मन्द्रः परः परस्तारः प्रसन्नो मृदुरित्यपि ।
 मन्द्रस्तारस्तु दीप्तः स्यान्मन्द्रो विन्दु शिराभवेत् ॥
 ऊर्ध्वरेखा शिरास्तारा लिपौ त्रिवचनानुष्ठुतः । संगीतम्वाकरः ॥

स्थयी वर्ण ७

१ सां सां सा
 २ सा सा सां
 ३ सां सा सां
 ४ सां सां सा
 ५ सां रि सां, सां गम सां, सां पधनि सां
 ६ सां रि सा सां गम सा, सां पधनि सा,
 ७ सा रि सां, सा गम सां, सा पधनि सां

सङ्गीत पारिजात में उक्त ७ स्थायी वर्णों का भद्र, नन्द, जित, सोम, ग्रीव, भाल और प्रकाश बताये गये हैं और कहीं कहीं इनकी बाल में परिवर्तन किया गया है और “आजनेयने कहा है” यह लिखा गया है। यहाँ दो उदाहरण दिये जा रहे हैं—

भद्र अलंकार—यमारभ्याग्रिमं गत्वा पुनः पूर्वस्वरं वदेत् । भद्रसंज्ञमलंकारमांजनेयो ऽवदत् सुधीः ॥ स र
स, र ग र, ग म ग, म प म, प ध प, ध न ध ।

नन्द अलङ्कार—(दीर्घ)

सा री सा, री गा री, गा मा गा, मा पा मा, पा धा पा, धा ना धा ।

संगीतरत्नाकर ग्रन्थ में स्थायी वर्ण का ठीक ठीक अर्थ यह कहा है कि रुक रुककर स्वरों का व्यवहार होगा और मन्द्र, मध्य और तार इनका भी व्यवहार विचार के साथ करना पड़ेगा । पारिजात ग्रन्थोक्त स्थायी वर्ण और रत्नाकर के संचारी वर्ण एक ही मालूम होते हैं क्योंकि स्थायी वर्ण पहले अलंकृत हुए हैं फिर उसके बाद आरोही और अवरोही के (विपरीत) वर्ण और शेष संचारी वर्ण (आरोही और अवरोही के मिश्रण से) । स्थायी वर्ण में आरोहावरोह रीति रहने से उसे संचारी वर्ण कहते हैं । इसी लिए पारिजात के स्थायी वर्ण आरोहावरोह रीतियुक्त होने के कारण यही अनुमान कर सकते हैं कि वह संचारी वर्ण ही हैं ।

आरोही वर्ण १२

स्यातां विस्तीर्णं निष्कर्षौ बिन्दु अभ्युच्चयो परः ।

हसित प्रेक्षितान्निम सन्धिप्रच्छादनास्तथा ॥

उद्गीतोद्ग्राहितौ तद्वत् त्रिवर्णो वेण्णरीत्यमी ।

द्वादशारोहिवर्णस्थालंकाराः परिकीर्त्तिताः ।

१ सा री गा मा पा धा नी

२ { सस रिरि गग मम पप धध निनि
{ ससस सससस रिरिरि रिरिरि इत्यादि

३ सासासा रि गागागा म पापापा ध निनिनि

४ स ग प नि

५ सा रीरी गागागा मामामामा पापापापापा धाधाधाधाधा नीनीनीनीनीनीनी ।

६ सरी रिगा गमा मपा पधा धनी

७ सगा गपा पनी

८ सरिगा गमपा पधनी

९ सससरिगामामामा पधा

१० सरिरिरिगा मपपपधा

११ सरिगगा मपधधधा

१२ ससस रिरिरि इत्यादि

अवरोही वर्ण १२

उपर्युक्त आरोही वर्णों को अवरोहक्रम से उच्चारण करने से १२ अवरोही वर्ण होंगे ।

मंचारी वर्ण २५

मन्द्रादिर्मन्द्रमध्यश्च मन्द्रान्तः स्यादतः परम् ।

प्रस्तारश्च प्रसादोऽथ व्यावृत्तस्वलतावपि ॥

परिवर्त्ताक्षेप विन्दूद्वाहितोर्मि समामस्तथा ।

प्रेङ्क्षन्निष्कजित स्थेन क्रमोद्घाटित रञ्जिताः ॥

स निवृत्तः प्रवृत्तोऽथ वेणुश्चलित स्वरः । हंकारो ह्यादमानश्च ततः स्यादवलोकितः ॥

स्युः सञ्चारिन्यलंकाराः पञ्चविंशतिरित्यमी ॥

१ सगरी रिमगा गपमा मधपा पनिधा

२ गसरि मरिगा पगमा धमपा निपधा

३ रिगसा गमरी मपगा पधमा धनिपा

प्रस्तारानुसार इनके और तीन तीन तान हो सकते हैं अर्थात् तीन स्वरों के छः पूर्ण तान होते हैं ।

जैसे सरिग, रिसगा, सगरि, गसरि रिगसा, गरिगा ।

इसी प्रकार प्रत्येक तीन स्वरों के अर्थात् अपूर्ण ३५ तानों के छः छः पूर्ण तान होते हैं ।

४ सगा रिमा गपा मधा पनि

५ सरिगा रिगरी गमगा मपमा पधपा धनिधा

६ सागरिमासा रीमगपारी गापमधागा माधपनीमा

७ सगरिमा मरिगासा । रीमगाप पगमारी । गापमधा धमपागा । माधपनी निपधामा ।

८ सगमा रिमपा गपधा मधनी

९ सरिगा रिगमा गमपा मपधा पधनी

१० सासासारिगा रीरीरीगरी गागागामगा मामामापमा पापापाधपा धाधाधानिधा

११ सरिगरि रिगमगा गमापमा मपधपा पधनिधा

१२ समामामासमा रपापापारिपा गधाधाधागधा मनीनीनीमनी

१३ सरिगम मगरिगा, रीगमपा पमगरी, गमपधा धपमगा, मपधनी, निधपम,

१४ सरीरेसा रिगागरी गमामगा मपापमा पधाधपा धनीनिधा

१५ सरिगागसा रिगरीमरी गमगापगा मपमाधमा पधपानिधा

१६ सप रीध गनि मसा

१७ सरि सरिग सरिगम । रिग रिगम रिगमपा । गम गमपा गमपधा । मप मपध मपधनी ।

- १८ सरिपमगरि रिगधपमगा गमनीधपमा
 १९ सगरि सगरि सा । रिमग रिमगरी । गपम गपम गा । मधप मधप मा । पनिध पनिध पा ।
 २० सपामगरी रिधापमगा गनीधपमा
 २१ सासरिमागा रीरीगपामागागमधापा मामपनीधा
 २२ सारी मरीसा रीगपगारी गमाधमागा मपनिपमा
 २३ सरिसा सरिगरिसा सरिगम गरिसा सरिगम पमगरिसा सरिगमपधपमगरिसा सरिगमप
 धनिधपमगरिसा
 २४ सगरिसा रिमगरि गपमगा मधपमा पनिधपा
 २५ सगमामरिसा रिमपापगरि गपधाधमगा मधनीनिपमा
 ऐतेसंचार्यलंकारा आरोहेण प्रदर्शिताः ।
 एतानेवारोहेण प्राह श्रीकरणाग्रणीः ॥

सप्तालंकार ७

- अन्योऽपि सप्तालङ्कारा गीतज्ञैः रूपदर्शिताः ।
 तारमन्द्रप्रसन्नश्च मन्द्रतारप्रसन्नकः ॥
 आवर्त्तकः सम्प्रदानो विधूतोऽप्युपलोलकः ।
 उल्लासितश्चेति तेषामधुना लक्ष्य कथ्यते ॥
 १ संरिगमपाधनिसासां
 २ सांसानिधपमगरिसां
 ३ ससरिरिससरिसा । रिरिगगरिरिगगि गगममगगमगा ममपपममपमा । पपधधपपधपा ।
 धधनिनिधधनिधा ।

- ४ ससरिरिसस, रिरिगगरिरि, गगममगग, ममपपमम, पपधधपप, धधनिनिधध ।
 ५ सगसगा, रिमरिमा, गपगपा, मधमधा, पनिपनी
 ६ सरिसरिगरिगरि, रिगरिगमगमग, गमगमपमपमा, मपमपधपधपा, पधपधनिधनिधा ।
 ७ सगसगा, रीरीमारिमा, गगपगापा, ममधमधा, पपनिपनी

शास्त्रों में इन ६३ वर्णालंकारों के विषय में समझाया गया है परन्तु वास्तव में लोग इनमें से ४ ही ५ का अभ्यास करते हैं । हमने ३६ वर्णालङ्कार सीखा था । विद्यार्थी को उचित है कि इनमें से जितने अलङ्कारों का हो सकें कंठ व यंत्र के द्वारा अभ्यास करे ।

(६) राग

गुरु के समीप छः ऋतुओं में छः रागों के गाने का नियम जो हमने सीखा है वह आगे के चित्र में दिखाया गया है ।

राग	राग के अनुसार गाने के ऋतु व समय दिन और रात	ऋतु के अनुसार गाने के राग व समय दिन और रात	जाति	आट					
नाम	गुण	ऋतु	मास	समय	काल	ऋतु	समय	पवानन	राग
मेघ	रज	वर्षा	श्रावण भाद्र	रात्रि तृतीय १० दंड	अपराह्न	वर्षा	दिन के तृतीय १० दंड	ऊर्ध्व	मेघ
भैरव	सत्त्व	शरत्	आश्विन कार्तिक	दिन के प्रथम १० दंड	प्रदोष	शरत्	रात्रि के प्रथम १० दंड	दक्षिण	भैरव
हिंडोल	तम	हेमन्त	अग्रहायण पौष	रात्रि के प्रथम १० दंड	अर्द्ध रात्रि	हेमन्त	रात्रि के द्वितीय १० दंड	उत्तर	हिंडोल
मालकोष	सत्त्व	शिशिर	माघ फाल्गुन	दिन के द्वितीय १० दंड	शेष रात्रि	शिशिर	रात्रि के तृतीय १० दंड	पार्वती	मालकोष
दीपक	तम	वसन्त	चैत्र वैशाख	रात्रि के द्वितीय १० दंड	पूर्वाह्न	वसन्त	दिन के प्रथम १० दंड	पूर्व	दीपक
श्री	रज	ग्रीष्म	ज्येष्ठ आषाढ	दिन के तृतीय १० दंड	मध्याह्न	ग्रीष्म	दिन के द्वितीय १० दंड	पश्चिम	श्री
									शुद्ध षोडश सर मा प ध ना
									शुद्ध सम्पूर्ण सरा गमा प धान
									हिंडोल शुद्ध ओडव स ग म ध न
									शुद्ध ओडव स गा मा धा ना
									अप्रचलित
									शुद्ध सम्पूर्ण सरा ग म प धान

मेरीत पारिजात के मत से दीपक "मा न" हान ओड़व जाती है । किसी किसी का मत है कि यह मिश्र बाइव है अर्थात् आरोहण में ऋषभ और अवरोहण में निषाद वर्जित है ।

यद्यपि दीपक राग अप्रचलित है तथापि इसके षाड़व होने में कोई सन्देह नहीं है। जिस प्रकार भैरव-श्री का सम्बन्ध है और मालव-हिंडोल का उसी प्रकार दीपक और मेघ का होना ही संभव है। आज-कल दीपक के विषय में कोई विशेष तत्व निकालना कठिन है तथापि उसके आकार और मूर्ति के विषय में पर्यालोचना होना अत्यावश्यक है। जिस प्रकार गान्धार ग्राम केवल देवलोक में प्रचलित है और मर्त्यलोक में लुप्त है इस प्रवाद के रहते हुए भी तीनों ग्रामों का व्यवहार सर्वत्र प्रचलित है अर्थात् त्रितंत्री (षड्ज, मध्यम और पंचम) यंत्र पहले भी था, अब भी है और भविष्य में भी रहेगा, उसी प्रकार यदि स्वर प्रस्तार ही रागों का हेतु माना जाय तब उस प्रस्तार में दीपक राग अवश्य ही रहना चाहिए। क्योंकि इन प्रस्तारों के बाहर किसी राग का रहना असम्भव है। भैरव, मालकोष, मेघ, इत्यादि जो छः स्वर राग के नाम से माने जाते हैं वे ओड़व, षाड़व और सम्पूर्ण स्वरों के प्रस्तार को छोड़कर और कुछ भी नहीं हैं। तब क्या कारण है कि ओड़व प्रस्तार में मालकोष और हिंडोल सबसे श्रेष्ठ राग कहे जाते हैं ? षाड़व प्रस्तार में दीपक और मेघ राग का सर्वप्रधान क्यों कहते हैं ? और इसी प्रकार सम्पूर्ण प्रस्तार में भैरव और श्री का क्यों श्रेष्ठ कहते हैं ? वास्तव में मेरे विचार में ओड़व प्रस्तारों में भूपाली, विभाष, मालश्री, सारंग इत्यादि उपर्युक्त ओड़व रागों से कुछ हीन नहीं हैं। षाड़व प्रस्तारों में पुरिया, मारुवा, ललित बसन्त इत्यादि उक्त षाड़व रागों से किसी प्रकार कम नहीं हैं। सम्पूर्ण प्रस्तारों में भी कानड़ा टोड़ी, जोगिया, कल्याण इत्यादि भैरव और श्री की अपेक्षा कुछ कम नहीं हैं। सच तो यह है कि मैंने, राग-गणिणियों के गुण में कुछ भी प्रभेद नहीं पाया। इसलिए यही अनुमान कर सकते हैं कि ऊपर लिखे हुए छः राग सबसे पहले महादेव और पार्वतीजी के कंठ से गाये गये थे इसी कारण उनको लोग श्रेष्ठ मानते हैं। हमने गुरु से सुना और सीखा है कि ४ प्रकार के भैरव, ५ प्रकार के श्री, ६ प्रकार के बेलाल, ७ प्रकार के सारंग, ८ प्रकार के कल्याण, ९ प्रकार के नट, १० प्रकार के टोड़ी, १२ प्रकार के मल्लार और १८ प्रकार के कानड़ा होते हैं। वे नीचे दिये जाते हैं—

भैरव—४ प्रकार—भैरव, रामकेलि, जोगिया और विभाष।

श्री—५ प्रकार—श्री, गौरी, पुरबी, धानश्री, और मारुवा।

बेलाल—६ प्रकार—यमन, कांकव, देवशाख, लच्छनशाख, अलहिया और देवगिरि।

सारंग—७ प्रकार—वृन्दावनी, मधुमाधवी, सामन्त इत्यादि।

कल्याण—८ प्रकार—कल्याण, हम्बीर, कंदारा, कामोद, पुरिया, भूपाली, हरशृंगार और जयन्ती।

नट—९ प्रकार—नट, छायावट इत्यादि।

टोड़ी—१० प्रकार—विलासखानी, आशावरी, गुर्जरी, देशी, गान्धारी, लाचारी, बहादुरी, देव-गान्धार, हुसेनी और जौनपुरी।

मल्लार—१२ प्रकार—मेघ, सुरट, देश, धुरिया, गौर, सुर, जयजयन्ती, मियाँ इत्यादि।

कानड़ा—१८ प्रकार—सिन्धु, आशावरी, सुहा, सुधराई, भीमपलश्री, सहाना, आड़ाना, बहार, बागश्री, नायकी, दरबारी, हंसध्वनि, सिन्धुड़ा; इत्यादि।

बहुत प्राचीन काल में हमारी जातीय भाषाओं में अर्थात् पहले संस्कृत फिर हिन्दी, बँगला आदि भाषाओं में संगीत होता था। मुसलमानों के समय में भाषान्तर होकर “वाणी या घराना” शब्दों का व्यवहार होने लगा अर्थात् उस्ताद (गुरु) के अनुसार उनका घराना ढङ्ग व कायदा होने लगा। पठानों के समय में फ़ीरोज़ खाँ नाम के एक वीणकार थे। बहादुर खाँ, नासिर अहमद खाँ उनके शिष्य थे और उन्होंने के घराने की वीणा बजाते थे और ध्रुपद भी गाते थे। इस घराने की वाणी का नाम खंडार (कंधार) वाणी है*। उसके बाद मुगलों के समय में तानसेन आदि गुणी और जाफ़र खाँ, प्यार खाँ, बासत खाँ आदि तंत्रकार वीणा व सुरशृङ्गार बजाते थे और ध्रुपद भी गाते थे। इस घराने की वाणी का नाम गौरहार (गौड़ीय) वाणी है। उसके बाद साहब खाँ, सदर खाँ आदि कलाविद लोग डागर वाणी और मोहर वाणी के ध्रुपद गाते थे। इन सब उस्तादों ने अपने अपने ढङ्ग स्थिर किये और उसी ढङ्ग पर स्वर लगाने से नया मधुर भाव उत्पन्न होता है इसीलिए उसी प्रकार की वाणी का प्रचलन है। इसी को घराना कहते हैं। आजकल इसके बदले नकल ही का व्यवहार हो चला है और इसका कारण यह है कि संगीत विद्या और रचना के नियम (art of composition) की शिक्षा कोई नहीं करता बल्कि सब कोई नकल करते हैं।

उक्त चार वाणियों का छोड़कर दो और घराने हैं जिनके नाम ढाड़ी और काँवाल हैं। चाँद खाँ, सूरज खाँ, ताज खाँ, इत्यादि ढाड़ी थे। इस ताज खाँ के बाद और ढाड़ी नहीं हुए।

वाणी चाहे कोई भी हो, मेरी राय में केवल शुद्ध वाणी का ही प्रयोग करना चाहिए। यदि शुद्ध शब्दों का व्यवहार किया जाय तो संगीत का अर्थ स्पष्ट समझ सकते हैं और फिर शुद्ध शब्दों के साथ स्वर का ठीक ठीक व्यवहार होने से गायक और श्रोता दोनों के चित्त में हर्ष, विषाद, उल्लास, चोभ आदि नाना प्रकार के भाव उदय होते हैं। अशुद्ध व दुर्बोध, कठोर शब्दों के साथ मधुर स्वर की योजना करने से गायक व श्रोता केवल स्वर ही का आनन्द प्राप्त कर सकते हैं परन्तु उनके चित्त में भाव की प्रक्रिया ठीक ठीक नहीं हो सकती।

नीचे छः भागों में उक्त छः राग और उनके सम सामयिक और कुछ राग क्रम से दिये जाते हैं—

(१) दिन के प्रथम १० दंड

भैरव, आशावरी, देशकार, विभाष, अलहिया, कांकव, देवगीर, देवशाख, लच्छन शाख, यमन, जोगिया, रामकेलि, शुक्ल बेलावल इत्यादि।

(२) दिन के द्वितीय दण्ड

मालकोष, तिलक, तिलक कामोद, देव गांधार, भैरवी, विलास-खानी टोड़ी, देशी टोड़ी, गौड़ सारंग, वृन्दावनी सारंग, सामन्त, सुहा इत्यादि।

* खंडार वाणी के दो ही तीन ध्रुपद मुझे मालूम हैं। बाकी सब गौरहार वाणी के हैं।

(३) दिन के तृतीय १० दण्ड

श्री, गौरा, गौरी, जयतश्री, धनाश्री, पलश्री, पुरवी, बरारी, भीमपलश्री, मालश्री, मुलतान, मारुवा इत्यादि ।

(४) रात्रि के प्रथम १० दण्ड

हिंडोल, कल्याण, यमनकल्याण, कामोद, कंदारा, छायाणट, पुरिया, भूपाली, वसन्त, सिन्धु, सिन्धुड़ा, हरशृङ्गार, हम्बीर इत्यादि ।

(५) रात्रि के द्वितीय १० दण्ड

आड़ाना, आड़ानाबहार, कैशिकी, दरबारी, वागश्री, हंसध्वनि, हुसेनी, पंचम, पुर्लान्दिका, बहार, बेहाग, सोहनी, शंकरा इत्यादि ।

(६) रात्रि के तृतीय १० दण्ड

मेघ, ग्यम्बाज, ग्यम्बाजी कानड़ा, जयजयन्ती, परज, भैरव बहार, गौड़मल्लार, देशमल्लार, सुरटमल्लार, नटमल्लार इत्यादि ।

(७) वादी, विवादी, संवादी स्वर

संगीतपारिजात के और संगीतग्लाकर के निम्न लिखित श्लोकों का अच्छी तरह समझना चाहिए ।

चतुर्धाः स्वरा वादी सम्वादी च विवाद्यपि ।

अनुवादीति वादी तु प्रयोगे बहुल स्वरः ॥

श्रुतयो द्वादशाष्टौ वा ययोरन्तरगोचराः ।

मिथः संवादिनां तां स्तां निगावन्यो विवादिनां ॥

ग्निधयोरंवा वा म्यातां तां तयोर्वारिधावपि ।

शेषानामनुवादिनं वादी राजाऽत्र गीयते ॥

प्रयोगा बहुधा यस्य वादिनंतं स्वरं जगुः ।

राजत्वमपि तस्येति मुनयः संगिरन्तिहि ॥

श्रुतयोऽष्टौ द्वादश वा ययोरन्तरगोचराः ।

मिथः संवादिनां तां स्तः सप्तौ स्यातां पप्तौ तथा ॥

तस्यामात्यस्तु संवादी वादिनां राज संज्ञिनः ।

भृत्यतुल्यानुवादी स्याद् विवादी शत्रुवद्भवेत् ॥

—संगीतरत्नाकर ।

—संगीतपारिजात ।

इन वचनों के अनुसार सप्त-कोष्ठ चक्र में, सम्पूर्ण पाड़व और आड़व स्वरों का विस्तार से स्थापना करने से देखा जाता है कि 'स' वादी होने से 'मा' अथवा प संवादी होंगे और इसी प्रकार र, ग, म, प, ध और न 'वादी' होने से प ध, ध न, न स, स र, र ग, ग म इनमें से प्रत्येक दोनों का एक स्वर क्रम से संवादी होगा । सप्त स्वरों के प्रथमार्द्ध (स र ग मा) में जिस प्रकार 'स' अचल अथवा अच्युत

है उसी प्रकार द्वितीयाद्ध (प ध न स) में 'प' अचल अच्युत है। इसलिए 'स र' और 'प ध' आपस में विवादी न होकर सहायक हुए हैं। 'र ग' और 'ध न' परस्पर विवादी हैं। किसी किसी ने विवादी स्वर को 'वर्जित' कहा है। परन्तु इस बात का भूलना उचित नहीं है कि विवादी स्वर का बिलकुल लोप करने से 'सम्पूर्ण' राग का होना असंभव हो जाता है। अथवा जहाँ दो स्वर वर्जित हैं जैसा कि 'आड़व' रागों में वहाँ उन दोनों का विवादी करना पड़ता है। इससे सांगीतिक तात्पर्य सिद्ध नहीं होता। विवादी का ठीक अर्थ राग नष्टकारी है। जिस स्थान पर 'र' वादी है अर्थात् उसका बहु प्रयोग किया गया है वहाँ 'ग' के बहु प्रयोग करने से 'र' स्वतः ही दुर्बल हो जाता है और उसका वादीत्व नष्ट हो जाता है इसलिए 'ग' स्वर का इस प्रकार थोड़ा सा व्यवहार करना चाहिए जिससे 'र' स्वर का अवस्थान्तर न हो।

वादी स्वर प्रस्तार के अनुसार ग्रह अंश और न्यास स्वरयुक्त होते हैं। सातों स्वरों के हर एक प्रकार से विस्तार करने से ५०४० तान होते हैं जिनका पहला तान "स र ग म प ध न," बीच में ५०३८ तान और शेष तान "न ध प म ग र स" हैं। इन तीनों का ग्रह अंश और न्यास स्वर कहते हैं। वादी विवादी और संवादी स्वरों के व्यतीत जो स्वर बाकी रहते हैं वे उक्त स्वरों के अनुवादी होंगे। न्यास स्वर में वादी स्वर अंशस्वर से मिलकर सहायता करता है इसलिए उसका विन्यास और सन्यास शब्द से सम्बोधन करते हैं। और इसी प्रकार यदि विवादी स्वर न्यास स्वर में अंशस्वर युक्त हो तो उसे अपन्यास कहते हैं।

मूर्च्छना और तान दोनों आरांहावराह क्रमयुक्त हैं। परन्तु दोनों में अन्तर यह है कि मूर्च्छना स्वाभाविक आरांहावराह क्रमयुक्त होता है (उद्देश्य संक्षेप करना, संख्या ७) और तान हर एक प्रकार से आरांहावराह क्रमयुक्त होता है (उद्देश्य—विस्तार करना, संख्या ५०४०) चित्र में दिये हुए सम्पूर्ण, षाड़व और आड़व स्वरों का स्वाभाविक आरांहावराह क्रमयुक्त करने से मूर्च्छना बनती है और इसका साधन करना पड़ता है।

यदि किसी वस्तु में ऐसा गुण हो कि उसके देखने सुनने अथवा पढ़ने से हृदय के भाव का परिवर्तन हो तो उसका रस कहते हैं। प्रकृति के अनुकरण करने से भी रस का परिचय मिलता है जैसा कि नाना वर्ण (रंग) के द्वारा चित्रकार का कार्य सम्पादित होता है। और नाना वर्ण (वाक्य) के संयोग से कवि का कार्य सम्पन्न होता है उसी प्रकार नाना वर्ण (स्वर) के विन्यास से संगीत का कार्य सिद्ध होता है। साधारण प्रकार से जिन वाक्यों का व्यवहार होता है उनमें रस नहीं है। केवल कंठभंगी ही के द्वारा शोक, आनन्द, प्रेम, क्रोध, स्नेह आदि भावों का प्रकाश हो सकता है। इसी प्रकार केवल ताल व स्वर के द्वारा विशेष व्यक्तियों के मानसिक भावों का परिवर्तन हो सकता है। व्यावहारिक नियम से देखा गया है कि सप्तस्वरों के आरांहाण के उच्चारण से उत्साह, हर्ष, तेज, इत्यादि तीव्र या कठिन भाव व्यक्त होते हैं और अवरोहण के उच्चारण से निराशा, शान्ति, विराम इत्यादि कोमल भाव उत्पन्न होते हैं। पृथ्वी के सब कामों में संगीत की आवश्यकता दिखाई पड़ती है। यदि कोई विशेष

कारण अथवा उद्देश्य न होता तो संगीत का व्यवहार दिखाई न पड़ता । बनारस के स्वर्गीय चिन्तामणि बापुली महाशयजी कभी ज्वर रोगियों का संगीत सुनाकर आराम करते थे । उनसे ये तीन श्लोक मुझे मिले हैं—

आनन्दोत्सवे यज्ञे अन्यमंगलकर्मणि ।
चतुर्वर्गफलार्थाय गायेत् रागाः सम्पूर्णकाः ॥
संग्रामे वीरतारूपं लालयन् गुणकीर्तनम् ।
गाने षट् स्वरानाञ्च गदितं पूर्वसूरिभिः ॥
व्याधिनाशे शत्रुनाशे भयशोकविनाशनं ।
पंचस्वराः प्रगातव्या ग्रहशान्त्यर्थकर्मणि ॥*

सप्तकोष्ठस्थित स्वरों के मूर्च्छना, तान अथवा अलंकार रूप से साधना करने से भिन्न भिन्न भाव अथवा रसों का संचार होता है ।

सप्त कोष्ठचक्र ।

क	संवादि
स	र ग म प ध न
र	ग म प ध न स
ग	म प ध न स र
म	प ध न स र ग
प	ध न स र ग म
ध	न स र ग म प
न	स र ग म प ध

क	संवादि
स	र ग म — ध —
र	ग — प ध —
ग	— प — न
म	— म प ध —
प	— ग म प ध —
ध	स र — म प — न
न	स — ग म प — न
स	र — म — ध न
र	— ग म — ध न
ग	— ग — प ध न

* इसी प्रकार के श्लोक मैंने “कोहलीय” ग्रन्थ में पाया है । यथा—

आयुर्धर्मो यशः कीर्तिर्बुद्धिसौख्यधनानि च ।
राज्याभिवृद्धिः सन्तानः पूर्णरागेषु जायते ॥
संग्रामे वीरतारूपं लावण्यगुणकीर्तनम् ।
गाने षड्वानां च गदितं पूर्वशरिभिः ॥
व्याधिनाशे शत्रुनाशे भयशोकविनाशने ।
औदवास्तु प्रगातव्या ग्रहशान्त्यर्थकर्मणि ॥

—वादि संवादि

षाड्व

स—ग म प ध न
 स र—म प ध न
 स र ग—प ध न
 स र ग म—ध न
 स र ग म प—न
 स र ग म प ध—

षाड्व

र—म प ध न स
 र ग—प ध न स
 र ग म—ध न स
 र ग म प—न स
 र ग म प ध—स

षाड्व

ग—प ध न स र
 ग म—ध न स र
 ग म प—न स र
 ग म प ध—स र
 ग म प ध न स—

षाड्व

म—ध न स र ग
 म प—न स र ग
 म प ध—स र ग
 म प ध न स—ग
 म प ध न स र—

—वादि संवादि

ओड्व

र ग—प ध—स
 र ग म—ध—स
 र ग—प—न स
 र—म प ध—स
 र—म प—न स
 र—म—ध न स

ओड्व

ग म—ध—स र
 ग—प ध—स र
 ग—प—न स र
 ग म प ध—स—
 ग म प—न स—
 ग म—ध न स—
 ग—प ध न स—

ओड्व

म—ध—स र ग
 म प ध—स र—
 म प ध—स—ग
 म प—न स र—
 म प—न स—ग
 म—ध न स र—
 म—ध न स—ग

ओड्व

प ध—स र ग—
 प—न स र ग—
 प ध—स र—म
 प ध—स—ग म
 प—न स र—म
 प—न स—ग म
 प ध न स—ग—

	—वादि	संवादि	
षाड्ज	प	—न स र	ग म
	प	—स र	ग म
	प ध	न स	—ग म
	प ध	न स	ग —म
	प ध	न स	र ग—

षाड्ज	ध	—स र	ग म प
	ध	न स	—ग म प
	ध	न स	र —म प
	ध	न स	र ग —प
	ध	न स	र ग म—

षाड्ज	न	स —ग म	प ध
	न	स र —म प	ध
	न	स र ग —प	ध
	न	स र ग म —ध	
	न	स र ग म	प—

	—वादि	संवादि	
आडि	ध	—स र	ग म—
	ध	—स र	ग —प
	ध	—स र	—म प
	ध	—स	—ग म प
	ध	न स र	—म—
आडि	ध	न स	—ग —प
	ध	न स	—ग म—

आडि	न	स र	ग —प—
	न	स र	—म प—
	न	स	—ग म प—
	न	स र	—म —ध
	न	स	—ग म —ध
आडि	न	स	—ग —प ध

(८) ताल व काल

जिसको ताल कहते हैं उसी को काल भी कहते हैं । संगीतशास्त्र में 'लव' काल उस समय का कहते हैं जिसमें मौ कमलपत्रों का सूची से विद्ध कर सकते हैं । ऐसं

८ लव काल = १ क्षण काल ।

८ क्षण " = १ काष्ठ "

८ काष्ठ " = १ निमेष "

८ निमेष " = १ कला ।

८ कला " = १ त्रुटि ।

एक अक्षर के उच्चारण करने में जो समय लगता है उसे अनद्रुत कहते हैं ।

२ अनद्रुत = १ द्रुत ।

२ द्रुत = १ लघु ।

२ लघु = १ वक्र ।

३ " = १ प्लुत ।

गीत रचना के समय इन सब बातों का व्यवहार होता था और होना चाहिए । मात्रा की सहायता से सुर वा गीत रचने का नियम संगीतशास्त्र में नहीं देखा जाता ।

जिस प्रकार स्वरलिपि की सहायता से गीत का सीखना प्रायः दुःसाध्य है उसी प्रकार मात्रा देखकर ताल सीखना कठिन है । मात्रा से काल का भाग किया जाता है । मात्रा में 'लय' नहीं है, केवल सुर व ताल ही में 'लय' है । संगीतशास्त्र में ताल के १० नाम (प्राण) पाये जाते हैं, यथा—काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति और प्रस्तार । इनके विषय में कुछ जानना आवश्यक है । इनमें जो शब्द 'ग्रह' आया है उसी के प्रस्तार से 'सम,' 'अतीत' और 'अनागत' इन तीनों विषयों की उत्पत्ति हुई है । संगीतरत्नाकर में लिखा है—

समोऽतीतोऽनागतश्च ग्रहस्ताले त्रिधामतः ।

गीतादिसमकालस्तु समपाणि समग्रहः ॥

सोऽवपाणिरतीतः स्याद् यो गीतादौ प्रवर्त्तते ।

अनागतः प्राक् प्रवृत्तः स एव परिपाणिकः ॥

ताल देने के तीन नियम हैं,—सम, अतीत और अनागत । गीत, वाद्य और नृत्य एक साथ आरम्भ करने से **समपाणि** (समग्रह) होता है । तालकाल को पार करके उत्तरकाल का ग्रहण करने से, अर्थात् पहिले गीत और उसके बाद ताल (वाद्य) आरम्भ होने से उसका **अवपाणि** (अतीतग्रह) कहते हैं । और पहिले ताल और उसके बाद गीत आरम्भ होने से **परिपाणि** (अनागतग्रह) होता है ।

समग्रह से सब कोई साधारणतः गाते हैं । थोड़े ही अभ्यास से अतीतग्रह से गाना साध्य हो सकता है । परन्तु अनागतग्रह से गाना बहुत कठिन है । पेशादार गवैये ऐसा गाना दो चार अभ्यास करके सभाओं में दिखाने के लिए रखते हैं । अनागतग्रह का व्यवहार वीणा आदि यन्त्रों में अच्छी तरह दिखाया जा सकता है ।

तीनों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं । शिष्यार्थियों को स्मरण रखना चाहिए कि ग्रह को बदलने से बजानेवाले को कुछ भी कठिनाई नहीं होती है परन्तु गानेवाले के ताल में भूल हो जाने की सम्भावना अधिक है । वे और याद रखें कि केवल बजानेवाले ही के लिए दून, चाँगून इत्यादि रूप से गीत गाया जाता है, न कि संगीत के लिये । संगीत के नियमानुसार गीत को विलम्ब, मध्य और द्रुत इन्हीं तीन रूपों में दिखाया जाता है ।

नीचे के गीतों में मृदंग का बोल भी दे दिया गया है, इससे गाने और बजानेवालों का परस्पर सहायता होगी ।

(१) हिण्डोल । चौताल ।

गीत ।

प्रणतजन पायो नागायण नाम तेरो सुमरो सुमरो हर गज पावत गत ॥ १ ॥

धन्य धन्य बड़ो है भक्त अनुराग हरषे मन बिच करम कर जाकी रत ॥ २ ॥

समपाणि ।

(१॥॥)

+	धा	धा	दिन्	ता	१	कत्	तग	०	दिन	ता	२	तट	कत	३	गद	धन
ग	ग	ग	स	स	म	ध	ध	न	न	ध	ध	ध	ध	म	ग	ग
पा	०	०	यो	ना	०	०	०	०	०	रा	०	रा	०	य	ण	ण
म	म	म	ग म	ग	स	स	स	स	स	ग	ग	ग	०	म	ध	ध
ना	०	०	म	ने	०	गे	गे	सु	म	रो	०	रो	०	सु	म	म
स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	ग	ग	ग	ग	म	स	स
रो	०	०	०	०	ह	र	र	ग	ज	पा	०	पा	०	व	त	त
मीड़	गमक		गमक		गमक											
न न न न	ध ध ध ध		ध ध ध ध		म म ग ग		म	ध	न	ध	न	ध	ध	म ग	म	म
ग त ० ०	० ० ० ०		० ० ० ०		० ० ० ०		प्र	ण	त	ज	त	ज	ज	न ०	०	०

(२)

म	ध म	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
ध	न्य ०	ध	०	०	न्य	व	डां	ह	थ	भ	क	भ	क	भ	क	क
स न	ध	म ध स	स	स	स	स	न	न	ध	ध	म	ग	ग	म	ग	ग
अ ०	नु	ग ० ० ०	०	ग	०	ह	र	ध	०	म	न	०	०	म	न	०
म	ग	म	ध	स	स	स	स	ग	ग	स	स	ग	ग	स	स	स
कि	च	क	र	म	०	क	र	जा	०	की	०	०	०	की	०	०
गमक		गमक		गमक												
न न न न	ध ध ध ध	म म ग ग		म	ध	न	ध	न	ध	म ग	म	न	०	०	०	०
र त ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०		प्र	ण	त	ज	त	ज	न ०	०	०	०	०	०	०

अवपाणि या अतीतग्रह

(पहले गीत फिर ताल ।)

१

+	०	१	०	२	३
धा दि न	ता क त	तग दिन	ता तट	कत गद्	धन धा
ग स ० यो	स म ० ना	ध न ०	न ध ० रा	ध म ० य	ग म ० ना
म ग म ० म ०	ग स ० त	स स ० रो सु	स ग ० रो	ग म ० सु	ध स ० रो
स स ० ०	स स ० ह	स स ० ग	स ग ० पा	स स ० व	स न ० न
गमक	गमक	गमक			
न न ध ध ० ० ० ०	ध ध म म ० ० ० ०	ग ग म ० ० ; प्र	ध न ० त	ध म ग ० न ०	म ग ० पा

ध म स ० ध	स स ० ०	स स ० ब	स स ० डो	स स ० है	स स ० भ	स स ० न
ध म ध स ० रा ० ०	स स ० ०	स न ० ह	न ध ० प	ध म ० म	ग म ० न	म न ० बि
ग म ० क	ध स ० म	स स ० क	स ग ० जा	ग स ० की	स न ० त	न न ० र
गमक	गमक	गमक				
न न ध ध ० ० ० ०	ध ध म म ० ० ० ०	ग ग म ० ० ; प्र	ध न ० त	ध म ग ० न ०	म ग ० पा	ग पा

॥२॥

परिपाणि या अनागतग्रह ।

(पहले ताल फिर गीत ।)

१

+	०	१	०	२	३
धन धा	धा दिन्	ता कत	तग दिन्	ता तट	कत गद्
म ग	ग स	स म	ध न	न ध	ध म
० पा	० यो	० ना	० ०	० रा	० य
ग म	म ग म	ग स	स स	स ग	ग म
ण ना	० म ०	ते ०	रो सु	म रो	० सु
ध स	स स	स स	स स	स ग	ग स
म रो	० ०	० ह	र ग	ज पा	० व
गमक	गमक	गमक	गमक		
स न न	न न ध ध	ध ध म म	ग ग म	ध न	ध म ग
त ग त	० ० ध ध	० ० ० ०	० ० ; प्र	ण त	ज न ०

२

	म ध	ध म स	स स	स स	स स	स स	स स
	न्य ० ध	० ० ध	० ०	न्य व	दो	ह	य भ
स स न	ध म ध स	स स	स न	न न	ध ध	ध म	म म
क थ ०	नु रा ० ०	० ०	ग ह	र	प ०	० म	म म
ग म	ग म	ध स	स स	स स	ग ग	ग स	स की
न बि	च क	र म	० क	र	जा ०	० की	की
गमक	गमक	गमक	गमक				
स न न	न न ध ध	ग ग म	ध ध म म	ध न	न ध	म ग	म ग
० र त	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	ण त	ज न ०	ज न ०	न ०

॥२॥

ममपाणि ।

(दूने लय से)

+	०	१	०	२	३
धा धा दिन्ता	कत नग दिन्ता	तटकत गद धन	धा धा दिन् ता	कनतग दिन्ता	तटकत गद धन
ग ग स स पा ० यो ०	म ध न न ना ० ० ०	ध ध म ग रा ० य ण	म म गमग ना ० म० ने	स स स स ० रो सु म	ग ग म ध रो ० सु म
			गमक	गमक	
स स स स रो ० ० ०	स स स स ह र ग ज	ग ग स स पा ० व त	ननननधधधध ग त ० ० ० ० ० ०	ममगग मध ० ० ० ० प्र ण	न ध मग त ज न ०

अवपाणि

(दूने लय से)

दिन्ता कत्तग	दिन्ता तटकत	गदधन धाधा	दिन्ता कत्तक	दिन्ता तटकन	गदधन धाधा
स स म ध यो ० ना ०	न न ध ध ० ० ग ०	म ग म म य ण ना ०	गमग स स म० ने ० रो	स स ग ग सु म रो ०	म ध स स सु म रो ०
		गमक	गमक		
स स स स ० ० ह र	स स ग ग ग ज पा ०	स स नननन व त ग न ० ०	धधधधममगग ० ० ० ० ० ० ० ०	म ध न ध प्र ण त ज	म ग म ग ग न ० ० पा ०

परिपाणि

(दूने लय से)

गदधन धाधा	दिन्ता कत्तग	दिन्ता तटकन	गदधन धा धा	दिन्ता कनतग	दिन्ता तटकत
मगम गग न ० ० पा ०	स स म ध यो ० ना ०	न न ध ध ० ० रा ०	म ग म म य ण ना ०	ग म ग स स म ० ते ० रो	स स ग ग सु म रो ०
			गमक	गमक	
म ध स स सु म रो ०	स स स स ० ० ह र	स स ग ग ग ज पा ०	स स नननन व त ग त ० ०	धधधधममगग ० ० ० ० ० ० ० ०	म ध न ध प्र ण त ज

नोट—इन उदाहरणों के अनुसार शिष्यार्थी केवल अस्थायी नहीं परन्तु इस गीत के अन्तरा को भी लिखकर भलीभाँति अभ्यास करें । इस स्वरलिपि का चौताल और तेताल दोनों में गा सकते हैं ।

(२) इमन-कल्याण । मूलताल ।

शंकर शिव पिनाकी हरहर गंगाधर विषधर वामदेव ईश्वर डमरूकर ॥ १ ॥

भस्म अंग शोभित भुजङ्ग भालचन्द्र शिंगी फूँकत है भोला दिगम्बर ॥ २ ॥

तिलक ललाट गले रुण्डमाला त्रिनयन वरदाता गौरीसन त्रिशूलधर ॥ ३ ॥

पशुपति विश्वनाथ जय मृत्युञ्जय जय वाणीविलास कं दारिद्र्य दुखहर ॥ ४ ॥

समपाणि । १

+	०	१	२	०	+	०	१	२	०
धा घण	नग दिन	घण नग	गद दिन	घण नग	धा घण	नग दिन	घण नग	गद दिन	घण नग
नध पम	प प	म प	म म	ग र	ग र	ग मा	ग र	न र	स स
शं० ००	क र	शि व	पि ना	० की	ह र	ह र	ग ०	गा ०	ध र
ग ग	ग र	स स	न धनं	धं पं	प प	प प	न ध	पम ग	म प
वि प	ध र	बा ०	म दे०	० व	ई ०	श्व र	ड म	रू ०	क र;

२

प ध	प स	स स	स स	स स	स ग	र ग	मा ग	र स	नध प
भ ०	स्म अं	० ग	शो ०	भि त	भु जं	० ग	भा ०	ल चं	०० द
प प	प प	प म	प प	मग र	ग र	ग मा	ग र	स नर	स स
शिं ०	० गा	फूँ ०	क त	है ०	भो ०	ला ०	० दि	गो ००	व र;

३

प मग	म प	प पम	प म	प प	ध प	प प	म म	ग ग	ग र
नि ०ल	क ०	० ल०	ला ०	टे ०	ग ले	रं ड	मा ०	ला ०	० ०
ग र	ग मा	ग ग	न र	स स	पम ग	म प	प न	ध प	म प
त्रि न	य न	व र	दा ०	ता ०	गौ० री	० स	त्रि न	शू ल	ध र

४

प ध	न स	स स	स स	स स	स ग र	ग ग	मा मा	ग र	ग र स
प पशु	प ति	वि ०	श्व ना	० थ	ज० य	मृ ०	स्थं ०	ज य	ज० य
प प	ध न	स स	स स	स स	न ध	प प	म ग र	ग र	स स
बा ०	णी ०	० वि	ला म	के ०	दा ०	रि ०	द्व० ००	दु ख	ह र

समपाणि (दूने लय से)

नधपम प प मपमम गरगर गमागर नरसस गग गर ससनंधनं धंपं पप पप नध पमग मप
श० ०० कर शिवपिना ०कीहर हर गं० गा० धर विप धर वा ०मदे० ० व ई० श्वर डम रु०० कर

पध प स सससस सससग रग माग रसनधप पप प प पमपप मगर गर गमागर सनरसस
भ० स्म श्रं ० ग शो० भित भुजं ० ग भा० लचं ००द्र शि०गी० फू० कत है०० भो० ला००दि गं०० व र

पमग मप पपम पम पप धध पपमम गग गर गरगमा गग नर ससपमग मप पन धप मप
ति०ल क० ०ल०ला० टे० ग ले हंडमा० ला० ०० त्रिन य न वर दा० ता ०गी०री ०म नत्रि शूल धर

पधनस सससस सससग गगमामा गरगरस पप धन सससस ससनध पपमगर गर सस
पशु पति वि०श्वना ०ध ज० य मृ०स्युन जयज० य वा०णी० ०विलास के०दा० रि०द्र०० दुख हर

परिपाणि

+	०	१	२	०	+	०	१	२	०
नग धा	घन नग	दिन घन	नग गद	दिनघन	नग धा	घन नग	दिन घन	नग गद	दिन घन
प नध र शं०	पम प ०० क	प म र शि	प म व पि	म ग ना ०	र ग की ह	र ग र ह	मा ग र ग	र नं ० गा	र स ० ध
स ग र वि	ग ग प ध	र स र वा०	स स म० दे	नंधं धं ० ०	प प व ई	प प ० श्व	प न र ड	ध पम म रु०	ग म ० क

२

प, प र भ	ध प ० स्म	स स श्रं ०	स स ग शो०	स स ० भि	स स त भु	ग र ज ०	ग मा ग भा	ग र ० ल	सनध वं ००
प प द्र शि	प प ० गी	प प ० फू	प प क त	प मग त है०	र ग ० भो	र ग ० ला	मा ग ० ०	र स दि गं	नरस ०० व

३

प प रं, ति	मग म ल० क	प प ० ०	पम प ल०ला	म प ० ट	प ध ० ग	प प ले रं	प म ड मा	म ग ० ला	ग ग ० ०
र ग ० त्रि	र ग न य	मा ग न व	ग नं र दा	र स ० ता	सप म ० गौ ०	ग म री ०	प प म न	न ध त्रि शू	प म ल ध

स	प	ध	न	स	स	स	स	स	स	स	स	र	ग	ग	मा	म	ग	र	गर
र,	प	शु	प	ति	वि	०	श्च	ना	०	थ	ज०	य	मृ	०	त्युं	०	ज	य	ज०
स	प	प	ध	न	स	स	स	स	स	स	न	ध	प	प	मग	र	ग	र	स
य	वा	०	यी	०	०	वि	ला	स	के	०	दा	०	रि	०	द्र	०	दु०	ख	ह

परिपाणि (दूने लय से) ।

मपनधपम	पप मप	मम गर	गर गमा	गर नर	सस गग	गरसस	नंधनंधपं	पप पप	नधपमग	मप नधपम
कर, शं ०००	कर शिव	पिना० की	हर हर	गं० गा०	धर विष	धर वा०	मदे ०० व	ई० श्वर	डमरू ००	कर ० शं००

बाकी तीन अन्तराओं को शिष्यार्थी लिखकर अभ्यास करें ।

अवपाणि (दूने लय से) ।

पप मप	मम गर	गर गमा	गर नर	सस गग	गरसस	नंधनंधपं	पप पप	नधपमग	मप नधपम
कर शिव	पिना ० की	हर हर	गं० गा०	धर विष	धर वा०	मदे ०० व	ई० श्वर	डमरू ००	कर ० शं००

बाकी अन्तराओं को शिष्यार्थी उक्त प्रकार से लिखकर अभ्यास करें ।

(३) शंकरा । धामार ।

बरसान में खेलत होरी श्री बृकभान किशोरी ॥ १ ॥

कोऊ चन्दन बन्दन अतर अरगज अबीर गुलाल लिये भर भोरी ॥ २ ॥

कोऊ गावत कोऊ मृदंग बजावत धूम मचाई नन्दराय के पुरि ॥ ३ ॥

उत ते सखा संग लिये कृष्णप्रभु छोड़त गंग पिचकारिन बोरि ॥ ४ ॥

परिपाणि या अनागतग्रह ।

+			०		१		०		२		०		
ध	प	प	र	स	न	ध	प	म	प	मन	धन	स	न
०	०	०	ब	र	सा	न	मं	०	०	खे०	लत	हो	री
ध	प	म	ग	ग	र	स	ग	म	प	न	न	स	न
०	०	०	श्री	०	०	०	हु	क	भा	न	कि	शो	री

॥३॥

२

			म को	प ऊ	न चं	न न द न	स ब	स न्द	स न	नन अत	ध र	मन अर	धन गज
न ०	न ०	न ०	ग अबी	र र	स गु	स ला	न लि	ध ये	प ०	म भ	न र	स को	न रि

३

			स को	स ऊ	ग गा	ग ग व न	म को	प ऊ	प ०	म मृ	न न दं ग	सन बजा	धप वत
म ०	ग ०	ग ०	र ध	स म	न म	ध ध चा ई	मम नन्द	न रा	न य	ध के	न ०	स पु	न रि

४

			म उ	पप तते	न स	स खा	स स स ग	स लि	न ये	म कृ	म ण	ध प्र	न भु
ध ०	प ०	प ०	ग छा	र इ	स रं	स ग	न पि	न च	न का	म रि	न न	स बो	न रि

(८) शिक्षार्थियों के लिए उपदेश

ऊपर जो कुछ लिखा गया है उसके अतिरिक्त और कुछ बातें शिक्षार्थियों के लिए आगे लिखी जाती हैं। उनका भलीभाँति समझना और उपदेशानुसार अभ्यास करना परमावश्यक है।

स्वर—प्रायः देखा जाता है कि संगीत के शिक्षार्थी इसीलिए प्रयत्न करते हैं कि उनका कंठस्वर ऊँचा और मीठा हो और इस उद्देश्य से वे हारमोनियम के साथ अपना कंठ मिलाकर स्वर का अभ्यास करते हैं। इसका परिणाम यही होता है कि कंठस्वर हारमोनियम के स्वर की तरह बन जाता है अर्थात् स्वाभाविक कंठ-स्वर विकृत हो जाता है। केवल यही नहीं किन्तु दो स्वरों के बीच की श्रुति* अप्रकाश रहने के कारण और हारमोनियम का स्वर ऊँचा होने के कारण कर्णगोचर नहीं हो सकते। गुरुओं से सुना है कि जिसका जिस प्रकार कंठस्वर है उसका उसी प्रकार अभ्यास करने से तंत्री के स्वर के समान होता है और **अपने स्वर को पहले कान में प्रतिष्ठित करके** फिर किसी तार के यंत्र के साथ मिला कर स्वर की साधना (कर्तव्य) करनी चाहिए। इस प्रकार अभ्यास करने से कंठस्वर मार्जित होता है और साधक का भी स्वर का ज्ञान और दृष्टि प्राप्त होते हैं। इसके बाद स्वर सप्तक (सर ग म प ध न) के बोध के लिए तंत्री की सहायता लेनी पड़ती है। मनुष्य-कंठ वातज गुण के कारण रूखा और ऊँचा स्वर उत्पन्न करता है और पित्तज गुण के कारण भारी और गम्भीर और कफज गुण के कारण स्निग्ध और मधुर स्वर का उत्पन्न करता है। यह सम्भव नहीं है कि वातजगुण प्रधान कंठ से मधुर स्वर या पित्तज गुण प्रधान कंठ से उच्च स्वर निकाला जाय। तंत्री की सहायता से कंठस्वर मार्जित और प्रिय हो सकता है। यही प्रथा प्राचीनकाल से चली आ रही है। परन्तु आज-कल हारमोनियम का व्यवहार हो चला है। इस यंत्र में बारह स्वर बँधे हुए हैं। किसी का दबाने से ही स्वर निकलता है और थोड़ी सी चेष्टा से ही कंठस्वर मिला सकते हैं। परन्तु परिणाम यही होता है कि **कर्ण और कंठ यंत्र के दास बन जाते हैं।** तार के यंत्रों में किसी तार पर आघात करने से कम्पन (अनुरागन—युक्त-ध्वनि या स्वर) निकलती है और कुछ काल तक स्थायी रहती है। हारमोनियम यंत्र से इस प्रकार का स्वर नहीं निकल सकता। कारण, दबाने से केवल अनुरागनहीन स्वर निकलता है और अँगुली हटा लेने से स्वर निकलना बन्द हो

*स्वरूपमात्रश्रवणाद्वादे ऽ नुरणनात्मकः ।

श्रुतिरित्युच्यते भेदास्तस्य द्वाविंशतिर्मेताः ॥

नादाच्च श्रुतयो जातास्ततो षड्जादयः स्वराः

तेभ्यश्च मूर्च्छना प्रोक्तास्तानाख्या ग्रामसंभवाः ॥

जाता है। सारांश यह है कि इस यंत्र में स्वर असम्पूर्ण रहने के कारण साधना के लिए यह विशेष प्रकार से अनुपयोगी है।

स्वर-परिवर्तन के विषय में कुछ कहना आवश्यक है। सप्त-स्वर में षड्ज, मध्यम व पंचम ये तीनों स्वर षड्ज भाव से हैं परन्तु ऋषभ व धैवत पंचम भाव से और गान्धार व निषाद मध्यम भाव से हैं। इस-लिए मध्यम व पंचम को षड्ज बनाने से पूर्व षड्ज से उनका सम्बंध रहता है। परन्तु ऋषभ, गान्धार, धैवत व निषाद इन स्वरों को षड्ज करने से पूर्व षड्ज के साथ उनका सम्बंध कठोर हो जाता है। इन बातों को स्मरण रखने से प्रतीत होगा कि यथेच्छा स्वर-परिवर्तन करना विज्ञान-सम्मत नहीं हो सकता।

तम्बूरा और स्वर साधना—स्वर-साधना के लिए तंत्रीयुक्त यंत्र विशेष प्रकार से उपयोगी है और तम्बूरा यंत्र का व्यवहार प्राचीन काल से होता आया है। प्रवाद है कि गन्धर्व-पति तम्बुरु ने इस यंत्र का आविष्कार किया था और इसी यंत्र से नारद और अन्यान्य ऋषिगण गीत वाद्य करते थे। आज-कल इस यंत्र का अपव्यवहार प्रायः देखा जाता है। किसी तार का स्वर आघात के बाद लीन होते न होते ही उस पर फिर आघात किया जाता है। गुरुओं से सुना है कि तम्बूरा के तारों में से सप्तक के सब स्वर निकलते हैं और सब मिल कर एक ही स्वर की* उत्पत्ति होती है। तम्बूरा को यत्न अथवा मनोयोग से न बजाने से स्वरों की ठीक ठीक व्युत्पत्ति नहीं होती है। “तम्बूरा छेड़ने” का नियम गुरु से निम्न प्रकार से सीखा है। निम्न सप्तक के षड्ज (१) पर आघात करके एक दो तीन उच्चारण करने में जितनी देर लगती है उतनी देर तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। ध्यान देने से प्रतीत होगा कि इस षड्ज स्वर के लय स्थान पर उसका अन्तःस्वर गान्धार गूँजने लगता है। इसके बाद एक दो उच्चारण करने में जितना समय लगता है उसी निम्नसप्तक के (२) मध्यम (अथवा पंचम, जैसा तार बाँधा है) पर आघात करके उतनी देर तक प्रतीक्षा करनी चाहिए। फिर मध्य सप्तक के दोनों षड्ज (३-४) तारों पर एक एक आघात करके (एक उच्चारण करने में जितनी देर लगती हो उतने समय का अन्तर देकर) फिर निम्न सप्तक के षड्ज तार पर आघात आरम्भ करना चाहिए। आगे के चित्र से यह सब बातें स्पष्ट मालूम होंगी।

किसी किसी तंत्रकार का मैंने तम्बूरा बाँधने के समय मध्य सप्तक के दो षड्ज के बदले एक षड्ज और एक निषाद पर बाँधते हुए देखा है। इससे भी सब स्वर स्पष्ट निकलने लगते हैं।

कंठस्वर के साथ तम्बूरा के तार के स्वर को मिला कर यंत्र को ‘छेड़ना’ और गाना कर्त्तव्य है। कंठ से जो स्वर निकलता है तम्बूरा के तार के उसी स्वर पर आघात भी पड़ता है। दाहिने हाथ की तर्जनी के अग्रभाग से तारों पर नरम आघात करके निकलते हुए स्वरों को स्थिर चित्त से सुनना चाहिए। बड़े बड़े

*श्रुत्यनन्तरभावी यः स्निग्धोऽनुरणनात्मकः ।

स्वतो रंजयति श्रोतृचित्तं स स्वर उच्यते ॥

श्रुतिभ्यः स्युः स्वराः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः ।

पंचमो धैवतश्चाथ निषाद इति सप्त ते ॥

(संगीतरत्नाकर)

तंत्रकार वीणादि यंत्र बजाने के समय तम्बूरा छोड़ने के लिए अपना एक विशेष साथी, जो स्वर का ज्ञाता होता था साथ रखते थे और उनको छोड़कर किसी दूसरे आदमी को तम्बूरा छूने नहीं देते थे ।

निम्न सप्तक का मध्यम (या पंचम)	४, ५	(२) पम,
मध्य सप्तक का षड्ज	६	(३) ष,
मध्य सप्तक का षड्ज	७	(४) ष,
निम्न सप्तक का षड्ज	१, २, ३	(१) मरस,

सातों स्वर तम्बूरे में इसी क्रम से व्यक्त होते हैं ।

आलाप और गान—हारमोनियम में मध्यवर्ती स्वरों के अभाव होने के कारण मूर्च्छना और गमक नहीं निकल सकते और इसी लिए इस यंत्र की सहायता से स्वर का अभ्यास करने से आलाप अधूरा रह जाता है । प्राचीन तंत्रकार आलाप की चार विशेषताएँ* अर्थात् प्रथम “स्थायी” विलम्ब लय से, द्वितीय और “आरोही” और तृतीय “अवरोही” मध्य लय से और चतुर्थ “संचारी” द्रुत लय से वर्णालङ्कार युक्त करके “सरगम” या “स्वरवर्ण” के द्वारा दिखलाते थे । उसके बाद गान (ध्रुपद) को भी उसी प्रकार चार पद युक्त करके नाना छन्द के अंतर्गत करके उक्त तीन प्रकार के लय के साथ दिखाते थे । आज-कल आलाप का लोप हो गया है । यहाँ तक कि किसी किसी का विचार है कि ध्रुपद जानने से आलाप स्वयं ही आजाता है । आलाप के लक्षण पर कोई ध्यान नहीं देता वरन् केवल “ने ते ते री ने री तुम् तुम्” इत्यादि अपशब्दों के द्वारा कुछ देर तक स्वरों का विस्तार करके गवैये लोग गाना आरम्भ कर देते हैं और दो चार बार स्थायी और अन्तरा गाकर द्विगुण, चतुर्गुण, आड़ि, कुआड़ि इत्यादि कौशल दिखाने लगते हैं । परिणाम यह होता है कि थोड़े ही समय में बहुत से राग गाये जाते हैं परन्तु एक भी राग का रूप ठीक ठीक दिखाई नहीं पड़ता । स्वर की प्रतिष्ठा (कायम) करना गवैयों का प्रधान कर्तव्य है । आज-कल स्वर की ही प्रतिष्ठा नहीं होती, राग का स्वरूप दिखाना तो दूर रहा ।

हिन्दी में ध्रुपद गान की शिक्षा कंठपरम्परा से होती चली आ रही है । इसी लिए और कोई विशेष ग्रन्थ के न होने के कारण लोग अपना अपना मत चलाते आ रहे हैं । इससे संगीत कहीं कहीं

*आलापो गमकालसिरचरैवर्जिता मताः ।

प्रहांशतारमन्द्राणां न्यासाय न्यासयोस्तथा ॥

अभिव्यक्तिर्यत्र दृष्टा स रागात्ताप उच्यते ॥

† प्रवेशाक्षेपनिष्कामप्रासादिकमथान्तरम् ।

गीतं पञ्चविधं यस्मात् रागैरेभिः प्रयोजयेत् ॥

संगीतरत्नाकर ।

परिवर्तित, कहीं असम्पूर्ण और कहीं यथेच्छाचार हो गया है। मैंने देखा है कि कहीं तो अर्थहीन शब्दों का प्रयोग किया गया है, कहीं केवल दो तुक (पाद) का व्यवहार हुआ है और कहीं गायक अपनी इच्छानुसार लय वा ताल का सामंजस्य करके ध्रुपद गाते हैं। इस प्रकार का अर्थहीन, असम्पूर्ण और अशुद्ध संगीत का लोप हो जाना ही उत्तम है। जिस प्रकार आलाप में चार वर्णों के द्वारा स्वर की योजना होती है उसी प्रकार संगीत* में भी चार पद होते हैं अर्थात् उद्ग्राह, मेलापक, ध्रुव और आभोग। किसी किसी ने चारों पादों के अतिरिक्त भी रचना को है। परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ध्रुपद में चारों तुक न हेने से वह असम्पूर्ण रह जाता है।

गीत रचना करने के लिए अनेक विषयों का ज्ञान होना आवश्यक है। गण† का विचार, लघु गुरु भेद, दण्ड, छन्द इत्यादि विषयों का सम्पूर्ण ज्ञान व शिक्षा होनी आवश्यक है। इनका विचार रखते हुए संगीतरचना करने के बाद उसमें स्वर की योजना करने के लिए दस‡ विषयों की आवश्यकता होती है। ये सब सांगीतिक विषय गायकों का जानना चाहिए। प्रायः देखा जाता है कि गाने के समय गायक उत्तेजित हो जाते हैं और नाना प्रकार के मुद्रादोष दिखाई पड़ते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उद्दिष्ट स्वर का प्रकाश अथवा चलित स्वर का सामंजस्य नहीं होता। संगीत (गाना-बजाना)

* आदाबुद्गृह्यते गीते योनोद्ग्राहस्ततो भवेत् ।

मेलापको द्वितीयस्तुद्ग्राहस्तो मेलनात् ॥

ध्रुवत्वाद्ध्रुवसंज्ञस्तु तृतीयो भाग उच्यते ।

आभोगस्त्वन्तिमो भागो गीतपूर्णत्वसूचकः ॥

संगीतरत्नाकर ।

† शब्दानुशासनज्ञानमभिधानप्रवीणता ।

छन्दप्रभेदवेदित्वमलंकारेषु कौशलम् ॥

उद्ग्राहे दकारश्च भकारश्चान्तरे तथा ।

आभोगे तु तकारश्च त्रयो लक्ष्मी फलप्रदा ॥

नकारो नाशयेल्लक्ष्मी हकारस्तु हरेद्यशः ।

मकारः सर्वहृत्तस्माद् गीतादौ तत्परित्यजेत् ॥

द्विजवर्णोऽकवर्गाभ्यां चटाभ्यां क्षत्रियो भवेत् ।

तपाभ्यां वैश्यवर्णश्च यशाभ्यां शूद्रसंज्ञकः ॥

अकचटतपयशवर्गास्तेषामेतास्तु देवताक्रमः ।

सोमो भौमः सौम्यो जीवः शुक्रः शनिः राहुः ॥

‡ क्वचिदंशः क्वचिन्न्यासः षाड्वौडविते क्वचित् ।

अल्पस्वञ्च बहुस्वञ्च ग्रहांशन्याससंयुतम् ॥

मन्द्रतारौ तथा ज्ञात्वा योजनीया मनीषिभिः ।

ग्रामरागप्रयोक्तव्या विधिवद् दशरूपकाः ।

स्वर और लययुक्त होना चाहिए और एकांगी भी होना चाहिए अर्थात् जिस लय में गाना हो रहा है उसी लय में वादन भी होना चाहिए ।

अनेक गवैये जनसाधारण के समीप रुपये के लिए आते हैं और लोगों को स्वर के बाहरी भावों के विस्तार से चमत्कृत करते हैं । परन्तु इन लोगों में गुणी बहुत कम होते हैं और अपने को उस्ताद के नाम से प्रचार करके लोगों का और अपने को प्रतारित करते हैं । गायक में किन किन विषयों का ज्ञान होना चाहिए वह निम्नलिखित गान में दिखाया गया है । स्वर्गीय वीणाकार महेशचन्द्र सरकार महाशयजी ने यह गाना मुझे सिखाया था ।

सामन्त-ढीमा तिताला

आदि सप्तसुर, सप्त प्रकार तीव्रतम, तीव्रतर, तीवर, शुद्ध कामल, अति कामल, सुकार ॥ १ ॥

शुद्ध अन्तरीत, काकली, कैशिकी भेद, द्वादश विकृत, ग्रह अंश न्यास दुरत, मध्य, विलम, आलाप चार ॥२॥

श्रुति मुरछन, ग्राम, गमक, खंडमेरु, गिरभंजन, रागलिप्त, समलिप्त, कूटतान, अलंकार ॥३॥

पचीस दोष, त्यागे दशगुन लेवे, गायक होय काव्य में धरे तो रिभावे, शाहजहान गुण अपार ॥४॥

(१०) रागों के भेद ।

प्रचलित रागों में एक ही प्रकृति के रागों का भेद और कुछ उपदेश जो मैंने गुरु से सीखा है नीचे दिये जाते हैं । जो लोग कंठ अथवा तार के यंत्र से संगीतचर्चा करते हैं वे इन बातों को सहज में ही समझ सकेंगे । परन्तु हारमोनियम वालों के लिए ये बातें असाध्य रहेंगी ।

आसावरी—शुद्ध सम्पूर्ण—स रा गा मा प धा ना ।

इस राग में “रा गा मा” और “धा ना स” एक साथ नहीं लगेगा । आरोहण में गान्धार व निषाद लिप्त भाव से लगेगा । परदाहीन यन्त्र में (सुरश्रृंगार, सारंगी, स्वरोद) इसको सूत कहते हैं, पर्दा-युक्त यन्त्र में (वीणा, सितार, एसरार) इसको मीड़ कहते हैं । ‘रा गा मा’ व ‘धा ना स’ स्पष्ट व्यवहार होने से भैरवी व कानड़ा रागों की छाया की आशंका है । तन्त्रकार लोग इस राग में ऋषभ व धैवत अति कोमल व्यवहार करते हैं ।

कल्याण—शुद्ध सम्पूर्ण—स र ग म प ध न ।

इस राग में ऋषभ, मध्यम, व धैवत्, अति तीव्र व्यवहार होता है । तन्त्रकार लोग मन्द्र सप्तक के निषाद को षड्जवत् करके मध्य सप्तक के गान्धार तक मीड़ देकर कल्याण राग का आरोहण करते हैं अर्थात् नं, र, ग, पुनः पंचम स्वर को तीव्रमध्यम के मीड़ से धैवत् व निषाद का स्वर

दिखाते हैं अर्थात् म, ध, न, इस ठाट में इमन राग भी गाया जाता है; इमन राग में मध्य सप्तक के निषाद से अवरोहण पहले देखा जाता है, पंचम, स्वर से तीव्र मध्यम होकर ऋषभ तक आकर गान्धार सुर में स्थिति, पुनः ऋषभ से षड्ज में न्यास अथवा विश्राम । इमन व कल्याण में तीव्र मध्यम का ही व्यवहार देखा जाता है [कल्याण में अति तीव्र]

कानड़ा (दरबारी) शुद्ध सम्पूर्ण—स र गा मा प धा ना ।

इस राग में सातों स्वर आरोहण व अवरोहण में स्वाधीन भाव से लगेंगे । मन्द्र सप्तक के पंचम व धैवत मीड़ युक्त होकर मध्य सप्तक के षड्ज तक जायगा अर्थात् नांसर नांधापं मांपंधानांस । इसी प्रकार तार सप्तक के ऋषभ से मध्यसप्तक के निषाद, धैवत, पंचम होकर गान्धार, ऋषभ, व षड्ज स्वर में स्थिति । अवरोहण में धैवत अधिक काल व्यवहार करने से आशावरी राग की स्पर्शांका । एक बारगी धैवत स्वर न लगाने से आड़ाना (नाप) राग की आशंका । इस राग में ऋषभ अति तीव्र है ।

कानड़ा (आड़ाना)—शुद्ध सम्पूर्ण—स र गा मा प धा ना ।

इस राग में ऋषभ के साथ गान्धार और धैवत निषाद के संग तार षड्ज एक संग व्यवहार नहीं होता । “र मा गा” और “धा ना प” इस राग में व्यवहार होता है; अवरोहण में नाप, गामा प र स व्यवहार होता है । धैवत का व्यवहार इस राग में अल्प होता है; “गा र स” व “ना धा प” इस राग में व्यवहार नहीं होगा ।

कानड़ा (बागेश्री) शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प धा ना ।

इस राग में गान्धार मध्यम के आश्रय पर चलता है, तन्त्रकार लोग कहते हैं कि बागेश्री का मध्यम गान्धार करीब करीब मालकोष से मिलता है; अर्थात् मागामारस । इस राग में पंचम आरोहण अथवा अवरोहण में एकही स्थान में मध्यम के मीड़ के साथ व्यवहार होता है; स्वाधीन भाव में नहीं । स्वाधीन भाव से पंचम लगाने से “सिन्धु” राग की आशंका; ऋषभ व गान्धार एक साथ व्यवहार करने से “दरबारीकानड़ा” राग की आशंका ।

कानड़ा (कौशिकी) शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प धा ना ।

मालकोष व दरबारी कानड़ा के मेल से कौशिकी हुआ । तन्त्रकार लोग कहते हैं कि सम्पूर्ण मालकोष व कौशिकी कानड़ा एक ही है । परन्तु कौशिकी राग में मालकोष की छाया मात्र दिखाकर कानड़ा का रूप प्रकाश करना होगा; सम्पूर्ण मालकोष राग में कानड़ा की छाया-मात्र दिखाकर मालकोष का रूप प्रकाश करना होगा । इन दोनों रागों में यही भेद है ।

कानड़ा (नायकी) शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प धा ना ।

इस राग में गान्धार व धैवत लिप्त भाव (वक्र) से व्यवहार होता है इसीलिए इसका नाम “नायकी” है । गान्धार व धैवत वर्जित करने से “सारंग” (ओड़व) होगा । स्पष्ट भाव से गान्धार व धैवत लगाने से दरबारी कानड़ा हो जायगा । इसी कारण पूर्वज नायक लोगों ने लिप्त भाव से गान्धार व धैवत लगाकर कानड़ा का रूप प्रकाश किया है ।

कानड़ा (मुद्राकी) मिश्र सम्पूर्ण । स र गा ग मा म प धा ध ना न ।

तन्त्रकार लोग कहते हैं कि हिण्डोल व दरबारी कानड़ा के मेल से मुद्राकी बना है ।

कानड़ा (बहार) शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प धा ना ।

सप्त स्वर के शेषार्द्ध से इस राग का आरम्भ अथवा उत्थान । अर्थात् “मा धा ना स” यह राग ध्रुपद अंग में चुटकी है । इस राग में आड़ाना, वागेश्रो, दरबारी, रागों का कुछ कुछ अंश लेकर बहार किया गया है इसी लिए इसका नाम बहार है ।

कामोद । मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा म प ध न ।

इस राग के अवरोहण में गान्धार व निषाद का व्यवहार नहीं है; आरोहण में धैवत का व्यवहार नहीं है; आरोहण में ऋषभ के साथ पंचम मीड़ के साथ व्यवहार होगा; और तीव्र मध्यम के साथ पंचम व निषाद का व्यवहार होगा, अवरोह में कोमल मध्यम के साथ ऋषभ का व्यवहार होगा ।

प्रस्तार—र प म प ग म प मा र स म प न स ध प ग म प मा र स ।

केदारा । मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा म प ध न ।

इस राग के आरोहण में ऋषभ व गान्धार स्पष्ट व्यवहार नहीं होता है; लिप्त भाव (वक्र) से व्यवहार होता है । षड्ज स्वर से कोमल मध्यम, अति अल्प गान्धार, तीव्र मध्यम व पंचम होकर कोमल मध्यम, अति अल्प गान्धार ऋषभ होकर षड्ज स्वर में विश्राम; अर्थात् स मा ग् म प मा ग् र स । अन्तरा में पंचम से तार षड्ज तक जाता है अर्थात् प प स न स न ध प मा मा ग् म प मा ग् र स । केदारा कल्याण जातीय राग है इसलिए स्वरान्तर में (न ध म मा) कल्याण राग की छाया दिखाई पड़ती है ।

कुमारी । शुद्ध षाड़व । स रा ग म प न ।

श्रीराग के ठाट में धैवत वर्जित करने से कुमारी राग होगा ।

खम्बाज । षाड़व सम्पूर्ण । स ग मा प ध ना—ना ध प मा ग र स ।

ध्रुपद अङ्ग में इस राग का व्यवहार थोड़ा है, ख्याल टप्पा में इस राग का चलन अधिक है । सितार में यह राग और भैरवी, लूम, भिंभौटी, सिंधु, काफी, देश इत्यादि रागों के गीत और धुन बजते हैं । खम्बाज में अति तीव्र गान्धार व धैवत व्यवहार होता है; गान्धार व निषाद का व्यवहार सावधानता से करना चाहिए नहीं तो बेहाग राग की आशंका है ।

गौरी । शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग मा प ध ना ।

यह राग दो प्रकार का है एक चित्र दूसरा ललिता । चित्र गौरी का उक्त ठाट में (भैरव) आलाप व गानक्रिया होता है, ललिता गौरी में दोनों मध्यमों का व्यवहार है परन्तु ललित में दोनों मध्यम का व्यवहार एक साथ है; गौरी में पृथक् भाव से है । चित्रा गौरी का प्रस्तार—स न धा स रा ग रा धा प मा प मा ग रा स । ललिता गौरी का प्रस्तार—स रा ग मा ग रा म ग रा स; धा प मा ग रा म ग रा स ।

छाया । शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग मा प ध ना ।

प्राचीन गुणी लोग कहते हैं कि इस राग में कल्याण जातीय सब राग (कामोद, कंदारा, हम्बीर, अलैया, कल्याण इत्यादि) की छाया है; परन्तु स्पष्ट भाव से इन रागों में से कोई राग भी नहीं प्रकाश होता; इसलिए इस राग का नाम “छाया” है ।

छायानट । शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग मा प ध ना ।

इस राग में किसी किसी मत से दोनों निषाद का व्यवहार होता है; मध्यम व धैवत इस राग में सावधानतापूर्वक व्यवहार करना उचित है नहीं तो कंदारा, कामोद, हमीर रागों की आशंका है ।

[छाया, छायानट, व नट इन तीन रागों के विषय में हमारी अभिज्ञता थोड़ी है]

जोगिया । षाड़व सम्पूर्ण । स रा मा प ध ना—ना धा प मा ग रा स ।

यह राग भैरव जातीय है । कोई कोई कहते हैं कि यह योगी लोगों का भैरव है, इस राग में अति कोमल निषाद का व्यवहार होता है; आरोहण में निषाद का व्यवहार तार षड़ज के साथ लिप्त भाव से है, स्वाधीन भाव से नहीं । इस राग में मा प धा, प धा ना विशेष रूप से व्यवहार होता है ।

जैतू (जयतू) । शुद्ध षाड़व । स रा ग म ध ना ।

अलीमहम्मदख़ाँ रबावी (वड़कू) कह गये हैं कि जयतू, मारुवा, व पुरिया, तीनों राग सम प्रकृति के हैं; हिण्डोल अंग में जयतू, श्री अंग में मारुवा, कल्याण अंग में पुरिया समप्रकृति के हैं ।

जयजयन्ती । मिश्र सम्पूर्ण । स र गा ग मा प ध ना न ।

प्राचीन तन्त्रकार लोगों ने इस राग को दो रागों में शामिल किया है; एक मल्लार, दूसरा कानड़ा । जो लोग मल्लार राग के अन्तर्गत करके गाते हैं उनको अवरोहण में गान्धार सावधानता से लगाना चाहिए । जो लोग कानड़ा (वागेशी) का अन्तर्गत करके गाते हैं उनको तीव्र धैवत व कामल निषाद का व्यवहार करना उचित है । जो लोग दरबारी कानड़ा के अन्तर्गत करके गावेंगे उनको अवरोहण में कामल—निषाद व कामल धैवत व्यवहार करना उचित है । दोनों गन्धार इस राग के आरोहण व अवरोहण में एक साथ व्यवहार होता है ।

टोड़ी (आसावरी) । आसावरी व दरबारी टोड़ी के मेल से यह राग उत्पन्न हुआ । भैरवी राग का बचा कर यह राग गाना चाहिए ।

टोड़ी (देसी) । भीमपलासी व दरबारी टोड़ी के मेल से यह राग बना है ।

टोड़ी लाचारी । मुलतान व दरबारी टोड़ी के मेल से इस राग की उत्पत्ति हुई है ।

टोड़ी (गान्धारी) भैरवी के ठाट में यह राग आया जाता है, प्राचीन तन्त्रकार लोग कहते हैं कि इस राग में रामकली राग का मिश्रण है ।

टोड़ी (हूसेनी) सम्पूर्ण षाड़व । स रा गा म प धा न—न धा म गा रा स ।

टोड़ी (विलासखानी) शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा म प धा न ।

पूर्वज गुणी लोगों का कथन है कि तानसेन ने कन्या के विवाह में दामाद (विलासखाँ) को सौ राग व चार सौ ध्रुपद दहेज के तौर पर दिये थे (सिखाये थे) तानसेन फिर उन रागों को नहीं गाते थे । तानसेन के मरने के बाद उनका मृतक शरीर विलासखाँ के दरबारी टोड़ी (उन रागों में से एक राग) गाने से हिला रहा । तब से इस राग का नाम विलासखानी टोड़ी हुआ है । दरबारी टोड़ी और विलासखानी टोड़ी एक ही ठाट में गाया जाता है ।

टोड़ी (खट) यह राग भी भैरवी के ठाट में गाया जाता है परन्तु आरोहण में ऋषभ नहीं लगता है; किसी किसी मत से इसमें दो गान्धार का व्यवहार है ।

तिलक । शुद्ध षाड़व । स र ग मा प न ।

यह राग पंजाब प्रदेश में अधिक प्रचलित है; ध्रुपद अंग में इस राग का व्यवहार थोड़ा है ।

तिलक कामोद । तिलक व कामोद के मेल से यह राग उत्पन्न हुआ है; यह राग भी ध्रुपद अंग में थोड़ा व्यवहार होता है; ख्याल अथवा गत में ज्यादातर सुना जाता है ।

देव गान्धार । यह राग टोड़ी का अन्तर्गत है; इस राग में दोनों ऋषभों का एक साथ व्यवहार है ।

देसकार । शुद्ध षाड़व । स र ग प ध न ।

इस राग में कोई कोई तन्त्र कोमल ऋषभ तीव्र मध्यम का व्यवहार करते हैं । जिस मत से

विभास में निषाद का व्यवहार है उसी मत के अनुसार देसकार में तीव्र मध्यम का व्यवहार होता है ।

अलीबक्स (धम्मारी) उस्तादजी ने शुद्ध षाड़व कह कर सिखाये हैं; और भी कहे हैं कि इसमें कोमल ऋषभ व्यवहार होने से देसकार का रूप ग़राब नहीं होगा; भूपाल व विभास राग के बीचों-बीच से इसकी उत्पत्ति है ।

धनाश्री । शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग म प धा न ।

तन्त्रकार लोग इस राग को “दिन का पूरीया” कहते हैं । इस राग में पंचम लिप्त भाव से व्यवहार होता है; धैवत का स्वाधीन व्यवहार नहीं होता है; मीड़ के साथ व्यवहार होता है ।

धवलश्री । शुद्ध षाड़व । स रा ग प धा न ।

यह राग बहुत कम सुनने में आता है ।

पटमँजरी । सम्पूर्ण ओड़व । यह राग भी बहुत कम सुनने में आता है ।

धवलश्री व **पटमँजरी** के विषय में हमारी अभिज्ञता अल्प है ।

पंचम । मिश्रषाड़व । स रा गा ग मा म धा ध ना न ।

हिरडोल, मालकोष, बसंत या ललित, यह तीन रागों के मेल से “पंचम” बना है ।

पुरवी (पूर्वी) शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग म प धा न

इस राग में धैवत स्वर व मध्यम पञ्चम के मीड़ से व्यवहार होता है, स्वाधीन भाव से धैवत का व्यवहार नहीं है । ललित का धैवत भी इसी प्रकार का है । किसी किसी मत से दोनों मध्यम का व्यवहार होता है, परन्तु बेहाग की आशंका है ।

पुरिया । शुद्ध षाड़व । स रा ग म धा न

इस राग का धैवत तीव्र मध्यम के मीड़ से व्यवहार होता है; यह राग कल्याणांग है, अर्थात् इसका गान्धार कल्याण के गान्धार के सदृश है; कोई कोई इस राग में अति कोमल धैवत भी लगाते हैं ।

बसंत । ओड़व षाड़व । स ग म ध न—न ध मा ग रा स ।

किसी किसी मत से दोनों मध्यमों का व्यवहार एक साथ होता है; परन्तु ललित राग की आशंका होती है । प्राचीन तन्त्रकार लोग इस राग को हिण्डोलांग कहते हैं, आरांही में तीव्र मध्यम लगाते हैं; अवरोही में कोमल व तीव्र मध्यम भिन्न प्रकार से व्यवहार होता है ।

बिभास । शुद्ध ओड़व । स र ग म ध ।

प्राचीन तन्त्रकार लोग इसको भैरवांग कहते हैं; और ऋषभ धैवत कोमल व्यवहार करते हैं । इस राग में मंद्र सप्तक का व्यवहार नहीं होना चाहिए नहीं तो भूपाली राग की आशंका है ।

बेलावल । (अलहिया) शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग मा प ध न ।

इस राग में धैवत स्वाधीन और कम्पित व्यवहार होता है; छाया नट अथवा हम्मीर के धैवत की तरह नहीं; आराहण में मध्यम के साथ पंचम रहते हुए भी ऋषभ गान्धार के साथ पंचम का व्यवहार होने से इस राग का रूप प्रकाशित होता है; अर्थात् “र ग प” । ईमन बेलावल के मध्यम से इस राग का मध्यम अल्प है ।

बेलावल (ईमन) शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग मा प ध न ।

राग का जैसे इमन कल्याण है वैसे ही दिन का राग इमन बेलावल है । इस राग में किसी किसी मत से तीव्र मध्यम भी व्यवहार होता है, लेकिन ध्रुपद अंग में कोमल मध्यम ही का व्यवहार होता है, तन्त्रकार लोग इसका दिन का कल्याण कहते हैं ।

देवगिरी व देवसाव के विषय में कुछ विशेष शिक्षाप्रद पदार्थ नहीं है, पुस्तक में इन रागों की स्वर-लिपि है, देखने से ज्ञात होगा ।

बेहाग । ओढ़व सम्पूर्ण । स ग मा प न—न ध प मा ग र स ।

इस राग को ध्रुपद अंग की चुटकी कहते हैं, ध्रुपदी लोग इस राग के बदले शंकरा गाते हैं ।

भैरव । शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग मा प धा न ।

इस राग में अति कोमल ऋषभ व धैवत का व्यवहार होता है; रा मा ग प; ग मा न, ग मा ग मा ग रा, इन स्वरों से इस राग का परिचय होता है । किसी किसी मत से यह राग ओढ़व है; उसकी ठाट “स ग मा धा न” बनारस की सहनार्ई वालों में से कोई कोई इस राग का आलाप करते हैं । सम्पूर्ण भैरव को वसंत भैरव कहते हैं ।

भीम पलासी । ओढ़व सम्पूर्ण । स गा मा प ना—ना ध प मा गा र स ।

इस राग में गान्धार व मध्यम का व्यवहार एक साथ होने पर भी मालकोश व आड़ाने के गान्धार व मध्यम से पृथक् समझना चाहिए, अड़ाना में मध्यम गान्धार व गान्धार में स्थिति; मालकोष में गान्धार मध्यम व मध्यम में स्थिति; भीम पलासी में मध्यम आश्रित गान्धार मध्यम, मध्यम में स्थिति; अर्थात् मध्यम स्वर के साथ गान्धार बोला कर मध्यम में स्थिति ।

प्रस्तार—अड़ाना—नां स र मा गा धा ना प, गा मा प र स ।

„ —मालकोष—नां स गा मा गा मा, धा ना धा मा गा मा स ।

„ —भीमपलासी—नां स मा गा मा प मा गा र स ।

भूपाली । शुद्ध ओढ़व । स र ग प ध ।

इस राग में मन्द्र धैवत के साथ मध्य सप्तक के गान्धार का सम्बन्ध है; (विभास में यह बात नहीं है) कोई कोई इस राग में निषाद का व्यवहार करते हैं; तन्त्रकारों के मत से वह विरुद्ध है; ।

भैरवी । शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा मा प धा ना ।

ध्रुपद अंग में यह राग थोड़ा व्यवहार है, ख्याल, टप्पा, में यह राग ज्यादा देखा जाता है और इस राग में खूबसूरती पैदा करने के लिए तीव्र मध्यम व तीव्र ऋषभ भी लगते हैं ।

मल्लार । (गौड़) शुद्ध षाड़व । स र मा प ध ना ।

इस राग में धैवत का व्यवहार और स्वरों से अधिक है, मध राग में धैवत कम लगता है इसलिए वह विवादी है; गौड़ मल्लार में धैवत ज्यादा लगता है इसलिए वह वादी है; इस राग का उत्थान प्रायः धैवत से देखा जाता है; ।

ललित । मिश्र षाड़व । स रा ग मा म धा न ।

इस राग में दोनों मध्यमों का व्यवहार एक साथ है; कामल धैवत का व्यवहार स्वाधीन भाव से नहीं है बल्कि मध्यम के घसीट से या पूर्वी के धैवत के सदृश है । तन्त्रकार लोग ललित, वा पूर्वी के धैवत का विचित्र धैवत कहते हैं ।

रामकेली । शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग मा प धा न ।

यह राग भैरव जातीय है । भैरव राग में “गमा” संगति व रामकेली में “राग” संगति । रामकेली में धैवत का व्यवहार भैरव से ज्यादा है; परन्तु रामकेली का धैवत निषाद आश्रित है । प्रस्तार (रामकेली) धा प धा प मा ग रा ग; भैरव का प्रस्तार—ग मा प मा ग मा ग मा रा स ।

शंकरा । षाड़व सम्पूर्ण । स ग म प ध न—न ध प म ग र स ।

तन्त्रकार लोग बेहाग के बदले “शंकरा” का अधिक पसंद करते हैं । शंकरा में निषाद अति तीव्र लगता है ।

शुहा । सुघरई । शुद्ध षाड़व । स र गा मा प न ।

इन दोनों रागों का दिन का कानड़ा कहते हैं । तन्त्रकार लोग इन दोनों रागों का सारंग मिलित कहते हैं; अर्थात् प्रथम अर्ध (स र गा मा) कानड़ा, द्वितीय अर्ध (मा प ना सं) सारंग; अवरोहण में (ना प मा) सारंग, व (गा र स) कानड़ा देखा जाता है ।

सोहिनी । ओड़व-षाड़व । स ग मा ध न—न ध मा ग रा स ।

इस राग में तन्त्रकार लोग कामल मध्यम का व्यवहार करते हैं, किसी किसी मत से दोनों मध्यमों का व्यवहार होता है; परन्तु यह युक्ति-विरुद्ध है ।

परज में भी दोनों मध्यमों का व्यवहार होता है; परन्तु वह भी युक्ति-विरुद्ध है; तन्त्रकार लोग तीव्र मध्यम का व्यवहार करते हैं ।

श्री । शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग म प धा न ।

इस राग में अति तीव्र मध्यम का व्यवहार होता है । प्रधान स्वर विस्तार आरोहण में षड्ज से धैवत तक, व अवरोहण में धैवत से षड्ज तक घसीट से होगा ।

मल्लार (मेघ) शुद्ध षाड्ज । स र मा प ध ना ।

इस राग में ऋषभ, मध्यम, व पंचम, सारंग राग के समान व्यवहार होता है; धैवत इस राग में थोड़ा व्यवहार होता है; अर्थात् ध ना स व्यवहार नहीं होता है, पधस, पनास, व्यवहार होता है, निषाद, कं साथ धैवत का व्यवहार भी थोड़ा है ।

मल्लार (धूरिया) मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा प ध ना न ।

इस राग में गान्धार के साथ मध्यम, व धैवत के साथ निषाद के व्यवहार होने से मल्लार राग में खूबसूरती पैदा होती है । बरसात के मौसम में जब पहले पानी बरसता है व आंधी के साथ धूल उड़ती है उस समय यह राग गाया जाता है; इसलिए इस राग का धूरिया मल्लार कहते हैं । काशी के महेश बाबू (वीणाकार) ने यह राग हमें सिखलाया था ।

मल्लार (मियाँ)—इस राग में दोनों निषादों का व्यवहार एक साथ है ।

कुछ लोग इस राग में कामल गान्धार, कामल धैवत, व कामल निषाद, दरबारी कानड़ा के सदृश व्यवहार करते हैं । परन्तु मियाँ मल्लार की ठाट स र गा मा प ध ना न मन्द्र सप्तक के पंचम, धैवत, व निषाद होकर मध्य सप्तक का ऋषभ होकर षड्ज में स्थिति प्रसार—स धं नां धं नां पं मां धं नां नं स; स र गा मा र स, स र गा मा प ध ना ध प न स, वा प ध ना न स ।

मालश्री । शुद्ध ओडव । स ग म प न ।

किसी किसी मत से इस राग को चार स्वर (स ग प न) में गाते हैं, हिण्डोल राग के आरोहण में जैसे निषाद लिप्त भाव से लगता है वैसे ही “मालश्री” के अवरोहण में तीव्र मध्यम लगता है ।

मुलतान । ओडव सम्पूर्ण । स ग म प न—न धा प म गा रा स ।

कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि “दरबारी टोड़ी” से मुलतान निकला है परन्तु यह भ्रम है । टोड़ी की गान्धार ऋषभ-आश्रित है—रागा रागा । मुलतान की गान्धार स्वाधीन है—नं स गा । दरबारी टोड़ी का पंचम मुलतान के बनिस्बत कम लगता है । दरबारी टोड़ी में पंचम अधिक लगाने से मुलतान का भाव पैदा होगा ।

मुलतान का प्रसार—नं स गा म प न धा प म गा म प म गा रा स ।

दरबारी टोड़ी का प्रसार—नं स रा गा रा गा म प धा न धा प म गा रा गा रा गा रा स ।

सारंग (वृंदावनी) । शुद्ध ओड़व । स र मा प न ।

तन्त्रकार लोग कहते हैं कि “कानड़ा” व “मल्लार” सारंग से ऋषभ हुआ है; जिन महाशयों को स्वर का पूरा ज्ञान हुआ है उनके लिए एक स्वर से दूसरे स्वर में अथवा एक राग से दूसरे राग में आवागमन करना कुछ कठिन नहीं है । परन्तु एक दूसरे का रचा हुआ गाना दूसरे राग में गाने से उक्त ज्ञान का परिचय कोई नहीं पा सकता । स्वर्गीय गोपालचन्द्र चक्रवर्ती (नुला गोपाल) महाशय ने किसी समय “हिण्डोल” राग गाकर कामोद, हम्मीर, कल्याण, भूपाली, मालश्री, कंदारा, इन रागों की सृष्टि करके फिर हिण्डोल में लय करके हम लोगों को सुनाया था । इसी में से एक रागमाला उक्त चक्रवर्ती महाशय ने हमें सिखलाई थी । वह इस पुस्तक में लिखी है ।

सारंग (वड़हस) षाड़व ओड़व । स र ग मा प ध--न प मार स ।

स्वर्गीय अलामहम्मदख़ाँ (वीणाकार) ने हमें इस राग का कुल एक ही ध्रुपद सिखलाया था ।

सिंधु । शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प ध ना ।

इस राग में अति कामल गान्धार का व्यवहार होता है । ध्रुपद अंग में इस राग का चुटकी कहते हैं ।

सिन्दुरा । मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा प ध ना न ।

सिंधु व मल्लार के मेल से यह राग बना है, यह राग ज्यादातर धम्मार में गाया जाता है ।

हम्बीर (हम्मीर) । मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा म प ध न ।

इस राग के आरोहण में कामल मध्यम के साथ धैवत का व्यवहार होता है, आरोहण व अवरोहण में तीव्र मध्यम के साथ पंचम व गान्धार का व्यवहार होता है । प्रस्तार—स र ग म प ग मा ध न ध, न ध प म ग म र स । इस राग का धैवत निषाद आश्रित है; व गन्धार कंदार से कुछ अधिक व स्वाधीन है ।

हिण्डोल । शुद्ध ओड़व । स ग म ध न ।

कुछ लोग इस राग को चार स्वर में गाते हैं (स ग म ध) परन्तु अवरोहण में निषाद का व्यवहार मालश्री के तीव्र मध्यम के सदृश है ।

ग्राम—जैसे मनुष्य जिस स्थान पर अपने कुटुम्ब और स्वजन और आवश्यक सामग्री के साथ वास करता है उसको ग्राम कहते हैं उसी प्रकार २२ श्रुति, सप्तस्वर, मूर्च्छनादि को आश्रय करके जिस स्थान पर स्थापित होते हैं उसको भी ग्राम कहते हैं । संगीतशास्त्र में षड्ज, मध्यम और

गांधार केवल इन तीनों ग्राम का उल्लेख है। और उनके भी केवल षड्ज और मध्यम प्रचलित हैं, गांधार ग्राम अप्रचलित है। तीनों ग्रामों में सप्तस्वरों की स्थापना देखने से प्रतीत होता है कि ये केवल तीन भिन्न भिन्न स्वरग्राम अथवा ठाठ हैं। और इनमें सप्तस्वरों के विन्यास से जो राग बनते थे उनके द्वारा ब्रह्मा विष्णु और महेश्वर के अभ्युदय के लिए हेमन्त, ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं में तथा पूर्वाह्न, मध्याह्न और अपराह्न कालों में गाये जाते थे।* यही दैवकाल का संगीत कहा गया है।

उदात्त, अनुदात्त और स्वरित इन तीनों स्वरों से सामगान होता था। गान्धार और निषाद यह दोनों स्वर उदात्त और उच्च; ऋषभ और धैवत स्वर अनुदात्त और निम्न; पड्ज, मध्यम और पंचम ये तीनों स्वर स्वरित और मध्य हैं। उदात्त, अनुदात्त और स्वरित में २२ श्रुति† अन्तर्गत रहने के कारण वैदिक गानों में उनका प्रयोग षष्ठ स्वर विशिष्ट (पाड़व और ओड़व) ध्वनि के द्वारा होता था अनुमान कर सकते हैं। आधुनिक वैदिक गान से इसका कोई सामंजस्य नहीं है। कहते हैं कि उक्त दैव व वैदिक संगीत गन्धर्वलोक में दे दिया गया था।

त्रितंत्री—प्राचीन काल में इस यंत्र का व्यवहार होता था। तम्बूरा भी एक त्रितंत्री है जिसमें षड्ज का एक दूसरा तार भी लगा लिया गया है। प्रवाद है कि मुहम्मद तुगलक के समय में निज़ामुद्दीन औलिया (जैसे बैजू बावरा) के नाम के एक संगीत-सिद्ध महात्मा थे। अमीर खुसरू ने अपने त्रितंत्री यंत्र में राग आलाप करके उनका सन्तुष्ट किया था और उसी समय से वह सितार (तीन तार) के आविष्कर्ता के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। इस यंत्र में सांगीतिक सब विषय अर्थात् वादी, संवादी, अनुवादी, विवादी, मूर्च्छना, तान, गमक, अलंकार इत्यादि गूढ़ भाव से निहित हैं और सप्तस्वरों के आरोहण और अवरोहण के द्वारा निकाले जा सकते हैं।

गमक—पहले कह चुके हैं कि मूर्च्छना का उद्देश्य संक्षेप करना और तान का उद्देश्य विस्तार करना है और मूर्च्छना और तान से अलंकार बनाये हैं। तान दो प्रकार के होते हैं एक गमक युक्त (कम्पनयुक्त) दूसरा कम्पनहीन। एक ही त स्वर का दो बार उच्चारण करने से एक तीसरे स्वर का आभास मिलता है जो कि आरोही (परवर्ती स्वर) वर्ण अथवा अवरोही (पूर्ववर्ती

* क्रमाद् ग्रामत्रये देवा ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ।

हेमन्तग्रीष्मवर्षास्तु गातव्यास्तु यथाक्रमम् ॥

पूर्वाह्नकाले मध्याह्नेऽपणह्नेऽभ्युदयार्थिभिः ॥

—संगीतरत्नाकर ।

† चार श्रुति—स्वरित—स मा प—मध्य—१२ श्रुति

३ श्रुति—अनुदात्त र ध — निम्न—६ श्रुति

२ श्रुति — उदात्त ग न — उच्च — ४ श्रुति

बाईस श्रुतियुक्त सप्तस्वर सर ग मा प ध न ।

स्वर) वर्ण होता है । इसी प्रकार से दो तीन बार एक स्वर अथवा दो तीन स्वरों का बार बार उच्चारण करने से कम्पनयुक्त स्वर निकलता है जिसको गमक कहते हैं । तिरिप, स्फुरित, कम्पित, लीन गुम्फित, मुदित आदि अनेक प्रकार के गमक होते हैं । इनमें से कोई तो डमरुध्वनिवत् कोई नाना प्रकार के वक्रयुक्त कोई वेगयुक्त और कोई द्रुत होता है । इन सब विषयों का ज्ञान केवल गुरु के उपदेश ही से हो सकता है । पुस्तक या स्वरलिपि से नहीं हो सकता ।

स्वरलिपियों के संकेत

ऊर्ध्वरेखा शिरास्तारो मन्द्रो विन्दुशिरा भवेत् ।

इस वाक्य के अनुसार उच्चसप्तक के सुरों के ऊपर एक रेखा और निम्नसप्तक के सुरों के ऊपर एक बिन्दु का व्यवहार इस पुस्तक में किया गया है । और कोमल सुरों के आगे आ-कार (१) योग कर दिया गया है । यथा—

पृ० ५—भैरव । (स्वरलिपि की दूसरी और तीसरी सतर देखिए)

नं—निम्नसप्तक की तीव्र निषाद ।

धां— „ का कोमल धैवत ।

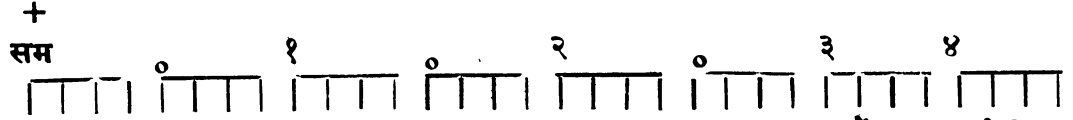
स—उच्चसप्तक का षड्ज ।

रां— „ का कोमल ऋषभ ।

तालों के संकेत

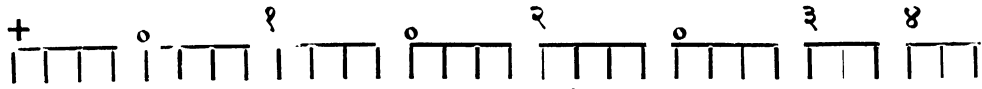
इस ग्रन्थ में जिन जिन तालों का व्यवहार हुआ है उनका संक्षेप विवरण नीचे दिया जाता है।

धीमा तेताला ३२ मात्रा—

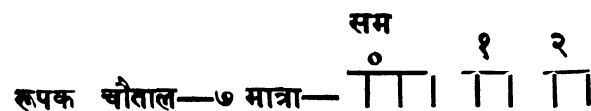
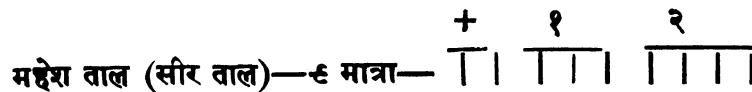
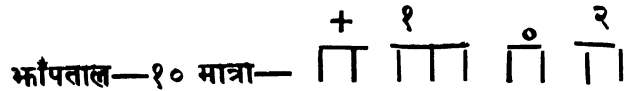
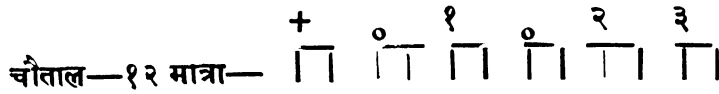
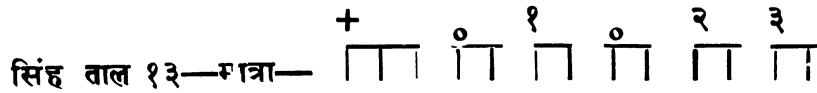
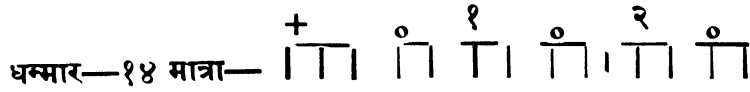
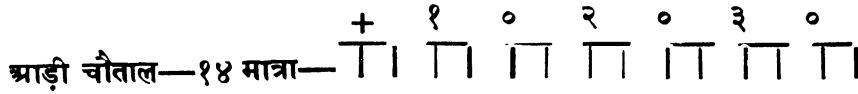


इस ग्रन्थ में कहीं कहीं आठ ताल दो दो मात्रा करके दिखाये गये हैं, शिष्यार्थी लोग चाहें तो उसी को बत्तीस मात्रा भी कर सकते हैं, अथवा आठ मात्रा करके चार ताल में भाग कर सकते हैं।

सवारी ३० मात्रा—



यह ताल भी १५ मात्रा में किया जा सकता है।



भैरव
दिवा प्रथम दश दण्ड
आश्विन-कार्तिक

सूची ।

राग नाम ।	बोल ।	रचयिता ।	ताल ।
भैरव	— (१) महावाकवादिनी	— तानसेन	चौताल ।
	— (२) आज मेरे भाग जागे	— तानसेन	धामार ।
	— (३) ग म प ध नी सप्तसुर	— वैजूबावरा	चौताल ।
	— (४) अकबर प्राणनाथ	—	चौताल ।
रामकेली	— (५) तुम उठि आई	— वाणीविलास	चौताल ।
	— (६) नयन रँगाये आये	—	धामार ।
	— (७) सरगम्	—	चौताल ।
योगिआ	— (८) जयगंगा जगतारिणी	— तानसेन	चौताल ।
	— (९) सरगम्	—	चौताल और तेताला ।
बेलावल	— (१०) अलहिया—प्रात उठि आई	—	चौताल ।
	— (११) सरगम्	— (पन्नालाल)	चौताल और तेताला
	— (१२) इमन—परमानन्दन	— केवलराम	रूपक चौताल ।
	— (१३) वेमनमोहन सेा	—	धामार ।
	— (१४) देवशाख—ज़ालिम अजब एक	— सुजानख़ाँ	भाँपताल ।
	— (१५) शुक्ल—भरन जो गई	—	चौताल ।
विभाष	— (१६) चिड़िया चुचुहानि	— नन्ददास	भाँपताल ।
	— (१७) रैन गँवाये आये	— तानतरङ्ग	धामार ।
आसावरी	— (१८) गतमतंगी सब	— ऊधोदास	भाँपताल ।
	— (१९) भोरहि आये मेरे	— तानसेन	धामार ।
	— (२०) सरग	— (छोटे प्यारख़ाँ)	तेताला ।

भैरव ।

शूलीरससमायुक्तो विरौति सर्वदा स्वयम् ।
 भीरवं कुरुते यस्मात् भैरवश्च ततः स्मृतः ॥
 नासादेशात्समुद्भूतो भैरवो भैरवः स्वयम् ।
 मणिपुरकनामेदं चक्रन्तस्त्रिमुक्तिदम् ॥

शास्त्र में उक्त है कि यह राग महादेवजी के दक्षिण-मुख से निःसृत हुआ था । शरत्काल में (आश्विन और कार्तिक) सब समय भैरव गाया जा सकता है । दिन के प्रथम दश दंड में भैरव राग और अन्यान्य सामयिक राग जो गाये जाते हैं उनके स्वरलिपि इस भाग में दिये गये हैं । किसी किसी ने प्रदोषकाल (सन्ध्यामुहूर्त) को शरत्काल कहा है इसलिए उस समय में भी भैरव गा सकते हैं ।

प्राचीन गुणियों का मत है कि इस राग को विशुद्धरूप से गाने से बिना बैल के कोल्हू का चलना, संक्रामक ज्वर का आरोग्य होना, सामान्य शिरःपीड़ा का दूर होना प्रभृति फल पाये जा सकते हैं । बगुले के स्वर (मध्यम) में गान करने से कदाचित् ये फल मिल सकते होंगे ।

गंगाधरः शशिकला तिलकस्त्रिनेत्रः ।
 सपैर्विभूषिततनुर्गजकृत्तिवासाः ।
 भास्वत्त्रिशूलकर एव नृमण्डधारी
 शुभ्राम्बरो जयति भैरवरागराजः ॥

सचन्द्रहासं फलकं दधानो निलीमकण्ठः शशिबद्धचूडः ।
 त्रिनेत्रधारी बहुधापदातिः प्रचण्डरूपः किल भैरवोऽयम् ॥

—संगीत पारिजात ।

‘संगीत पारिजात’ के मत से “भैरव” ओढ़वजातीय (र, प हीन) राग है । सम्पूर्णजातीय भैरव को ‘पारिजात’ में “वसन्त भैरव” कहा गया है । ‘संगीतरत्नाकर’ के मत से शुद्ध भैरव के ये लक्षण हैं—

धैवतांशग्रहन्त्याससंयुक्तः स्यात्समस्वरः ।
 तारमन्द्रोऽयमाषड्ज गान्धारशुद्धभैरवः ॥

इस देश में प्रचलित भैरव इसी मत के अनुसार गाया जाता है ।

३, ४

धां० धा० ह द ० सि	धा० धा० ० ङ त ब	प० प० हीपा ह ये	प० धा० मा० ता ०	स० स० ० ० ० ०	न० धा० ज ब तु म
प० रा० च र ण ०	ग० मा० ० ० ० ०	रा० स० सू ० के०;	धा० न० ता न से न	स० स० य ही प्र सा द	रा० रा० मर्मा ० ग त
न० धा० हैं ० ०	धा० ध० ज हां ज हां	स० न० तु र ट पु र त	मा० मा० त हां त हां ०	प० मा० की ० ० जि ये ०	स० रा० म हा वा क;

इस गीत का तीसरा भाग गाने के बाद “महावाक” कह कर “सम” दिखाया जा सकता है ।

(२) भैरव । धामार ।

गीत ।

आज मेरे भाग जागे भोरहि सुध लई । १ । मैं इतना भलो मनावति हूँ बलमा हो तुम पर बल
गई । २ । अधरन अंजन महाबर भाले मत गत और भई । ३ । तानसेन के प्रभु ठाढ़े रहो बलइया
लेहों जहाँ पै तिय नई । ४ ।

स्वरलिपि ।

क	धे	टे	० धे	टे	धा	आ	० ग	दि	न	दि	न	० ता	आ
रा	स	स	नं	स	नं	स	गमा	ग	रा	रा	मा	ग	प
भा	०	ग	जा	०	०	गे	भो०	०	०	र	हि	०	०
मा	मा	ग	रा	रा	स	स	नं	रा	स	नं	धां	नं	स
सु	ध	०	०	०	ल	ई;	आ	०	ज	मे	०	रे	०

२

प० प०	मा	धा	न	स	स	स	स	न	धा	प	प	प	प
मैं०	इ	त	ने	०	भ	लो	म	ना	०	व	ति	हैं	०
मा	मा	मा	न	धा	प	प	मा	मा	ग	रामा	गपा	मा	मा
ब	ल	मा	०	०	हो	०	तु	म	०	० ०	० ०	प	र
ग	ग	ग	रा	रा	स	स	नं	रा	स	नं	धा	नं	स
ब	ल	०	०	०	ग	ई;	आ	०	ज	मे	०	रे	०

मा अ	मा ध	मामा र न	प अं	प ०	प ज	प न	प म	धा हा	धा ०	प व	प र	प भा	प ले
मा म	मा ति	ग मा ० ०	न ०	धा ०	प ग	प ति	मा औ	मा ०	गमाप ००र	प ०	प ०	मा भ	प ई;
धा ता	धा ०	धा न	न से	स न	स के	स ०	स प्र	स भु	स ०	धान ठा ०	स डे	नधा र हो	प ०
मा ब	मा ल	प इ	प या	प ०	प ०	प ०	मान ले ०	धा हों	प ०	प ज	प हाँ	मा प	म ०
प ति	मा य	ग ०	रा ०	रा ०	स न	स ई;	नं आ	रा ०	स ज	नं मे	धां ०	नं रे	स ०

(३) भैरव । चौताल ।

सा रे रे ग म प ध नी सप्तसुर मो मन में ऐसी ही आवे । १ । आरोही अवरोही और संचारी
ले दिखावे नी ध प म ग रे सा नी नी ध ध प प म म ग ग रे रे सा सारे ग म प गमपधनी धनी सारे
सा नीध नीधपम पम गम नीध रेगमपम गग रेरे । २ । अलंकार नाद तीन ग्राम मूरछन श्रुति प्रमाण
सानिधप सारेगम कंठ बरण बनावे । ३ । कहेँ बैजू बावर सुनिये गोपाल नायक संगीत मुद्रा सुध बानी
तंत्र मत सो बतावे । ४ ।

१

ग	मा	०	धा	१	धा	०	मा	२	प	३	मा	ग
ग	म	प	ध	नी	स प्	त ०	० ०	सु	र	मो	० ०	रा
रा	रामा	ग प	मा	गग	गरा	ग	रा	स	स	रा	रा	
म	न ०	० ०	में	ऐ ०	सो ०	ही	आ	बे	सा	रे	रे	

प	प	धा	धा	न	स	स	स	न	स	स	स
आ	०	रो	०	ही	०	अ	व	रो	०	ही	०
(यसक)		(यसक)									
सराग मा मा		ग मा ग मा		ग रा स		न सन		स न		धा प	
औ० र ० स		चा ० ० ०		० ० री		ले ० ०		दि खा		० वे	
न धा		प मा		ग रा		स नन		धाधा पप		मामा गग	
रा रा स		सरा गमा		पग माप		धा नधा		न स		रा स नधा	
न धा पमा		पमा गमा		नधा रा		गमा पमा		गग रारा		स रारा	

(मीह)											
सधा पप		पप धामाप		पमा पपमा		पमा गरा		गमा पमा		गरा सस	
अ लं कार		नाद ती ० न		ग्रा ० ० म ०		मूर ० ०		छन श्रुति		० प्र माण	
सस नं धां		धांपं सस		राग गमा		पमा गरा		रारारा मागप		माग रास	
सा० नि ध		० प स ०		रे ग ० म		कं ठ ० ०		व र ण ० ० ०		ब ना ० वे	

धाधा धान		सस सरा		नस सस		धाधा नस		सरा सनधा		पधा पप	
क हें ० बै		० जू ० बा		० ० व र		सु नि ये ०		गो० पा ० ०		लना यक	
						(मीह)					
ग मा ग मा प		धाप पसा		नधा धाप		मामा गमान		धापप मागमा		ग रा स रार	
सं गी ० ० त		सु दा ० सु		ध ० बानी		तं त्र ० ० ०		म तसो ब ता ०		वे ० सा रे रे	

(४) भैरव । चौताल ।

अकबर प्राणनाथ और नाथन को नाथ ए जाको अष्टसिद्धी नवनिधि पाये । १ । परम दाता विधाता सबहां के मनरंजन हो दुखभंजन कल्पवृत्त प्रत्यक्ष धाये । २ । अन्तर्यामी स्वामी जग काज करवे को रसना एहसान लवलाये । ३ । जलालुद्दीन महम्मद ऐसी दाता की यह चहुँ लोक में यश गाये । ४ ।

+		०		१		०		२		३	
रा	स	स	स	न	धां	धांनं	स	स	स	स	स
प्रा	०	ण	०	न	थ	औ ०	०	र	ना	थ	न

रा को	रा ०	स ०	स ना	स ०	स थ	(मीढ़) रागमा गमाप ए ० ० ० ० ०	मा जा	ग ०	रा ०	स को	
सरा अ ट	ग मा ० ०	गमा ० ०	प ०	(मीढ़) मान सि ०	धाप धि ०	धा न	प व	मा ०	प मा नि ०	प धि	माग ० ०
ग पा	मा ०	गमाप ० ० ०	मा ये	ग ०	रास ० ०;	स अ	रा क	स ०	स ब	स ०	स र

२

पप प र	प म	धा दा	न ता	स ०	स स वि धा	न ०	स ता	स ०	रा रा स ब	रा हीं	सन के ०
स म	नधा न ०	स रं	नधाप जन ०	प हो	मा ०	ग दु	ग ख	गमा भं ०	पप ० ०	माग ज ०	रास ० न
स क	मा ल्प	गमा ० ०	प ०	(मीढ़) मान वृ ०	धाप च ०	धा ०	प प्र	मा ०	प मा त्य ०	पमा च ०	गरा ० ०
ग धा	मा ०	गमाप ० ० ०	मा ये	ग ०	रास ० ०;	स अ	रा क	स ०	स ०	स ब	स र

३

धा अ	धाप त र	धाप यामी	धा प स्वामी	पप जग	माधा ० का	धाधा ० ज	नस कर	नधा वे ०	पमा को ०	पमा र स	गग ना ०
रा रा ए ह	गमा सान	पमा ल व	ग रा स ला ० ये	धाधा ज ला	नस लुहों	सस म हं	सस म द	धाधा ऐ सी	नस दाता	नन की ०	धाप य ह
धास च हुं	स स ० ०	नधा लो ०	पमा क में	पमा य श	गरा ० ०	गमा गा ०	गप ० ०	मागरा ये ० ०;	सरा अ क	सस ० ०	सस ब र

(५) रामकेली ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग मा प धा न । चौताल ।

यह राग भैरवजातीय है । इसमें “राग” की संगति (मीढ़) है । इसमें भैरव के धैवत की अपेक्षा अधिक धैवत का व्यवहार होता है । भैरव में “गमा गरास” तान का व्यवहार होता है । रामकेली में “प मा ग रा ग” तान लगता है । इस राग में अति तीव्र गान्धार का व्यवहार होता है ।

गीत ।

तुम उठि आई भोरहि पिया के समीपे जागे अनुरागे रसपागे अँखियाँ खोलत न खुलाई । १ । अत डर जब आवे बातें करत तुतरात पग डगमगात पग डोलत न डुलाई । २ । सकुच से फिरत कहा नहिँ मानत सारी रैन जागत आये बौराने बौराई । ३ । बाणी विलास के प्रभु पीतम कहाँ रहे पूछत बतियाँ बोलत न बुलाई । ४ ।

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
मा	ग	रा	ग	ग	ग
आ	०	०	०	ई	०
स	न	धा	प	प	प
पि	या	०	के	स	मी
ग	ग	रा	ग	ग	ग
रा	०	०	गे	र	स
स	स	मा	मा	गमागमा प	मापमाप धा
अँ	खि	याँ	०	० ० ० ० ०	० ० ० ० ०
धा	प	प	मा	प	माग
खो	ल	त	न	खु	ला०
				राग	ग
				० ०	ई
				धा	प
				तु	म
				मा	प
				उ	ठि ;

२

प	प	धा	धा	न	स	स	स	स	स	स	स
अ	त	ड	र	ज	ब	०	०	आ	०	वे	०
धा	धा	न	स	स	स	स	स	रास	रास	नधा	प
बा	०	त	०	क	र	त	०	तु ०	त ०	रा ०	त

धा प	प ग	मा ड	प ग	मा म	ग गा	रा ०	ग त	स प	नधा ग०	प ०	प ०
धा डो	प ल	प त	मा न	प ड	माग ला०	राग ००	ग ई	धा तु	प म	मा उ	प ठि ;

३, ४

धाधा धाधा स कु च से	पप फि०	पप र त	मा मा ग मामा क हा ० न ठि	पप मा०	पप न त	धास सा री	न ०	धाधा रै ०	प न
धाधा प जा ग त	प आ	प ये	मामा मा बौ रा ने	गग बौरा	राग ० ई;	धान वाणी	स ०	सस विला	स स
स सस के प्र भु	धा पी	नस त म	सरा सनधा क हाँ ० ० ०	प र	प हे	गमाग मामा पू ० ० छ त		पप बति	प याँ
मापमाप धा ० ० ० ० ०	पधापधा स ० ० ० ० ०		न धाप बो ल त	माप न बु	मा ला	ग राग ० ० ई		धाप तु म	माप उ ठि

तीसरे भाग के बाद “तुम उठि” कह कर “सम” दिखा सकते हैं।

(६) रामकेली । धामार ।

गीत ।

नयन रँगाये आये हो लालन यही होरी के रात । १ । सकुच से मेरो हित आपन की कहन
न पाई बात । २ । कहु कहु लाल गुलाल कपोलन ढोले बोलत है जूम्भात । ३ । बलिहारी वा मोहिनी
पै कैसे आवन पाये जीउ तुम प्रात । ४ ।

स्वरलिपि ।

+	धा	धा	०	प	प	।	मा	प	मा	।	ग	राग	०	राग	रा
न	०	०	प	न	०	०	रं	गा	ये	आ	०	ये	हो	०	०
स	स	रा	स	स	स	स	रा	ग	मा	मा	प	प	धा	०	०
ला	ल	न	०	०	०	०	य	ही	०	हो	री	के	०	०	०
(गणक)	धा	धा	न	न	धा	धा	प	मा	प	मा	ग	रा	ग	०	०

२

प स	प कु	मा ख	धा से	धा ०	न ०	स ०	स मे	स ०	स रो	न हि	धा ०	न त	स ०
रा आ	स प	स न	न की	धा ०	प ०	प ०	मा क	मा ह	प न	धा न	धा ०	प पा	प ई
धा ०	धा ०	स ०	न ०	न ०	धा ०	धा ०	प ०	मा ०	प ०	मा बा	ग ०	रा ०	ग; त

३

धा क	धा हु	धा ०	प क	प हु	प ला	प ल	मा गु	मा ला	मा ल	रा क	रा पो	ग ल	ग न
मा ढी	प ले	प ०	न ०	धा ०	धा ०	धा ०	प बो	प ल	प त	मा हो	मा ०	मा जृम्	मा ०
न ०	धा ०	प ०	न ०	स ०	न ०	धा ०	प ०	मा ०	प ०	मा भा	ग ०	रा ०	ग; त

४

धा ब	धा लि	न हा	स ०	स री	स वा	स ०	रा मो	स हि	स नी	स पै	स ०	स ०	स ०
धा कै	धा ०	स से	न आ	धा व	धा न	धा ०	प पा	प ये	प ०	मा जी	मा उ	प तु	प म
धा ०	धा ०	स ०	न ०	न ०	धा ०	धा ०	प ०	मा ०	प ०	मा प्रा	ग ०	रा ०	ग; त

(७) रामकेली । चौताल और ढीमा तेताला ।

सरगम् ।

+	धाप	धामा	०	धाप	माग	१	माप	धाप	०	धाध	प	२	धाधा	पमा	३	पमा	गरा
गमा	पमा	गग	रास	सरा	गमा	पधा	नस	रा	स	नधा	पमाग	राग					

अन्तरा (१)

धाधा	पधा	धान	सञ्चा	धाधा	आस	राग	आमा	पमा	गरा	गरा	सञ्चा
राग	सन	धान	धाप	माप	माग	नधा	पमा	गञ्च	पमा	गरा	रास
सरा	गमा	पमा	गमा	पधा	नस	रास	नस	नधा	नधा	पधा	पमा
पमा	गमा	गरा	गरास	सरा	गमा	पधा	नस	रास	नधा	पमाग	राग

अन्तरा (२)

सस	रास	धांधां	सञ्च	रास	रास	नंधां	पंमां	गंरां	संञ्चां	संरां	गंमां
रांगं	मापं	गंमां	पंधां	मापं	धानं	पंधं	नंस	नंरा	सञ्चा	गमा	पमा
गग	रास	सनस	नधा	नधान	धाप	धापधा	पमा	पमाप	माग	रागमा	गरा
सराग	रास	सराग	माराग	पधान	सधान	रासन	धामाप	रासन	धामगा	रासन	धाराग

(८) योगिया ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग मा प धा ना । चौताल

गीत ।

जय गंगा जगतारिणी जगजननी पापहारिणी वेदवरणी वैकुण्ठवासिनी ॥ १ ॥

भागीरथी विष्णुपद पवित्रा त्रिपथगा जाह्नवी जगपावनी जगजानी ॥ २ ॥

ईशशीश मध विराजित त्रिलोकपालन कियं जीवजन्तु खगमृग सुरनर मुनि मानि ॥ ३ ॥

स्तुत करत तानसेन तुम हो भक्तजनन के भीष्मजननि भुक्तिमुक्ति प्रदायिनी ॥ ४ ॥

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
धा	प	प	प	प	प
ज	ग	ता	०	रि	णी ० ०
				माप	मापधा
				ज ग	० ० ०
				मीढ	
रा	रा	स	गरा	स	स
पा	प	हा	० ०	रि	णी
				रामा	पप
				वे ०	० द
				ना	धा
				व	र
				मीढ	
मा	प	मापधा	पमाग	ग	रा
व	कुं	० ० ०	० ० ०	वा	०
				स	स
				लि	नी
				रा	मा
				ज	य
				गं	
				पधा	पधाना
				गा ० ० ० ०	० ० ० ०

अन्तरा

धा भा	प गी	धामा ० ०	प र	स थी	स ०	स स वि ण्णु	स स प द	रासगरा ० ० ० प	स त्रि	सना त्रा०	धाप ० ०
प त्रि	पप पथ	प गा	मागमाप ० ० ० ०	प जा	पप ह्वी	पप जग	धापरा ० ० ०	स स पा ०	स स व नी	नानाधापधामा ० ० ० ० ० ०	
मा ज	प ग	मा ०	पधा ० ०	पमा ० ०	ग ०	रा जा	स नी	रा मा ज य	प गं	पधा पधाना गा ० ० ० ० ;	

संचारी, आभोग ।

मामामा ई ० श शो ० श	पपना धापप मधवि गजित	ससस नाधाप त्रि ० ० लो ० क	धापप मामा पाटन किये	गगरा जी ० व	सस जन्तु	रामा ख ग	पप मृग
नानाधा पप सु र ० न र	मामा गमाप सु नि मा ० नि	धापधामा पधास स्तु त ० ० क र त	सरसगरासस ता ० ० ० न से न	धाधा तु म	स हो	नाना भ क्त	धाधा ० ०
पपप जनन	पप के ०	मामा पपप भीष्म जननी	पधारस नाधाप भु ० ० क्ति सु ० क्ति	मापमापधापमाग प्र दा ० ० ० ० ० ०	रास यि नी	रामाप ज य गं	पधा पधा ना गा ० ० ० ० ;

(६) योगिजा । चौताल और तेताला ।

सरगम ।

धाआ आआ ग रा ए स	पधा नाधा रा ए मा प	पअ माप धाप धाना	धाप माग धाप माप	राए सआ धाप माग	सआ राए रास रामाप
--------------------	-----------------------	--------------------	--------------------	-------------------	---------------------

अन्तरा (१)

पधा आमा माग रास	पधा आस सग गरास	पधास राग नाधा आप	रास नाधा माप धाप	पअ माप माग आआ	माप धाप रास रामाप
--------------------	-------------------	---------------------	---------------------	------------------	----------------------

अन्तरा (२)

रारा माआ पअ पधा	गरा सअ पधा नाधा	रामा पअ पस आआ	माप धाआ नाधा पमा	पमा गरा नाधा पमाग	माप मापधा रास रामाप
--------------------	--------------------	------------------	---------------------	----------------------	------------------------

अन्तरा (३)

माप मापधा मापधा सराग	पमा गरास रास नाधाप	सरा गरास माप मापधा	रामाप धाआ पधा पधाना	पधा नाधाप धापमा गअ	मापधा सआ रास रामाप
-------------------------	-----------------------	-----------------------	------------------------	-----------------------	-----------------------

(१०) अलहिया ।

शुद्ध सम्पूर्ण । सर ग मा प ध न । चौताल ।

इस राग में धैवत स्वाधीन और कम्पित है; निषाद थोड़ा लगने के कारण विवादी है ।

गीत ।

प्रात उठि आई री ललनि लाल संग जागि अनुरागि प्रेम पागि लाजोहि अँखियाँ ॥१॥

बिथुरि अलक भूपक पलक डगमगि डिगन सों ललाके तवहुँ मैं लगियाँ ॥२॥

अलमानि नींद की अधानि पिया की प्रात मैं पहिचानि तव मुमकानि सखियाँ ॥३॥

नई वाला सखी प्रवस जोश करत आवन देख चलि जाति कनखियाँ ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
स नस आ ००	ध ध ई ०	प प री ०	ध ध ल ल	पमा प नि० ०	मा गर ला ल०
ग माप स ००	प ग ग जा	माग र ०० गि	स र अ नु	स स ० रा	स स गि ०
स स प्रे ०	गमा प म ० ०	प प पा ०	प प गि ०	धध न ला० जो	स नस हि ००
धध प ०० ०	ध ध अं खि	पमा प या० ०	धध पमा प्रा० ००	रग पप ०० ते०	धध न; उठि ०;

अन्तरा ।

प प बि धु	ध ध रि ०	न न अ ल	स स क ०	स स रु प	रध नस क ०००
स स प ल	स स क ०	स र ड ग	ग मा ० ०	गर ग म० नि	र स ० ०
स स डि ग	सन धप न ० सो०	धध मा लला ०	रग प ०० कं	धध न त व ०	स स स हुँ मैं ०
धध प ०० ०	ध ध ल खि	पमा प या० ०	धध पमा प्रा० ००	रग पप ०० ते०	धध न उ ० ठि;

संचारी ।

स अ	स ल	ग सा	मा ०	प नि	प ०	ध नी	ध ०	प द	प की	मा ०	प ०
मा अ	मा घा	ग नि	ग ०	ध पि	ध या	प की	माप ००	मा प्री	ग त	रग मै०	माप ००
ग प	मा हि	ग चा	र ०	स नि	स ०	सरमा त ब ० ००	गप ००	धध मुस	न का	। स नि	। स ०
धध ००	प ०	ध स	ध खि	पमा यां०	प ०	धध प्रा०	पमा ००	रग ००	पप ०ते	धध व ०	न ठि;

आभोग ।

प न	प ई	ध बा	ध ला	न ०	। स ०	। स स	। स खी	। स प्र	। र ब	। ग ०	। मा स
। ग जो	। र श	। स ०	। स ०	ध क	ध र	ध त	ध ०	प आ	प ०	प ध	प त
ध दे	ध ०	मा ०	मा ०	रग ००	प ख	प ०	प ०	धध चखि	न ०	। स जा	। स त
धध क०	प ०	ध न	ध खि	प यां	माप ००	धध प्रा०	पमा ००	रग ००	पप ०त	धध व ०	न ठि;

शिष्यार्थी इस गीत को धामार ताल में भी गा सकते हैं ।

(११) अलहिया ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग म प ध न । चौताल और तेताला ।

(यह सरगम् भैरव, सिन्धु और श्री राग में भी गाया जा सकता है, केवल ठाट को बदल लेना पड़ेगा । भैरव—सरागमापधान । सिन्धु—सरगमापधान । श्री—सरागमपधान । नीचे अलहिया का सरगम दिया गया है । इसमें पहले ही सम् है । चौताल में दो और तेताला में तीन आवृत्तियाँ हैं ।

शिक्षक—पञ्चलाल ।

सरगम्

स आ र स ध ग मा प	न ध प न ग आ र स	न ध न न स ग मा प	ध प ध ध ध ध प मा	प मा ग र ग र ग मा	ग मा प ध प ध आ न
---------------------	--------------------	---------------------	---------------------	----------------------	---------------------

अन्तरा (१)

स आ स आ ग मा प मा	र स न ध ग र स न	प मा ग र ध आ आ प	ग मा प ध न न ध न	आ न स आ न ध आ प	र स आ र ध ध प मा
ग र ग मा ध ग मा प	प आ न न ग आ र स	ध न न ध स ग मा प	अ प ध ध ध ध प मा	प मा ग र ग र ग मा	ग मा प ध प ध आ न

अन्तरा (२)

स स ग मा ध ध अ ग	प आ ध ध र ग मा प	प मा ग र ध ध ग मा	ग मा प अ न न ध ध	न न ध न ग र ग मा	न ध अ प प अ न न
ध ध प प ध ग मा प	मा मा ग र ग अ र स	ग मा प ध स ग मा प	ध ग मा प ध ध प मा	ध आ आ न ग र ग मा	स आ आ आ प ध आ न

(१२) इमन बेलावल ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स र ग मा प ध न । चौताल (रूपक)—मात मात्रा ।

गीत ।

परमानन्दन मधुसूदन बनवारी पद्मनाभ चक्रपाणि जगबन्दन ॥१॥

गरुड़वाहन पंकजपद बंशीधारी नरहर कंशनिवृत्तन ॥२॥

कृष्णमुरारी गोवर्धनधारी गजराज उद्धारि करि न्यारि नगफन्दन ॥३॥

केवल के प्रभु जगतपति राधापति प्राणपति गति कारण ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	१	२	+	१	२
ग र सरगमाग प र मा००००	र स ० न	स स द न	स र स म धु ०	र स सू द	नंधं नंधं न० ००
स स स ब न ०	र गर वा ००	ग मा री ०	प प मा ० प झ	ग रग भा ००	र स ० भ
प प प ब ० क	प प पा णि	पमा गर ०० ००	र ग मापधनध ज ग ०००००	प मा वं द	गर गरसग न० ००००

अन्तरा ।

प प ध ग रु इ	न स ० वा	स स ह न	स र ग र प ० ० ०	ग र क ज	स स प द
स रस नध ब शी० ००	न ध धा ०	प प री ०	र ग रगमा न र ०००	ग र ह ०	सर स ०० र
प प प कं ० ०	प प श ०	पमा गर ०० ००	ग मा पधनध नि ० ००००	प मा कुं त	गर गरसग न० ००००

संचारी ।

ग ग गर कृ ० ण	ग ग सु रा	र सरगमाग ० ०००० रि	ग र र गो व र	स स ध न	नंधं नंधं धा० ०री
स स स ग ज ०	र गर रा ००	ग ग ज ०	मा मा मा व द्वा ०	ग ग ० ०	र र रि ०
प प प क रि ०	प प न्या रि	पमा गर ०० ००	र गमा पधनध न ग ०००००	प मा फं द	गर गरसग न० ००००

आभोग ।

प प प के व ल	ध न कं ०	स स प्र भु	स र ग ज ग त	र ग ० ०	र र ० ०
स स स प ति ०	न ध ० ०	नध प ०० ०	र ग मा रा धा ०	ग र ० ०	गर स प० ति
प प प प्रा ० ०	प प ण ०	प प प ति	र ग मापधनध ग ति ०००००	प मा का र	गर सग ण० ००

(१३) इमन बेलावल । धामार ।

गीत ।

वे मनमोहन सों सजनि बहुत रहे रिझवार ॥ १ ॥

अतमान काहे करत हौ उठ चलो हरि हि निहार ॥ २ ॥

अबीर गुलाल कुमकुम केशर डारत रंग पिचकार ॥ ३ ॥

कृष्णानन्द आनन्द में विहरत सुन्दर रूप बहार ॥ ४ ॥

स्वरलिपि ।

+	०		०		०		०		०		०		०
ग	ग	ग	र	ग	सर	गमा	ग	ग	र	स	स	नेधं	नेधं
वे	०	०	०	०	००	००	म	न	मो	ह	न	सों०	००
स	स	र	ग	ग	र	र	प	प	प	ग	ग	ग	ग
स	ज	नि	०	०	०	०	ब	हु	त	०	०	०	०
मा	मा	मा	प	ध	प	प	मा	गर	ग	र	र	स	स
र	ह	०	०	०	०	०	रि	फ०	वा	०	०	०	र;

२

प	प	प	ध	ध	न	न	स	स	स	स	स	स	स
अ	त	०	०	०	०	०	मा	०	न	का	ह	०	०
स	र	ग	र	ग	र	र	सन	ध	प	ग	ग	ग	ग
क	र	त	०	०	०	०	हो०	०	०	उ	ठ	च	लो
मा	मा	मा	प	ध	प	प	मा	गर	ग	र	र	स	स
ह	रि	०	०	०	हि	०	नि	हा०	०	०	०	०	र;

३

ग	ग	ग	स	र	ग	मा	ग	ग	ग	र	ग	स	र
अ	बी	र	०	०	०	०	गु	ला	ल	कु	म	कु	म
ग	ग	ग	ग	ग	र	स	प	प	प	ग	ग	ग	ग
के	श	र	०	०	०	०	डा	र	त	०	०	०	०
मा	मा	मा	प	ध	प	प	माग	र	स	र	र	स	स
रं	०	ग	०	०	०	०	पिच	का	०	०	०	०	र;

प कृ	प ष्णा	ध ०	न ने	स ०	स द	स ०	स आ	स ने	स ०	स द	स ०	स में	स ०
स वि	र ह	ग र	र त	र ०	स ०	स ०	न सुं	ध ०	प ०	ग द	मा ०	ग र	ग ०
मा रू	मा ०	मा प	प ०	ध ०	प ०	प ०	माग ब०	र हा	ग ०	र ०	र ०	स ०	स र

(१४) देवशाख ।

ओड़वषाड़व । स ग मा प ना—ना प मा ग र स । भाँपताल ।

गीत ।

जालिम अजब एक योगी जहर खाय कर्ता कहत हैं गले रुण्डमाला ॥१॥

आस में भस्म लगाय विजय धतूरा खाय जपता रहत दोनों दीन मगन ज्वाला ॥२॥

डमरू लिये हाथ गौरा लिये साथ रहता है मुशताक लोचन विशाला ॥३॥

कहे हैं सुजान खान जिया में निश्चय मान मेरे निगहवान है बैलवाला ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	।	।	।	।	।	+	।	।	।	।	।	।	।
मा	ग	मा	मा	ग	मा	मा	मा	ग	ग	ग	ग	ग	स
जा	०	लि	म	०	अ	ज	व	ए	क	यो	०	गी	०
स	स	मा	ग	मा	प	प	स	स	स	र	स	ना	प
क	र	ता	०	क	ह	न	है	०	०	ग	ले	हं	०

अन्तरा ।

मा	प	ना	प	ना	स	स	स	स	स	र	स	स	ना	स	ना	प	प
आस	में	भ	०	स्म	ल	गा	०	०	य	वि	ज	य	०	ध	नू	रा	खा
मा	प	ग	मा	ग	प	प	स	स	स	र	स	ना	प	प	मा	प	मा
ज	प	ता	००	र	ह	त	दो	ना	०	दी	न	म	ग	न	ज्वा	०	ला

संचारी ।

मा प ड म	ग मा ग रु ० ०	मा प लि ये	ना प प हा ० थ	प प गो ०	स स स रा ० ०	स स लि ये	ना प प सा ० थ
मा प र ह	ना प प ता ० ०	ना ना हे ०	स स स मु रना क	र स लो ०	ना प प च ० न	मा प वि शा	मा गरस टा ० ० ०

आभोग !

मा प क ह	ना प प हे ० ०	ना ना सु जान्	स स स खान् ०	स स जि या	र र स में ० ०	ना सस निश्चय	ना प प मा ० न
मा प मे ०	ग मा प रे ० ०	मा पप नि गढ	स स स वा ० न	र स हा ०	ना प प वे ० ल	मा प वा ०	मा गरस टा ० ० ०

इसी स्वरग्राम से यह गीत भी गा सकते हैं—

दुर्गदलनि दुखदाग्निदाहनि दुष्टविदारण करु शम्भु जाया ॥१॥

अमुरसंहारिणी रक्तबोजमारिणी दीन्हो अभय वर सुरनर पाया ॥२॥

संसारतारिणी तारा तरण ते कर कृपा नेक या परमा माया । ३॥

सप्रदाप नवखण्ड त्रैलोक्य व्यापित याते सुयश चारु आनन्द पाया ॥४॥

(१५) शुक्ल बेलावल ।

मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा प ध ना न । चौताल ।

गीत ।

भरन जा गई जल यमुना तट पानी घट नट नागर को प्रगट दरश भयो ॥१॥

मुकुट मुरली शीश फूल श्रवण कुण्डल की छवि दिग्वाई और मेरे मनहर ले ही लियो ॥२॥

स्वरलिपि ।

+	०		०		
मा ग	ग ई ०	ग ०	पप जल	पप यमु	मा ना ०
स घ	स ट	नं न	पं ना	पं ०	नं ग
ना द	धप रश	मा भ	ग यो	रग ००	रस ००
				र भ	ग र
					न
					स ०
					रग जा ०
					माप ००

मा सु	प कु	प ट	न सु	स र	स जी	र न शा०	स ०	स श	र न कू०	स ०	स ल
र श्र	ग व	मा ण	प कु	मा ड	गर ल०	ग र की०	स स छ बि	स दि	स खा	स ०	नप ई
स औ	स ०	स र	सन ००	र मे	स ०	ना रे	ध ०	प म	प न	मा ह	मा र
ना बे	धप ही०	मा लि	ग यो	रग ००	रस ००;	र भ	ग र	र न	स ०	र ग जो०	माप ००

(१६) विभाष ।

शुद्ध ओडव । स रा ग प धा । भाँपताल ।

(किसी किसी के मत में इस राग में तीव्र ऋषभ और धैवत का व्यवहार होना चाहिए । इस गीत में दोनों कोमल हैं । शिचक्र,—पन्नालाल ।)

गीत ।

चिड़िया चुचुहानि चकही के सुनि बानि कहत यशोदा रानी जागो मेरे बाला ॥१॥

रवि की किरण जानि कुमुदिनी सकुचानि कमल बिकसन लागि दधि मथे बाला ॥ ॥

सुबल सुबाहु और जेते आगत द्वारे ठाढ़े टेरत हैं लाल गोपाला ॥३॥

नन्ददास बलिहारि उठि बैठो गिरिधारी दरश को आयें यांगी भिखारी नयन विशाला ॥४॥

स्वरलिपि ।

+			०		+			०	
प प		ग ग ग	रा रा	स स स	स स	रा रा ग	प प	प प प	
चि डि		या ० ०	चु चु	हा ० नि	च क	ही ० के	सु नि	बा ० नि	
स रा		ग प रा	ग प	धा स स	धा धा	प प प	स रा	ग प प	
क ह		त ० य	शो दा	रा ० नि	जा गो	मे ० रे	बा ०	ला ० ०	

अन्तरा ।

धा धा र वि	स स स की ० कि	स स र ण	स स स जा ० नि	धा धा कु मु	स स स दि नी ०	धा धा स कु	प प प चा ० नि
स रा क म	ग प राग ल ० बिक	ग प म न	धा स स ला ० गि	धा धा द धि	प प प म थे ०	स रा वा ०	ग प प ला ० ०

संचारी ।

धा धा सु ०	प प प ब ० ल	धा धा सु ०	प प प धा ० हु	धा धा श्री र	धा धा धा ज ते ०	प प आ ०	प प प ग त ०
धा धी द्वा रे	स स स ठा दे ०	धा धा टे र	प प प न हे ०	स रा ला ०	ग प प ल ० गो	स रा पा ०	ग प प ला ० ०

आभोग ।

धा धा नन् द	स स स दा ० स	स स ध लि	स स स हा ० रि	ग रा उ टि	ग ग ग बै ० टा	ग रा गि रि	स स स धा ० रि
धा धा दरश को	धा धा धा आ ० गे	प प यो गा	प प प भि खा री	स रा न य	ग प प न ० वि	स रा शा ०	ग प प ला ० ०

(१७) विभाष । धामार ।

गीत ।

रयन गँवाये आये ठो लालन कहूँ जागे सगरि रात बात कहे प्यारे ॥१॥

नवल किशोर नवल तिया संग जागे अंग अंग चिन्ह न्यारे ॥२॥

सब निशि मोहें तड़पत बीती भोर भये आये ललारे ॥३॥

तान तरङ्ग रस रङ्ग भीनी कीन्ही नख चिन्ह भाग जागे हमारे ॥४॥

स्वरलिपि ।

+			०		।		०		।		०		
प गै	प वा	प ये	ध आ	ध ग	प हो	प ०	ग ला	र ल	स न	स क	र हा	ग जा	ग गे
प स	प ग	प रि	ग ०	ग ०	प ०	ग ०	प रा	प ०	प त	ध वा	ध ०	प ०	प त
पग क०	प ०	प हो	ग ०	र ०	स प्या	स; रे	ध र	ध य	ध ०	प न	ध ०	गप ००	ग ०

२

प न	प व	ध ल	स कि	स शो	स ०	स र	ध न	ध व	ध ल	प ति	प ०	प था	प ०
ग से	ग ग	प ०	ग जा	र ०	स गे	स ०	ध अं	ध ग	ध ०	प अं	प ०	प ग	प ०
ग चि	प नू	ग ह	प न्या	ग ०	र ०	स; रे;	ध र	ध य	ध ०	प न	ध ०	गप ००	ग ०

३

स स	र अ	र ०	ग ०	ग ०	र ०	र ०	ग नि	ग शि	र ०	ग मो	ग ०	र हे	र ०
स त	र डू	ग प	ग त	ग ०	ग वी	ग ती	ध भो	ध ०	प र	प भ	प ये	ग ०	प ०
ग आ	ग ०	ग ये	र ल	र ला	स ०	स रे;	ध र	ध य	ध ०	प न	ध ०	गप ००	ग ०

४

प ता	ध ०	स ग	स त	स रं	स ०	स ग	प र	ध स	ध ०	प रं	प ग	ग भा	ग नी
र की	ग नू	ग ही	ग ०	प ०	प न	प ख	ध चि	ध न	ध ह	प भा	ध ०	ग ग	प ०
ग जा	ग ०	ग गे	र ह	र मा	स ०	स रे;	ध र	ध य	ध न	प ०	ध ०	गप ००	ग ०

ताम्र—सरगम् ।

स	र	स	ग	अ	ग	अ	र	ग	र	प	अ	प	अ
ग	प	ग	ध	अ	ध	अ	प	ध	प	स	आ	स	आ
प्रध	प	गपग	प	ध	प	स	धपध	प	गप	ग	र	सर	ग

(१८) आशावरी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा मा प धा ना । भौपताल ।

[किसी किसी के मत में यह राग मिश्र अर्थात् ओड़व-सम्पूर्ण है (सरमापना-ना धा प मा गा र स) । परन्तु प्राचीन तन्त्रकारों ने इसे सम्पूर्ण कहा है । इसमें गान्धार और निषाद लिप्त स्वर हैं अर्थात् ऋषभ से मध्यम और धैवत् से षड्ज तक जाने के समय उनको लिप्तरूप से व्यवहार करना पड़ेगा । इस राग में अति कोमल ऋषभ और निषाद का व्यवहार होता है ।]

गीत ।

गत मतंगी सब अंगना सरस मोहन मूरति अनंगी ॥ १ ॥ कदली खम्भ जंघा युगल रूप योवन
गुण नयन आगे रमत री कुच उतंगी ॥ २ ॥ चंपक तन भुज मृणाल तरल तरङ्गी अधर विद्रुम
दशन दाडिम नासिका शुकरङ्गी ॥ ३ ॥ अमल कमल नयन कुरङ्गी भङ्गी नव सप्त साज शिङ्गार
नव लोध ऊधो रङ्गी ॥ ४ ॥

स्वर लिपि ।

+		।			°		।		
रागा	मा	प	प	मा	प	मा	गा	रा	स
ग °	त	म	तं	°	गी	°	°	°	°
धा	प	मा	प	प	मा	गा	रा	रा	स
स	ब	अं	ग	°	ना	°	°	°	°
सरा	गामा	मा	मा	मा	प	मा	प	प	प
स °	° र	स	°	°	मो	°	ह	न	°
ना	ना	धा	प	प	मा	प	मा	गा	रास
मू	र	ति	°	°	अ	नं	गी	°	° °

२

मा	प	नाधा	स	स	स	रा	स	रा	ग
क	द	ली °	°	°	ख	भ	°	°	°
।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
रा	रा	स	स	स	ना	ना	धा	प	प
ज	धा	यु	ग	ल	रू	प	यो	व	न
मा	मा	गा	रा	स	रागा	मा	पधा	स	स
गु	ण	न	य	न	आ °	°	गे °	°	°
ना	।	ना	धा	प प	मा	प	मागा	रा	स;
र	स	त	री	कु च	व	तं	गी °	°	°
	म								

३

मा चम	मा प	मा क	मा त	मा न	प भु	प ज	प मृ	प णा	प ल
गा त	गा र	गा ल	स ०	सना त ०	स र	स ०	स गी	स ०	स ०
ना अ	नाना ध र	धा वि	प हु	प म	मामा द श	मा न	गा दा	रा दि	स म
रा ना	रा सि	मा का	मा ०	माप शुक	ना रं	ना ०	धा गी	प ०	प ०

४

मा अ	प म	धाना ल ०	धास ० ०	स ०	स क	सस मल	स न	स य	स न
स कु	रा रं	स गा	रा ०	गा ०	रा भं	रा ०	स गी	स ०	स ०
ना न	ना व	धा य	धा प	प त	मा मा	मा ज	गा शं	रा गा	स र
रागा न व	मा लो	प ध	प ऊ	प धो	ना रं	धाप ० ०	मागा गी ०	रा ०	स; ०

(१६) आशावरी । धामार ।

गीत ।

भोरहि आयं मेरे आँगन सगरि रयन तुम कहाँ जागे लालन ॥१॥

अधर अँजन भाले महावर डगमगात पग धरत धरन ॥२॥

आवत वदि मोसे अन्ते सिधारेउ कौन रस बस कर लिये ललन ॥३॥

तानसेन के प्रभु वहीं सिधारे जाही के घर रहे बिन कलन ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	०	।	०	।	०	।	०
ना ना धा	प प	मा प	मा गा गस	रा मा	प प		
ओ ० ०	र हि	० ०	आ ० ० ०	मे ०	रे ०		
प प प	प प	प प	ना ना ना	धा धा	प प		
आ ० ०	ग ०	न ०	स ग रि	र ०	य न		
मा प मा	प ना	धा प	माप गा गसः	रा मा	प प		
तु ० म	क डा	० ०	जा ० ० ० गं	ला ०	ल न		

२

मा प प	ना धा	स स	स स स	स रा	सरा गारा		
अ ध ०	र ०	० ०	अ ज न	भा ०	० ० ले ०		
स रा ना	स स	स स	मा प प	धा धा	स स		
म डा ०	० ०	व र	ड ग म	गा ०	० त		
ना धा प	प प	मा प	मा गा गा	रा मा	प प;		
प ग ०	० ०	ध र	त ० ०	ध र	न ०		

३

गा गा गा	स रा	मा मा	प प पमा	प प	प प		
आ व त	० ०	० ०	व दि ० ०	मे ०	से ०		
ना ना ना	धा धा	धा धा	प प प	प प	प प		
अ न् ते	० ०	० ०	सि धा ०	रे ०	उ ०		
रा रा स	ना ना	धा प	मा प गारा	सरा मा	प प;		
क व न	र स	ब स	क र लि ये	ल ० ०	ल न		

४

मा मा प	ना धा	* स स	स स स	स स	स स		
ता ० न	से ०	० न	कं ० ०	प्र ०	धु ०		
स रा रा	सरा गा	रा स	स ना धा	प प	प प		
व ही ०	० ० ०	० ०	सि धा ०	रो ०	० ०		
प रा स	ना ना	धा प	माप गा गस	रा मा	प प		
जा ही क	घ र	र हे	० ० बि ० न	क ल	न ०		

(२०) आसावरी । तेताला । शिचक छोटे प्यारखाँ । इनके मत में रिषभ तीव्र है ।

+				°			
प प	ना धा	प प	मा गा	र ए	ए ए	माआ	र ए
माआ	आ आ	प आ	ना स	र र	स	ना	धा प
ना ई	धा आ	प आ	ना ना	धा आ	प आ	मा प	ना धा प
स आ	आ	मा प	गा	ना धा प	मा गा	र ए	माआ;
धा धा प	ना धा प	ना स	आ र	मा र	ए मा	गा र स	र र स
ना धा	प	मा प ना	ना धा प	र ए मा	धा प मा	गा र	ए मा;
मा प	ना धा प	मा गा	र	मा प	ना स	ना स र	ना धा प
मा प	र र स	र ना	धा प	मा प	गा र ए	मा गा र	ए मा ;

[खाँ साहब का कथन है कि सावेरी [दक्षिण देश का राग है] से आसावरो निकली है । परन्तु सावेरी में तीव्र निषाद लगता है और गान्धार नहीं है और आसावरी आंड़व सम्पूर्ण है ।]

हिन्दोल ।

रात्रि प्रथम दश दण्ड ।

अग्रहायण—पौष ।

राग नाम ।	बोल ।	रचयिता ।	ताल ।
कल्याण	— (२४) ताकत हूँ तेहारी आस —	—	चैताल ।
	— (२५) हादी ए अल्ला —	—	चैताल ।
	— (२६) गेरा गणेश सरस्वती —	(शिक्षक--रामदास	चैताल ।
	— " —	गोस्वामी) —	
	— (२७) —	(शिक्षक-गोपाल	ढीमा तेताला ।
केदारा	— (२८) सरगम् —	बाबू) —	
	— (२९) देखत तन मन —	(तानसेन) —	चैताल व तेताला ।
	— (३०) गुलाल रंग डारी री —	—	सूलताल ।
	— (३१) आनन्द भयो मेरे —	—	धामार ।
	— (३२) सकल गुण प्रकाश —	(शिक्षक-बाबा	चैताल ।
वसन्त	— (३३) सुभग वसन्त नवललता —	लालसिंह) —	सवारी ।
	— (३४) भँवरा फूलि फुलवारी —	चेतराव —	चैताल ।
	— (३५) चलो सखि कुंजधाम —	तानसेन —	धामार ।
			ढीमा तेताला ।

हिन्दोल ।

शृंगाररससम्पन्नो हिन्दोलेऽति निगद्यते ।
भुवं प्रदोलयेत् यत्नाद् भूदोलस्तु ततः स्मृतः ॥
हिन्दोलस्तु तृतीयोऽभूत् सुतोविश्वविभूषणः ।
महेश्वरात्ततो जातः चक्राच्चैवमनाहतात् ॥

शास्त्र में उक्त है कि पंचानन के उत्तर मुख से हिन्दोल राग निकला है । हेमन्त-ऋतु (अग्र-हायण-पौष) में सब समय पर हिन्दोल गाया जा सकता है । रात के प्रथम दश दण्ड समय तक हिन्दोल और हिन्दोलांग राग गाये जाते हैं । अर्द्धरात्रि को भी हेमन्त-ऋतु कहते हैं इसलिए आधी रात में भी हिन्दोल गा सकते हैं । शुद्धरूप से यह राग गाने से स्वतः दोलनभाव, शिरःपीड़ा निवारण और शोकमोह का दूर होना आदि फल प्राप्त होता है यही प्राचीन गुणियों का मत है । छाग सुर (अर्थात् ऋषभ सुर) से गाने से कदाचित् यं फल मिल सकते हैं ।

धैवत्यार्षमिकावर्जस्वरनामिकजातिजः ।
हिन्दोलको रि-ध-त्यक्तः षड्जन्यासप्रहांशकः ॥
आरोहिणि प्रसन्नाद्ये शुद्धमध्याख्यमूर्च्छना ।
काकलीकलिता गेयो वीरे रौद्रेऽद्भुते रसे ॥ संगीतरत्नाकर ॥
हिन्दोलेऽथ रिपौ त्यज्यौ कोमलो धैवतो भवेत् ॥ पारिजात ॥
हिन्दोलो रि-पयोगेन मार्गहिन्दोलको भवेत् ॥ पारिजात ॥

प्रचलित हिन्दोल और उक्त हिन्दोल में कोई मेल नहीं है ।

म चि	ध त	। स व	। स न	। स चि	। स त	। स र	। स ही	। स ०	। स लो	। स भा	। स ल
म शो	ध ०	। स भा	। स ०	। स क	। स लु	न क	ध ही	म न	म जा	ग ०	ग त
स मु	स नि	स न	ग के	ग म	ग न	न ह	न र	ध ला	ध ०	म ०	ग जो
। ग मां	। ग ०	। स हि	। स नी	। स द	। स ल	मध सा०	न ०	धम ००	ग ०	मग ०४	स; जे

स ज	स न	ग नी	ग क	ग ह	न ना	न चो	न बा	न ला	ध दे	ध उ	ध गी	ध न	ध व	ध नी
म त	म नु	म त	म ता	ग ०	म रु	म नु	ग रु	ग नु	म कु	ग नु	स न	स कु	स नु	स न
स पा	स य	स नि	ग बा	ग ज	ग नि	म ध	ध ०	म ०	म ०	म ०	ग ०	स ०		स; जे
म गा	ध व	ध त	। स गु	। स ण	। स ०	। स म्	। स दा	। स स	न सु		न ख	ध ब	ध द	ध त
म भू	म म	म म	ग आ	ग का	ग श	स ना	स च	ग त	ग त्रि	ग ०	म लो	ध क	। स ना	। स थ
। ग मा	। ग ०	। ग ०	। स ख	। स न	। स की	मध का०	न ०	धम ००	ग ०	मम ००	ग ०	स जे		स; ०

स स ग ग ग ज न नी क हे	न न न न ना वो बा ल	धधध धधध दे उं गी न व नी	म म म म ग त नु त ता ०	म म म ग ग ग रु नु न रु नु न	म ग स ससस कु नु न कु नु न
ससस ग ग ग पा य नि बा ज नि	म ध न ध म ग बा ० ० ० ० ०	म म ग स स ० ० ० जे ०	म ध ध स स स गा व त गु ण ०	स स स स सू र दा स	न न धधध सु ख ब द त
म म ग ग ग भू म आ का श	स स ग ग ग ना च त त्रि ०	म ध स स लो क ना थ	ग ग स स स मा ० ख न की	म ध न ध म ग का ० ० ० ० ०	म म ग स स; ० ० ० जे ०

(२) हिन्दोल । धामार ।

पिया माँगत है मोसन ही गुलाल लड़ के मा ॥ १ ॥

ले अवीर आँखन मारत मुठी भर के मा ॥ २ ॥

न ध ध मा ० ग	म ग त है	ग ग ० ०	ग म ध मो स न	स स ही ०	स स ० ०
सन स स गु ० ला ल	नन ध लड़ कं	म ग स मा ० ०	स स सन पि या ० ०	म ध ० ०	स स ० ०

अन्तरा ।

म ध स ले अ बी	स न र ०	स स आ ०	ग ग स ख न ०	म ध स मा ० ०	न ध म ग र ० त ०
ग ग स मु ० ठी	नन ध भर के	म ग स; मा ० ०	स स सन पि या ० ०	म ध ० ०	स स ० ०

(३) हिंडोल । चौताल ।

(४) हिण्डोल । चौताल व तेताला । शिखर वजीरखाँ ध्रुपदो ।

+										
सनं	धं मं	धं मं सत्रा	गत्रा	सत्रा	नं नं	सत्रा	गग	मध	नध	गत्रा
मध	सन	धग	मध	सन	धम	ग न	धम	गत्रा	धमग	मग सत्रा;

२

मध	स	स	सन	सन	धम	गत्रा	नन	धध	मम	गग	सत्रा		
०													
नस	नध	म	ग	म	ग	सन	धम	गत्रा	ननन	धधध	ममम	गगग	सत्रा

३, ४

स स स स	स न ध ध	म ध स स	न ध म ग	स ग म ध न	न न न
ब्रह्मा ० ०	गा त सा ०	प्र ग ट ०	आ ० यो ०	स ग म ध न	हि एडोल
ध ध ध	म म ग	ग ग ग	स स स	म ध स स	न ध म ग स
गा य न	गा ० यो	गु नि ०	प गिड त	उ प जा त	न ध म ग स;

(५) पुरिया ।

शुद्ध षाड़व । सा रा ग म धा न । चौताल ।

गीत ।

सहज जोड़ि प्रगट भई जो रंग कि गौर श्याम घन दामिनी जैसे ॥ १ ॥

प्रथम वृत्ति आज हू अनह रहे है नटार है कैसे ॥ २ ॥

अंग अंग के उघरई सुघरई सुन्दरता वैसे वैसे ॥ ३ ॥

श्री हरीदास के स्वामी श्याम कुंजविहारी अद्भुत रूप अनेसे ॥ ४ ॥

[किसी किसी का मत है कि इस राग में अति कोमल धैवत का व्यवहार होता है परन्तु स्वाधीनरूप से नहीं, मध्यम के मोड़ में ।]

स्वरलिपि ।

+	०		१		०		२		३		
नं	रा	ग	रा	गगा	स	नंनं	धां	मंधांनं	सरा	स	स
स	ह	ज	०	जो०	डि	प्रग	ट	०००	००	भ	ई
स	रा	स	स	स	स	ग	ग	ग	ग	ग	ग
ओ	०	र	०	ग	की	गौ	०	र	श्या	०	म
म	म	नधा	म	ग	ग	म	ग	रा	रा	स	स
घ	न	० दा	०	०	०	मि	नी	०	०	ज	म

अन्तरा ।

म प्र	धा थ	न म	न ०	धा ०	म ०	ग ०	ग ०	स ह	स ति	स ०	स ०
न आ	रा ०	नधा ज ह	म ०	म ०	ग ०	न अ	न न	धाम ह ०	ग ०	नं र	नंरा हं ०
ग हे	ग ०	न न	नधा टा ०	म ०	ग र	म ह	ग ०	रा ०	रा ०	स के	स से

संचारी ।

नन अ०	नन ग०	नन अ०	नन ग०	धाधा के ०	धाधा ० ०	मम ००	गग ००	मम उ घ	मम र ई	गग सु घ	गग र ई
रा सु	रा द	रा र	ग ता	रा ०	ग ०	म ०	ग ०	रा वै	रा से	स वै	स से

आभोग ।

म श्री	धा ०	न ह	स रि	स दा	स स	स के	स ०	स स्वा	स मा	नरा श्या	ग म	म कुं	गरा ज०
ग वि	ग हा	रा ०	स री	नधा ० ०	मग ००	नन अद्	नन भुत	धाम रू ०	गरा प ०	सस अ ने	स से		

(६) पुरिया । चौताल । और तेताला ।

सरगम ।

+	०	१	०	२	३
नंरा गराग	रा स	राग स	नंधां नं	मंधां नंरास	ग ग
नं रास	नधा मगरा	गग मधा	रा स नधा	न मग	रा स;
मधा नस	न रा	स स	नरा ग राग	नरा स	रान मधा
रा ग	मन धाम	गग रास	गग म	धान मग	रा स;
ग ग ग	न न न	रा रा रा	स	नंरा स	नंगग राग
मधा नमधा	नस रानस	गन धामधा	नधा मधाग	राग मधा	मग रास;

(७) पुरिया । धामार ।

कान मोरि अँगिया रंग ते भिंगोहि नये हो खेलाड़ ॥१॥

जाने न देउँगी फेंट घेर राखूँगी गारी देउँगी यशोदा केदार ॥२॥

+	०	।	०	।	०
नस रा ग	रा रा	ग ग	मम ग रा	म ग	रा स
अं० गि या	० ०	० ०	र ङ ते	भिं गो	० हि
नं स रा	स नं	धां धां	मं धां नंस	ग रास	नं धां
न ये ०	हो ०	० ०	खे ला ०६;	का ० न	मो रि

अन्तरा ।

मधा म ग	स स	स स	न रा न	धा म	ग ग
जा० ने न	दे ऊँ	गी ०	फें ० ट	वे ०	० र
म म म	ग ग	म ग	म धा रा	न धा	म ग
रा ० ०	ख ०	गी ०	गा री ०	दे ऊँ	गी ०
म म म	ग ग	रा रा	स स स	गरा स	नं धां
य शो ०	दा ०	क ०	दा ० र	का० न	मो रि

(८) भूपाली ।

शुद्ध ओढ़व । सर ग प ध । चौताल ।

गीत ।

लालन आज लिखि एक नवल बाल नाचत सकल तियन मन्द गति सुढङ्ग ॥१॥

भलकत तन योवन जिनि शशिमद सुरङ्ग देह वदन दशन हसन दामिनि युतिसम भ्रुकुटि धनुष

चितवन शरमावत मन कुरङ्ग ॥२॥ घेरदार घूटनलो घाघरो घूँघरुदार चुनरी चटक लसत भूषण

सकल अङ्ग ॥३॥ युगराज दास प्यारे ऐसी तिय मैं देखी बालनि चालनि चित की हरनि अधर

अमृत वचनि कर पद निरद शुनि वचन सरवस ले रम के तरङ्ग ॥४॥

स्वरलिपि ।

+		०	१	०	२	३
		ग म क				
ग	र	सग	सगर	स	स	धं
ला	०	० ०	० ० ०	ल	न	धं
ग	ग	ग	र	ग	ग	धं
ए	०	क	०	न	व	ज
पग	प	प	प	प	ध	धं
ना०	०	च	त	स	क	०
प	ध	स	स	पधप	ध	गपग
म	न	०	द	गति०	०	० ० ०
				ग म क	ग म क	ग म क

२

प	ध	स	स	स	स	र	स	स	स	स	स
ऊ	ल	क	त	त	न	०	०	या	०	व	न
स	ग	ग	ग	ग	र	स	स	सध	ध	प	प
र	०	नि	श	शी	०	म	द	सु०	रं	०	ग
ध	र	स	स	स	स	ध	ध	ध	प	प	प
दे	०	ह	व	द	न	इ	स	न	द	श	न
ग	ग	ग	ग	र	ग	सर	ग	र	र	स	सधं
दा	०	मि	नी	०	०	० ०	०	शु	ति	स	म०
प	प	ग	प	प	प	प	प	प	ध	ध	ध
भ्रु	कु	टि	०	ध	नु	प	०	चि	त	व	न
पध	स	स	स	पधप	ध	गपग	प	गर	ग	र र	सस
शर	मा	व	त	मन०	०	० ० ०	०	० ० ०	०	० कु	र ङ्ग ;

३

गग बे र	गग दा र	गग घूट	गग नलो	रग ००	सरग ०००	गग घा०	गग घरो	रर ००	सस ००	स स सधं धूँधरू दार
								गमक	गमक	
पप चून	गप री०	पप चट	पप क०	पध लम	धध त०	पध भू०	सस खन	पधपध गपगप सकल० ००००	रगरग रस ०००० अंग;	

४

पध गुग	सस राज	स स स स दा स प्या रे	स र ग ग ऐ ० सी ०	र र स स ति य ० ०	सस स स मैं ० न ०	स स धध दे ० स्त्री०
धर बो०	सस लनि	धध पप चा० लनि	गगग ररर चितकी हरनि	ससस सरग अध र ०००	रर रर अमृ त०	सस धं धं ब च नि ०
					गमक	गमक
गग कर	पप पद	पप पप निर द०	धध धधध सुनि व च न	पध स सस सर ब स ले	पधपध गपगप रस के० ००००	रग/ग रस ००००त रंग;

[इस गीत का धामार ताल में भी गा सकते हैं न० (१२) देखियें]

(६) भूपाली । चौताल और तेताला ।

सरगम ।

+	०	१	०	२	३
प ग	रग रस	पप ग	रस र	रधं ग	रस रग
पप ग	ग पध	रग पध	स स	पध पग	रस र

२

गप र	गप धस	स र ग	र स ध	प ग	रग प
गप धग	रस र	गग र	स धं	रग सरग	प ग
रग पधस	धप गपग	पधप गपग	धपग रसर	सरगर सरग	रगपग रगप
गपधप गपध	पधसधपधस	ग र स धप	र स धपग	सध पगर	धपग रसर

३

रग	पथ	गप	ध स	पथ	पग	रस	र	रगर	सधं	गपर	गप
रगप	पथ	गपथ	स स	ग र स	ध	र स	धप	सध	पग	धपग	रसर
सर	ग	रगर	गप	ग प ग	पग	प धप	धस	सधस	धप	धपध	पग
पगप	गर	गरग	रस	स र ग	पथ	र गप	धस	सधप	गर	धपग	रसर

(१०) भूपाली । धामार ।

गीत

लाल पिचकारी मारूँ तुम भाग चले कित जाते हो रङ्ग भरूँगी ॥१॥

देवकी सुत हो न डरूँगी पकड़ मीड़ गुलाल मुख लाल करूँगी ॥२॥

स्वरलिपि ।

+	०		०		०		०		०		०
धं	ग	र	ग	र	ग	र	ग	गु	गर	ग	ग
का	०	०	री	०	०	०	मा	रू	००	तु	म
प	प	प	प	पग	प	प	ध	ध	स	ध	ध
भा	०	०	गे	००	०	०	च	ले	०	कि	त
प	प	प	ध	ध	ध	ध	स	स	स	ध	ध
जा	०	०	ते	०	०	०	हा	०	०	रं	०
गर	ग	ग	र	र	स	स;	स	र	र	स	स
भ०	रू	०	गी	०	०	०	ला	०	ल	पि	च

२

प	प	ध	स	र	स	स	स	ग	र	ग	ग
दे	०	व	कि	०	सु	त	हो	०	०	न	०
ग	र	र	स	स	ध	प	ध	ध	ध	प	प
ड	रू	गी	०	०	०	०	प	क	ड	मा	०
प	ध	ध	स	स	स	स	ध	ध	पग	प	प
गु	०	०	ला	०	ल	०	मु	ख	००	ला	०
ग	र	ग	र	र	स	स;	स	र	र	स	स
क	०	रू	०	०	गी	०	ला	०	ल	पि	०

(११) भूपाली । चौताल ।

गीत

आदि नाद प्रनव रूप सम्पूर्ण दिजिए तुम प्रसाद ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिविध गुण निदान ॥१॥

आदि भूत अविनाशी अनन्त अगम अपार अति आनन्द अपूर्व भाँति निरञ्जन ॥२॥

सकल रूप कारण सकल दुख निवारन भव बन्धन तारन सुर नर मुनि वन्दन ॥३॥

चतुर्वेद रटे हैं यह वानी तुमरी नाम सुर्वसेन मानी देहु कृपा भिक्षा माँगी मदा रहूँ पास जग जन ॥४॥

+		०				०					
ग	ग	र	स	र	स	धं	धं	धं	ग	र	ग
आ	०	दि	ना	०	द	प्र	न	व	रू	०	प
पग	पगप	प	प	प प	प	धध	ध	ध	प	ग	गर
सम	५००	र	न	दिजि	५	तु म	प्र	सा	०	०	द०
ग	र	ग	ग	र	र	र	र	स	स	र	स
ब्र	०	ह्या	०	वि	धू	०	०	म	ह	०	श
प	प	प	प	सध	सध	स	स	धसधसपधपध	गपगप गरसर		
त्रि	वि	ध	०	गु ०	न ०	०	वि	हा ००००००००	०००० ०००न;		

२

प	प	सध	स	स	स	स	स	स	र	स	स
आ	दि	भू०	०	त	०	अ	वि	ना	०	सी	०
ग	ग	र स	र	ग	ग र	ग	र	स	स	ध	ध
अ	न	० ०	०	०	त ०	अ	ग	म	अ	पा	र
प	प	सध	स	स	स	स	स	स	ध	ध	ध
अ	ति	आ०	०	न	०	द	०	अ	पू	०	व
प	प	प	प	सध	सध	स	स	धसधसपधपध	गपगप गरसर		
भा	०	ति	०	नि०	रं०	०	०	ज ००००००००	०००० ०००न;		

३

ग स	ग क	गर ल०	ग रु	ग ०	ग प	ग का	रग ००	सर ००	गर ००	ग र	ग न
पग स०	प क	प ल	ध दु	ध ०	ध ख	ध नि	पध वा०	ध ०	प र	ग न	ग ०
ग भ	ग व	र वं	र ०	स ध	स न	धं ता	धं ०	धं ०	धं ०	धं र	धं न
प सु	प र	प न	प र	सध मु०	सध नि०	स ०	स वं	धसधसपधपध द००००००००	गपगप गरसर ०००० ०००न;		

४

प व	प तु	सध बे०	स ० द	स टे	स है	स ०	र य	र ह	स वा	स नि
ग तु म	ग री	र ग स र ग ० ० ० ० ०	ग ना	ग म	ग सु	र र ० त	स स	स न	स मा	धप ० नि
प दे	प ०	सध हू०	स ०	स कु	स पा	स भि	ध ज्ञा	ध ०	प मां	प ० गी
प स	प दा	प र	प हू	सध पा ०	स ०	स ज	स ग	धसधसपधपध ज ०		

(१२) भूपाली । धामार ।

“लालन आज लखी”

गीत ।

+			०								०		
ग	र	स	गस	ग	र	स	धं	धं	धं	ग	र	ग	र
ला	०	०	००	०	ल	न	आ	०	ज	ल	०	खी	०
ग	ग	गर	ग	ग	ग	र	ग	ग	ग	र	ग	सर	ग
ए	०	क०	न	व	ल	०	बा	०	०	०	०	००	ल
प	ग	प	प	प	प	प	प	ध	ध			धप	ग
ना	०	०	च	०	त	०	स	क	ल	सध	स	यन	०
										ती०	०		
प			पध	पध	गप	गप	ग	र	ग	र	स	स	स
मैं	००	द	गति	००	००	००	०	०	०	०	सु	ढें	ग;

२

प	ध	ध											
रु	ल	०	स	स	स	स	स	स	र	स	स	स	स
			क	न	०	०	त	न	०	०	जा	व	न
स	र	गर	ग	ग	ग	र	स	स	स	ध	ध	प	प
जी	०	००	नी	स	सी	०	म	द	०	सु	०	रें	ग
ध							ध	ध	ध	प	प	प	प
दे	०	ह	व	द	न	०	ह	स	न	द	स	न	०
ग	ग	ग	र	ग	सर	ग	र	र	र	स	स	धं	धं
दा	मि	नि	०	०	००	०	दु	ति	०	स	म	०	०
पप	ग	प	प	प	प	प	प	ध	ध	ध	ध	ध	ध
भृकु	टि	०	ध	०	नु	स	चि	त	०	व	न	०	०
पध			पध	पध	गप	गप	ग	र	ग	र	स	स	स
सर	मा	व त	मन	००	००	००	०	०	०	०	रु	रें	ग;

३

ग घे	ग ०	गर र०	ग दा	ग र	ग धु	ग ट	ग न	ग लो	ग ०	र ०	ग ०	सर ००	ग ०
ग घा	ग घ	ग रो	र ०	र ०	स ०	स ०	स धूँ	स धू	स रु	स दा	स ०	धं र	धं ०
प चू	प न	प ०	ग री	ग ०	प ०	प ०	प च	प ट	प क	ध ल	ध स	ध त	ध ०
प भू	ध ष	स न	पध सक	पध ल०	गप ००	गप ००	ग ०	र ०	ग ०	र ०	स ०	स श्रं	स; ग

४

प जु	ध ग	स रा	स ०	स ज	स दा	स स	स धा	स ०	स रे	स ०	स ०	स ०	स ०
स ऐ	र ०	ग ०	ग सी	ग ०	र ति	र य	स मैं	स ०	स ०	स न	स ०	स दे	ध खी
ध बो	र ल	सस नी०	ध चा	ध ०	ध ल	ध नी	प चि	प त	प की	ग ह	ग ०	र र	र नी
ग अ	ग ध	ग र	र ०	ग ०	सर ००	ग ०	र अ	र मृ	र त	स व	स च	धं नी	धं ०
ग क	ग र	प प	प द	प नी	प र	प द	ध सु	ध नि	ध ०	ध व	ध च	ध न	ध ०
पप सर	ध व	सस सले	पध रस	पध के०	गप ००	गप ००	ग ०	र ०	ग ०	र ०	स त	स रं	स ग;

(१३) छायाण्ट ।

शुद्ध सम्पूर्ण । सर गमा प ध न । चौताल ।

गीत ।

मेघ सम गड़ार है आज हूँ समझ धन तुला बैठे कंचन में ऐसी प्रभु में पाया है ॥ १ ॥

कन्या बृकभानु की गरुड़त है सिंह यम लोचन तेहारो मीन मृग ने लजाया है ॥ २ ॥

मकर करत मोसे मिथुन करत नयन नेत्र कुम्भकारों री चिरञ्जीव गाया है ॥ ३ ॥

वाको है वृचिक के कारण कालहू मिलेंगी वीरपगन करकट कन्दर दान आया है ॥ ४ ॥

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३						
प मे	प ०	ध प	प स	मा म	गर ००	गर ग०	ग डा	मा ०	प ०	मा र	गरस है००
सरगमा आ०००	र ज	स हू	स ०	सस स म	स क	ध ध	धंनं न०	पं तु	पं ०	पं ला	पं ०
स बै	स ०	र ०	र ०	स ०	स ०	र कं	स ०	स च	स न	स में	स ०
स पं	स ०	र सो	गर ००	ग प्र	मा भु	पप मैं०	माग पा	स यो	र ०	सस है०	रगमापमा ०००००

अन्तरा ।

प क	स न्या	स ०	स ०	स वृ	स क	स भा	नर ००	स न	स ०	स की	स ०
र ग	ग रु	र ड	र त	स है	सन ००	ध सि	प ह	प ०	प ०	पप यम	मा ०
प लो	प ०	मा य	ग न	र ते	र ०	ग हा	मा रो	प ०	पमा ००	गर मी०	स न
ध मृ	ध ग	प नं	प ०	प ०	प ०	प ल	माग जा०	स यो	र ०	सस है०	रगमापमा ०००००

(४६)

संचारी ।

। मा मा	प प प	प प प	न न ध	प प प	मा ग गर
। क र	क र त	मो ० से	मि धु न	क र त	न य न०
। ग मा	प प मा	ग र स	ग ग माप	मा ग सर	सस रगमापमा
। ० अ	कु म् भ	का रो री	चि रं जीव	गा ० यो०	है ० ००० ००

आभोग ।

। स सस	स स स	स स स	स र ग	र र सन	ध ध प
। को है ०	वृ चि के	का र ण	का ल हू	मि लें गो०	बी ० र
। ध प	प प प	ग मा मा	प प प	माग सर	सस रग मापमा
। ग न	क के ट	कं द र	दा ० न	आ० यो०	ह ० ०० ०००

(१४) छायानट । धामार ।

गीत ।

लक्षकत आवत है वे गोरी अबीर गुलाल भरके प्यारी ॥ १ ॥

तकतक कुमकुम मारत सवन पर और देत गारी प्यारी ॥ २ ॥

+	०	।	०	।	०
स र ना	ध ध	प मा	प प प	मा प	मा ग
ल च ०	क ०	त ०	आ व ०	त ०	है ०
र ग ग	मा मा	प प	मा ग ग	स र	स स
वे ० ०	० ०	० ०	गो ० ०	० ०	री ०
स स न	धं भं	पं पं	स र स	र र	स स
अ बी ०	० ०	र ०	गु ० ०	ला ०	ल ०
र ग ग	मा मा	प प	मा ग ग	स र	स स;
भ र ०	के ०	० ०	प्या ० ०	० ०	री ०

अन्तरा ।

प	प	प	स	स	स	स	स	स	र	स	स	स	स
त	क	०	त	०	क	०	कु	म	०	कु	०	म	०
ध	स	नर	स	स	स	स	न	ध	प	प	प	प	प
मा	०	००	र	०	त	०	स	व	०	न	०	प	र
ध	ध	ध	प	प	प	प	सध	सन	र	स	र	स	स
आ	०	र	०	०	०	०	दे ०	००	०	त	०	०	०
न	ध	ध	प	प	प	प	मा	ग	ग	स	र	स	स
गा	०	०	री	०	०	०	प्या	०	०	०	०	री	०;

(१५) कामाद ।

मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा म प ध न । चौताल ।

गीत ।

कहेउ न जात अम्बर बिच चम्पा कुम्हिलात जलज जात संकुच या द्युति छवि ॥१॥

चन्द्र मन्द दीन मलिन लीण हीन सकलंकी ताको उपमा कैसे देई चतुर सुकवि ॥२॥

अनगन तेरो मात एक रूप अनेक तुम प्रभा न पावत मणि थिर ना रहत रवि ॥३॥

शोभा मन्दिर मध आनन्द मणि ज्योति उदय रति को न रहेउ रति अनंग गयंउ छवि ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
(मोह)					
र	प	ध	म	प	ध
क	न	जा	०	श्र	व
प	स	स	स	न	ध
च	पा	०	कुम्	ला	त
मा	र	पम	प	गम	मा
जा	०	स०	कु	या०	घ

प चन्	प ०	प द (नाद)	स मन्	स द ०	स दा	स न	र म	न लि	स ०	स न	
स बी	स ०	र ण	प ही	मा न ०	स म	स क	स लं	स ०	स की	स ०	
ध ता	ध ०	प को	पम ०३	प प	प मा	म कै	प ०	न से ०	र ०	न दे	स ई
स च र तु	न र	स ०	ध सु	प क	प वि	मा र स ० ० ०	ग म या ०	प ०	मा घु	र ति	स झ स वि;

म प ध्रप अ न गन (नाद)	पप मप तेरो मात	मपन सरनस ए०क रू० प ०	ध्रधप मारर अनेक तु ० म	गगम पप प्रभा ० ० न	मारर सस पावत मनि (नाद)
मार पपध्र ।ध० ० रन	पप गमप रह त ० ०	मार सस ० ० र वि;	पप सस शो ० भा ०	स सस स स मन्दिर म ध	र प मारसस आ ० नन्दमणि
ध्र ध पपप ज्योति उदय	पप स पस रति को ० ०	ससस सस न रहे उ र त	स र नसस अ न ग ० ०	ध्रधप मारस ग यो उ वि ० ०	गमप मारसस या ० ० शुति छवि

(१६) कामोद । धामार ।

मतवारो ठाढ़ो रोके बाट माझ ॥१॥

कठिन भयो जाओरी सजनि जिया काँपत ज्यों ज्यों पड़त साँझ ॥२॥

र म	र त	र ०	मार वा ०	प ०	म रो	प ०	ध्र ठा	ध्र ०	ध्र ०	प झो	प ०	म ०	प ०
ग रो	म ०	प ०	प के	प ०	प ०	प ०	मा बा	र ०	र ट	स मा	र ०	स झ	स; ०

अन्तरा ।

प	प	स	स	स	न	स	र	स	स	स	स	स	स
क	ठि	न	भ	यो	०	०	जा	ओ	री	स	ज	नि	०
प	प	प	मा	रस	ग म प म प	मा	र	र	स	र	स	स	०
जि	०	या	का	प त	ज्यां०० ज्यां०	प	इ	त	सा	०	क	०	०

(१७) हम्बीर ।

मिश्र सम्पूर्ण । स र ग मा म प ध न । चौताल ।

गीत ।

सोहत शीश मुकुट श्रवण कुण्डल भाल तिलक गुञ्जमाला पीताम्बर कटि काछनि विराजे ॥१॥

शंख चक्रगदा पद्म कर मुरली अधर धर वृन्दावन चन्द्रमध गोपिनी संग राजे ॥२॥

गोपीनाथ मदनमोहन श्रीपति श्रीनारायण अनादि अनन्त ईश्वर स्वरूप साजे ॥३॥

ऊधोदास के प्रभु सप्तसुर छाये रहे मुरली में तीन लोक बस भई मधुर मधुर बाजे ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
नध	नध	न	स	र	स
सो०	००	इ	त	शी	श
नध	नध	पम	पम	गमा	ध
कुं०	००	उ०	ल०	भा०	०
स	स	र	स	स	स
गुं	०	ज	मा	०	ला
नध	नध	नन	स	स	स
क०	दि०	००	का	०	इ
				स	नि
				स	०
				नध	प
				विग	०
				मप	००
				गमा	० जे;

प शं	माध ००	प ख	स ख	स ०	स क	स ग	स दा	न ०	स प	स द	स म
नध क०	नध र०	र मु	र र	स ली	स ०	न अ	ध ध	ध र	ध ०	प ध	प र
मप वृन्	मप ००	मप दा०	मप ००	ग व	मा न	ध च	ध न्	न द्र	सन ००	स म	स ध
र गो	र ०	स पि	स नी	न ०	स ०	स स	स ग	नध रा०	प ०	मप ००	गमा ०जे;

गमा गोपी	धध नाथ	पपप मदन	मपप मोहन	नध श्राप	नस तिश्री	नध नारा	पप बख	गमा अना	धप ०दि	पपमग अन००	रस ०त
पप इ०	पप श्वर	मगम स्वरू०	रर ०प	सर सा०	सस जे०	पमाधपसस ऊ० धो० दास	सस के०	सस प्रभु	धनध स०स	नस सुर	
नध छाये	पप रहे	मप सुर	मप लीमें	गमा तीन	धध लोक	नन बस	सस भइ	ररर मधुर	ससस मधुर	नधपमपगमा सा०००००जे;	

(१८) हम्बीर । धामार ।

गीत ।

होरी के दिनन में बन ठन आई है सब ब्रज की सुन्दर नारी ॥१॥

एक गावत एक मृदंग बजावत कोऊ देत हँस हँस तारी ॥२॥

स्वरलिपि ।

न दि	ध ०	प ०	प न	म न	म में	प ०	ध ब	ध न	ध ०	प ठ	प ०	प न	प ०
ग आ	मा ०	ध ०	प ई	प ०	म है	ग ०	स स	र ०	र ब	स ब्र	ध ज	प की	प ०
म सु	ग ०	ग ०	र द	र र	सर ना०	स री;	म हो	प ०	प ०	म री	प ०	ग के	मा ०

अन्तरा ।

प	प	स	स	स	स	स	स	स	स	स	र	स	स
ए	क	गा	०	०	व	त	ए	०	क	मृ	दं	ग	०
न	ध	ध	प	प	म	प	ग	मा	मा	नध	ध	प	प
ब	जा	०	व	०	त	०	को	ऊ	०	दे०	त	हैं	स
ग	म	प	म	ग	सर	स;	म	प	प	म	प	ग	मा
ई	स	०	०	०	ता०	री	हो	०	०	री	०	के	०

(१६) हम्बार । चौताल वो तेताला । शिक्क अलिबक्स ।

+	०	।	०	।	०	।	।				
धध	अ न	धप	म प	धध	पप	गग	आम	गआ	रस	सर	सआ
धंधं	सआ	र र	गमा	धध	पप	गग	आम	गआ	रस	सर	सआः

अन्तरा

पप	आमा	धआ	सआ	सर	सआ	धध	सआ	रर	सन	धप	मप
धध	पप	गग	आम	गआ	रस	रर	रन	नन	धध	पप	गमा;

२ अन्तरा

पप	आमा	धआ	सआ	सर	सआ	धध	सआ	रर	सनधप	नध	पन
धप	मप	धध	पप	गग	आम	गआमगरस	रर	रनन	धधप	गमा	

३ अन्तरा

गमाधधपपमप	धधआपधआनस	सआनई	धपमप	गगमाधधप	मग	सरस	गमाधधपपमप
जोईजोईअपने०	गुरनकोजा०नत	है०यह	जगमें०	ता०नसे०न	००	या०ई	तैईतैईहोतेहैं०
गगम ररस	पपमाधआसआअ	सआ स र स	म ग र स	रे र र र नननन			धधपप मपगमा
गु ०० केज्ञान							

(२०) हम्बीर धम्मार । शिक्क अलीबक्स ।

+	॥	॥	०	॥	॥	०	॥	॥	॥	०	॥		
ध	ध	न	धप	मप	धध	पप	ग	ग	म	गआ	रस	सर	सआ
धं	धं	स	रर	गमा	धध	पप	ग	ग	म	गआ	रस	सर	सआ

अन्तरा

प	प	प	म ध	संआ	स र	संआ	ध	ध	स	र र	सन	धप	म
ध	ध	प	गआ	गआ	म ग	र स	र	र	र	नन	धध	पप	गम

२ अन्तरा

न	न	न	धप	मप	न ध	पम	ग	ग	ग	म प	गमा	धध	पप
म	ग	ग	मग	रस	धं	धं	सर	ग	मा	ध	र स	नध	पम
ध	आ	आ	सन	धप	म प	गमा	ध	आ	आ	न न	धध	पप	गमा

(२१) हम्बीर । (क) भाँपताल ।

+								
ध	आ	न	न	ध	ध	ध	प	प
म	प	गमा	ध	अ	न	ध	प	म
ग	आ	र	स	आ	स	रग	मप	ग

अन्तरा

प	प	प	ध	ध	न	न	ध	ध	ध
प	प	ध	ध	न	स	र	स	न	ध
र	स	न	ध	प	म	ग	र	स	ग

(ख) । धमार ।

+			०						०	
ध	आ	आ	न	न	ध	ध	ध	प	प	म
न	ध	आ	प	म	ग	आ	र	स	आ	सर

२

प	प	प	ध	ध	न	न	ध	ध	ध	पप	धध	न	स	र	स
न	ध	पम	ग	र	स	र	स	न	ध	पम	ग	र	स	ग	मा

नन ध धध	पप मप	गमा ध	न ध आ	प मग	र स
सर ग मप	गमा ध	सर ग	मप गमा ध	सर ग	मप गमा

— — —

(२२) कल्याण ।

शुद्ध सम्पूर्ण । सर ग म प ध न । चौताल ।

गीत ।

तुम ही भज भज रे मन कृष्ण वासुदेव पद्मनाभ परमपुरुष परमेश्वर नारायण ॥ १ ॥ याग याग जप तप कर वामदेव नारद शुक वशिष्ठ शनकादि सिद्ध चारण विद्याधर अष्ट याम पर ही रहत पारायण ॥ २ ॥ मधु दैत्य नाश करि पायां नाम मधुसूदन सुदामा के दारिद्र भंजन ॥ ३ ॥ कौड धरत ध्यान युगल श्रुति पुराण स्तोत्र विमल तेरा ही यश गावत सकल संसार बार बार ताते शनकादि पढ़त रामायण ॥ ४ ॥

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
स रस भ ज०	र रे ०	ग र ० ०	ग ग ० ०	गमप मग ००० ००	म प ० ०
न धप म न०	प मप ० कृष्	मप मग ण० ००	नंर गर वा० सु०	ग र दे ०	नं रस ० ० व
स स प इ	स स म ना	स स ० भ	नंधं नं प० ०	धं पं ० ०	मपंधंनंसस ००००० र म
स र पु रु	र र प ०	ग गर प र०	ग ग मे ०	र र ० ०	ग म पप स्व० ० र
मप मगर ना० ०००	ग र रा ०	नंर सस ०० यण	नंर गग तुम ही०	र नंर ० ००	स स; भ ज

अन्तरा ।

प यो	धप ००	ध ग	न या	स ०	स ग	स ज	स प	र न	स प	स क	स र
न वा	ध ०	नध म०	न दे	र ०	स व	न ना	धन ००	ध र	प द	प शु	प क
प व	प शि	नध ००	न ष्ट	प श	धन न०	ध का	प ०	प दि	म मि	ग ०	गर दध
र चा	गर ००	ग र	मप ण०	मप वि०	मप ००	मप चा०	मगर ०००	नं ०	र ०	स ध	स र
मग अ०	मप ००	प ष्ट	ध या	न ०	र ०	सस मप	नध र०	न ही	ध र	पम हत	प ०
मप पा०	मगर ०००	ग रा	र ०	नंर ००	सस यण	नंर तु०	गग ही०	र ०	नंर ००	स भ	स; ज

संचारी, आभोग ।

पमगमप पप म० धु०० दैत्य	पप पमग नाश करि०	नधन सस पा०यो नाम	ननध नध मधु० सूद	मप मपग न० ०००	र ग नधपमगर सुदा मा०के०००
गग रस दा० रिद्र	सर गमप भं० ०००	पमप मधग जन० ००००	पधप धनससस काउ० ध००० र त	सस स स स ध्यान यु ग ल	रनध रसनध श्रुति० पुराण०
नध पपम स्तोत्र विमल	गर पमगर ते० रो०ही०	गग रसस यश गाव त	सर गमप यक लस०	पप पप सा० र०	नधम पमप बा० र बा० र
प म ग र स ता० ते ० ०	स सनरसनध श नका०दि००	नधपमपमगर प दतरा ००००	गर नंरसस मा० ००यण	नंर गर तु० ही०	नंरस सस; ००० भ ज

[कल्याण राग में अतितीव्र र, म और ध लगता है ।]

इस गीत को लोग इमन कल्याण का कहते हैं । परन्तु कुछ तन्त्रकार केवल तीन स्थानों (४) में कोमल मध्यम का व्यवहार देख कर कहते हैं कि इमन बेलावल और ऐसे इमन कल्याण में कोई भेद नहीं देख पड़ता । कोमल मध्यम के अधिक व्यवहार से इमन बेलावल और थोड़ा व्यवहार से या बिलकुल व्यवहार न करने से कल्याण देख पड़ता है ।

(२३) कल्याण । धामार ।

गीत ।

आज ब्रज धूम सखी सब मिलि खेले हारी ॥१॥

केशर की पिचकारी ले छोड़त अबीर गुलाल बरजोरी ॥२॥

स्वरलिपि ।

ग	र	स	स	स	नं	र	स	नं	धं	पं	पं	ग	ग
धू	०	म	स	खी	०	०	स	ब	०	०	०	मि	लि
र	र	स	नं	र	गर	गर	स	र	ग	म	म	ग	र
खे	ले	०	०	०	हो	री०;	आ	०	ज	ब्र	०	ज	०

अन्तरा ।

प	प	ध	पध	न	धप	मग	प	ध	ध	न	स	न	स
के	श	र	की०	०	पि०	च०	का	०	०	री	०	बे	०
।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।	।
स	स	स	स	स	ग	ग	र	स	न	ध	ध	म	म
छो	इ	त	अ	बी	०	०	र	गु	०	ला	०	ल	०
गर	स	नं	ग	ग	गर	गर	स	र	ग	म	म	ग	र
बर	०	००	०	०	जा०	री०	आ	०	ज	ब्र	०	ज	०

(२४) कल्याण । चौताल ।

ताकत हौं तेहारी आसदास जनम जनम की हमारी दुःख नेहारों साकी हैज कौसर के ॥१॥

तुम ऐसो जो कोऊ नहीं है और ऐसो जायको है दौड़ हमको तो नहीं है ठौर बिन पायन परके ॥२॥

तुम जग निस्तारन पाप प्रखालन कां हम तनमन वरन पीर सफ़र के ॥३॥

तान बरस जानें की हमारे बह गए नाव कोट जनम दूर छुटे दर के ॥४॥

+	०	१	०	२	३						
पमगर ही०००	ग ०	म ते	म हा	गम ००	प री	प आ	ध ०	ध य	ध ०	मप दा०	धप ०स
प ज	धप न०	ध म	न ज	स ०	नध न०	न म	धप ००	मप ००	धप ०की	मग ००	रग ००
ध इ	प मा	मग ००	र ०	ग री	म ०	ग दुः	ग ख	र ते	र हा	नंग ००	स रो
सस साकी	नधन ०००	धपध ०००	पमप ०००	मम ही०	गर ज०	नग का०	गमप सरके;	नधप ०००	मप ता०	प क	प त

२

प तु	ध म	न से।	स ०	स जो	स ०	स को	स ऊ	र नहि	स है०	स औ०	स र
स ऐ	र से।	ग ०	र ०	ग जा	ग य	र ०	ग को	र है	स ०	नध दौ०	प इ
मप हम	म ०	ग ०	ग ०	म को	प तो	नध नहि	प ०	प है	प ०	पप ठौ०	प र
पप बिन	धप पा०	नध ००	नस ००	र स यन	नध ००	र स नध प म ग म प प र ००००००के	नध प ०००	म प ता०	प क	प त	

३

पम तुम	गमप ० जग	प न निस्ता	धप र न	पप पा०	धन प प्र	स स खा ०	नध लन	पपम को००	गर हम	गग तन	रर मन
सस ब०	सस र न	सर पी०	गमप ००र	नध सफ	पप र०	मग के०	मप ००;	नध ००	पमप ०ता०	प क	प त

४

सस जा०	सस ने०	रस की०	नध ००	नध हमा	पप ०रे	धप व ह	मगर गए०	पप ता०	पध न०	नस व र	स स स०
पपप जनम	पप दूर	पधनसर कु०००००	सन टो०	रस इर	नधप ०००	मग के०	मप; ००	नधप ०००	मप ता०	प क	प त

(२५) कल्याण । चौताल ।

हा दि ए अल्ला ए साहेब साई सत्तार करीम रहीम हलीम हकीम ॥१॥ याक विना अज़याक
लतीफ़ याक जात परदपोशदाना विना हादी अहुअला गुप्त प्रभट हू अल्ला हू आन ताहू अल्ला ॥२॥

+		०				०					
र	र	नं	र	स	स	नं	र	गर	ग	गग	रस
अ	ल्	०	०	ला	०	ए	०	००	सा	हं ब	००
नं	र	ग	र	ग	रग	र	र	नं	र	स	स
सा	०	ई	०	स	ता	०	०	०	०	र	०
मग	मग	म	प	म	मग	ग	गर	गर	ग	र	स
क०	री०	०	म	र	ही०	०	म०	ह०	ली	०	भ
सनं	धंपं	मंपं	धनं	सरग	मगर	ग	र	स	स	धनंनं	धनं
हकी	००	००	००	०००	म००	हा	०	बी	०	ए ००	००

२

पध	प	ध	न	स	स	स	स	स	स	स	स	र
पा०	०	क	वी	०	ना	अ	ज़	पा	०	क	ल	०
स	स	स	र	र	स	र	ग	र	स	स	स	स
ती	फ	पा	०	क	ज़ा	०	०	०	त	प	र	द
र	स	नध	न	ध	प	पधन	सर	स	नध	न	ध	॥
दा	ना	००	वि	०	ना	हा००	००	दी	००	आ	हं	॥
प	मप	मग	पप	ध	सस	रस	रगर	स	रस	नध	र	र
अ	ला०	००	गुप	त	प्र ध	ट ०	० हु ०	अल ०	ला०	ह	०	०
सन	धप	नध	प	म	गर	ग	र	स	स	धनंनं	धनं	॥
आ०	०न	ताहू	०	अ	ला०	हा	०	दी	०	ए ००	००	॥

(२६) कल्याण । चौताल । शिखक रामदास बाबू ।

गौरा गणेश सरस्वति असुर सँहारिनि सिंह पर बाहिनी प्रसन्न भई सब दुख गई ऐसो साहेब
मैं पायो ॥१॥ साहेब केरान सानी शाहजहान को नन्दन जग बंदन सुलतान औरंगजेब चतुर्दस विद्या
गुन निधान कृपालन के जहाँन मे नर चाद जीत जस गायो ॥२॥

+	०	१	०	२	३
मीह		गमक	गमक	गमक	गमक
पमग पमग ग०० ने००	म प ० स	नधन धन आ०० ००	धपध पध आ०० ००	पमप मप आ०० ००	मगर गर आ०० ००
सरस रस आ०० ००	र ग ० ०	म म स र	ग र ० ०	ग र स ०	स स ती ०
नंधं नं अ० सु	धं धं र स	पंमं धं हा० ०	पं पं री नि	पम ग सिंह ०	ग ग प र
स रस वा ००	र र हि नी	स स प्र मँ	नं धं न ०	र र ० ०	स स भ ई
ग ग स ब	मग र दुख ०	गर स ग० ई	नंर गर ऐ० सो०	ग ग सा ०	मप पप हेब मैं०
म ग पा ०	र ग यो ०	स र ० ०;	प प गो ०	म ग रा ०	रग सर ०० ००

अन्तरा

प ध सा हे	न स ब ०	स सस के रान	स नध सा नी०	न न सा ०	स स हे ०
स स स स ज ० हा न	सन सस को० ने ०	सस सस द ० न ०	सर रर जग बं०	रर सस दन सुल	गर सस ता० ० न
गमक नध रसर अ० ऊ००	गमक सस सस रें० ग ०	गमक धन सर जे० ००	गमक सस रर ०० ब ०	गमक सस सस च तु र ०	गमक सस सस द ० स ०
नध न वि० रा	ध ध गु ण	प म ध निधा ०	प प ० न	पध नध कृपा ००	नध प लन को
मम प जहा न	पम मप मे० नर	म ग रग चा० ० द	पध नस जी० ० त	सर रर जस ००	सस नध गा ० ००
मप धन ०० ००	धप मग ०० ००	रग सर यो० ००;	पप पप गो० ००	म ग रा ०	रग सर ०० ००

(२७) कल्याण । हिमातेताला शिक्षक स्वर्गीय गोपालचन्द्र चक्रवर्ती । (नूलोगोपाल)

+		०				०				०					
पम	गग	मप	पप	स	म	मग	र	ग	र	र	स	नंधं	नं	धं	पं
ग०	००	ने०	०स	स	०	र०	०	स	०	ती	०	अ०	सु	र	स
पंमं	ध	पं	पं	प	म	ग	ग	ग	ग	ग	ग	सर	स	र	र
हा०	०	री	नी	सिं	ह	०	०	प	०	र	०	वा०	०	हि	नी
स	स	नं	धं	र	र	स	स	ग	ग	म	ग	र	स	नं	र ग
प्र	सं	न	०	०	०	भ	ई	स	व	दु	ख	ग	ई	पे	सो०
ग	ग	मप	मप	म	ग	रग	सर	प	प	म	ग	र	ग	स	र
सा	०	हंख	मं०	पा	०	००	यो;	गो	०	रा	०	०	०	०	०

२

प	ध	न	स	स	स	स	स	स	न	ध	न	स	स	स	स
सा	हे	ब	०	के	०	रा	न	सा	०	०	नी	सा	०	ह	०
सस	स	स	न	स	स	स	स	स	र	र	र	स	स	गर	सन
ज हा	न	को	०	नं	०	द	न	ज	ग	बंद	न	सु	ल	ता०	न०
ध	र	स	स	ध	र	स	र	स	सस	स	स	नध	न	ध	ध
अ	ऊ	रं	ग	जं	०	०	ब	न	तु र	द	स	वि०	धा	गु	न
प	म	ध	प	प	नध	न	ध	प	म	म	प	म	प	म	प
नि	धा	०	न	कृ	पा०	ल	न	को	ज	हा	न	मे	०	न	र
म	ग	र	ग	प	ध	न	स	स	र	स	न	म	ध	न	स
या	०	०	द	जि	०	०	त	ज	स	गा	०	०	०	०	०
न	ध	पम	ग	र	ग	स	र	प	प	म	ग	र	ग	स	र
०	०	००	०	यो	०	०	०	गो	०	रा	०	०	०	०	०

विलम्बितलय ।

पमग मप	मम गर	गर सस	नंधंनं धंपं	पंमं धंपं	पम गग	गग गग	सरस र र
ग०० ने स	स० र०	स० ती०	अ० सु र स	हा० रिनि	सिंह ००	प० र०	वा०० हिनी
सस नंधं	रर सस	गग मपग	रस नंर ग	गम पमप	मगरगसर	प प मग	रग सर
प्र सं न०	०० भ ई	सब दुख०	ग ई पे० सो	साहे बमे०	पा० यो०००	गो० रा०	०० ००

अन्तरा ।

पध नस साहे ब०	सस सस के रा० न	सन धन सा० नी	सस सस सा० ह०	सस सस जहा नको	सस सस न० द न	सरर रर ज गबं दन	सस गरस सुल ता०न
धर सस अऊ रैं ग	धर सर जे० ब	सस सस च तु दे स	नधनधध वि०द्यागुन	प म धप निधा० न	पनधनध कृपा० लन	प प रप कोज हान	सप मप मे० नर
मग रग या० द	पध नस जी० त	सर सन जस गा०	मध नस ००००	नध पमग ०००००	रग सर यो० रा०	प प मग गो० रा०	रग सर ०० ००;

(२८) कल्याण । चौताल व तेताला ।

प	प	प	धप	ध	नध	न	स	धन	स	नध	न
धप	ध	पम	प	मगम	गर	नर	गरस	नध	पम	गम	धम;

अन्तरा

पध	पध	स	सन	सर	नस	रस	रन	स	नर	ग	म ग
रस	नध	र	स नधप	पध	धन	नस	धनस	नध	न	ध	प ध
पम	प	मगम	गर	धन	सन	धन	धप	धप	मप	मगम	गर
धनस	नधन	धपध	पमप	मगम	गर	धनसनधन	धपधपमप	मगमगर	नरगरस	नधपम	गमधम

संचारी व आभोग

नसधरसनध ना० ०० दते०	नध वर	प न	पमध वर ०	नधप नते०	मग वेव	गर हार	र ग ता०	र ग ० ते	धपम भयेसु	गर हृ०	
सर जग	गगर ०००	सस सं ०	सस सार	नधनं पा०थो	धपं न०	सस कोड	सस ० ०	सस वा०	र र को०	सस पा ०	सस ० र
सर भट	ग क	नधप फिरत	मग वामे	मधन वै ०जु	सन ० ०	सस बा ०	स स वर;	नध	पम	गम धम;	नधपमगमधम
गर गमध	सस मप	र सर नध	सनध पम	नधप नधप	मपम मर	रगम गम	धन धमप	मध नर	पमग गरस	धप नधपमगमधम;	मगर धम
पमरगमपनध	पमगर	गरस	सरस	रसनध	नधपम	पमरग	मधन	मधपम	ग	धपमग	नधपमगमधम
र गमधमप	प	नधपम	नधपमर	गमधमप	प	नरगरस					नधपमगमधम

इस गीत को हिसाब के साथ ताल भाग करके चौताल व तेताला में गाया जाता है। सबके नीचे की दो आवृत्ति दोनों (सम, अतीत) ग्रह में दिखाया गया है, एक दो तीन अंकों के द्वारा प्रकाशित है; याने र गमधमप एक, नधपमनधपमर गमधमप दो, नरगरसनधपमगमधमप तीन। इस तीन के ऊपर ताल का सम् और “प” के ऊपर अतीत ग्रह या सम् दिखाया गया है।

(२६) केदारा ।

मिश्र सम्पूर्ण । सर ग मा म प ध न । सूलताल ।

देखत तन मन आनन्द भये विलास विरह व्यथा भारी पुन दरशन ॥१॥

आये नन्द घर अधर सुधारे प्रेम बूँद घन लागि बरसन ॥२॥

रोम रोम सुख उपजे क्रम क्रम ज्यों ज्यों लागि पिया के पग परशन ॥३॥

तानसेन के प्रभु तुम बहु नायक सब शौतन मिलि लागि तरसन ॥४॥

(इसमे गान्धार थोड़ा लगने के कारण विवाद है)

स्वरलिपि ।

+	।	०	।	२	।	३	।	०	।
न	ध	प	ध	प	मा	मा	मा	मा	मा
दे	ख	त	त	न	०	०	०	म	न
मा	मा	ध	प	मा	माग	र	र	सर	स
आ	०	न	द	भ	ये ०	वि	ला	००	स
स	स	मा	ग	प	म	ध	प	म	प
बि	र	ह	व्य	था	०	०	०	०	०
प	प	।	।	मामा	मा	गम	प	प	प;
भा	०	री	०	डु न	द	र०	०	श	न,

अन्तरा ।

प मा	प ०	स थे	स ०	स ने	स ०	स द	स ध	स ०	स र
स अ	स ध	स र	सन सु०	ध धा	नध ००	स रे	स ०	स ०	स ०
मामा प्रे ०	ग ०	र म	स बूँ	स ०	स ०	स ०	स द	स ध	स न
धन ला०	ध ०	स गि	स ०	मा ०	मा ब	गम र ०	प ०	प स	प न;

संचारी ।

मा रो	मा ०	मा म	गम रो०	प ०	प म	प सु	ध ख	प उ	ध प
प जे	प ०	ध क्र	न म	ध क	प म	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०
मा ज्यों	माम ००	ध ज्यों	प ०	मा ला	माग ००	र गि	र ०	स पि	स या
मा के	मा ०	मा प	मा ग	मा ०	मा प	गम र ०	प ०	प श	प; न

आभोग ।

प ता	प ०	प न	स से	स ०	स न	स के	स ०	स प्र	स धु
स तु	स म	स ब	सन हु०	ध ना	नध ००	स य	स ०	स क	स ०
मा स	माग ब ०	र शौ	र ०	स त	स न	स ०	स ०	स मि	सन बि०
धन ला०	ध ०	स गि	स ०	मा ०	मा त	गम र ०	प ०	प स	प; न

(३०) केदारा । धामार ।

गीत ।

गुलाल रङ्ग डारी री ऐसो सुघर खिलाड़ी भर अबीर कुमकुम मारी ॥१॥

ऐसो खिलाड़ संग होरी न खेलूँगी पकड़ बँहियाँ अँगिया देई फाड़ी ॥२॥

एक हाथ अबीर एक हाथ पिचकारी लिये एक नाचत एक गावत दे दे तारी ॥३॥

अद्भुत मची है फाग मोहन घर देखन आयें सब ब्रजनारी ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	०	।	०	।	०	।	०
क धे टे	धे टे	धा आ	ग दि न	दि न	ता आ		
ध ध प	प मा	प प	मा मा ग	मा ग	मा ग		
डा ० ०	री ०	री ०	० ० ०	ऐ ०	सा ०		
मा ध ध	प प	प प	माग मा र	नं र	स स		
सु ध ०	र ०	० ०	खि० ला ०	० ०	ही ०		
स स स	स मा	गमा ग	मप म प	म ध	न स र		
भ र ०	अ बी	० ० र	कु० म ०	कु ०	म ० ०		
। स न ध	म ध	प मा	मा मा माग	म प	म प		
मा ० ०	० ०	री ०;	गु ला ल ०	रं ०	ग ०		

अन्तरा

प प ।	न ।	।	।	।	।	।	।
ऐ ० सो	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
न न ध	न ध	न ।	।	।	।	।	।
हो ० ०	री ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
मा मा ग	म प	प प	म प प	धन ध	नस र		
प क ड	ब हि	या ०	अं गि ०	या० ०	दे ई ०		
। स न ध	म ध	प मा	मा मा माग	म प	म प		
फा ० ०	० ०	दी ०;	गु ला ल ०	रं ०	ग ०		

संचारी

मा ए	मामा कहा	मा थ	ग अ	म बी	प ०	प र	मा ए	मामा कहा	मा थ	ग पि	ग ख	म का	प री
प लि	प ये	प ०	मा ए	ग क	मामा गाव	ग न	म ए	प ०	प क	प ना	प ०	म च	प न
न दे	धन ० दे	स ०	न ०	ध ०	मध ना०	प; री	मा गु	मा ला	ग ल	म रं	प ०	म ग	प ०

आभोग

पप अद्	स भु	स न	स म	स ची	स है	स ०	स फा	स ०	स ग	न मो	ध ०	न ह	स न
न घ	ध र	प ०	मा दे	मा ०	मा ख	ग न	म आ	प ०	प ये	न स	ध ०	न ब	ध ०
न अ	स ज	स ०	न ०	ध ०	मध ना०	प; री	मा गु	मा ला	ग ल	म रं	प ०	म ग	प ०

(३१) केदारा । चौताल ।

आनन्द भयो मेरे प्रानन की सुख देखत ही पिया का मुख ॥१॥

जो कछु वेथन मोपै बैठे विरहन पै भूल गई तन मन के दुख ॥२॥

हूँ तो तेहार हो सुख चाहत कीनी न चाहत पग पर सत रोमरोम सोई हांत संतोष ॥३॥

पादशाह सुलेमनशाह मनमा की दाता तुम पाई न्यामत ॥४॥

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
पम भयो	प ०	मा ०	ग ०	मा मे	ग ०	म रे	प ०	ध प्रा	प ०	मा न	मा न
मा कि	ग ०	र ०	नंर ००	स सु	स ख	स दे	माग ख०	म त	प ही	नध पी०	नध या
न का	र ०	स सु	नध ००	मध ००	पमा ख०	स आ	सन ००	ध ०	प न	प द	म ०

२

प जो	धप ००	स क	स लु	स ०	स वे	स थ	स न	न मो	र ०	स प	स र
न क्षै	ध ठे	न ०	न ०	रस विर	नध ००	न ०	ध ह	प न	मा ०	मा प	मा र
मा भू	मा ग ० ०	र ल	स ०	स ग	स ई	न त	ध न	न म	ध ०	न न	स ०
न के	ध ०	म दू	ध ०	प ख	मा ०	स आ	सन ००	ध ०	प नँ	प द	म ०

३

मा हूँ	माग तो०	म ते	प हा	प र	म ई	प सु	प ख	म चा	ध ०	प ह	प त
सनध की००	नस नी०	नध न०	न चा	ध ह	प त	मा प	मा ग	म प	प र	प स	प त
मा रो	ग ०	र म	नं रो	र ०	स म	स मो	माग ई०	म हा	प ०	प ०	प त
ध सँ	प ०	म तो	ध ०	प ष	मा ०	स आ	सन ००	ध नँ	प ०	प द	म ०

४

प पा	ध ०	प द	स शा	स ०	स ह	स सु	स ल	स ०	स ०	स म	स न
स गा	स ०	स ह	स ०	मा म	मा न	स शा	स ०	स की	स ०	स ०	स ०
स दा	सन ००	स ता	स ०	न तु	न म	ध ०	ध ०	र ०	र ०	स पा	स ई
न न्या	ध ०	म म	ध ०	प त	मा ०	स आ	सन ००	ध ०	प नँ	म द	प ०

(३२) केदारा । सवारी । ८ ताल । ३० मात्रा । स र ग मा म प ध ना न ।

सकल गुण प्रकाश कर ले नाद विस्तारन गुनि जन गर्व हरन प्रवट मारदा विद्या बनाए जय सुर
वीन लीनी ॥१॥ दोऊ तूम्बा एक परज कर सुर योत दाँड़ी दरस चई मिलि भग ढिड़ाई कर आसमान
गमक कर सुन्दर मोर नार मन्द्र मध तार की तान रन उपजै कोन सवार जवार उजार कीनी ॥२॥

शिक्षक बाबा लालसिंह [कठजिह्वास्वामी अमृतसर]

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०				
स	स	स	स	स	र	स	न	स	स	स	स	न	ध	न	ध	प	प	म	प	प	मा	मा	मा	मा	ना	ध	प	मा	म	प			
प्र	का	०	श	क	र	ले	०	ना	०	०	द	वि	स्ता	०	र	न	गु	नि	००	ज	न	ग	र	व	०	ह	र	न	प्र	घ	ट		
ग	मा	म	प	मा	ग	र	र	स	स	न	र	स	स	र	स	स	स	मा	ग	म	ध	म	ध	ना	ध	प	मा	ग	ग	ग	म	म	ध
ता	र	दा	०	वि	०	आ	०	ब	ना	००	प	ज	य	सु	र	वी	०००	न	ली	०००	नी	००	स	क	ल	गु	न	०					

अन्तरा ।

प	प	ध	प	स	स	स	स	स	न	र	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स	न	न	ध	ध	न	र	स	स	स	स		
दो	०	ऊ	०	तू	०	म्बा	०	पु	००	क	०	प	०	र	ज	क	०	र	०	सु	०	र	०	जो	०	त	दा	०	की			
स	स	स	स	स	स	स	स	मा	ग	र	स	स	स	स	स	स	न	स	न	न	ध	ध	प	प	प	ध	ना	ध	प	प		
द	०	र	स	चे	०	ई	०	मी	०	०	ली	०	भ	०	र	०	ढि	ड़ा	ई	०	क	०	र	०	आ	००	स	मा	न			
म	प	ध	ध	म	प	प	प	ना	ना	ध	प	मा	मा	र	र	न	र	स	स	मां	मां	मां	मां	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	
ग	म	क	०	कर	००	सुं	०	द	र	मो	०	र	०	ना	०	र	०	मं	०	द	०	म	ध	०	ता	र	की					
स	र	र	र	प	ध	ध	ध	स	स	स	स	स	र	र	र	स	स	स	स	मा	मा	मा	मा	ग	र	स	स	स	स	स	स	
ता	०	न	०	र	स	००	उ	प	जै	०	के	त	००	रा	००	ज	के	०	त	०	स	वा	र	ज	वा	र						
गमक				गमक				गमक					गमक					गमक						गमक								
मा	मा	मा	मा	ग	र	र	स	मा	मा	मा	मा	ग	म	प	प	म	ध	ध	प	मा	प	ध	ना	ध	प	मा	ग	ग	ग	म	म	ध
आ	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	००	उ	जा	००	र	की	०००	नी	००	स	क	ल	गु	न				

स्वामीजी के शिष्य-संप्रदाय कहते थे कि संगीत-शिक्षा के लिए स्वामीजी ने अपनी जिह्वा देवी के आगे बलिदान कर दी थी । इसी कारण कठजिह्वा स्वामी इनका नाम है ।

(३३) वसन्त ।

ओड़व षाड़व । सगमधन—न ध भा गरास । चौताल ।

गीत ।

सुभग वसन्त नवल लता पल्लव लागि द्रुमसुमन सुखदाई ॥१॥ शीतल पवन सुगन्ध रुचिर चारु लागि
मधुवन भर लाई ॥२॥ तरुणी सिंगार साजे पति सों विहार किये मन्द पवन मन भाँई ॥३॥
कहे चेतराव रंग माल सुगन्ध लोग गावत वसन्त बनाई ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
रा व	स ०	स त	न न	न ल	न ता
ग ल	म ला	म ०	ग गि	स हु	मा सु
म सु	ध ख	न दा	स ०	न ०	म ई
म शी	ध ०	न त	स ल	रा प	स व
स चि	स र	ग चा	रा ०	स रु	न गि
म रु	ध र	न ला	स ०	न ०	म ई
स न	स रु	मा णी	मा ०	मा मिं	मा गा
म प	ध ति	न सों	स ०	स वि	सरा हु ०
रा प	स व	स न	मामा म न	मा भां	मा ०

म क	ध ह	नस चे०	रास ० त	स रा	स व	स रं	स ०	स ग	नध मा०	न ०	न ल
म सु	ग ग	ग ०	ग ध	मा ला	मा क	सा गा	मा ०	मा व	मा त	ग ०	ग ०
म व	ध स	न ०	स त	नध ब०	न ना	स ई	ग ०	म सु	ध ०	न भ	स ग

(३४) वसन्त । धामार ।

गीत ।

भँवरा फूलि फुलवारी कछु सुधि तोहि कं है कि नाहि रं ॥१॥

मधु ऋतु पायं लाज दुरजन त्यजि खंलत नर नारि रं ॥२॥

इत उत कित डोलत भँवरा जाआं जित तित पुहुप की वारि रं ॥३॥

मोरे कहा तू अब मान ले मैं तोह देखि निपट अनारि रं ॥४॥

स्वरलिपि

+			०				०				०		
न कू	ध ०	न ०	धम लि०	म ०	ग ०	ग ०	म कु	ग ल	ग ०	मग ना०	ग ०	स री	स ०
स क	स छु	स ०	मा सु	मा ध	ग ०	ग ०	म ता	ध हि	ध ०	न कं	न ०	स ०	स ०
रा है	रा ०	स ०	स कि	स ०	न ना	धन ००	म दि	म ०	ग रे;	म भँ	ध व	न रा	स ०

अन्तरा

म म	ध धु	ध ०	न ऋ	स तु	स ०	स ०	रा पा	स यं	सन ००	स ला	स ०	स ज	स ०
रा हु	स र	स ०	रा ज	न न	स ०	स ०	ग ल	ग जि	ग ०	सन खे०	धन ००	म ल	ग त
मा ले	मा ल	माग त०	म न	ध र	न ना	धन ००	म रि	म ०	ग रे;	म भँ	ध व	न रा	स ०

संचारी

स इ	स त	स ०	मा उ	मा त	मा कि	मा न	मा डो	मा ल	मा ०	मा त	मा ०	मा ०	ग ०
म भै	ध व	ध ०	न रा	स ०	स ०	सन ००	ध जा	म ०	ग ओ	म जि	ग त	रा ति	स त
मा पु	मा हु	मा प	ग की	ग ०	म वा	ध ०	नधन रि००	म रे	ग ०	म भै	ध व	न रा	स ०

आभोग

म मे	ध ०	ध ०	न रे	स ०	स ०	स ०	स क	स हा	स ०	स तू	स ०	स अ	स ब
ग मा	ग ०	स न	नध ले०	न ०	म ०	ग ०	स में	स ०	स ०	मा तो	मा हे	ग दे	ग खि
म नि	ध प	न ट	स ०	स ०	नध अ०	न ना	म रि	म ०	ग रे;	म भै	ध व	न रा	स ०

[पश्चिम देश के तन्त्रकारों का मत यह है कि वसन्त हिंडोलांग है और दोनों मध्यमों का एक साथ व्यवहार नहीं होता है क्योंकि ऐसा करने से ललित राग की आशंका है ।]

(३५) वसन्त दिमातेताला ।

चलो सखि कुँज धाम खलत वसंत स्याम संग लिये राधे नाम रूप गुन जागरी ॥१॥

मुक्ताहार रसाल माल कंतका कं सुक जल और न प्रकटवन फूलवन वागरी ॥२॥

बालत कोकिल कीर कपोत गुँजत भँवर समीर धीर डड़त मनमोहन आगेरी ॥३॥

तानसेन कं प्रभु प्रियमिलि कलकरत गावत वसंतराग धन्य दरस भागेरी ॥४॥

+		०				०				०				
म च	ध लो	न स खी	स खी	रा कुं	स ज	न धा	स म	मधन खे००	सरा ००	नध लत	गम ००	मग वसं	रा त	स स्था
स सँ	स ग	मा लि	मा ये०	मा रा	मा धे	ग ना	ग म	मध रू०	नस प०	स गु	स न	नध जा०	न ०	म ग री;

२

मध न मु०क्ता	स स हा र	सरा स र सा ल	न स भा ल	नध न के० त	म ग का कं	म ग सु क	रा स ज ल
सस मा श्री० र	मा ग न प्र	मा मा क ट	मा ग व न	ग रा फू ल	स स व न	नध न वा० ०	म ग गे री;

३

मा मा बो०	मा ग ल त	मा मा को०	मा मा कि ल	ग ग कि र	गमा ग कपो त	मध नस गुं० जत	ससस भै व र
स रा स मी	स स ० र	नध नध धी० ० र	म गमा उ ड त	स स म न	मामा मा मो ह न	नध मग आ० ००	रा स गे री

४

म ध ता न	न स से न	स स के०	स स प्र भू	रा रा मी व	स स मि लि	न ध के ल	मग ग कर त
मा मा गा०	मा ग व त	मध ध व स त	न स रा ग	ग गा ध न्य	सस स द र स	नध न भा० ०	म ग गे री

मालकोष

दिवा द्वितीय १० दण्ड ।

माघ-फाल्गुन ।

सूची ।

राग नाम ।	बोल ।	रचयिता ।	ताल ।
मालकौष	— (१) डिमिडिमि डमरू —	(वाणीविलास) —	चैताल ।
„	— (२) आहो धुन् धुंकार —	—	धामार ।
„	— (३) सरगम —	—	चैताल व तेताला ।
गान्धारी टोड़ी	(४) ए प्यारे आये मेरे —	(इंछावरस) —	चैताल ।
दरबारी	— (५) मेरे तो अल्ला नाम —	(विलासखाँ) —	चैताल ।
„	— (६) होरी खेलो सखी —	—	धामार ।
„	— (७) सरगम् —	—	तेताला ।
„	— (८) जो गुनि गुण को —	(विलासखाँ) —	चैताल ।
तिलंग	— (९) नयो पवन नयो बादर —	(धुन्धी) —	ढीमा तेताला ।
तिलक	— (१०) „ —	„	„
तिलक कामोद	(११) मुरारे त्रिभुवन पति —	(तानसेन) —	भाँपताल
गौड़ सारंग	— (१२) माधवमुकुन्द मधुसूदन —	—	चैताल ।
„	— (१३) डफ बाजन लागि री —	—	धामार ।
„	— (१४) सरगम —	—	चैताल व तेताला ।
शुहा	— (१५) चमत्कार दिदार —	—	भाँपताल ।
„	— (१६) सरगम् —	(शिक्षक—पञ्चालाल) —	भाँपताल ।
हुथैनी टोड़ी	— (१७) सरसती बाकबानी —	(रसूलवक्श) —	धीमा तेताला ।
वृन्दावनी सारंग	(१८) अति सुगन्ध मलयजघन —	—	भाँपताल ।

मालकोष ।

करुणारससम्पन्नो मलधातुमुपाश्रितः ।

मलं संचालयेत् स्थानात् मालवश्च ततः स्मृतः ॥

द्वितीयो मालकोशश्च कटिदेशान्महायशाः ।

महदंकरच भूतानां चक्राच्चैव विशुद्धतः ॥ महेशचन्द्र सरकार ॥

शास्त्र में लिखा है कि यह राग महादेवजी के शक्ति (पार्वती) कण्ठ से निकला था । शिशिर-ऋतु (माघ-फाल्गुन) में सब समय इसको गा सकते हैं । दिन के द्वितीय दश दण्ड के समय यह राग और तत्सामयिक अन्य राग गाये जाते हैं । इनके स्वरलिपि आगे दिये गये हैं । शेष रात्रि को किसी किसी ने शिशिर-ऋतु कहा है इसलिए शेष रात्रि के समय में भी मालकोष गा सकते हैं । इस राग को शुद्धरूप से गाने से पत्थर गल जाता है, मूर्च्छागत वायु का दमन होता है और तुरन्त आनन्द-लाभ होता है । कोकिल (पंचम) स्वर में गान से कदाचिन् ये फल पा सकते हैं ।

कैशिकी जातिजः षड्जग्रहांशान्तोऽल्पधैवपः ।

सकालिकः षड्जादि मूर्च्छनारोहिवर्णवान् ॥

विप्रलम्भे प्रयोक्तव्यः शिशिरे प्रहरेऽन्तिमे ॥ संगीतरत्नाकर ॥

इस मत के अनुसार मालकोष नाम का कोई राग ठीक नहीं होता । पारिजात में “मंगलकोष” राग का ऐसा व्याख्यान है—

धैवतोद्ग्राह धांशान्तो गौरीमेलसमुद्भवः ।

रागो मंगलकोशाख्यो धनी यत्र समन्वितौ ॥

प्रचलित मालकोष राग से इसका कोई मेल नहीं है ॥

मालकोष

(१)

शुद्ध ओड़व । स गा मा धा ना । चौताल व ढीमा तेताला ।

मि डिमि डमरू बाजत श्रवण कुण्डल कण्ठ योगतिलक माल भाल शोभित शशी शीशकलाधारी । १।

आडम्बर दिगम्बर वाघम्बर अम्बरवर ब्रह्मरूप ऐसो ध्यान धरत लागि रहत खण्ड परशुतारी । २।

शोभित जटाजूट गंगा तरङ्ग ऐसो गोरंग अर्धांग विराजित पिया प्यारी । ३ ।

भुजंग फणधर मणधर विषधर हर हर हर दुखहर वाणीविलास के आनन्दकारी । ४।

[इस राग में गान्धार और मध्यम का एक साथ व्यवहार होता है । स्वाधीन गान्धार के लगाने से दूसरे रागों की आशङ्का है ।]

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
गामा गामा डि ० ० ०	सस गामा मि ० डि ०	गामा सनां ० ० मि ०	धानां सगामा ड म रू ० ०	गामा मा बा ० ज	गामा गामा त ० ० ०
मा धा श्र व	ना ना ण कुं	धा मागामा ड ल ० ०	माधाना स कं ० ० ०	स ठ	स ० ग
स ति	स ल	स ०	नाधामा गामा भा ० ० ० ल	माधानास शो ० ० ०	धाना ० ०
गामा गामा श ० शी ०	गा मा शी ०	गा मा ० श	गामा गामा क ० ला ०	गामाधा गामागा ० ० ० ० ० ०	मागामा सा धा ० ० री;

२

मागा मा आ ० ०	नाधा नाधाना डं ० ० ० ०	स सस ० ब र	स सना दि गं ०	स ०	स व	स ० र
स बा	स सना व र ०	स स अ ब	ना धा र ०	माधानास ० ० ० ०	धाना ० ०	धामा गाम ० ० व र
स ब्र	स स रू प	गामागामासना मे ० ० ० ० सो ०	स स ध्या ०	नाधा न ०	ना ध	धा मागामा र ० त ०
गा माधानास ला गि ० ० ०	नाधा मागामा ० ० र इ त	गामा गामा खं ० ड ०	मामा गामा प र शु ०	गामाधा ० ० ०	गामागा ० ० ०	मागामा सा ता ० ० री;

मंगमा गामा शो ० ० भि त	गामा गामा ज टा ० जू	गामा गामा ० ट ग ०	गामा गामागा गा ० ० ० ०	मागा त र	मागा ङ्ग ०	मागामाधाधा ऐ ० ० सो ०
नाना नाना गो ० रां ग	सस सस अ र ध ङ्ग	सना धामा दि रा जि त	गामागामागा पि या ० ० ० ०	माधानास ० ० ० ०	धाना ० ०	धामागामा स प्या ० ० ० री
सस सस भु जं ग ०	सस सस फणि ध र	गामा सस म णि ध र	गामागामा सस वि ० प ० ध र	सस ह र	सस ह र	सस नानाधा हर दु ख ०
मामा गागा ह र ० ०	गामागाधानास वा ० र्णा ० ० वि	सस सस लास के ०	सस नाधा आ ० ने ०	माधानास नाधानाधा द ० ० ० ० ० ० ०		मागामा स का ० ० री;

इसी गीत को दूने लय से चौताल में गाना हो तो नीचे के स्वरलिपि के अनुसार गाना चाहिए। इसको ढीमे तेताले में भी गा सकते हैं, चौताल में सञ्चारी और आभोग को अलग अलग और ढीमे तेताल में एक साथ गाना पड़ेगा।

+	०		१		२		
गामागामा डि०००	ससगामा मि० डि०	गामासनां ०० मि०	धानांसगामा ड म रु००	गामामामा बा०० ज	गामागामा त०००	माधा अ व	नाना ण कुं
धामागा ड ल०	माधानास क०००	सस ठ यो	सस ० ग	सस तिल	ससना क मा०	सस ० ल	नाधागामा भा०० ल
सी६							सी६
माधानासधाना शो००००००	धामागामा भि०० त	गामा श शी	गामागामा शी०० श	गामा क०	गामागामा ला०००	गामाधागामागा ०००००० धा	मास ० री

२

मागामा आ ० ०	नाधानाधा ड ० ० ०	स स ब र	स सना दि ग ०	स स ० ०	स स ब र	स स बा धं	सस ब र
स स अ व	नाधा र ०	माधानासधाना ० ० ० ० ० ० ०	धामागामा वर ० ०	स स ब्र ह्म	सस रूप	गामागामासना ऐ ० ० ० सो ०	स ध्य
नाधाना न ० ध	धामागामा र ० त ०	गामाधानास लागि ० ० ०	धानागामा र ह त ०	मागामा खंड ०	मामामा प र शु	गामाधानागामा ० ० ० ० ० ०	गामा ता ०

गामागामा गो०० भि त	गामागामा ज टा०जू	गामागामा ० ट गं ०	गामागामा गा०००	गामागामा त रं० ग	गामाधाधा ऐ० सो०	नानानाना गो रं० ग	स स स स अ र धं ग
उनाधामा देरा जि त	गामागामा पिया००	माधानासधाना ०००००००	धामागामास ० प्या००री;	स स स स भु जं० ग	स स स स फ णि ध र	गामास स म णि ध र	गा मा गा म स वि ष ध र ।०
स स स र ह र	स सनाधा ह र दु ख	मामागामा ह र ००	मानाधानास वाणी०० वि	स स स स लाम के०	स सनाधा आ० नं०	माधानासधानाधा द ०००००००	मामागामास का०००री

(२) मालकोष ॥ धामार ॥

आहो धुन् धुंकार डफमृदंग बाजत है बिच मुरली धुन छोड़ि ॥१॥

चोवा चन्दन अतर अरगजा केशर रंग में बेरि ॥२॥

एक गावत एक बोन बजावत अबीर गुलाल लिये भर भोरि ॥३॥

सहा रंग बरसत गोकुल में खेलत नन्दकिशोरी ॥४॥

स्वरलिपि ।

+			०			०					०			
क	ध	ट	ध	ट	धा	आ	ग	दि	न	दि	न	ता	आ	
मा	मा	मा	गा	मा	गा	मा	गामा	धाना	धा	ना	धा	मा	गा	
धुं	का	०	०	०	०	र	ड०	फ०	०	मृ	दं	०	ग	
मा	धा	ना	स	स	स	स	ना	धा	धा	नां	धां	स	स	
बा	०	०	ज	त	ह	०	वि	०	च	मु	र	ली	०	
गा	मा	मा	नाधा	मा	गामा	स	स	नां	धां	नां	सगा	मागा	मा	गा
धु	न	०	छो०	०	००	दि;	आ	हो०	०	००००	०	धु	न	

(८१)

२

मा घो	धा ना	ना ०	धा ०	धा ०	स ०	स ०	ना चं	स द	स न	ना अ	ना त	धा र	धा ०
मा अ	गा र	मा ०	गा ग	मा जा	गा ०	मा ०	गा के	मा ०	स ०	स स	स र	स ०	स ०
ना रं	धा ग	मा में	गा बो	मा ०	स ०	स; रि	स आ	नां धां हो ०	नां ०	सगा ० ० ० ०	मा ० ० ० ०	मा धु	गा न

३

स पु	स ०	स क	नां गा	धां ०	नां व	स त	गागा एक	मा बी	गा न	मा ब	मा जा	गा व	मा त
ना अ	ना बी	ना ०	धा ०	धा ०	मा र	मा ०	गा गु	मा ला	मा ल	गा लि	मा ये	गा ०	मा ०
ना भ	धा र	मा ०	गा भो	मा ०	स ०	स; रि	स आ	नां धां हो ०	नां ०	सगा ० ० ० ०	मा ० ० ० ०	मा धु	गा न

४

मा स	धा दा	ना ०	धा ०	स ०	स रं	स ग	ना ब	ना र	ना ०	स ०	स ०	स स	स त
गा गो	मा ०	मा ०	स कु	स ल	स में	स ०	गामा खे ०	गामा ल ०	मा त	गामा ०	गामा ०	धां नं	नां द
ना कि	धा ०	मा ०	गा शो	मा ०	स ०	स; री	स आ	नां हो	धां ०	धां ० ० ० ०	नां ० ० ० ०	मा धु	गा न

(३) मालकोश—चौताल और तेताला ।

+								
नाधा	मागा	माधा	नास	सना	धाआ	नाधा	माआ	
गामा	धाआ	नाधा	आआ	धांनां	सगा	आमा	नाधा	
ना	धा	मागा	मास	गागा	सगा	गास	गामा	१
माधा	आना	धा	स	सना	स	गाआ	माआ	
गामा	स	नाना	स	धाधा	ना	मागा	माधा	
गामा	गामा	गामा	स	गागा	सगा	गास	गामा	२
माधा	नाधा	सना	सस	नास	गामा	माआ	नाना	
धाधा	मामा	गागा	माआ	सआ	धांनां	स	गागामा	
नानाना	धाधा	नाधामा	गामा	गामा	गामास	गागास	गामा	३

[जहाँ जहाँ गान्धार है वहाँ वहाँ गामा एक साथ है समझना चाहिये ।]

(४) गान्धारी टोड़ी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा मा प धा ना । चौताल ।

ए प्यारे आये मेरे महल करूँगी हो आज आनन्द बधाई ॥ १ ॥

तन ते तपन गई रोम रोम शीतल भई जो मिलिहँय मोहे सुखदाई ॥ २ ॥

एत सब आयो मङ्गल गाये आँगन लिपायो चौक बनाई ॥ ३ ॥

मोहे इच्छावर सुखी के प्रभु को दरश देखत हैं मैं नई नई आयुबल पाई ॥ ४ ॥

+		०	१	०	२	३	
मा	गा रा	सगा गामा	पमा प	धा प	प प	धा प	
आ	० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	मे ०	रे म	ह ल	
धा	प	प मा	प प	धाधा पप	मा गा	रागा रास	
क	हं	० गी	० ०	हो ० ० ०	० आ	० ० ० ज	
गा	गा	रागा मा प	मागा रास	गामामाधधा	प प	प प मा	
आ	०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ० ० ० ०	० नं	० द ०	
प	मा	गारा गागा	रा स	स (मीड़) धा	प प	मापमा पमागामा	
ब	धा	० ० ० ०	० इ	ए ०	० प्या	० ० ० रे ० ० ०	

प त	प न	धा ते	धा ०	ना त	स प	स न	स ०	रा ना ग ०	स ०	स ई	स ०
धा रो	धा ०	धा धानास म रो ० ०		स ०	स म	गा शी	गा त	स ना ल ०	स भ	नाधा ई ०	प ०
पधा ज ०	पधा ब ०	रा मि	स लि	गा हे	ना ०	धा ०	ना ०	धा ०	प मो	प ०	प हे
रा सु	स ख	राना धा ना दा ० ० ०		धा ०	प ई	स (मोड़) धा ग ०		प ०	प प्या	मापमापमागामा ० ० ० रे ० ० ०	

धा ग	धा त	प म	प ब	धा आ	प मा यो ०	प मं	प ०	प ग	प ल	धा गा	प यो
मा आङ्	मा ग	पमा न ०	प लि	मा पा	गा यो	रागा चौ ०	रागा क ०	रा ब	रा ना	स ई	स ०
मामा मो हे	पप हृच्छा	पपप बरम	पप सुखी	धा के	नासस प्र भुके	सरा द र	स म	गा दे	रास ख त	सना हे ०	धाप ० ०
पप मैं ०	धासना न ई ०	सना न ई	धाप ० ०	पपमा पमागा आयु ० बल ०		गारा गारास पा ० ० ० ई		स (मोड़) धा ग ०	प्या	मापमापमागामा ० ० ० रे ० ० ०	

(५) विलासखानी टोड़ी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा म प धा न । चौताल ।

गीत ।

मेरे तो अल्ला नाम को आधार जिनने रचे संसार काम क्रोध मद लोभ सब त्यजो यमजाल ॥१॥

जिनने रचे अरस कुरसी मन जमीन आसमान निरंजन निर्विकार साँची क्यों न सेवो पर्वरदगार ॥२॥

काहे को भूलिये एकरार काहे को होइये गुनाहगार साँई सेा याद क्यों न कीजिये जाको नाम ब्रज गात ॥३॥ खाँ बिलास कहे पाक साफ हो रहिये तेहारो जनम जित उन्हीं बारबार (मनुष जनम नहीं होत बारबार) ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	०	१	०	२	३
रागा रागा अ ल् ला०	रा स ० ना	स स ० म	रा रा को ०	स नं अ ध	स स ० र
रा रा जिन ने	स रा ० र	स नंस चो ००	सरा नं सं० ०	धां पं ० सा	पं पं ० र
मं धां का म	नं स क्रो ध	रागा रागा म० द०	रागा रागा लो० भ०	म प म ब	धा पमगा त्य जो००
रा गा य म	रा गा जा ०	रा स ० ल	स नं मे ०	सनं धां रे० ०	नं स तो ०;

२

प पम जिन् ने०	धा धा र चेा	न स अ र	स सस म कु र	स स सी ०	स स म न
स स ज मीन	स स आ स	नसरा सरागा मा०० ०००	रा स ० न	न धा नि रं	प प ज न
म प निर् वि	धापम गारास का०० ००० र	नं स साँ ची	रा गा क्यों ०	म धा न ०	न धामगा से वेा ००
रागा रागा प र व र	रा गा द गा	रा स ० र	स नं मे ०	सनं धां रे० ०	नं स तो ०;

३,४

धा का	धा हे	प को	मप ००	प भू	प लि	प ये	मप ००	प ण	प क	प रा	प र
म का	प हे	धाप को०	मगा ००	रा हो	गा इ	रा ये	गा गु	रा ना	स ह	रा गा	स र
नंस साई	स सां	नं था	धांधां ० द	नं क्यों	स न	रारा की०	सस जिये	रा जा	गा कां	म ना	धा म
नन ब्रज	धाम ००	रा गा	गा ०	रा ०	स; न	म खा	धाधा ० न	न वि	सस लाम	स क	स हं
नसरा पा०क	सरागा सा०फ	रा हो	सस र हि	न ये	धाप ००	धा ने	धा हा	न गे	स ०	धा ०	न ०
धा ज	प न	प म	प ०	मधा जि०	मगा ००	रा ०	स न	नंस उन	रागा ही०	मधान ०००००००	धामगा ०००००००
रा बा	गा ०	रा ०	स र	स बा	स र;	धाधा म नु	नस प०	धान ००	धाप ० ज	पप न०	मप म०
मप नहीं	धाधा हो०	मम ०त	गागा बा०	गागा ०र	रास; बा र	स मे	नं ०	सनं रे०	धां ०	नं तो	स

(६) दरबारी टोड़ी । धामार ।

गीत ।

होरी खेलो सखी री साज बाज रङ्ग राज सों ॥१॥

ऐसी होरी में फाग मचाओ फगुआ लो रघुराज सों ॥२॥

चन्दन बंदन बुकारोरि अबीर गुलाल समाज सों ॥३॥

कृष्णानन्द सों रंग भर लाओ खेल घुँघट जिउ लाज सों ॥४॥

स्वरलिपि ।

+	०	।	०	।	०
गा रा गा	रा रा	स स	नं धां धां	नं स	स
खे लो ०	स खी	री ०	सा ० ज	बा ०	०
रागा रा गा	रा रा	स स	नं स स	रा नं	स
रं ० ग ०	रा ०	ग सों	० ० ०;	हो ०	०

२

मप ऐ०	म ०	धा सी	न ही	स री	स में	स ०	नस रास रागा फा० ० ० ० ग	रा म	स चा	नधा प ओ० ०
म फ	प गु	धा आ	न लो	स ०	गा र	गा घु	रागा रा स रा० ज में	रा हो	नं ०	स रा ० री

३

गागा रा गा चं० द न	रा गा वं०	रा गा द न	रा रा रा बु का ०	स स रो ०	स स रि ०
रा गा गा अ बी र	म गा गु ०	म प ला ल	धाप मगा रास समा ० ० जमें,	रा नं हो ०	स रा ० री

४

मप कृष्णा	म ०	धा ०	न नं	स द	स सों	स ०	रास र ०	रा झ ०	गा ०	रा रु	रा र	स ला	स ओ
न खो	धा ०	प ल	म धाधा धुँ घ ट	रा जि	गा उ	रागा ला ०	रा ज	स; सों	रा हो	नं ०	स ०	रा री	

(७) दरबारी टोड़ी । तेताला ।

+							
गाआ	राए	गाआ	रासा	नंस	गागा	रास	रास
नंधां	पंअ	मंधां	नंस	गागा	रास	रानं	सरा १
मप	मधा	आन	सआ	नस	गागा	रा स	रास
नधा	मधा	नन	धाप	मगा	रास	रानं	सरा २
सरागा	रागा	मपधा	पधा	मधान	धान	धापमगारासरानंसरा	
गाआ	आआ	मधा	नधा	मगा	रास	रानं	सरा ३
धाधा	पअ	मधा	नस	नस	गागा	रास	रास
नधा	गारागा	मप	नधा	पमगा	रागा	रास	रानंसरा ४
ननधा	नन	धाप	मधाआ	नधाम	गाआ	रागारास	रानंसरा
गाआ	रा स	ननधा	पमगा	रासरानं	सरागा	मगारास	रानंसरा
धाप	मगा	नधाप	मगा	रासनधा	पमगा	धामगारा सरानंसरा	५

(८) बिलसखानी टोड़ी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा गा म प धा न ।

चौताल

जो गुनि गुन को पावे गाये नीक तानन सो रिक्तावं जवसुर संगीत पावे अच्छे नीके प्रमाण ॥ १ ॥
 सोब समझ तान लेत ध्यान धरत जिया में जब बाजवे जन्त्र तन्त्र मुरन धुरन सो वाको समझान ॥ २ ॥
 धध प म ग रे ग म ध नि ध प म ध नी स रे ग रे ग रे स रे रे स नि स रे नी ध प म ध नि ध म ग रे
 ग नि ध म ग रे ग रे स नि नि नि ध ध ध प प म ग रे ग रे स गवत विलासखान ॥ ३ ॥

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
रानं	स	रा	सरा	गा	रागा	स	मीड़	धा	प	प	प
गु०	न	को	००	पा	० वे	गा	वे	वे	०	०	नि
म	प	धाप	मगा	गगा	रागा	रा	स	रा	रा	स	स
ता	०	न न	सों ०	रि ०	का ०	०	वे	ज	ब	सु	र
नं	धां	नं	स	रा	स	स	धा	प	प	पम	गा
सँ	०	गी	त	पा	वे	आ	०	छे	०	नि०	०
म	प	धाप	गगा	रा	स	रा	गा	रा	स	ग	स
के	०	प्र ०	० मा	०	न;	जा	०	०	०	गु	नि

२

प	म	धा	न	स	स	स	स	स	रान	स	स
सो	०	च	स	म	म	ता	०	न	ले ०	०	त
रा	न	स	स	रागा	रागा	रा	स	न	धा	प	प
ध्या	०	न	०	ध ०	र त	जि	या	मे	०	०	०
प	धा	प	प	म	गा	गा	गा	रा	रा	स	स
ज	ब	०	ब	जा	वे	०	०	जँ	त्र	नँ	त्र
नंस	रा	गा	म	प	धा	प	प	म	गा	रा	गा
पू०	र	न	धू	र	न	सों	०	वा	०	०	को
रा	रा	स	स	स	स	रा	गा	रा	स	रा	स
स	म	का	०	०	न;	जा	०	०	०	गु	नि

धाधा पम	गा रागा	मधा नधा	पम धानस	रा गा	रा गा
रा स	रा रा स	नंस रान	धाप मधा	नधा मगा	रागा
नधा मगा	रागा रास	नन न	धाधा धा	पप मगा	रागा रास
मीड़	मीड़				
स धापम	धा रागा	रा स	रा गा	रा स	रा स
गा व त०	बि ला स	खा न;	जो ०	० ०	गु नि

इस राग में अतिकोमल गंधार व अतितीव्र निषाद का व्यवहार है।

तृतीय अंश का जो सरगम है वह गमक तान से गाया जायगा। याने आ आ आ करके।

(६) तिलंग ।

पाड़व---सम्पूर्ण । स ग मा प ध न--ना धा प मा ग र स, हिमा तेताला ।

नयो पवन नयो बादर नयो साजन नई विरह नई मेहदि कोमल हाथ नयो रङ्ग सुरङ्गी ॥ १ ॥

नई पिया नई प्यारि पहिने कुसुम सारि कुच कि सुधि भुलि अब लख रहे वेशी चङ्गी ॥ २ ॥

नयो नेह नयो गेह नवल लाल की नई प्रीति प्रघट भई सेज सो अनन्त मानो सङ्गी ॥ ३ ॥

धुँधी के प्रभु तुम बहु नायक श्यामरो सलोनों तो सो रहत उमङ्गी ॥ ४ ॥

स्वरलिपि

+			
गग मामा मामा मामा	मामा गप पमा गग	धध धध पप पप	मामा पध मापमा गग
नयो ० ० प व न ०	न यो ० ० बाद र ०	नयो ० ० सा० जन	न ह ० ० ० ० बिरह
सस सस गमा पप	नध नन सस सस	नाना पप मामा मामा	मापध माप मामा गरस
न ई ० ० मे ह दि०	को० मल हाथ ० ०	न ० यो० रँ ० ग ०	सु ० ० ० ० रँ ० गी० ०

मामा पप नन सन	सस सस सस सस	नाना पप पप पप	मामा मापध माप माग
न ह ० ० पिया ० ०	नई ० ० प्यारि ० ०	प हि न० ० ० ० ०	कुसु मि० ० ० ० ० सारि
सस गग मामा पप	नध नन सस सस	नाना पप पप पप	मापध माप मामा गरस
कुच कि० सु ० ध०	भु० लि० अब ० ०	ल ० ख० रहे ० ०	वेशी० ० ० चङ्गी० गी० ०

३

मामा मामा पप पप न यो ० ० ने० ह०	पप पप पप पप नयो ०० गे० ह०	नन नन सस सस न व ल० लाट कि०	नाप पप मामा गग न इ ०० ग्री ० त०
गग गग मामा पप प्रघ ट० भ० इ०	पप पप मामा गग से० ज० सा० ००	नाना पप मामा गग आ० ०० ने० त०	मापध माप मामा गरस माना० ०० से० गी००

४

पप पप नन सस धु० धी० के० ००	सस सस सस सस प्र० भु० ०० ००	नाना पप पप पप तु० म० धहु ००	माप धमाप मामा गग ना० ०० ० य० क०
सस सस गमा पप श्या० म० रो० ००	नन नन सस सस स० ला० ना० ००	नाना पप पप मामा तो० सा० ०० र ह	मापध माप मामा गरस त० ०० ०० उ मं गी००

[पहले हम “तिलक” और “तिलङ्ग” को एक ही जानते थे, परन्तु किसी समय पञ्जाब के बाबा लालसिंह (कठजिह्वा स्वामी) काशी में आये थे और इसी गीत को “तिलक” राग में गाया था। उन्हीं के पास मैंने इसको सीखा। स्वरलिपि आगे दी गई है।]

(१०) तिलक

शुद्ध षाड़व । स र ग मा प न । ढिमा तेताला ।

+	२	०	३
र ग मामा मामा मामा नयो ० ० प व न ०	मामा गप पप माग नयो ०० बा० द र	नन नन पप पप नयो ०० सा० ज न	मामा गमाग गमा गग न इ ००० वि० र ह
सस सस गमा पप न इ ०० मे ह दि०	नन नन सस सस को० मल हा० थ ०	नन पप मामा मामा न० यो० रं० ग ०	गमाप गमा गर गरस सु ०० ०० रं० गी००

अन्तरा

मामा पप न न र र न ० इ० पिथा० ००	सस सस सस सस न इ ०० प्या० रि०	नन पप पप पप पहि ने० ०० ००	मामा गमाप माप माग कु सु मि ०० ०० साङ्गि
सर गग मामा पप कुच कि० सु० ध०	नध नन सस सस भु० लि० अ ब ००	नन पप पप मामा ल० ख० रहे ००	गमाप गमा गर गरस बेणी० ०० चह् गी००

संचारी

मामा मामा पप पप न यो ० ० नेह ००	पप पप पप पप नयो ०० गेह ००	नन नन सस सस न ० चट ल्या ० टकि	नप पप मामा गग नह ०० श्री ० त०
रग गग मामा पप प्रध ट ० भ ० इ०	पप पप मामा गग से ० ज ० सो ० ००	नन पप मामा गग अ ० ०० नं ० ० न	गमाप गमा गर गरस माना ० ० ० से ० गी ००

आभोग

प प पप नन सस धुं ० धी ० के ० ० ०	सस सस सस सस प्र ० सु ० ०० ००	नन पप पप पप नु ० स ० बहु ००	माप गमाप माप्रा गग भा ० ० ० ० ० यक
सस रर गमा पप ग्या ० म ० रो ० ००	नन नन सस सस स ० लो ० ने ० ००	नन पप पप मामा नी सो ० ०० न ह	गमाप गमा गर गरस न ० ० ० ० उमं गी ००

(११) तिलक कामोद

षाडव षाडव । स र ग मा प न न ध प मा ग स । भाँपताल ।

मुरारे त्रिभुवन पति इन्द्र सुरन पति धनेश धनपति शेष नाग फनि पति ॥ १ ॥

क्षीर अब दधि सलिल पति कौस्तुभ मणि रत्नपति दिनकर दिननपति नारायण कमलापति ॥ २ ॥

शशी उर गनपति हनुमन्त बलन पति नारद भक्तनपति वीण मृदङ्ग बाजन पति ॥ ३ ॥

कर मिनति कहे श्रोपति चिरञ्जीव रहं क्षत्रपति अकबर शाहे नरनपति तानमन ताननपति ॥ ४ ॥

+	।	०	।	×	।	०	।
ग ग	मा मा मा	प प प प	ध माप माग	स न	प प ध	मा प	ग मा ग
मु रा	रे ० ०	त्रिभु वन	प ति ० ००	इन ०	द ० सु	र न	प ति ०
र ग	मा प प	न स	र न स	स स	न प प	ध मा	प गमा गस
ध ने	० ० श	ध न	प ति ०	श प	ना ० ग	फ णि	प ति ० ० ०

(६१)

(२)

मा प शी ०	न न न रो द धि	स सस स्व लि र	स स स प ति ०	र प को र्नु	मा ग ग भ न शि	स न र ल	प प प प ति ०
र ग दि न	मा प प ० ० ०	नस र दि न न	न स स प ति ०	स स ना ०	न प प ग य ण	धध मा क म टा	प गमा गस प ति ० ० ०

(३)

र र श शी	ग मा प ० ० ०	मामा मामा ड र ग न	ग ग ग प ति ०	मा मा ह न	प प प मं न ०	धमा प ब ल न	ग मा ग प ति ०
ग र ना ०	स नं पं र द ०	नं स र भ क ल	नं स ० प ति ०	र ग वी ग	मा प प सु डं ग	धध मा बा न	प गमा गस प ति ० ० ०

(४)

मा प क र	न न न मि न ति	स स क ड	स्व सस धी प ति	र र चि र	पमा ग र स जीव र हो ०	स न ड व	प प प प ति ०
र र ग ग अ क व र	मा प प शा ० हे	नस र न न न	न स स प ति ०	स न ना न	प प प मं ० न	धध मा ता न	प गमा गस प ति ० ० ०
+				०			

[इस गीत को ढीमे तेताले में भी गा सकते हैं । चार आवृत्ति का भांगरानाट और दो का ढीमा तेताना होता है]

(१२) गौड़ सारङ्ग ।

मिश्रसम्पूर्ण । स र ग आ म प ध न । चौताल ।

माधव मुकुन्द मधु सूदन मुरारे राधा-पति गोपी मन रञ्जन ॥१॥

पतिप्रावन दीनबन्धु दीननाथ कादत दुख द्वन्द फन्द सुदामा के दुख दारिद्र भञ्जन ॥२॥

गोवर्धन धारि कृष्ण मुरारि काली को गर्व भञ्जन ॥३॥

रबी शशी को ज्ञान ध्यान गुप्त प्रकट कर राखत कजरौटि के अञ्जन ॥४॥

संचारी

मामा मामा पप पप न यो ० ० नेह ००	पप पप पप पप नयो ०० गेह ००	नन नन सस सस न ० बल ला ० टकि	नप पप मामा गग नह ०० ग्री ० त०
रग गग मामा पप प्रध ट० म ० इ०	पप पप मामा गग मे० ज० सो ० ००	नन पप मामा गग अ० ०० नं ० ० न	गमाप गमा गर गरस मानो ०० से० गी००

आभोग

प प पप नन सस धुँ० धी० के० ० ०	सस सस सस सस प्र ० भु ० ०० ००	नन पप पप पप तु ० म० अहु ००	माप गमाप मापा गग गी० ० ० ० ० ०
सस रर गमा पप ज्या० म० रो ० ००	नन नन सस सस स० लो ० न ० ००	नन पप पप मामा नो सो ०० न ह	गमाप गमा गर गरस न०० ०० उमं गी००

(११) तिलक कामोद

षाड़व षाड़व । स र ग मा प न न ध प मा ग स । भाँपताल ।

मुरारे त्रिभुवन पति इन्द्र सुरन पति धनेश धनपति शेष नाग फनि पति ॥ १ ॥

क्षीर अब दधि सलिल पति कौस्तुभ मणि रत्नपति दिनकर दिननपति नारायण कमलापति ॥ २ ॥

शशी उर गनपति हनुमन्त बलन पति नारद भक्तनपति वीण मृदङ्ग वाजन पति ॥ ३ ॥

कर मिनति कहं श्रोपति चिरञ्जीव रहं क्षत्रपति अकबर शाहे नरनपति तानसेन ताननपति ॥ ४ ॥

+	।	०	।	×	।	०	।
ग ग मु रा	मा मा मा रे ० ०	प प प प त्रिभु व न	ध माप माग प ति० ००	स न इन ०	प प ध इ ० मु	मा प र न	ग मा ग प ति ०
र ग ध ने	मा प प ० ० श	न स ध न	र न स प ति ०	स स श प	न प प ना ० ग	ध मा फ णि	प गमा गस प ति ० ० ०

(६१)

(२)

मा प ची ०	न न न रो द धि	स सस स लिर	स स स प ति ०	र प को रतु	मा ग ग म न शि	स न र ल	प प प प ति ०
र ग दि न	मा प प ० ० ०	नस र दिन न	न स स प ति ०	स स ना ०	न प प ग य ए	धध मा कम ला	प गमा गस प ति ० ० ०

(३)

र र श शी	ग मा प ० ० ०	मामा मामा उ र म न	ग ग ग प ति ०	मा मा ह नु	प प प मं त ०	धमा प ब ल न	ग मा ग प ति ०
ग र ना ०	स नं पं र द ०	नं स र भ क ल	नं स प ति ०	र ग बी ग	मा प प सु दं ग	धध मा बाज न	प गमा गस प ति ० ० ०

(४)

मा ध क र	न न न मि न ति	स स क ड	स सस श्री पति	र र चि र	पमा ग र स जीव र हो ०	स न छ त्र	प प प प ति ०
र र ग ग अ क व र	मा प प शा ० हे	नस र न न	न स स प ति ०	स न ता न	प प प मे ० न	धध मा तान न	प गमा गस प ति ० ० ०
+				०			

[इस गीत को ढीमे तेनाले में भी गा सकते हैं । चार आवृत्ति का कांपनाट और दो का ढीमा तेनाटा होता है]

(१२) गौड़ सारङ्ग ।

मिश्रसम्पूर्ण । स र ग मा म प ध न । चौताल ।

माधव मुकुन्द मधु सूदन मुरारि राधा-पति गोपी मन रञ्जन ॥१॥

पतिनपावन दीनबन्धु दीननाथ काटत दुख दूख फन्द सुदामा के दुख दारिद्र भञ्जन ॥२॥

गोवर्धन धारि कृष्ण मुरारि कार्ला को गर्व भञ्जन ॥३॥

रबी शशी को ज्ञान ध्यान गुप्त प्रकट कर राखत कजरौटि के अञ्जन ॥४॥

[इस राग में धैवत विवादी है । कोई कोई इसको दिन का बेहाग कहते हैं ।]

मप मु०	मप कु०	मप द०	मप ००	ध म	प धु	मा सू	मा द	ग न	गगमा सुरा०	रगरमा ००००	ग रे
गमा रा०	गमाग धा००	मप प०	प ति	ध गो	प पी	मा म	ग न	रग र०	रमा ००	गर ००	स ०
सर ००	गमा ००	पमा ००	गर ००	गर ज०	स न	नं मा	स ०	ग ०	रमा ००	ग ध	ग व

२

पप पति	प त	सस पाव	सस न०	रस दी०	स न	स बं	स धु	नध दी०	नध न०	न ना	स थ
रस का०	नध टत	न दु	ध ख	प द्वं	प द	मा फं	ग द	प सु	धन दा०	रस ००	स मा
न के	नध ००	न दु	ध ख	प दा	मा रि	मा द्वं	ग ०	ग भं	माप ००	माग ००	रस ००
सर ००	गमा ००	पमा ००	गर ००	गर ज०	स न	नं मा	स ०	ग ०	रमा ००	ग ध	ग व

३

पप गोव	मामा धंन	गग धारि	गग ००	गग कृष्ण	गगमा सुरा०	रगरमा ००००	ग रि	पमा काली	गर को०	गर गर	सस ब०
सर भं०	गमा ००	पमा ००	गर ००	गर ज०	सस न०	नं मा	स ०	गर ००	मा ००	ग ध	ग व

४

पप रवि	ससस शशीका	सस ग्यान	सस ध्यान	नध गुस	रसस प्रकट	नध करि	नधप राखत	मामा कज	गगमा रौटि०	रगरमा ००००	गरस ०००के
सर अं०	गमा ००	पमा ००	गर ००	गर ज०	सस न०	नं मा	स ०	ग ०	रमा ००	ग ध	ग व

पप गोव	मामा ध न	ग ग धारि ००	ग ग गगमा कृष्ण मुरा ०	रगरमा ग ०० ०० रि	पमा गर काली को०	गर सस गर ब०
सर भं०	गमा ० ०	पमा गर ० ० ००	गर सस ज० न ०	पप ससस रवी शशीको	सस सस ग्यान ध्यान	नध रस स गु स प्र घ ट
नध करि	नधप राखत	मामा गगमा क ज रैटि ०	रगरमा गपरस ००० ० ००० के	सरगमापमागर अ० ०० ०० ००	गरस नंस ज० न मा०	गरमा गग ०० ० ध व

(१३) गौड़-सारङ्ग । धामार ।

डफ बाजन लागि रि बहुर ॥१॥ अब देख धुम कानन फेरे किनि बहुर ॥ २ ॥

आपन रि अपने ढङ्ग से निकसि सोहे लिनि सुधबुध छिनि बहुर ॥ ३ ॥

क	धे	टे	धे	टे	धा	आ	ग	वि	न	दि	न	ता	आ
+			०		।		०			।		०	
प	प	मा	प	प	मा	ग	प	प	प	मा	मा	ग	ग
बा	०	०	ज	०	न	०	ला	०	०	गि	०	०	०
र	मा	ग	प	प	प	प	म	प	मा	ग	र	स	र
रि	०	०	०	०	०	०	ब	हु	र	०	०,	ड	क

पप	प	प	सध	स	नर	स	न	ध	प	मप	मप	मा	ग
अब	दे	ख	धु०	०	००	म	का	न	न	फे०	र०	कि	०
र	मा	ग	प	प	प	प	म	प	मा	ग	र	स	र
नि	०	०	०	०	०	०	ब	हु	र	०	०	ड	क

प आ	प प	प ०	प न	प ०	स रि	स ०	स आ	स प	स न	स ०	स ०	स ०	स ०
ध ढ	न ङ्ग	न ०	स सों	स ०	स ०	स ०	स नि	स क	स मि	न मे	न ०	ध हे	प ०
प लि	स नि	ध ०	स ०	न ०	र ०	स ०	स सु	स ध	सन ००	ध वु	प ध	मा झि	ग ०
र नि	मा ०	ग ०	प ०	प ०	प ०	प ०	म व	प हु	मा र	ग ०	र ०	स ड	र क

(१४) गौड़-सारङ्ग । चौताल और तेताला ।

+	०	१	०	२	३
मा ग प	नधप मगर	गग रस	गमा पस	र स नधप	मप धन
मप ध गमा	धपम गर	गरस नंस	नधप मगर	नंस गगरस	नंस गर
ग मा पग	माप नस	रस नस	गमा पप	मा ग अर	गग र स
नस गग	रस नन	सध न	सन धप	म प	नधप मगर
धपम गर	गग रस	गग स	रमा प	गमाप नस	रस नध
म प	नध गमप	ग मा	पमा गर	नंसगग रस	नंस गर २

[चौताल में ६ और तेताले में ८ आवृत्तियाँ हैं ।]

(१५) शुहा

शुद्ध पाड़व । स र गा मा प ना । भाँपताल ।

चमत्कार दिदार रचो पर्वरदगार संसार निस्तार क्यों न करता ॥१॥

चतुर चञ्चल चपल अचल करामत चारु चक्रवर्ती चकता ॥२॥

देवन कोकल करन तू इन्द्रदाता उपजो शाहं देवनता ॥३॥

चारयुग जीवो हुमायून को नन्दन अकबरदाता पृथीपालता ॥४॥

स्वरनिपि ।

+	२	०	३	+	२	०	३
मारर च मत्	स स स वा ० र	मा गा दि दा	गागा गा ० ०	मा मा र र्या	मा मा मा पर वर द	पमागा गा ० र	मा र स से सा र
मा मा निष् ०	प ना प ता ० र	गामामा क्यों न	र र स कर ता;	मा मा च तु	मा ना प र चं ०	नाना च ल	स स स च प ल
स स अ च	स र र ल क रा	स स म त	प ना प चा ० रु	मा मा च ०	ना प ना क ० व	स स ती ०	ना प र च क ता;
मा गा दे ०	मा मा मा त्र न को	प प क ल	ना प प क र न	मा प तू ०	स स स इन् ० द्र	ना प दा ०	प ना प ता ० ०
मापगा उ प जो	गा गाना शा ० हं	प मा दे ०	र र स व न ता;	नाना चा रि	ना स स यु ० ग	रना स जी ०	स स स वो ० ०
स स हु मा	मा मा र यु न को	स स नं ०	नाप नाप द ० ० न	मा मा मा मा अ क व र	प स स दा ता ०	र स पृ थी	ना प र पा ल ता

(१६) शुहा (सरगम्) भाँपताल । शिक्कः—पन्नालाल ।

स स	ना ना प	मा प	गा मा प	स स	ना मा प	ना गा	मा प प
गा गा	र र स	मा प	ना स स	मापनास	र गा गा	ना प	मा प स;
मा प	ना गामा	प मा	गा र स	प प	ना मा प	ना गा	माप नागा
मा प	ना स स	मापनास	पनासर गामा	र स	प ना स	ना प	मा प स;

संपूर्ण-षाड़व । हुसेनी टोड़ी । सरा गा म प धा न । न धा म गा रा स । धिमातेताला

सरसती वाकवानी देवी दयानी चहुँचक जानी चहुँ दिसि मन मानी ॥१॥

सुनेहुँ कैलास आनि बोलत अमृत वानी तेरी छवि देखि मुसकिल आसानी ॥२॥

हंस बाहिनी कमलासनी ब्रह्मानी विश्वजननी जगत अम्बिका महारानी ॥३॥

ब्रह्म प्रिया भारती विद्या दानी दीजिए विद्या माँगत रसूलबक्स अज्ञानी ॥४॥

+		०				०				०					
रा	गा	मधा	नस	नधा	प	मगा	रास	स	स	धां	धां	नं	स	रा	स
वा	क	वा०	नी०	दे०	वी	द	या०	च	हूँ	च	क	जा	०	नी	०
गा	गा	मप	धा	म	गा	रा	गा	रा	रा	स	स	धाप	धा	म	गा
च	हूँ	दि०	स	म	न	०	०	०	०	मा	नी;	स०	र	स	ती

7

म सु	म न	धा हू	धा ०	नस कैला	स स	रा आ	नस ०रि	धा बो	धा ०	न ल	स त	रा अ	गा मृ	गा त	रा बा	स नी
नस तेरी	न ०	स छ	रा वि	स ०	न दे	धा ख	रा मुम	गा आ	०	रा सा	स नी;	धा स	प ०	धा र	म स	गा ती

3

धा हं	धा स	मगा वाहि	गा नी	रा क	गागा मला	रा स	स नी	धां व्र	धां ह्या	नं नि	स ०	रा वि	गा श्व	रागा ज न	गा नी
म ज	प ग	धा त	धा ०	न श्च	धा म्बि	म का	गा ०	रा म	गा हा	रा रा	स नी;	धा स	पधा ० र	म स	गा ता

8

म ब्र	धा ह	न प्रि	स बा	स भा	स ०	स र	स ती	रा वि	गा द्या	रा दा	स नी	धा दी	न जि	स यं	स ०
रा वि	स बा	न ०	धा ०	रा भा	नधा ग त	म र	प प सू	नधा ब क	म स	गा श्र	रास ज्ञानी;	धा स	पधा ० र	म स	गा ती

(१८) शुद्ध ओड़व । वृन्दावनी सारङ्ग । सरमापन । भाँपताल ।

अति सुगन्ध मलयज वन सारंग ले आए कुँज मंडल सँचार कासे सूदीन बैठे मदनमोहन
सँग लिये राधा प्यारी रति रँजन ॥१॥ जमुनानीर ओ तीर कुञ्ज पुष्प नानाविध मृग खग
केलि करत सोभा निरख त्रिविध पवन सुख परख रोमाञ्चित होत छवि ले अँगन ॥२॥

+				०				+				०			
र	स	न	प	मा	प	मा	र	र	स	स	स	र	सु	स	मा
अ	ति	सु	गं	ध	म	ल	य	ज	०	घ	न	सा	र	ग	ले
मा	र	स	स	स	स	नं	र	र	र	मा	मा	र	प	प	न
कुं	ज	मं	ड	ल	सं	०	०	चा	र	का	से	सु	दी	न	बे
स	र	स	न	न	प	प	मा	मा	र	प	प	प	प	प	मा
मो	ह	न	स	ग	लि	ए	रा	धा	०	प्या	०	री	०	०	र
															ति
															र
															अ
															न

२

मा	र	प	प	प	प	प	न	न	प	स	स	न	न	न	प	प	न	न	न
ज	मू	ना	०	०	नी	रो	ती	०	र	कुं	ज	पु	ष्प	०	ना	ना	वि	ध	०
स	स	स	स	स	र	मा	र	र	स	मा	मा	प	प	प	मा	मा	र	र	र
मृ	ग	ख	ग	०	के	लि	क	र	त	शो	भा	नि	र	ख	त्रि	विध	प	व	न
न	न	स	स	स	न	न	प	प	प	स	स	न	न	न	प	मा	र	स	स
सु	ख	प	र	स	रो	मां	चि	त	०	हो	त	छ	वी	ले	अं	०	ग	न	०

यह ध्रुपद चौताला व तेताला में गाया जा सकता है ।

स्थायी व अन्तरा में छः आवृत्तियाँ हैं; चौताले में दो आवृत्ति व तेताले में तीन आवृत्तियाँ होंगी ।

पञ्चम

रात्रि द्वितीय दश दण्ड

चैत्र-वैशाख ।

सूची ।

राग नाम ।	बोल ।	रचयिता ।	ताल ।
पंचम	—(१) अनगनफुलिवेलि —	—	चैताल ।
आड़ाना	—(२) गन अगन विचार —	—	चैताल ।
"	—(३) एक तो योवन —	—	धामार ।
"	—(४) सरगम —	—	चैताल व तेताला ।
दरबारी कानड़ा	(५) अचल विराजे —	—	चैताल ।
"	—(६) आज मधुवन में —	—	धामार ।
"	—(७) प्रसादभया —	—	चैताल ।
"	—(८) बाजत भाँझ मृदङ्ग —	—	सूलताल ।
शङ्करा	—(९) वंशीनाद सुरसाधक —	(वैजू बावरा) —	चैताल ।
"	—(१०) बरसान में खेलत होरि —	—	धामार ।
"	—(११) सरगम —	—	चैताल व तेताला ।
बागव्री	—(१२) गुण समुद्र तामें तन —	(इन्द्रावरस) —	चैताल ।
"	—(१३) चलो खेलिए होरि —	—	धामार ।
शोहनी	—(१४) अगम निगम नित्य नित्य (चिन्तामणि) —	—	चैताल ।
"	—(१५) भीजी मैं तो —	—	धामार ।
"	—(१६) सरगम —	—	चैताल व तेताला ।
बेहाग	—(१७) परब्रह्म गोविन्द नारायण —	—	सूलताल ।
"	—(१८) मोहे पाये अकेलो —	—	धामार ।
"	—(१९) सरगम —	—	तेताला ।
"	—(२०) अँखियन जल भरें —	—	चैताल ।

दीपक ।

शास्त्र में लिखा है कि पंचानन के पूर्व मुख से दीपक राग निकला है । वसन्त-ऋतु (चैत्र व वैशाख) में दीपक राग को सब समय गा सकते हैं । रात्रि के द्वितीय दश दण्ड के समय इस राग को और अन्यान्य सामयिक रागों को गा सकते हैं । पूर्वाह्न काल को भी वसन्त-ऋतु कहते हैं । इसलिए उस समय में भी दीपक राग को गा सकते हैं ।

इस राग को शुद्ध रूप से गाने से स्वतः अग्निपात, संक्रामक पीड़ाओं की निवृत्ति और रस का परिवर्तन होता है । प्राचीन गुणियों ने ऐसा कहा है । दादुर (गान्धार) के स्वर से गाने से कदाचित् ऐसे फल हो सकते होंगे ।

यह राग प्रचलित नहीं है । पारिजात ग्रन्थ में यह राग ओड़व-सम्पूर्णजातीय ('म' 'न' हीन) और लुप्त कहा गया है । किसी किसी का मत है कि यह राग मिश्र षाड़व जातीय अर्थात् 'सगमापधन-धपमागरस' है ।

आग्नेयरससंयुक्तो कालाग्निर्विषमुत्कटः ।

प्रदीपयेद्वा यो नित्यं दीपकश्च ततः स्मृतः ॥

आधाराच्च महान् षष्ठो दीपकस्य समुद्भवः ।

महेशवल्लभः पुत्रो नीलो विष्णुपराक्रमः ॥

महेशचन्द्र सरकार ।

सम्पूर्णो दीपको जातः भिन्नकैशिकमध्यमात् ।

गपाल्पः सप्रहोमान्तः संकीर्णो दीप्तमध्यमः ॥

रत्नाकर ।

('र' हीन) धन्वाशिकैवोच्चतरा दीपकोऽन्यैर्बुधैः स्मृतः ।

रत्नाकर ।

आरोहे म-नि-वर्जः स्याद्दीपको मालवोत्थितः ।

गान्धारोद्ग्राहसंयुक्तः सन्यासांशविभूषितः ॥

संगीत पारिजात ।

रत्नाकर के मत से दीपक सम्पूर्ण और पारिजात के मत से ओड़व सम्पूर्ण देखा जाता है । जब प्राचीन काल ही में इस प्रकार का मतान्तर देखा जाता है तो आज-कल अन्यान्य रागों का परिवर्तन कुछ अस्वाभाविक नहीं है ।

दीपक के स्थान में कभी कामोद, कभी पंचम, कभी पटमञ्जरी और कभी प्रदीपिका शब्दों का व्यवहार देखा जाता है ।

पञ्चम
रात्रि द्वितीय दश दण्ड
चैत्र-वैशाख ।

सूची ।

राग नाम ।	बोल ।	रचयिता ।	ताल ।
पंचम	—(१) अनगनफुलिबेलि —	—	चैताल ।
आढ़ाना	—(२) गन अगन विचार —	—	चैताल ।
"	—(३) एक तो योवन —	—	धामार ।
"	—(४) सरगम —	—	चैताल व तेताला ।
दरबारी कानड़ा	(५) अचल विराजे —	—	चैताल ।
"	—(६) आज मधुवन में —	—	धामार ।
"	—(७) प्रसादभयो —	—	चैताल ।
"	—(८) बाजत भाँभ मृदङ्ग —	—	सूलताल ।
शङ्करा	—(९) वंशीनाद सुरसाधकं —	(बैजू बावरा) —	चैताल ।
"	—(१०) बरसान में खेलत हारि —	—	धामार ।
"	—(११) सरगम —	—	चैताल व तेताला ।
बागश्री	—(१२) गुण समुद्र तामें तन —	(इंछावरस) —	चैताल ।
"	—(१३) चलो खेलिए हारि —	—	धामार ।
शोहनी	—(१४) अगम निगम नित्य नित्य (चिन्तामणि) —	—	चैताल ।
"	—(१५) भीजी मैं तो —	—	धामार ।
"	—(१६) सरगम —	—	चैताल व तेताला ।
बेहाग	—(१७) परब्रह्म गोविन्द नारायण —	—	सूलताल ।
"	—(१८) मोहे पाये अकेलो —	—	धामार ।
"	—(१९) सरगम —	—	तेताला ।
"	—(२०) अँखियन जल भरं —	—	चैताल ।

दीपक ।

शास्त्र में लिखा है कि पंचानन के पूर्व मुख से दीपक राग निकला है । वसन्त-ऋतु (चैत्र व वैशाख) में दीपक राग को सब समय गा सकते हैं । रात्रि के द्वितीय दश दण्ड के समय इस राग को और अन्यान्य सामयिक रागों को गा सकते हैं । पूर्वाह्न काल को भी वसन्त-ऋतु कहते हैं । इसलिए उस समय में भी दीपक राग को गा सकते हैं ।

इस राग को शुद्ध रूप से गाने से स्वतः अभिपात, संक्रामक पीड़ाओं की निवृत्ति और रस का परिवर्तन होता है । प्राचीन गुणियों ने ऐसा कहा है । दादुर (गान्धार) के स्वर से गाने से कदाचित् ऐसे फल हो सकते होंगे ।

यह राग प्रचलित नहीं है । पारिजात ग्रन्थ में यह राग ओडव-सम्पूर्णजातीय (‘म’ ‘न’ हीन) और लुप्त कहा गया है । किसी किसी का मत है कि यह राग मिश्र षाडव जातीय अर्थात् ‘सगमापधन-धपमागरस’ है ।

आग्नेयरससंयुक्तो कालाग्निर्विषमुत्कटः ।

प्रदीपयेद्वा यो नित्यं दीपकश्च ततः स्मृतः ॥

आधाराच्च महान् षष्ठो दीपकस्य समुद्भवः ।

महेशवल्लभः पुत्रो नीलो विष्णुपराक्रमः ॥

महेशचन्द्र सरकार ।

सम्पूर्णो दीपको जातः भिन्नकैशिकमध्यमात् ।

गपाल्पः समग्रहोमान्तः संकीर्णो दीपमध्यमः ॥

रत्नाकर ।

(‘र’ हीन) धन्वाशिकैवोच्चतरा दीपकोऽन्यैर्बुधैः स्मृतः ।

रत्नाकर ।

आरोहे म-नि-वर्जः स्याद्दीपको मालवोत्थितः ।

गान्धारोद् ग्राहसंयुक्तः संन्यासांशविभूषितः ॥

संगीत पारिजात ।

रत्नाकर के मत से दीपक सम्पूर्ण और पारिजात के मत से ओडव सम्पूर्ण देखा जाता है । जब प्राचीन काल ही में इस प्रकार का मतान्तर देखा जाता है तो आज-कल अन्यान्य रागों का परिवर्तन कुछ अस्वाभाविक नहीं है ।

दीपक के स्थान में कभी कामोद, कभी पंचम, कभी पटमञ्जरी और कभी प्रदीपिका शब्दों का व्यवहार देखा जाता है ।

(१) पञ्चम ।

मिश्र षाड्ज । स रा गा ग मा म धा ध ना न । चौताल ।

अनगन फुलिबेलि कानन की तुम हो चलो क्यों न राधेश्याम सङ्ग जोरि ॥१॥

माननी को मान निक लागे बल गई संग चलिवे को वृषभान किशोरि ॥२॥

मधुवन विन्दरावन कुञ्ज कुञ्जन में वंशीबट यमुनातट अत मचि होरि ॥३॥

ब्रज की सखि सब खेलन निकसी बनि बनि अति बनि श्यामरि गोरि ॥४॥

(दोनों मध्यम एक साथ ललित में लगते हैं; वसन्त में नहीं लगते । वसन्त में आरोहण में एक मध्यम और अवरोहण में दूसरा लगता है । आगे का नोट देखिए)

+		०		१		०		२		३	
स	स	ग	ग	म	ध	न	ध	गामा	गामा	गामा	स
कु	०	लि	०	बे	०	लि	०	का ०	न ०	न ०	की
स	स	गामा	गामा	मा	मा	ग	ग	म	ध	न	।
तु	म	हो ०	० ०	च	लो	क्यों	न	रा	०	धे	स ०
ध	न	।।	।।	नधा	ममा	ग	मा	नध	म	मग	स;
श्या	म	सं ०	० ०	ग ०	० ०	जा	रि	अन	०	गन	०

२

मा	धा	।	।	।	।	।	।	।	।	नध	ग्ग
मा	न	नी	०	को	०	मा	न	नि	क	लगा	० ०
मा	मा	गा	मागा	ग	ग	ग	ग	म	ध	न	स
ब	ल	ग	इ ०	स	ङ्ग	च	ल	बे	०	को	०
ध	न	।	।।	नधा	ममा	ग	मा	नध	म	मग	स;
वृ	व	भा ०	० ०	तु ०	कि ०	शो	री	अन	०	गन	०

३

मा म	गामा धु०	गामा व०	गामा न०	गामा वि०	धा द	मा रा	धाना ००	धा ०	मा ०	गामा ब न	गामा ००
स कु	सस जकु	नध ज न	मग मे०	स वं	स शी	स ०	सस ब ट	नं य	सरा मुना	नं त	धं ट
सस अ त	राग ००	मा म	मा चि	ममा ००	ममा ००	ग हो	मा रि	नध अ न	म ०	मग गन	स; ०

४

म ध	ध ज	न की	स ०	स ०	स ०	स स	स स्थि	स ०	स ०	स स	स ब
स खे	स ०	ग ल	ग न	नध निक	मग सि०	गामा ब नि	गामा ब नि	मा अ	धा त	ना ब	ना नि
ध श्या	न म	सन रि०	रास ००	नधा ००	ममा ००	ग गो	मा रि	नध अ न	म ०	मग गन	स ०;

[मालकोष, हिण्डोल और ललित या वसन्त इन तीनों रागों से पञ्चम बना है। इस गीत के हर एक पद के अन्त में ललित का सुर है; उसको वसन्त कर सकते हैं। अर्थात् जो ललित का “न रा स न धा म मा ग मा” है उसको वसन्त का “न रा स न ध म ग मा” कर सकते हैं। यही गुरु का उप-देश है।]

(२) आड़ाना ।

शुद्ध सम्पूर्ण। सर गा मा प धा ना। चौताल।

[सम्पूर्ण जाति होने पर भी इसके आरोहण में रिषभ अर्थात् “रगामा” और धैवत् अर्थात् “धानास” और अवरोहण में “नाधाप” और “गारस” का व्यवहार नहीं होगा। इसलिए गुणी लोग कहते हैं कि इसमें सारङ्ग की छाया रहेगी]

गन अगन विचार पाइये गुरुमुख धाइये लघुगुरु शुभ अशुभ वरन का प्रमान ॥१॥

राग तान की धरन शुध मुरछन की मरम तासो आलाप करत धुरपत ताल काल को प्रमान ॥२॥

स्थायी आरोही अवरोही और सब्चारी प्रथम चारो वरन कहिये मुरछना अलङ्कार को प्रमान ॥३॥

ओढ़ोषाढ़ो ग्रह अंश न्यास बहुतार मन्द्र अल्प अपन्यास दशविध आलाप को प्रमान ॥४॥

+	०	१	०	२	३
मामा मामा वि० च०	पमाप मागा ००० ० र	माप सस पाइ ये०	धाना पप गु० र०	मामा पमागा ०० ०००	मामा मामा मु० ख०
धाना पप धा इ ये०	माप गामा ०० ० ल	पमा पप धु० गु०	मागा धाना रू० शु०	पप धाना भ० अ०	पप पप शु० भ०
नापमापमागा वरन०००	गामा पप को० ००	रस सस प्रमा ० न	मागा मागा ग० न०	मागामा रर अ० ० ग०	सर नांस न० ००;

२

मामा पप रा० ००	पप नाना ग० ता०	सस सस ० न ००	रनास स की० ०	स स सस ०० ध र	सस सस ०० न०
सस सस शु ध ००	रर रर मु० र०	सस सस छ० न०	नास र र की० ००	धाना पप म० र०	पप पप म० ००
नाना पप ता० सो०	गागामा पप आला० प०	रर सस कर त०	मामा पप धु० ० र	नाना नाना प० द०	सस सस ता० ० ल
धाना पप का० ल०	गामा पप को० ००	रस सस प्रमा ० न	मागा मागा ग० न०	मागामा रर अ० ० ग०	सर नांस न० ००;

३, ४

नाना पमा स्था० यी०	पप पप आ० रोही	धाना धाना अ० ब०	पप पप रो० ही०	सस सस आर स०	धाना पप चा० रि०
पपपमा पप प्रथम० चा०	मागा मामा रो० वरन	पप मागा कहि ये०	गागागामाप मु० र००	रर सस छ० न०	नाना नाना अ० लं०
पप पप का० र०	गागा माप को० ००	रस सस प्रमा ० न;	नाना सस ओढ़ो पाडो	सस रस ग्र ह अंश	सस सस न्या० स०
सस रर ब हु तार	सस धानाप मन्द्र अल्प	पप पप अप न्यास	मामा मार द श ००	सस सस बिध ००	सस सस आ० ००
धाना पप ला० प०	गामा पप को० ००	रस सस प्रमा ० न	मागा मागा ग० न०	मागामा रर अ० ० ग०	सर नांस न० ००;

[तीसरा भाग गाकर “गण अगण” कह कर सम रख सकते हैं। ३, ४ भाग को एक साथ गाकर भी “गण अगण” कह कर गीत को शेष कर सकते हैं। ३ भाग को गाकर सम् रखने से चौथे को सम् से आरम्भ कर सकते हैं परन्तु उसको एक आवृत्ति में भाग कर लेना पड़ेगा, जैसे—ओढ़ो, खाड़ो, ग्रह, अंश, न्या, स, ...]

[३] आड़ाना । धामार ।

एक तो योवन मदमाति दुजे फागुन तिजे उन बिन बचे कौन चतुर सुघर रङ्ग रच्यो ॥१॥

पाँचहि मदन मोहन षटरस भरे सात सखा सङ्ग लिये डोलत आठ जाम होरि रङ्ग मचेओ ॥२॥

मवल हि कुंज में दश दिश रङ्ग भरे ग्यारहि गारि गावत बारह बार तेरे सचेओ ॥३॥

चउदहि भुवन के ठाकुर हैं हरि पनरहि पाछे भक्तन हितकारि सोलह कला सम्पूर्ण रचेओ ॥४॥

+	०	।	०	।	०	।	०
क	धे	टे	धे	टे	धा	आ	ग
।	।	।	।	।	।	।	।
स	स	र	ना	सर	धा	ना	प
ए	०	०	०	०	क	०	तो
ना	ना	ना	।	।	।	।	गा
मा	०	०	स	स	०	०	दु
स	र	मा	मा	मा	मा	मा	प
ति	०	जे	उ	न	बि	न	ब
मा	ना	प	प	मा	पमा	गा	गा
ब	पु	र	सु	०	घ	०	र
मा	प	प	धा	ना	ना	प	ना
पा	च	०	हि	०	०	०	म
।	।	।	।	।	।	।	।
स	स	स	र	स	स	स	र
ब	ट	०	र	स	०	०	भ
ना	ना	प	मा	प	मा	गा	गा
सा	०	त	स	खा	स	ग	लि
।	।	।	।	।	।	।	।
मा	मा	र	स	स	धाना	प	गा
आ	०	ठ	या	म	हो	०	र
गा	गा	मा	ना	ना	ना	ना	गा
न	ब	ल	हि	०	०	०	कुं
।	।	।	।	।	।	।	।
ना	स	स	र	स	स	स	ना
द	श	०	दि	श	०	०	र

१

२

मा न्या	प र	प ०	स हि	स ०	स ०	स ०	धा गा	ना ०	प रि	गा गा	गा ०	मा व	प त
ना बा	प र	प ह	मा बा	प ०	मा ०	गा र	गा ते	मा रे	प ०	र स	र ०	स चे	स ओ ३
मा च	मा उ	प द	धा हि	ना ०	प ०	प ०	ना भु	ना व	ना न	स के	स ०	स ०	स ०
स ठा	स कु	स र	र हें	र ०	स ह	स रि	ना प	स न	र र	स हि	स ०	स ०	स ०
धा पा	ना ०	प ०	प छे	प ०	प ०	प ०	गा भ	मा क	प न	र हि	र त	स का	स रि
मा सो	मा ल	र ह	स क	स ला	धाना स	प ० म	गा पु	मा र	प न	र र	र ०	स चे	स ओ ४

(४) अड़ाना । चौताल और तेताला ।

धा	नाप	माप	गा	मामा	पमा	पस	नास	धा	सधा	आना	माप
नास	रधा	आना	पमा	पगा	माप	रस	रनां	सर	मागा	आप	माप;
माप	नामा	पना	गा	मास	आस	ना	सरस	धा	नामा	पना	सर
गा	गामा	आना	पमा	पगा	माप	रस	रनां	सर	मागा	आप	माप;
गामाप	मापना	गामाप	मापधा	नाप	मामाप	सना	सधा	नास	रधा	नास	रगा
गाआ	माआ	आना	पमा	पगा	माप	रस	रनां	सर	मागा	आप	माप;

(५) दरबारी कानड़ा । शुद्धसम्पूर्ण । स र गा मा प धा ना । चौताल ।

अचल विराजे हो सिंहासन बैठे राजाधिराज राजाराम पृथ्वी पर ॥१॥

तख्त बख्त तुम दिनों करतार निस्तारन करन को आनन्द भयो त्रिपुर घर घर ॥२॥

अनेक अनेक भातन को नग नग तख्त शोभा देत मानो इन्द्रजीत भलक भरे ॥३॥

शाह को निशान रच्यौ करतार तुम एक नर स्तुति करत काँपत हृदय बर थर ॥४॥

(इस राग में रिषभ अति तीव्र है और “रसर,” “धानाधा,” “नाधाप” संगति है। धैवत् को छोड़ कर और सब सुर स्वाधीन भाव से लग सकते हैं; इसी लिए किसी किसी ने धैवत को विवादी कहा है।)

+	०	१	०	२	३
स नांथां वि रा ०	नांथां ० ०	पं ०	मां जे ०	धां ०	नां ०
रस र सि० हा	स स ० ०	स स स न	गा गा बै ठे	मा प रा ०	प मापधानाधा जा ० ० ० ० ०
पमा प धि० रा	मा गा ० ०	र स ० ज	स र रा जा	स धानां ० रा ०	स स ० म
मागा मागा पृ ० ध्वी ०	रस र ० ० प	स स र ०	मा गा अ च	र स ल ०	नांस नांसर; ० ० ० ० ०

अन्तरा

स स त ख	ना स त ब	स स ख त	रना सना तु ० म ०	धाना धा दि ० ०	ना स ने ०
स नाधा क र ०	नाधानाधाप ता ० ० ० र	नाधा नाधाना निस ता ० ०	धाना धाप र ० ० न	धानाधानाधाप क ० ० ० ० र	प मापमागा न को ० ० ०
गा गा आ ०	मा प नं द	धा नास भ यो ०	मोड सानाधापमा त्रि ० ० ० ०	प मा पु ०	गा गार र ० ०
गा* गा	र स	र स	धां नां	स स	स स
गा गा ध र	रस र ० ० घ	स स र ०	मा गा अ च	र स ल ०	नांस नांसर; ० ० ० ० ०

संचारी आभोग ।

नानानाधधध अ ने क अ नेक	नानाधापपप भां ० ० तनको	मामापमागा न ग न ग ०	गागागा मागार त ख त शोभा ०	सस ससस दे ० त ० ०	नानानां ससस मा ० ने ० ० ०
गागागा गागा ई ० द्र जित	रसर सस कलक करे;	नानानानाना शाहे को ० नि	सस ससस शान रचेओ	नासर सनध क र ० ता ० र	नानाधापप तु ० ० म ०
मागा मागा ए क न र	रस ररस स्तुत करत	धांधानांसस कां ० ० प त	गागा ररस हृदय धर ०	रस मागागा ध र अ च ०	रस नांसनांसर; ल ० ० ० ० ०

[* अन्तरा की तीसरी आवृत्ति में दो प्रकार के तान हो सकते हैं। नीचे की स्वरलिपि दूसरे प्रकार की है।]

(६) दरबारी कानड़ा । धामार ।

आज मधवन में कानहा बन बन खेलत फाग ॥१॥

मेरि चुनरिया बोर गयो रङ्ग में मैं भिडाऊँ वाकी पाग ॥२॥

तत वितत घन सुखिर बाजत गावत कान्हड़ा राग ॥३॥

जिन जिन मुरलि की भनक सुनि है धन्य धन्य वाको भाग ॥४॥

प का	मा न	गा हा	मा ब	मा न	प ब	प न	माप खे०	धा ०	ना ०	गा ल	गा ०	र त	स ०
र फा	र ०	स ग	नां आ	नां ०	स ०	स ज	सस मध	रर बन	सर में	गा ०	माप ००	मा ०	

अन्तरा ।

मा मे	प ०	धा रि	ना ०	ना ०	स ०	ना ०	सस चु न	स रि	स या	नास बो ०	र र	स ग	ना यो
धाना र ० ०	धाप ० ०	प झ	प ०	प ०	मा मैं	मा ०	पधा भिडा	ना ०	सा ऊँ	नाधापमा ० ० ० ०	गार वा ०	स की	
र पा	र ०	स; ग	नां आ	नां ०	स ०	स ज	सस म ध	र ब	र न	सर में ०	गा ०	माप ० ०	मा ०

सञ्चारी आभोग

मा त	मा त	प वि	प त	प त	धा ध	धा न	ना सु	धा खि	प र	मा बा	प ०	धा ज	ना त
गा गा	गा ०	गा ०	मा व	मा त	प ०	प ०	मा का	गा ०	र न	स ह	र रा	स रा	स ग
मा जि	प न	धा ०	ना ०	ना ०	स ०	स जि	ना न	स मु	स र	र लि	स की	स भ	र क
स सु	स नि	स ०	ना हे	धा ०	प ०	प ०	मा ध	प न्य	प ०	धा ध	ना न्य	गागा वाको००	रस ००
र भा	र ०	स ग;	नां आ	नां ०	स ०	स ज	सस मध	र ब	र न	सर में०	गा ०	माप ००	मा ०

(७) दरवारी कानड़ा । चौताल ।

प्रसाद भयो प्रसिद्ध शाह को अब दीनो दीन मणि दीन दूनि के अचल ॥१॥

दाता विधाता दियो ताहे तुमको प्रसन्न भयो नरपति भूपति चत्रपति जलालउद्दीन को दोनों जल थल ॥२॥

आलमगीर अल्लाह की नूर दीन जगत के प्रति पालक तख्त बैठे पूरे वख्त अचल ॥३॥

लाल कहै षट दरसन निवास गुरुन गुरु साँच्यो शाह जो है प्रताप प्रबल ॥४॥

+		०				०					
धांनां धांनां धां		पं	पं	मां	पं	धां	नां	स	स	स	स
भ ० ० ० ०		यो	०	प्र	०	सी	०	०	०	धी	०
नां	स	रस	र	गा	गा	र	स	र	स	स	स
शा	०	हे ०	०	को	०	अ	ब	दी	०	ने	०
मागा	मा	प	पमा	प	प	धाना	धाना	प	प	मा	प
दी ०	०	०	न ०	म	नी	दी ०	० ० ० ०	न	०	दु	०
पधानाधापमागा		र	सर	स	स	र	स	रस	नांस	धांनां	सरस
० ० ० ० ० ० नी ०		की	० अ	च	ल	प्र	सा	० ०	० ०	० ० ० ०	द

२

स	स	ना	स	स	सना	स	स	ना	स	स	सना
दा	०	ता	०	०	० ०	वि	धा	०	०	ता	० ०
स	र	स	स	ना	स	र	र स	नाधा	नाधाप	प	प
दि	यो	ता	०	हे	०	०	० ०	तू ०	म ० ०	को	०
प	धा	ना	स	स	नाधा	नाधा	नाधा	ना	स	स	स
प्र	स	०	न	भयो	० ०	न ०	र ०	०	०	प	ति
र	स	स	स	नाधा	नाधा	प	प	माप	धाना	धाप	मागा
भू	प	ती	०	छ ०	० ०	त्र	प	ति ०	० ०	० ०	० ०
र	सर	स	स	स	स	ना	ना	ना	ना	धाप	मागा
ज	० ला	लू	दी	०	न	को	०	दो	नों	० ०	० ०
गा	गा	र	स	र	स	र	स	र	नांस	धांनां	सरस
ज	ल	०	०	थ	ल	प्र	सा	०	० ०	० ० ० ०	द

संचारी

मामा	मामामा	प प	पपप	धाना धापप	पमाप मागा	रस	रर	सस	ससस
अल	म गी र	अला	कीनूर	दी ० ० ० न	ज ग त के ०	प्रति	पा०	ल क	० ० ०
नासर	सरगा	मागा	ररस	धानां सस	रर सस	रस	रनांस	धानां सरस	
त ख त	बै ० ठे	पूरो	० ० ०	वस्त ० ०	अ० चल	प्रसा	० ० ०	० ० ० ० द	
आभोग						सना	सस	सस	सस
						लाल	० ०	क हे	ष ट
नास	सस	नास	रनाध	नाधाप पप	मापधापमागा	रस	रर	सस	सस
द र	स न	नि ० ० वा स	गु रु न गुरु	सा ० ० चा ० ०	शा ०	ह ०	जा ०	हे ०	
स	स	नासरसनाधा	धा नाधाप	मापधापमागा	गा	र	सनांसधानां सरस		
०	प्र	ता ० ० ० ० ० प	० प्र ० ०	ब ० ० ० ० ल	०	प्र	मा ० ० ० ० ० ० द		

(८) दरबारी कानड़ा । सूलताल ।

बाजत भाँझ मृदङ्ग तानधून रवावखटतारी कानन बीन ॥ १ ॥

करत परन भेद तादितथुआ तक थङ्गा तका थुङ्गा तगदि तक धिधिकट धुमकिटि गदि धिन्
नग् दित्था किटिगदिधिन् नगदित्था किटि गदि गेन नगदित् ॥ २ ॥

धरन मुख मुद्रा निरखत सब गुनि जन आहत अनाहत को व्येवरे न पावे गुरु विन ॥ ३ ॥

गीत संगीत धरत धारु धुरपद धूआ करत विचर अति प्रवीन ॥ ४ ॥

+		०						०	
नां	स	र	स	धानां धानांधां	पं	धां	नां	स	
बा	०	ज	त	कां ० ० ० ०	क	मृ	द	ङ्ग	
मागा	रगा	मा	प	प	प	पधा	नाधा	प	प
ता ०	० ०	न	धू	०	न	र वा	० ०	०	व
पधा	ना	ना	गा	गा	गा	गामागा	रस	र	स
ख ट	०	०	ता	०	रि	का ० ०	न न	बी	म;

अन्तरा

मा क	प र	धा त	ना प	स र	स न	ना भे	स ०	स द	स ०
स ता	स ०	र दे	र ०	स ०	स त	नास धु ०	र स ० ०	धाना ना ०	धाप ० ०
धाप त क	पु प धु ०	ना गा	धाप त क्	प का	पप धु ०	प गा	प प त क्	मामा दि त्	पप त क
माप धिधि	माप के टे	मामा धु म	गागा के टे	गागा ग दि	गागा धि न	मागा न ग्	रर दित	मागा धा ०	र र किटि
रर गदि	रर धिन्	मागा न ग्	रर दित	गागा धा ०	रर किटि	गार गदि	सस धि न्	रर नग	सस; दि त्

संचारी

मा ध	मा र	मा न	प मू	मा र	पमा न ०	प सु	मा द्रा	धा ०	धा ०
ना नि	ना र	स ख	स त	स स	स व	नास मुनि	र स ० ०	ना ज	धा न
ना आ	धा ०	प ह	प त	मा अ	गा ना	र ह	र त	स को	स ०
ना बे	ना ओ	ना रे	ना ना	गा पा	र वे	र गु	स र	र बि	स न;

आभोग

मा गी	प ०	धा त	ना ०	स ०	स स	स गी	स ०	स त	स ०
स ध	र र	गा न	गा ०	गा ०	गा ०	धा धा	ना ०	स रु	स ०
ना धु	धा र	प प	प द	धाना धु ०	धाप आ ०	मा क	प र	धा त	ना ०
स वि	स बा	स ०	गा र	गा ०	र अ	र ति	स प्र	र बी	स न;

शङ्करा

(६) षाड्ज सम्पूर्ण । स ग म प ध न—न ध प म ग र स ।

चैताल ।

वंशी नाद सुर साधके बजाइ प्रवीन कनहाइ सप्त सुर मधुर तान ध्वनि मानि ॥१॥

श्रवण सुनत कछु सुध न रही आलिरि भनक पड़ि मेरो कानन ध्वनि सुनि ॥२॥

तन मन रोम रोम व्याकुल भइ रि जीत लिये गन्धर्व नारद मुनि गुनि ॥३॥

बैजु कहे प्रभु नर नारी पशु पढ्छो मोहे और मोहे सुर नर मुनि ॥४॥

(इस राग में अतितीव्र निषाद का व्यवहार होता है ।)

+	०	१	०	२	३
र वं	र ०	स शी	स ०	न ना	ध ०
म के	ग ०	म ब	ग जा	र ०	स इ
पप सप्	ध त	प सु	प र	स म	स धु
				स ता	न न
				प सु	न ध
				ग कन्	प मग
				हा००	००
				म नध	प मग
				मानि ०	०००

अन्तरा ।

म प श्र व	न ण	स स सु न	स त	स क	स कु	ग सु	र ध	स न	स ०	स र	स हि
स आ	स ०	न लि	ध ०	नध रि०	प ०	प ०	प ०	मप भन	ध क	म प	प डि
म मे	प ०	न रे	सन ००	स का	स ०	स न	न न	ध ध्व	न नि	सनध सुनि००००	पमग

सञ्चारी ।

स त	स न	ग म	ग न	पमग रो००	मप ००	प ०	प म	मप रो०	ध ०	प ०	प म
प व्या	नध ००	न कु	न ल	स भ	स इ	स रि	ग जी	र त	स लि	स ये	स ०
न गं	न ०	धप ध०	मग र्व०	स ना	स ०	ग र	ग द	म सु	न नि	गनध गुनी०	पमग ०००;

आभोग ।

म वै	प ०	न जु	न ०	स ०	स ०	स क	स हे	स ०	स प्र	स सु	स ०
ग न	र ०	स ना	स री	नध ००	म प	नध शु०	न प	न ञ्छी	ध ०	प ०	म मो
सस श्री०	स र	ग मो	ग ०	पमग हे००	मप ००	स सु	र र	न न	र र	मनध मुनि०	पमग ०००;

(१०) शङ्करा । धामार ।

बरसाने में खेलत होरि श्री वृकभान किशोरी ॥१॥

कोउ चन्दन बन्दन अतर अरगज अबीर गुलाल लिये भर भोरि ॥२॥

कोउ गावत कोउ मृदङ्ग-बजावत धुम मचि नन्द राय के पुरि ॥३॥

उतते सखा सङ्ग लिये कृष्ण प्रभु रङ्ग छोड़त पिचकारिन बोरि ॥४॥

र	स	स	न	ध	प	प	म	न	न	ध	न	स	न
ब	र	सा	ने	०	में	०	खे	०	०	ल	त	हो	रि
ध	प	म	ग	स	ग	ग	म	प	प	न	न	सन	धप
श्री०	०	०	०	०	वृ	क	भा	०	०	न	कि	शो०	री० १
म	प	प	न	नन	स	स	न	ध	प	म	न	ध	न
को	उ	०	च	न्दन	ब	न्दन	अ	त	र	अ	र	ग	ज
ग	र	स	स	स	स	स	न	ध	प	म	न	सन	धप
अ	बी	र	गु	ला	०	ल	लि	ये	०	भ	र	को०	रि० २
स	स	ग	म	प	प	प	म	न	न	स	न	ध	प
को	उ	गा	व	त	को	उ	मृ	द	ऊ	ब	जा	व	त
र	स	स	न	ध	प	प	म	न	न	धध	न	सन	धप
धु	०	म	म	चा	इ	०	न	न्द	०	राय	के	पु०	रि० ३
म	प	न	स	स	स	स	न	न	न	ध	प	म	न
उ	त	ते	स	खा	स	ऊ	लि	ये	०	कृ	ष्ण	प्र	धु
ग	र	स	स	स	न	ध	म	न	न	ध	न	सन	धप
छो	इ	त	र	ऊ	०	०	पि	च	का	रि	न	बो०	रि० ४

(११) शङ्करा । चौताल और तेताला ।

+	०	१	०	२	३
स	नध	मन	धन	मध	मग
पन	धप	मप	नस	गम	प
मप	नस	र स	नस	ग	म
मन	ग	मप	नस	नध	मन
गम	धप	मन	धन	मप	नस
धन	मन	रन	धप	मप	सन
नन	धन	मप	नस	नस	ग
मध	न	मध	ग	मध	नग
पप	मप	नधप	मग	मध	पप
गम	नध	मन	ध	र र	सन
धपम	नधप	मधन	मप	नध	मनध

(१२) बागश्री ।

चैताल ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स र गा मा प ध ना ।

गुण समूद्र तामे तन जहाज मन सौदागर ले चलो साँस पवन कि जोर ॥१॥ गमक बादि बानी सप्त सुर
लङ्गर पड़े सुर ना खोदा सुरत ऐनक किये चितमन मगर विबाद कि ओर ॥२॥ चारि तखत चारि कोट में
अचर मोति नग जवाहिर और सूबर्ण भरे तान सङ्गत गुरुबरकला धरनि निरखि और धोर ॥३॥ ऐसे
धुरपद जहाज सों पुरो छत्रपति महम्मद शाह जान के ले आये इच्छा बरस सुनत हि गिन दिये
लाख कड़ोर ॥४॥

+	०	१	०	२	३
मीढ़					
स मा	मा मा	प मा	गा	गा	मागा मागा
ता ०	मे ०	त न	०	०	ज ० हा ०
सस नां	रस स	नां धं	पंधं	नां	स स
म न ०	०सौ ०	दा ०	००	०	० ०
मीढ़					
स मा	मामा पमा	प मा गा	गा	गा	धध पध
ले ०	च लो ००	सां ० स	०	०	प व ० न
माध पना	धप मागा	मागामागामारस	मा गा मा	प मा	गामा गामा
० ० ० ०	० ० ० ०	जो ० ० ० ० ० र;	गु ण ०	० ०	० ० स ०
					रस सस
					मुं ० द ०

अन्तरा ।

नानानाध	पध नास	सस सस	स	स	स र स र	मागामा र स
ग म क ०	०० ००	बा ० दि ०	वा	नि	स स ० ०	सु ० ० र ०
र स	सना स	ना ध प ध	ना	ध प मा	गामा गामा गा	मार रर
लं ग	र ० प	डे ० ० ०	सु	र ० ०	ना ० खोदा ०	सु ० रत
	मीढ़					
सससस	सस मामा	मा मा मा मा	ध ध	ध प	धध पध	ना धप मा
ए ० न क	किये ० ०	चि त म न	म ग	र ०	विबा ० द	कि ० ० ०
माधपना	धप मागा	मागामागामारस	मागामा	पमा	गामा गामा	रस सस
० ० ० ०	० ० ० ०	ओ ० ० ० ० ० र;	गु न ०	० ०	० ० स ०	मुं ० द ०

[इस गीत को भीमपलश्री में भी गा सकते हैं ।]

(१३) बागश्री । धामार ।

चलो खेलिये होरि ब्रज में कुँअर कन्हाइ ॥ १ ॥

अनेक भाँतन के बसन पहिर के बनिता बन बन आई ॥ २ ॥

ना खे	ध लि	प ये	मा हो	गा ०	र ०	स रि	सस ब्रज	नांध में ०	पंधं ० ०	नां ०	स ०	स ०
मा कु	मा अ	मा र	धप ० ०	ध ०	ना ०	ध ०	पमा कन्हा	गामा ० इ	समाधमा चलो ० ०	ध ०	ध ०	

अन्तरा

ना धना स	स स	स स	मागा मार स	स स	ना धप
अ ने० क	भाँ तन	के ०	ब स न० ०	प हि	र के०
मा प स	ना ध	ध ना	धप मा गामा;	समाधमा	ध ध
ब नि. ता	ब न	ब न	आ० ० ० इ	ब ० लो०	० ०

(१४) शोहिनी । चौताल ।

ओड़व षाड़व स ग मा ध न । न ध मा ग रा स ।

अगम निगम नित्य नित्य कर गुण गावत गोविन्द कि जो नर गुरन सों सिखे वानि ॥१॥ साधु सन्त नाम रटत नारद मुनि ब्रह्मा शिवादि आकाश पवन पानि जीव जन्तु नित्य नारायण के अधर ते उद्धारत अवमानि ॥ २ ॥ खाड़ो राग गुणी गावत पञ्चम सुर बरज करत शोहिनी वा-को कहावत चिन्तामणि बरण बखानि; सनधमा ध ग मा ग रा स मामा ग मा ध ग मा ध न स ग सा रा रा स न ध न ग न ध न ग मा ग न ध न ग मा ध न ग ॥ ४ ॥

+	०	१	०	२	३						
मा नि	ध ०	न त्य	स न ००	स नि	स ०	स त्य	रा क	स र	स ०	न गु	धमा ण०
स गा	स ०	न व०	ध त	ध गो	मा ग ००	मा वि	मा न	ग ०	रा द	स कि	स ०
स जो	स ०	नं न	धं ०	नं र	धं ०	मां ०	धं ०	नं ०	स ०	स ०	स ०
स सि	स ०	ग खे	ग बा	मा ०	ग नि;	मा अ	ध ग	न म०	न नि	ध ग	माग म०

अन्तरा ।

मा सा	ध ०	न धु	स स	स न	स त	रा ना	रा ०	स म	स र	स ०	स त
स ना	स ०	स र	स द	स सु	स नि	रा ब	स हा	न शि	ध वादि	मा ग	माग ० श
मा प	मा व	मा न	ग पा	ग ०	ग नि	रा जी	रा ०	रा व	स जं	स तु	स ०
स नि	मा ०	मा त्य	ग ना	मा रा	ध ०	न य०	न न	ध के	मा ०	मा ०	ग ०
मा अ	ध ध	न र	स ते	स उ	स ०	रा डा	स ०	ध ०	ध ०	मा र	ग त
रा अ	स व	न मा०	ध ००	मा ०	ग नि	मा अ	ध ग	न म०	न नि	ध ग	माग ० म

सञ्चारी-आभोग

रासससनध खड़ा रा० ग०	माधनसनधमा गुली००गावत	मागग रास पञ्चम सु र	सनंधनंसस बरज करत	मामागमामा शोह नीवाको	गग कहा	गग वत
मा ध नन चिन्ता मणि	रारारानसस बरण बखानि;	सनध माधग	माग रास	मामागमाधग	माध	नस
गमा रारास	नधन ग	नधनगमाग	नधनगमाधनग	भाध नध अ ग ० म	नध निग	माग म०

(१५) शोहिनी, धामार ।

भिजि मैं तो रङ्ग में सखिरि आज बनवारि रङ्गिले कानहा के सङ्ग ॥ १ ॥

हो यमुनाजल भरन जात रही सब सखियन के सङ्ग ॥ २ ॥

बहिँया पकड़ि मोहे रङ्ग में भिडोहि अबीर मलेओ अङ्ग ॥ ३ ॥

मिनत शिनत कछु नाहीं मानत ऐसो ब्रजराज कुदङ्ग ॥ ४ ॥

रा भि	स जि	स ०	स मैं	सन ००	स तो	स ०	न र	ध ङ्ग	ध मैं	मा स	गमा खि०	ग आ	ग ज	
मा ब	ध न	नन वारि	ध र	ध ङ्गि	मा ले	ग ०	सर का०	स न	स हा	न के	माध ००	नध ००	माग सङ्ग;	
मा हो	ध ०	ध ०	न य	स सु	स ना	स ०	रा ज	स ल	स ०	नन भर	स न	रा जा	स त	
स र	स हि	स ०	ग स	मा ब	ग ०	रा स	रा खि	स य	स न	स ०	नमा के०	ध ०	नध ००	माग सङ्ग
मा ब	मा हि	ग या	मा प	मा क	ग ड़ि	ग ०	मा मो	ग हे	ग ०	मा र	ध ङ्ग	न मैं	न ०	
स भि	स ओ	स हि	स ०	स ०	स ०	स ०	ग अ	रा बी	स र	नमा म०	ध ल्यो	नध ००	माग अङ्ग	
मा भि	ध न	न त	स शि	स न	स त	स ०	रा क छु	स न	स हीं	न मा	स ०	स न	स त	
ग दे	ग ०	मा सो	गमा ००	ग ०	रा ब्र	स ज	स रा	स ०	स ज	नमा कु०	ध ०	नध ००	माग ढङ्ग	

(१६) शोहिन । चौताल और तेताला ।

+	०	१	०	२	३
सस रास	न ध	मा	गमा धन	रास नध	माध नध
नस नध	मा ग	माग रास	ग ग	माध नग	माध नन १
रारा सन	स माधन	माध गमा	धन रास	नस गग	माग रास
माध नग	माग	रा स	ग ग	माध ग	माधननन २
मामा ग	माध नस	नस ग	मा ग	मा ग रास	नध मा
गमा ध	न गमा	नरा स	गमा ध	माध नग	माध ननन ३
गग ग	मा धन	ग माध	न स	नस गमा	मा गमा
धन स	मा ध	ग मा	गमा धन	सन धग	माधननन ४

(१७) ओड़व सम्पूर्ण ।

बेहाग । स ग मा प न—न ध प मा ग र स । सुरफाँकताल ।

परब्रह्मा गोविन्द नारायण गोपाल जगतगुरु पुरन हरे हरे ॥१॥

या कि लीला कहियन जात दीनदयाल प्रभु पुरन करे करे ॥२॥

करन कारन जगदीश विधाता विधिना कि गति काहु कायशर ॥३॥

सुखदायक दुखभञ्जन स्वामी दोष निशदिन ततक्षण लेत सुमिरन करे ॥४॥

+	।	०	।	२	।	३	।	०	।
सनं	धंपं	पं	पं	नं	नं	स	स	स	स
प ०	० ०	०	र	ब्र	हा	०	०	०	०
स	स	स	स	मा	मा	प	प	प	प
गो	वि	०	द	ना	०	रा	०	य	ण
न	न	ध	प	मा	मा	मा	ग	ग	ग
गो	पा	०	ल	ज	ग	त	गु	रु	०
मा	मा	प	मा	ग	ग	र	र	स	स
पु	०	र	न	ह	रे	०	०	ह	रे;

अन्तरा ।

प या	प ०	न कि	न ०	स ली	स ०	स ला	स ०	स ०	स ०
न क	न हि	ध य	प न	न जा	न ०	ध ०	ध ०	प ०	प त
स दी	स ०	स न	स द	न या	ध ०	प ल	प ०	मा प्र	मा धु
ग पु	मा ०	प र	मा न	ग क	ग रे	र ०	र ०	स क	स; रे

सञ्चारी ।

स क	स र	स न	स ०	प का	प ०	प र	प न	प ०	प ०
प ज	प ग	मा दी	प ०	मा श	मा ०	ग वि	ग धा	ग ता	ग ०
ग वि	ग धि	ग ना	गमा ००	प कि	प ०	मा ग	मा ति	ग ०	ग ०
ग का	ग ०	र ०	स हु	पं का	पं ०	नं य	नं श	स रे	स ०;

आभोग

प ख	प ख	न दा	न ०	स य	स क	स हु	स ख	स ०	स ०
न भं	न ०	ध ज	प न	न स्वा	न ०	ध मि	प ०	प ०	प ०
प दो	प उ	स नि	स श	स दि	स न	न त	न त	ध ब	प थ
मा ले	प ०	मा त	मा ०	ग सु	ग मि	र र	र न	स क	स; रे

(१८) बेहाग-धामार ।

मोहे पाये अकेली धाम लँगड़वा कुँद पड़ेओ ॥ १ ॥

मानत नहीं काहुके सजनि परोसिन से नहीं डरेओ ॥ २ ॥

हाथ पकड़ के बाहर किन्हों दुआरे आन ठाड़ेओ ।

गारि देइ भक्तभोर निकस सम्मुख हसत खड़ेओ ।

न लं	न ग	ध ड़	प वा	प म ० ०	प ०	प ०	गु कुं	मा ०	प द	मा प	ग ड़े	र ओ	स; ०
नं मो	नं हे	स ०	ग ०	ग ०	ग पा	ग ये	माप अ के	मा प ली ०	ग ०	मा ०	ग धा	ग म	
प मा	प न	प त	न ०	न ०	न न	न हीं	। स का	। स हु	। स कि	। स स	। स ज	। स नि	। स ०
न प	न रो	न ०	ध शि	प न	प से	प ०	मा न	प हीं	प ०	मा ड	ग रे	र ओ	स; ०
स हा	स ०	स थ	ग प	ग क	मा ड़	प के	न बा	ध ह	प र	मा कि	ग न	ग हो	ग ०
न हु	न आ	। स ०	। स रे	। स ०	। स ०	। स ०	न आ	ध ०	प न	मा ठा	ग ड़े	र ओ	स; ०
प गा	न रि	। स ०	। स दे	। स ०	। स यि	। स ०	। स भ	। स क	। स ०	न को	। स ०	। स र	। स ०
न नि	न क	न स	ध स	प न	प सु	मा प ख ०	न ह	ध स	प त	मा ख	ग ड़े	र ओ	स ०

(१९) बेहाग । तेताला ।

गगमापत्ता	ग रसनंस	गगमाप	गमापनस	र सनधप	सनधपमा	नधपमाग	मागरसनंस ;
पपमागग	मापनसनसग	पमागरस	गगरसनध	पमापनस	नधपमाग	धपमागर	पमागरसनंस;
मामा प	ग माप	ग मापन	गमापनस	नधपमाग	मापगमाप	नधपमाग	धपमागरसनंस

(२०) बेहाग । चौताल ।

इस गान में दोनों “मध्यम” का व्यवहार है।

अँखियन जलभरे नैन तेरे ही आली मैं लखि आवै प्रकट भयो देखि विरह तूरी क्यों दूरावे ॥ १ ॥

नहिं जानत थीर अबलौ कछु बिछुरन की व्यथा बड़ी मानती को काम जी दहावै ॥ २ ॥

सुनरी सखी साँस निकसत कसकत है अधिक देखि दुकुल गहन सुबरन लागे फलन गहन

सुना सी चूभे कहि ना जावै ॥३॥ दौड़ि दौड़ि देखत हिय से दुःख दे गए लालन अब विकल

बेसुध बेहाल भए है कहो पलपल नहीं आवै ॥ ४ ॥

+	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।	
ग भ	र ०	स रे	स ०	नं न	सस य न	ग ते	माप रे ०	मा रि	प ०	न आ	धप ली
मप मैं०	मप ००	मा ल	ग खे	र आ	स वै	ननं प्रक	नं ट	धं ०	पं ०	नं भ	स यो
ग दे	मा ०	प ०	प ख	प वि	प र	प ह	प ०	न तू	धप ००	न रि	स ०
। र क्यों	। स ०	न डु	ध रा	पमा ००	गर वे ०;	ग अं	मा खि	प य	धप न ०	मा ज	गर ल

२

प	प	न	न	स	न	स	स	न	न	स	स
न	हिं	जा	न	त	०	पि	र	अ	ब	लौ	०
।	।										
स	स	न	न	न	न	न	स	न	ध	प	मा
क	कु	बि	छ	र	न	की	०	वि	था	०	०
न	न	ध	ध	प	प	मा	प	प	प	मा	ग
ब	झी	मा	न	ती	०	को	०	का	०	०	म
।	।										
स	स	न	ध	पप	मा	ग	मा	प	धप	मा	गर
जो	०	द	हा	०वे	०;	अँ	खि	य	न०	ज	ल०

३

सस सु न	गमा री ०	प स	प खी	प सां	प स	नध निक	पमा सत	गग कस	गग कत	मा है	ग ०
ग अ	गग धिक	मा दे	मा ख	पप डुकु	प ल	मामा ग ह	मा न	गग सुब	गग रन	र ला	स गे
स फ	सस ल न	नं ग	ननं हन	स सु	स ना	गम सी०	प ०	मा चू	मा भे	ग ०	ग ०
म क	प हि	प ०	नि न	धप जा०	मा वे;	ग अं	मा खि	पध यन	प ०	मा ज	गर ल०

४

प दौ	पप ०ङ	न दौ	नन ०ङ	स दे	सस ख त	स हि	स य	स से	स ०	न दुः	न ख
स दे	स ०	स ग	स ए	प ला	म प लन	मा अ	गर ब०	ग वि	रस कल	र बे	सन सुध
स बे	नध हाल	प भ	मा ए	ग है	ग ०	मा क	प हो	न प	न ल	स प	स ल
न न	ध हिं	प ०	प ०	मा आ	गर वे०;	ग अं	मा खि	पध यन	प ०	मा ज	गर ल०

श्री ।

दिवा तृतीय १० दण्ड ।

जेठ । असाढ़ ।

श्री ।	(१) वंशीधर पिनाकधर — तानसेन	—	ढीमा तेताला ।
	(२) सरगम	—	तेताला व चौताल ।
गौरी ।	(३) मूरत मन में लागि	—	चौताल ।
पूरवी —	(४) धर टेढ़ी पाग —	—	चौताल ।
	(५) करत सब जग काम—		
	(६) सरगम —	—	चौताल वा तेताला ।
	(७) गुजरिया गोरी —		धामार ।
भीमपलश्री—	(८) कुंजन में रचो राख — गौरीराव	—	चौताल ।
	(९) शामल डा होरी —	—	धामार ।
	(१०) सरगम—	—	धामार ।
	(११) सोहत बेणी व्याल —		
धनाश्री —	(१२) प्रथम खरज नाद —	—	चौताल ।
	(१३) बैरिया होरी मा —	—	धामार ।
	(१४) मेरे पति राख लीजिये—		
जैतूश्री —	(१५) तुम हो ब्रज के लाल —	—	सूलताल ।
	(१६) डफ बाजनि मन्दिर —	—	धामार ।
	(१७) सरगम — तस दुख हुसैन —		
	(१८) ,, — अलीमहम्मदखाँ —		
मुलतान —	(१९) दिल्लीपति नरेन्द्र — नायक गोपाल	—	ढीमा तेताला ।
	(२०) शामल डा होरी — तानतरंग	—	धामार ।
मारुवा —	(२१) सरगम —	}	अलीमहम्मदखाँ
	(२२) ,, —		
	(२३) सरगम —		
		—	चौताल व तेताला ।

श्री ।

सर्वदा हास्यसंयुक्तो सुरसैवापि तिष्ठति ।

ऐश्वर्यभूतो लोकेऽस्मिन् श्रीरागश्च ततः स्मृतः ॥ (महेशचन्द्र सरकार)

श्रीरागः प्रथमः पुत्रः ईश्वरस्य विमोहकः ।

आज्ञा चक्रे भ्रुवोर्मध्ये परब्रह्मप्रदायकः ॥

शास्त्र में लिखा है कि पञ्चानन के पश्चिम मुख से यह राग निकला है । ग्रीष्म ऋतु में (जेठ-असाढ़ में) इस राग को सब समय गा सकते हैं । दिवा तृतीय दश इण्ड के समय प श्रीराग और अन्यान्य सामयिक रागों को गा सकते हैं । किसी किसी ने मध्याह्न काल को ग्रीष्मका कहा है इसलिए उस समय भी इस राग को गा सकते हैं । कहा है कि विशुद्ध रूप से इस रा को गाने से स्वतः विश्राम व शान्ति के भाव का उदय होता है और मानसिक विकृति दूर हो जा है । केकी (धैवत) के सुर से गाने से कदाचित् ये फल प्राप्त हो सकते हैं ।

अष्टादशाब्दः स्मरचारुमूर्तिर्धीरोल्लसत्पल्लवकर्णपूरः ।

षड्जादिसेव्योऽरुणवस्त्रधारी श्रीरागराजक्षितिपालमूर्तिः ॥

लीलाविहारेण वनान्तराले चिन्वन् प्रसूनानि बभूवसहायः ।

विलासवेशो धृतदिव्यमूर्तिः श्रीराग एषः प्रथितः पृथिव्याम् ॥

(पारिजात)

षड्जे षाड्जी समुद्भूतम् श्रीरागं स्वल्पपञ्चमं ।

संन्यासांशग्रहमन्द्रगान्धारतारमध्यमं ।

समशेषस्वरं वीरे शान्तिश्रीरयनाग्रणी ॥

(रत्नाकर)

इस श्रीराग के साथ प्रचलित श्रीराग का कोई ऐक्य नहीं दिखाई पड़ता ।

(१) श्री ।

मुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग म प धा न । ढिमातेताला । अति तीव्र मध्यम ।

वंशीधर पिनाकधर गिरिधर गङ्गाधर त्रिशुलधर चक्रधर विराजित हरिहर ॥ १ ॥

सुधाधर विषधर जटाधर मुकुटधर पिताम्बरधर मृगचर्मधर मुरहर शिवशङ्कर ॥ २ ॥

चन्दनधर भस्मधर मालाधर शेषधर गोपीवर परमेश्वर गोपीश्वर ईश्वर ॥ ३ ॥

कहैं मियाँ तानसेन ढोड स्वरूप एक तुम गरुडासन वृषभवाहन तिनलोक कर उद्धार ॥ ४ ॥

[इस राग में धैवत निकाल कर उसके स्थान में पंचम के व्यवहार करने से (इस गीत में) कुमारी राग हो जाता है ।]

+	२	०	३
धा प म गरा	गग रा स स	रा रा स स	धां धांरा स स
बं शी ध र ०	पिना क ध र	गि रि ध र	गं गा ० ध र
	मीड़		(मीड़)
नंस राग ग ग	स धा प प	मप धा न स	पमप मधा पमग रास
श्रीशु ०ल ध र	च क ध र	बि० रा जि त	ह०रि ०० ००० हर;

२

पम पधा न स	रा स स स	स रा रा रा	गग रा सनधा प
सु० धा० ध र	वि प ध र	ज टा ध र	मुकु ट ध ०० र
धाधा सस सस सस	नन धा धा प प	म प धा प म ग	मम ग रा स;
पी त अमृ ब र ध र	मृग च र्म ध र	मु र ह र ००	शिव शं क र

३

(मीड़)

सरा गमपधा धा धा	प प प प	मप धा न स	न धा प प
चं ० ० ० द न ध र	भ स्म ध र	मा० ला ध र	शे ष ध र
म प धाप म ग	मम ग रा स	स धा प प	पमगरा सस स;
गो० पी० व र	प र मे श्व र	यो गी श्व र	ई० ०० ० श्व र

४

धा धा न स	रा रा स स	रा रा रा स रा रा	गरा स स नधाप
क हे मि या	ता न से न	दो उ स्व ० रूप	ए० क तु म ००
धाधा नस स स	न नन धा पप	म प धा पमग	मग रा सस
ग ह डा० स न	हृ ष भ बा हन	ति न छो ००क	कर उ दा र;

(२) श्र । चाताल और तेताला ।

+	०	१	०	२	३
पप मधा	पप मग	राग मप	धाप मग	राग मप	रांरा स
नंस रास	गग माप	धाधा रास	धाधा पप	मधा पप	मग रास;
धाधा पम	धाधा नस	रान स	नस रांरा	स धारास	गग रास
धाधा पप	मधा रां स	रान धाप	मधा राग	मधा पप	मग रास;
रां स धाप	नधा प	मप धाप	मप मग	मधा पन	धा प
मपनसंनधा	रां स नधा	न स	नधा नधाप	मधा पमप	मग रास;
ग ग	मप मधा	पन रां स	धा रां स	नधा प	मप नधा
पप मधा	रां स	रां न	धाप मधाप	म पप	मग रास;
मधा पम	पम धान	स नस	रां रां स	नस नधाप	मप मधा
प न स	रांरासनधाप	नधाप मप	मधा पम	ग पमग	मग रास;

(३) गौरी

शुद्ध-सम्पूर्ण । स रा ग मा प धा न । चौताल ।

मूरत मन में लागि रहि माई कहाँ लव सहुँ एतनि पीड़ ॥ १ ॥

आवत के दिन गिनत रखना जपत माल दरश बिना नयन फकिर ॥ २ ॥

+	०	।	०	।	०	।	०	।
रा रा	स स	नं नं	सरा रा	गरा ग	रा स			
ला ०	गि ०	र हे	० ० ०	मा ०	० ०			
पप	रा रा	स सु	स(मीड़)धा	प प	मा मा			
कहाँ ०	ल व	स सु	ए त	वि ०	० ०			
गमा	प प	गरा स	प ग	रा स	सस स			
० ०	पी ०	० ० ड	मू र	त ०	मन में			

धा आ	धा व	धा त	न के	स ०	स ०	स दि	स न	स ०	रा गि	स न	स त
रा र	रा स	रा मा ना ०	ग ०	रा ०	स ०	स ज	स प	स त	न मा	धा ०	प ला
धा द	धा र	न श	स ०	स बि	स ना	न ०	धा ०	धा न	धा य	प न	धामा ० ०
प-गमा ० ० ०	प ०	पप फकि	प ०	गरा ०	स; र	प मू	ग र	रा त	स ०	सस म न	स में

(४) पुरवी ।

शुद्ध सम्पूर्ण । स रा ग म प धा न । चौताल ।

धर टेढ़ि पाग टेढ़ो हि चन्द्रिका और टेढ़ो त्रिभङ्गी लाल

कुण्डल कि छवि मानो कोटि रवि उदय होत और राजत बनमाल ॥२॥

श्यामरो वदन पर पीत पट ओढ़ना मुख मुरलि बाजत मधुर रसाल ॥३॥

श्रीमत वल्लभ वन ते आयो सङ्ग लिये ब्रज गोप बाल ॥४॥

[इस राग में धैवत का व्यवहार मीढ़ के साथ होगा क्योंकि स्वाधीन धैवत लगाने से दूसरे रागों की आशंका है । किसी किसी तन्त्रकारों ने दोनों मध्यमों का व्यवहार किया है परन्तु बहुत ही कम क्योंकि ऐसा करने से बेहाग की आशंका है । इस गीत में केवल कड़ी मध्यम का व्यवहार है ।]

+	०	१	०	२	३						
ग पा	रा ०	स ग	प टे	प डो	प हि	प प चंद्रि	मप का०	मप ००	गम ००	ग ०	
नं अ	रा उ	गरा र ०	ग टे	ग ०	ग ०	ग डो	ग ०	ग त्रि	ग ०	मप(मीढ़)धा भं० ०	
न गी	स ०	नधा ० ०	प ०	म प ला ०	मप ० ०	गम ० ०	ग ल	नं ध	रा र	गराम टे ० ०	गरा डि ०

२

		मीढ़				मीढ़				
ग कुं	ग ड	धामधामपधानस ल०००कि००	स छ	स वि	सा मा	सा ने	सरा को०	गम ००	ग रा टि०	स ०
रा भा	स नु	नधा उ द	प य	मपगमगमग हो०००००त	गग अउ	ग र	धापमप धाधा रा००००००		न ज	स त
स व	स न	नधा ००	प ०	म प मप मा० ००	गम ००	ग ल	नं ध	रा र	गराम गरा; टे०००दि०	

३

								मीढ़			
प श्या	प म	प रो	प ०	प व	पप दन	प प	प र	पमपधानधा पी००००० त		प प	प ट
म प ओ०	मग कु०	म ना	गरा ००	ग मु	ग ख	रा मु	रा र	स लि	स बा	स ज	स त
मीढ़											
सरागमप मधु०००		प र	प ०	मप र०	म प सा०	गम ००	ग ल	नं ध	रा र	गरा टे०००	मगरा दि०

४

मपधापमगम श्री००००००	स म	स त	स ब	स ल	स ल	स भ	ससरागमग बम००००	रा ०	स ते
न आ	धा ०	प यो	प ०	ग से	ग ग	मपधा लि००	धा ०	न ये	स ०
न गो	धा ०	प प	प ०	मप बा०	मप ००	गम ००	ग ल	नं ध	रा र
								गरा टे०	मगरा ००दि०

(५) पूरबी चौताल ।

करत सब जग काम शुभ होत तबही जब पहिले कहलेत विसमिलाः ॥१॥

जैसो बड़ो है दोनऊ देत पावत ईलम तत् छन को पढ़ो कलमुल्ता ॥२॥

अर्स कुर्सी लोहे कलम कलमा को भेद रटना जानत अल्लाह हो भला ॥३॥

लाईलाह ईल लिल्ला फ़रज़ सुन्नत सो सुद्ध होत शरीर इल्ला विल्ला ॥४॥

१

+		°				°					
ग	मा	म	म	ग	मा	ग	रा	रा	स	स	स
क	°	र	°	त	°	°	°	°	°	स	व
नंझ	रा	ग	ग	ग	ग	प	प	प	प	प	प
ज०	ग	का	°	म	°	सु	भ	हो	°	°	त
प	धान	मप	मप	ग	म	ग	ग	ग	रा	रा	रा
त	व०	हि०	००	ज	ब	प	हि	ले	°	क	ह
ग	रा	मम	मम	गमा	गरा	गग	गग	रा	रा	स	स
ले	°	००	००	°	त०	विस	मिल	°	°	ला	°;

२

		मीढ़									
ग	ग	मपधा	म	स	स	स	स	स	स	स	स
जै	°	सो००	°	ब	बो	°	°	है	°	की	न
स	स	स	स	स	स	स	स	म	ग	रा	स
क	°	दे	त	°	°	पा	°	व	°	°	°
नधा	प	म	प	प	प	प	प	म	प	म	ग
ई०	°	ल	म	त	त	ब	न	को	००	°	°
ग	ग	म	धा								
प	°	दे	°	स	रा	नधा	स	नधा	प	मपमपगमागरा	डा०००० ००००
				क	ला	°	बू	°	°		

३

पप अर	प स	पप कुर	प सी	प लो	पप ०ह	पम कल	प म	म क	प प लमा	पधान धाप ००० को०
मग मे०	रा द	रारा र ट	गरा ना०	मग जा०	रास न त	प प अला	प ०	मम हो०	गरा अल्	ग ला ०;

४

म धा ला ०	स ए	स ह	रास ई ल	सस लिला	सस फ र	स ज	मग सु०	रास न त	सन सों०	धाप ००
पप सुध	प प होत	पमप सरीर	मग ईला	मधा ००	स ०	नधा विल्	सस ००	नधा ००	प ०	मपमपगमागरा ला००००००००;

(६) पूरबी । चौताल और तेताला ॥

+	०	१	०	२	०
मग रास	प प प	मधान धाप	मप मग	मपधानधापमग	नधा पम
गग रास	नंस रारा	स गग	मधाम स	नधाप मग	नंरागरा;
गग मधा	म स	स स	म ग	रा स	नधा प
म मग	मधा नस	रान धाप	नधा प	म ग	नंरागरा;
प प प	मधा नधा	प मग	राम ग	रा ग	रा स
पधा न धाप	मगम पमप	म ग	मपधा नधा	पम ग	नंरागरा;
रारासरारास	पपप मधाप	नधाप मग	गगगमधास	रान धाप	मधानधाप
म म ग	नंरा गरा	नधाप मग	नंरा गरा	धापममग	नंरागरा;

[पश्चिम के तन्त्रकार लोग ललित और पूर्वी रागों में बैत का स्वाधीन व्यवहार नहीं करते ।]

(७) पूरबी धामार ॥

गुजरिया गोरि हो हो कर कर खेलत होरि ॥ १ ॥ उधर गयो है खेलन में घुँघट निकवनि मुख
रोरि ॥ २ ॥ अरुन वरन अधरन बिच निककर अंजन दग बहु थोरि ॥ ३ ॥ हसत गाँठ मुख पड़त
कपोलन चमकि ब्यस मति थोड़ि ॥ ४ ॥

+	०		०		०		०		०		०
ग रा रा	स	स	स	स	प प प	प	प	प	प	प	प
गो ० ०	रि	०	०	०	हो हो ०	क	र	क	र	क	र
मपधानधाप	मप	ग	म	ग;	नं रा ग	रा	म	ग	रा	ग	रा
खे ० ० ० लत	हा ०	रि	०	०	गु ज रि	०	०	या	०	०	०

अन्तरा ॥

गगमधामधा	न	स	स	स	स	स	स	स	स	स	स
उधर ० ० ०	ग	यो	ह	य	खे	ल	न	मे	०	०	०
रा रा स	स	स	स	स	मग	रास	न	स	स	स	स
धु घ ट	०	०	०	०	बि ०	० ०	०	क	व	नि	नि
न धा प	म प	ग	म	ग;	नं रा ग	रा	म	ग	रा	ग	रा
मु ख ०	रो ०	०	रि	०	गु ज रि	०	०	या	०	०	०

सञ्चारी ॥

ब प प	म	प	प	प	न धा प	म	प	म	प	म	प
अ रु न	ब	र	न	०	अ ध ०	र	न	बि	व	बि	व
म म ग	रा	रा	स	स	स स स	रा	ग	म	प	म	प
बि ० क	क	र	अ	०	ज न ०	०	०	र	ग	र	ग
मप म प	म प	ग	म	ग;	नं रा ग	रा	म	ग	रा	ग	रा
ब ० हु ०	थो ०	०	रि	०	गु ज रि	०	र	या	०	०	०

आभोग ॥

गगमधामधा हसत ० ० ०	न गा	स ठ	स ०	स ०	स मु	स ख	स ०	स प	स ड़	स त	स ०		
म क	ग पो	रा ०	स ल	स न	नधा ० ०	प ०	म ध	धा म	न कि	स ब	स य	स स	स ०
न म	धा ति	प ०	म थो	प ०	म रि	ग ०	नं गु	रा ज	ग रि	रा ०	म ०	ग या	रा ०

(८) भीमपलश्री

ओड़ब सम्पूर्ण । स गा मा प ना-ना ध प मा गा र स, चौताल ।

कुछन में रच्यो रास अठ्यक्त बुध लिये गोपाल कुण्डल के भलक देत इन्द्रधनुष पटा ॥ १ ॥

अधर तो सुरङ्ग रङ्ग बाँसुरि उपजेओ रङ्ग ऐसि छवि देखि देखि कोटि मदन छटा ॥ २ ॥

नुपुर भङ्गार गाये मधुर मधुर तान लाये सप्त सुर छाये बाँकि सुरत कपटा ॥ ३ ॥

गौरी राओ ऐसे बस होत हैं मोहन मुकुट पर शेष नाग लपटा ॥ ४ ॥

+	०		२		०		३		४		
	गमक										
प कुं	मागा ० ०	माप ज ०	माप न ०	मा मे	गा ०	र र	स खे	र ओ	नां रा	स ०	स स
नां अ	स व्य	मागा क ०	मागा ० ० ०	मा हु	पमा ध ०	प लि	प ये	मा ०	गामा ० गो	मा पा	मा ल
प कुं	मागा ० ०	मा ड	प ल	ना के	स ०	स क	स ल	स क	रना दे ०	स ०	स त
मीढ़	स ०	ना इ	ध ध	प उ	प ब	मा प	प डा	मागा ० ०	मा ०	प ०	

अन्तरा ।

प अ	प ध	पमा र०	गा ०	मा तो	प ०	स ०	स सु	स रं	स ग	स रं	स ग
ना बा	ना ०	स सु	मा रि	गा ००	सना ००	सस उ प	स जे	ना ०	ध ०	प रं	प ग
नाना ऐ	नाध ०	प ०	नास ००	स छ	स बि	रना दे०	स ०	स खि	नास ० दे	स ०	स खि
(मीढ़)											
स को	स ०	ना ट	ध म	प द	प न	मा छ	प टा	मा ०	गा ०	मा ०	प ०;

संचारी ।

मा नु	मा पु	मा र	पप ऊन	पप कार	प गा	प ये	ना ना नाध म धु र ०	पनासससस ००० म धु र	स नाध पमा ता न ला ये ०
प स	मा स	गागा सु र	रस छाये	नां बा	स ०	गा कि	मा प प सु र त	नाना ना क प टा	धपमापमागामा ००००००००;

आभोग ।

पमा गौ०	गामा ००	पस रि०	सस ००	सस राजो	सस ऐ से	ना ब	स स	मागा हो०	रस त०	नाध हैं०	पप ००
ना ना नाध मो ह न०	पना ००	सना ००	ससस मुकुट	सस प र	सस नाधप शेष ना० ग	प ल	मा प	प टा	मागा ००	माप ००	

[इस गीत को मुझतान में भी गा सकते हैं ।]

(६) भीमपलश्री । धामार ।

शामल डा होरि खेलन नु नई जान्दा ॥१॥ लगर लगर लगुराई करदा साडा मन परचावन्दा ॥२॥
चोवा चन्दन बुका बन्दन ले मुख सो सानन्दा ॥३॥ ले पिचकारि देनदा गारि आनन्द धन्य नन्द
नन्दा ॥४॥

+	०		०		०		०
स स स	नां स	स स	गा मा प	प प	ना ना		
हो ० ०	० ०	रि ०	खे ० ०	ल न	न ई		
ध ध प	प माप	मा गा	मा गा गा	र र	स स		
जां ० ०	दा ० ०	० ०	शा ० ०	म ल	डा ०		

२

प प प	मा गा	मा प	स स सना	स स	स स		
ल ग र	० ०	ल ग	र ० ० ०	ल गु	रा ई		
स स स	स स	स स	नास मा मा	गा गा	र स		
क र दा	० ०	० ०	सा ० डा ०	० ०	म न		
ना ना ना	ध प	माप मागा	मा गागा	र र	स स		
प र चां	० ०	दा ० ०	शा ० ०	म ल	डा ०		

३, ४ ।

मा गा मा	प प	प प	ना ना ना	ध ध	प प		
चो बा ०	चं ०	द न	बु का ०	बं ०	द न		
स स स	ना ना	ध प	मा गा मा	गा गा	र स		
बे ० ०	मु ख	सो ०	सा ० ०	नं ०	दा ०		
प मा गा	मा प	स स	स स स	ना ना	स स		
बे ० ०	पि च	का रि	० ० ०	दं ०	दा ०		
मागा रस	ना ना	ध प	ना ना ना	ध प	ना स		
गा ० रि ०	० ०	० ०	आ नं ०	द ०	ध न्य		
ना ना ध	प प	मा गा	मा गा गा	र र	स स		
नं दा ०	नं ०	दा ०	श ० ०	म ल	डा ०		

(११) भीम पलश्री । सूलताल ।

सोहत वेणी व्याल भाल चंद्र भौंहें धनुष यौवन श्रवणन कोष की ज्योति कपोल लोचन जो हरे ॥१॥

नेत्र पंकज नासा कीर अधर विद्रुम दशन दाडिम चिबुक चारु कंठ चातक शब्द भरे ॥२॥

कपोत ग्रीवा विराजित कुच श्रोफल भुज मृणाल नाभी भँवर कटो केसरि जँघा कदली उलटी धरे ॥३॥

पिडुरी फल नौरंगी चरण कमल सोहत ऐसो तियाँ सुल्तान महम्मद बस करे ॥४॥

+	।	०	।	।	।	।	०	।	+	।	०	।	।	।	।	०	।
प प	मा मा	गा गा	र स	स स	मा गा	मा मा	प प	प प	प प	प प	मा गा	मा मा	प प	प प	प प	मा गा	मा मा
सो ०	ह त	बे ०	णी व्या	० ल	भा ०	० ल	चं ०	द्र ०	भौंहे								
ना ना	ना ना	प ना	स स	स स	स स	स ना	ध ध	प प	प प	प प	स ना	ध ध	प प	प प	प प	स ना	ध ध
ध नु	प यौ	व न	श्र व	ण न	को ष	की जो	त क	पो ०	ल ०								
प मा	प प	प मा	प मा गा	मा प	मीड़												
लो ०	च न	जो ०	ह रे ०	० ०	ना ०												

२

प मा	गा मा	प प	स स	स स	ना ना	स स	मा गा	र स	स स	स स
ने ०	० ०	० त्र	पं ०	क ज	ना ०	सा ०	की ०	र अ	ध र	ध र
ना ना	ना ध	ध ध	प प	प प	ना ना	ना प	ना ना	स स	स स	स स
वि द्र	म द	श न	दा ०	ड़ि म	चि बु	क चा	० रु	कं ०	ठ ०	ठ ०
स स	ना ना	ध प मा	प मा गा	मा प	मीड़					
चा ०	त क	श ब द	भ रे ०	० ०	ना ०					

३

मा मा	मा मा	प प	प प	ना ना	ना ना	प ना	स स	स ना	स स	स स
क पो	० त	ग्री ०	वा ०	वि रा	जि त	कु च	श्री ०	फ ल	भु ज	भु ज
ना ना	ना ना	ध ध	प प	प प	प प	मा मा	गा गा	र र	स स	स स
मृ णा	० ल	ना ०	भी ०	भै व र	क टि	० के	० स	रि ०	जँघा	जँघा
नां स	गा मा	प प	ना ना	मीड़						
क इ	ली उ	ल टी	ध रे	ध प मा गा मा प						
				० ० ० ० ० ०						

मा प पि डु	गा मा री ०	प ना ० ०	प ना ० ०	स ०	स ०	स स फ ल	स स न व	स स रं ०	स स गी ०	सस ००
ना ना च र	स मा ण क	गा र म ल	स स सो ०	स ह	स त	ना ना ऐ सो	नानाध तियां ०	प प सु ल	स स ता न	ना ना ० म
ना ध ह म्	प प म द	प मा ब स	पमागा करे ०	मीढ़ मा प ना ० ० ०						

(१२) धानश्री ।

शुद्ध-सम्पूर्ण (दिन का पुरिया) स रा ग म प धा न, चौताल ।

प्रथम स्वरज नाद उत्तम करिये गुरु बखान साधे कण्ठ सो धारण को गुणि विद्याधर ॥१॥

गमक ग्राम सुर ज्योत ओतपत होत याद बाढ़े साँस दुनि गुणी देत वर ॥२॥

स ना	स ०	स ०	सस द उ	रा त्त	नधाप म ० ०	म क	म ०	धा ०	प रि	प ये	मप ००
म गु	धान रु ०	धा ०	धाप ० ब	म प खा ०	प ०	प ०	प न	म सा	म ०	म धे	धा ०
म कं	ग ठ	म सो	रा धा	गरा ० ०	ग र	ग न	म को	धाम ० ०	गरा ० ०	स गु	ख थी
नं वि	रा ०	ग था	म ०	रा ध	ग र	म प्र	मधाम ध ० ०	ग म	राग ० ख	रा र	स ज.

अन्तरा ।

म ग	धा म	न क	स ग्रा	स ०	स म	स सु	स र	रा ०	स ज्यो	स ०	स त
रा ओ	न त	धा प	न त	रा हो	न ०	धा त	पप या०	म ०	ग ०	ग ०	ग इ
म वा	धा दे	स ०	स ०	नरा सां०	ग स	न दु	रा ०	न नि	म गु	म धानसरा णी ० ० ० ०	
न दे	धान ० ०	म त	म ०	रा व	ग र	म प्र	मधाम थ ० ०	ग म	राग ० ख	रा र	स ज;

[इस राग में पंचम थोड़ा और मीढ़ के साथ लगता है इसलिए पूरबी की आशंका नहीं है और (रात की) पुरिया का रूप भी इसमें देख नहीं पड़ता । तीव्र मध्यम का अधिक व्यवहार होने के कारण वह वादी और कोमल ऋषभ समवादी है । धैवत का स्वाधीन व्यवहार नहीं है । तन्त्रकार लोग धैवत को विवादी कहते हैं ।]

(१३) धानश्री धामार ।

बाओरिया होरि मा धुम मचाई आलिरि सब बउराई ॥१॥

सोल सौ गोपिन में एक कनहिया सबकी सुरत भुलाई ॥२॥

नंस हो०	रा रि	ग मा	मप धु०	प ०	प म	प ०	धाप म ०	म चा	प ई	म आ	धा लि	न रि	सन ० ०
धाप स ०	म ०	ग ब	म बौ	ग रा	रा ०	स ई;	नंस बा०	रा ओ	ग रि	रा या	रा ०	स ०	स ०

अन्तरा ।

म सो	धा ल	न सौ	स ०	स ०	स ०	स ०	रा गो	स पि	स न	न में	स ०	रा ए	स क
रा क	न न	स हि	स या	स ०	स ०	स ०	ग स	ग ब	म कि	रा सु	रा ०	स र	स त
न अ	धा ला	प ०	म ०	प ०	मग ० ०	रास ई ०;	नंस बा०	रा ओ	ग रि	रा या	रा ०	स ०	स ०

(१४) धनाश्री चौताल ।

मेरे पति राख लीजिए हज़रत शेख सुलेम पीर अब्दुल्लाह महम्मद के कारन ॥१॥

हों ग़ुलाम अज़िज तेहारो कहावत तुम हो जग के निस्तारन ॥२॥

+		°				°					
नं	नं	रा	ग	ग	म	रास	नस	स	नधा	प	प
रा	°	ख	लि	°	जे	ह°	ज°	°	°	र	त
म	म	ग	ग	म	म	ग	रा	ग	ग	रा	स
शे	°	ख	°	सु	ले	म	°	पी	°	र	°
स	स	ग	ग	ग	ग	ग	म	धान	सस	स	स
अ	ल	ला	°	°	ह	म	ह	म°	द°	°	°
न	रा	स	न	धा	पप	म	ग	म	ग	रा	स
के	°	°	का	°	र न;	मे	°	रे	°	प	त

अन्तरा ।

म	धा	न	स	स	स	स	रा	स	स	स	स
हों	°	गु	ला	°	भ	आ	°	°	झि	°	ज
स	रा	न	स	स	स	स	रा	स	न	धा	प
ते	हा	°	रो	°	°	क	हा	°	°	व	त
म	ग	म	धा	न	स	स	स	सराग	रास	स	स
तु	म	हो	°	°	°	°	°	जग°	के°	°	°
स	स	रास	न	धा	प	म	ग	म	ग	रा	स
नि	स	ता°	°	र	न;	मे	°	रे	°	प	त

(१५) जयतश्री ।

शुद्ध षाड्ज । स रा ग म ध न । मूलताल ।

तुम हो ब्रज कि लाल अब तुम कौन रूप देखावत ॥१॥ तुम निकस्यो गड चरावन कर धरि
 मुरलि बजावत ॥२॥ बाट घाट कलु न मानत लङ्गर ढीट कहावत ॥३॥ मन रङ्ग पाये अकेली वंशोलिन
 गारि गावत ॥४॥

+	°			°																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																	
---	---	--	--	---	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--

(१६) जैत् । धामार ।

ढफ बाजनि मन्दिर आई सकल ब्रजनार खेलत धमार नन्दमहाराज कि द्वार ॥१॥ वीन रबाब
मृदङ्ग साथ लिये छोड़त पिचकारि बरसत है रङ्ग बाहार ॥२॥

१

ध	ध	न	ध	म	ग	ग	म	म	ग	रा	रा	स	स
ड	फ	०	बा	०	ज	नि	मं	०	०	दि	र	आ	ई
नं	नं	धं	ग	ग	रा	स	ग	ग	रा	ग	ग	स	स
स	क	ल	ब्र	ज	ना	र	खे	ल	त	ध	मा	०	र
ग	ग	ग	ग	म	ध	न	ध	ध	न	ध	म	ग	स
नं	द	०	म	हा	रा	ज	के	०	०	दु	आ	०	र;

२

न	न	स	रा	स	स	स	न	न	स	ग	ग	रा	रा
बी	०	न	र	बा	०	ब	मृ	दं	ग	सा	०	ध	०
स	स	स	न	न	ध	ध	म	म	ग	म	ग	म	ग
लि	ये	०	छो	०	इ	त	पि	च	०	का	०	रि	०
न	न	स	स	स	न	न	ध	म	ग	म	ग	स	स
ब	र	०	स	त	है	०	रं	ग	०	बा	हा	०	र;

(१७) जयत् ।

शुद्ध षाड़व । चौताल वा तेताल ।

शिक्षक तसदुखहुसेन ।

१

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।	।	।
भम	गरा	गम	गरा	स	नंधं	मंधं	स	सरा	गम	न	ध		
मग	रा	गम	न	धम	नध	मग	राग	न	ध	मग	राग		

२

गग	मम		स	स		न	स		नध	मग		राग	नध		नध	मग
रान	धम		धस	रान		धम	धन		स	नध		म	धग		मग	राग

३

नरा	गम		गरा	नंधं		नरा	गम		धन	धन		ध	मग		मध	नरा
गन	राग		म	ध		रा	न		धम	ग		स	नध		मग	राग

इस स्वर-लीपि में धैवत के स्थान पर पञ्चम लगाने से “कुमारी” राग होगा।

पम	गरा		गम	गरा		स	नंपं		मंपं	स		सरा	गम		न	प
मग	रा		गम	न		पम	नप		मग	राग		न	प		मग	राग

बाकी अन्तरा इसी रीति से लिखकर शिष्यार्थी लोग अभ्यास कर लें।

ऊपर लिखे जयत् के स्वर-लिपि में “मध्यम” के स्थान “पञ्चम” को “रिषभ” को “धैवत” तीव्र करने से “इसकार” राग हो जायगा।

धप	गर		गप	गर		स	पंधं		मंधं	स		सर	गप		न	ध
पग	र		गप	न		धप	नध		पग	राग		न	ध		पग	राग

इसका बाकी अन्तरा शिष्यार्थी लोग लिखकर अभ्यास कर लें।

(१८) जैत् । तेताला ।

शिष्यक अली महम्मदख़ाँ (बड़कु) रवाबी ।

१

+			१			०			२		
धम	गरा		गम	गरा		स	नंधं		मग	रास	
सरा	गम		नध	मग		मन	धम		गरा	सध	

२

मध	नस	स	रास	ग	ग	धम	गरा
म	ध	मध	गरा	न	धम	गरा	सध
नन	धम	ग	ग	ग	म	ध	मम
नन	धस	न	मध	धन	धम	गरा	सध;

(१६) मुलतान ।

ओड़वसम्पूर्ण । स गा म प न-न धा प म गा रा स । ढिमातेताला ।

दिल्लोपति नरेन्द्र सिकन्दर शाहे जाको डर से ध्वनि पै हिल हिलायो ॥१॥

दलशाहे महिमा अपार अगाध जहाँ गुणी जन विद्या तहाँ किरत छाये ॥२॥

नाइ विद्या गावे सुनि आलम धावे दिन दुनिके तुमहि अवतार आयो ॥३॥

कहत नायक गोपाल चिरजीव रहो पादशाह गहन ते आय मृग धायो ॥४॥

+	२	०	३
रारा सस नन सस न० रेन् ०० दर	नंस गागा मप पप सिकं ०० ०० दर	मप मगा मप गा मप शा० हे० जा० को ००	नन नन धाधा पप ड० र० से ००
मप मगा मगा मप धर ०० नि० ००	पप मगा नधा पप पय ०० हि० ल०	मगा मगा रारा सस हिला ०० ०० यो०	पप मगा मगा रास दिल्ली ०० पति;

२

पप मगा मप नस दल ०० शा० हे०	सस सस रारा सस महि मा० अपा ० र	गारा सस सस सस अ गा ०० ०० ध ०	नधा पप मगा मगा जहाँ ०० गुणी ००
मप नन सस सस जन ०० ०० विद्या	नधा नधा पप मप तहाँ ०० ०० ००	मगा मगा रारा सस किर त ० छा० यो०	पप मगा मगा रास दिल्ली ०० पति;

३

धाधा पप नधा पप ना ० द० वि० छा०	पप मगा मगा मप गावै ०० ०० ००	पप नन नन धाप सुनि आ० लम धावे	मगा मगा रारा सस दि० न० दु० नि०
सस सस नंस गागा के ०० ०० तुम हि०	मप मगा मप पप अव ०० ता० ०र	नधा पम गागा रास आ० ०० ०० यो०	पप मगा मगा रास दिल्ली ०० पति;

पप मगा मगा मप कह त० ०० ००	नन सस गारा सस ना० यक गो० पाल	नन सस रारा स स चिरं ०० जी० व०	नस नधा पप पप रहो ०० ०० ००
मप मपम गाम पप पाद शाह० आ० ०ज	नन सस स स स स गह नते आ० य०	नधा पम गाम गारास मृ ग ०००० छाये०	प प मगा रारा सस दिल ली० ०० पति;

(२०) मुलतान । धामार ।

शामल दा होरि खेलन नु माहा आवन्दा ॥१॥

वंशी दि दान बजावनदा गावनदा साहा मन ललचावन्दा ॥२॥

चोबा चन्दन अगर कुमकुम अवीर गुलाल उड़ावन्दा ॥३॥

तान तरङ्ग प्रभु रस भरि छिड़कत रहस रहस गरेलावन्दा ॥४॥

१

नं स गा हो ० रि	म प खे ०	प प ल न	न धा प नु ० ०	म गा मा डा	म गा ० ०
म प न आ ० ०	धा प व न	मगा रास दा० ००;	पम गा मप शा० ० ००	म गा म ल	रा स दा ०

२

म प प वं ० ०	म म शी ०	म प दि ०	म प न ता ० न	स स ब जा	स स व न्दा
गारा स स गा ० ० ०	न धा वं ०	प पम दा ००	गा गा गा सा डा ०	म प म न	प प ० ०
न न न ल ल ०	धा प चा वं	मगा रास दा० ००;	प म गा मप शा० ० ० ०	म गा म ल	रा स वा ०

३, ४

प म गा चो ० बा	म चं गा ०	म प द न	न न न अ ग र	स स कु म	स स कु म
न स अ बी र	गा रा गु ला स ०	स स ल ०	न न न उ डा ०	धा प वं ०	म दा ०
म म गा ता ० न	म प त र	न न ग ०	स स स प्र भु ०	गा रा र स ०	स स भ रि
म प प छि ड ०	न न क ०	न न त ०	स स स र ह स	न स र ह	रा स ०
न न धा ग रे ०	प प ला वं	मगा रास दा ० ० ० ;	पम गा म प शा ० ० ० ०	म गा म ल	रा स दा ०

(२१) मारुवा ।

शुद्ध षाड़व स रा ग म ध न, चौताल और तेताला ।

+											
नध	मग	रारा	गग	मग	रास	नं	स	नध	मग	रा	गरा
म	गरा	मग	नध	रान	ध	रान	धमग	नध	मगरा	धम	गरास;

अन्तरा

गम ध	नध मगरा	गम ध	नस न	रा ग	रा स
नरा गम	गरा स	रारा ननन	धधध मग	रान धमग	धमग रास

संचारी

मन धमग शुद्ध ० ० ०	धध म ग वाणि लिये	न ध मग आला ० प	रान धम गी ० त के	नध मग रा प्रसा ० ० न	धम ग ना ० द
ध ध मग सूख्म क र	नसन धमग देखा ० ० वे ०	सन धम ग ता ० ० ० को	रान मग क ० हत	नध मरा सब वि ध	धमग रास गा ० ० य क;

आभोग

मध जो०	नस कोउ	स वा	स द	न वि	सस बा द	नराग अनु०	रास बा द	रान स०	धम वाइ	नध के बे	मग ओरे
मध न्या०	मग रे०	मग क०	रास रे०	रा ज ग	नन उन्हें	धध क ह	मग त०	नधम गुनिज	गरा न के	धमग ना००	रास य क;

शिक्षक—अली महम्मदखॉ (बडूकु) रवाबी

(२२) मारुवा चौताल और तेताला ।

+		०		१		०		२		३	
धम	गरा	गम	गरा	स	स	नध	रा	ग	म	ग	रा
स	स	सरा	गम	न	रा	गम	न	धम	ग	मगरा	न;
गम	ध	नरा	स	ग	म	न	ध	मध	म ग	धम	गरा
सरा	गम	गरा	स	न	ध	नन	धध	नध	मग	मगरा	न;

(२३) मारुवा चौताल और तेताला ।

शिक्षक अली महम्मदखॉ (बडूकु)

न	ध	राग	म	ग	रास	नध	म	राग	म	न	ध
मग	रास	नरा	गम	गरा	स	रान	धम	धमग	रास	धमग	रास
गग	मम	धध	मम	धध	न	स	स	न	रा	गरा	स
नरा	गम	गरा	स	रा	रा	ननन	धधध ममम	धमग	रास	सरा	गम;

मेघ

रात्रि तृतीय १० दण्ड

आवण-भादों ।

सूची

राग नाम ।	बोल	रचयिता	ताल
मेघ	—(१) श्यामसि घनश्याम	— (तानसेन) —	चौताल ।
"	—(२) रिमझिम बरसे	— (") —	धामार ।
"	—(३) प्रबल दल साजे	— (") —	भँपताल ।
ललित	—(४) नुरि मन सुमिरन	— (") —	ढीमा तेनाला ।
"	—(५) होरी का खेलाड़ भये	— —	धामार ।
खम्बाज	—(६) शून्य भवन उन बिन	— (चिन्तामणि) —	चौताल ।
"	—(७) जाओजी जाओ	— —	धामार ।
"	—(८) सरगम	— —	धामार ।
गौड़मल्लार	—(९) तुम नयन में मानां	— (इच्छावरस) —	चौताल
सुरटमल्लार	—(१०) तिया आखिया योगन—	— —	चौताल
देशमल्लार	—(११) ए दर्ई पिया बिन	— —	भँपताल ।
सुरट	—(१२) सरगम	— —	चौताल व तेताला ।
देश	—(१३) "	— —	तेताला ।
जयजयन्ती	—(१४) प्रथम मानि अउमकार (वैजूबावरा)	— —	चौताल ।
"	—(१५) सखी का पतवा	— —	धामार ।
"	—(१६) ए माई सब कोउ	— —	चौताल ।

मेघ ।

भूतानां बीजसंयुक्तो रसपूर्णः सदा शुचिः ।

भूतानि मेहयेन्नित्यम् मेहनान्मेघनामकः ॥

(महेशचन्द्र सरकार)

पंचाशच्च तथा वर्णा अंका नाम महेश्वराः ।

राशयो द्वादश तथा नक्षत्राणि तथैव च ॥

स्वाधिष्ठानसमुद्भूतो जगद्बीजसमन्विताः ।

क्षणवृद्धिं समायान्ति ततो रेतः प्रवर्तते ॥

रेतसस्तु जगत् सृष्टं मेघो हि जननेप्रियम् ॥

शास्त्र में कहा है कि पंचानन के ऊर्ध्व मुख से मेघराग निकला है । वर्षाऋतु (श्रावण-भाद्र) में सब समय इस राग को गा सकते हैं । रात्रि तृतीय दश दण्ड के समय भी इसको और अन्यान्य सामयिक रागों को गा सकते हैं । अपराह्नकाल को किसी किसी ने वर्षाकाल कहा है इसलिए उस समय भी इस राग को गा सकते हैं । शुद्धभाव से इसको गाने से वर्षा, चयरोग का नाश, मोह का दूर होना आदि फल हो सकते हैं । हस्ति (निषाद) के सुर से गाने से कदाचित् ये फल प्राप्त हो सकते हैं ।

पङ्जे धैवतिकोद्भूतः पङ्जतारसमस्वरः ।

मेघरागो मन्द्रहीनो ग्रहांशन्यासधैवतः ॥

(रत्नाकर)

नीलोत्पलाभवपुरिन्दुसमानवक्त्रः

पीताम्बरस्त्रिपित्तचातकयाच्यमानः ।

पीयूषमन्दहसितो घनमध्यवर्ती

वीरेषु राजति युवा किल मेघराजः ॥

(पारिजात)

पङ्जादिमूर्च्छनोपेतः पङ्जत्रयसमन्वितः ।

ग-नि हीनोऽपि मल्लारो वर्षासु सुखदायकः ॥

यतो वर्षासु गेयोऽयम् मेघ इत्यपि कीर्तितः ।

अकालरागगानेन जातदोषं हरत्ययम् ॥

(पारिजात)

(१) मेघ ।

शुद्ध षाड्ज । स र मा प ध ना । चौताल ।

श्याम सि घनश्याम उमड़ धुमड़ आये मन्द मन्द मुरलि तान गगन घेर घहर आई ॥१॥

इत जलधर बुन्द उत सुधा बरषत इत चपला उत पीताम्बर पहिर आई ॥२॥

तासो मुक्त माला गले इत बक पान ते देखो उत धुरवार डार गरज सब छाई ॥३॥

यह शोभा निरखत तानसेन प्रभु कौन अरुणवरण बादर ते लाल पाग पहिर आई ॥४॥

[मेघ राग में आरोहण में जैसा धैवत लगता है अवरोहण में वैसा नहीं लगता । इस गीत में ऐसा ही है । दूसरे गानों में धैवत का व्यवहार आरोहण और अवरोहण में थोड़ा होने के कारण धैवत बिवादी है ।]

+	०	१	०	२	३	+	०	१	०	२	३
गमक		गमक									
ना ना	स स	ना ना	स स	ना प	स स	ध ध	प ध	ध प	मा र	प	मा र
श्या	० म	मि	० ० ० ०	घ न	श्या म	उ म	ड धु	म ड	आ ० ०	या ० ०	० ०
मा र	र मा	र र	स स	स र	स स	नां स	र मा	पधमाप	र र र	स स स	नापमारस
मं ०	द मं ०	द मु	र	लि ता	० न	ग ग	न घे	० ० ० र	घ हर	आ ० ०	० ० ० ई ०

२

मा प	ना प	ना ना	स स	ना स	स स	ना स	र र	स स	ना स	ध प	प प
इ त	० ०	ज ल	ध र	बु ०	० द	उ त	सु धा	० ०	ब र	प ०	० त
मा र	र र	मा प	प प	मारनाप	प प	मा मा	र र	स स	र र र	स स स	नापमारस
इ त	० ०	च प	० ०	ला ० ० ०	उ त	पी ०	तां ०	ब र	पहिर	आ ० ०	० ० ० ई ०

३

मार मा	प प	धमा प	प प	मा प	प प	मा प	ध स	ध प	प प	ध प	प प
ता ० ०	मो ०	मु ० ०	क मा	० ला	ग ले	इ त	ब क	पा न	ते ०	दे ०	खो ०
मा र	स स	मा र	र स	र स	स स	नां स	र र	र र	र र र	स स स	नापमारस
उ त	धु र	० वा	० र	डा ०	० र	ग र	ज ०	स ब	झा ० ०	० ० ०	० ० ० ई ०

+			०		।		०		।		०		
ना ब	स र	र पे	र ०	स ०	ना था	प ज	मा बा	प द	प र	मा वा	र ०	मा ०	र ०
मा पि	मा या	र ०	र ०	र ०	र ०	र ०	स बि	र दे	स श	स मो	स ०	स रि	स ०
मा थ	प र	प ०	ना थ	ना रा	स ०	स त	स छ्	स ति	स या	ना ०	स ०	स ०	स ०
मा नि	मा श	मा ०	र दि	स न	ना म	प न	ना भां	ना ०	प; वे	मा रि	र मि	मा कि	प मि

२

मा न	प य	प न	ना हु	ना ०	ना ०	ना न	स नि	स ०	स द	ना आ	ना ०	स व	स ०
ना दा	र म	र नी	स ०	स ०	स ०	स ०	स द	रस मक	स त	नाथ ला०	मा ०	प गि	प ०
मा उ	र न	र ०	मा वि	मा ना	मा ०	मा ०	प क	प ल	धमा ना००	प ०	प इ	प त	प ०
मा ना	मा ०	र थ	स ना	स थ	ना क	ना रि	ना धा	ना ०	प वे	मा रि	र मि	मा कि	प मि

३

मा र	मा ह	र ओ	मा न	मा ०	प जा	प त	ध ध	धमा डि०	प ०	प प	प ल	प छ	प न
प त	प न	प ०	ध द	ध ०	स ह	स ०	ध मे	प रि	प ०	मा आ	मा ०	र ये	र ०
स म	स द	स न	स ०	स ०	स ०	स ०	र मो	मा स	मा न	प यो	प ०	प क	प त
मा अ	मा व	मा ०	र स	र ०	स र	स ०	ना पा	ना ०	प ये	मा रि	र मि	मा कि	प मि

४

मा नि	प क	प ०	प ०	प ०	ना स	ना त	स न	स हीं	स ०	स ०	स ०	स प्रा	स न		
ना हो	र ०	र ०	र र	र हि	र ०	स ०	ना चि	ना त	ना ०	ना पा	ना ०	प खा	प न		
मार ता०	मा प	मा र	मा ०	मा ०	मा ०	मा ०	प क	प र	प ०	प ब	प खा	ध ०	मा ०	प ०	प न
मा ता	मा ०	र न	स स	स ०	स न	स ०	ना गा	ना ०	प वे;	मा रि	र मि	मा कि	प मि		

(३) मेघ ।

शुद्ध षाड्ज । स र माप ध ना । भँपताल ।

प्रबल दल साजे भुक भूम या भूम पर उमंड घनघोर भर इन्द्र ले आयो रे ॥१॥

बरसत मुसलधार होत पहर चार कृष्ण गिरिधर गोकुल बचायो रे ॥२॥

बूँदन ते धरणीधर सबन को रक्षा कर पशु पंछी जीव जंतु अति सुख पायो रे ॥३॥

कहैं मियाँ तानसेन तेरी गति अव्यक्त सुरपति अधीन होय सीस नवायो रे ॥४॥

१

+				०				+				०			
स ना		स ध प		ना मा		प मा र		मा मा		र प प		मा मा		र स स	
प्र ब		ल द ल		सा ०		जे भु क		भू ०		म या ०		भू ०		म प र	
नां स		र मा प		ध ध		प मा प		ध स		ध प मा		रमा प		ना ना प	
उ मं		उ घ न		घो ०		र भू र		ई ०		द ले आ		यो ० ०		रे ० ०	

२

मा प		ना ना ना		स स		ना स स		ना स		र मा र		स स		ना ना प	
ब र		स त मु		स ल		धा ० र		हा ०		त ० प		ह र		चा ० र	
र र		र स स		स स		मा प प		ध स		ध प मा		रमा प		ना ना प	
कु ०		ण गि रि		ध र		गो ० ०		कु ल		ब चा ०		यो ० ०		रे ० ०	

३

मा र		मा मा मा		प मा		प प प		मा प		ध स स		ध प		मा र र	
बूँ ०		द न ते		ध र		णी ध र		स ब		न को ०		र ता		क र ०	
मा मा		र र र		स स		स स स		नां स		र मा प		नाना ना		ना ना प	
प शु		पं छी ०		जी व		जं ० तु		अ ति		सु ख पा		यो ० ०		रे ० ०	

४

मा प		ना ना ना		स स		ना स स		ना स		रमा र स		ना स		ना ना प	
क हें		मि ० यां		ता न		से ० न		ते ०		री ० ग ति		अ बी		य क्त ०	
र र		र मा र		स स स		ना स स		मा प स		ना प मा		रमा प		ना ना प	
सु र		प ति ०		अधी न		हो ० य		सी ० स		न वा ०		यो ० ०		रे ० ०	

(४) ललित ।

मिश्र षाड्ज । स रा ग मा म धा न । ढिमा तेताला ।

नुरि मन सुमिरन कर कर निश दिन रहे रहे शाहेन शाह मदारि ॥ १ ॥

हम तो सेवक दरबार के जाचक तुम हो अल्लाह हजुरि ॥ २ ॥

जोड़ जोड़ धावत सोड़ फल पावत न्यामत पावत चोरि ॥ ३ ॥

तानसेन के प्रभु यहि वर माँगत हैं तान राग समपुरि ॥ ४ ॥

+	२	०	३
मामा मामा मामा मामा सु० मि० र० न०	ममा ममा ममा मग कर०० कर००	मधा मधा मम मामा निश०००० दिन	ममा ममा ममा मग रहे०० रहे००
म म धाधा नन सस शा००० हे० न०	नसरान सन धा नधा शा०००० हे०००	ममा मामा माग रास ०००० मदा० रि;	नंरागमाग रास नंरागमा नु० रि०० मन००००

अन्तरा

मम धाधा नन सस ह० म० तो०००	सससससससस मे० वकदर०००	नसनसरानसस बारके००००००	नधा ममा मामा माग ०००० याचक०
मम धाधा नन सस तु० म० हो०००	सससनसनरानस अल्०००ला००००	नधा मम माग रास ०००० हजुरि०	नंरागमाग रास नंरागमा नु० रि०० मन००००

सञ्चारी

ननं रारा गग मामा जो० इ० जो० ई०	मामा मामा ममा मग धा० वत०००००	मम धाधा नन सस सो० इ० फ० ल०	नस रानसनधाममा पा००००००० वत
मामा गग रारा सस न्या००० म० त०	ननं रारा गग मामा पा००० व० त०	मामा मामा ममा मग चो० रि००००००;	नंरागमाग रास नंरागमा नु० रि०० मन००००

आभोग

मम धाधा नन सस ता० न० से० न०	सस सस सस सस के००० प्र० भु०	नस सस रास सस यहि०० वर००	नस रानसनधाममाग मा०००००००० गत
मम धाधा नन सस ता० न० रा० ग०	नस रानसन धाधा मम०००००००	मधा ममा माग रास ०००० पु०० रि;	नंरागमाग रास नंरागमा नु० रि०० मन००००

[इस राग में स्वाधीन धैवत नहीं लगेगा परन्तु मध्यम के मीड़ के साथ लगेगा । पश्चिम देश के तन्त्रकार लोग पुरबी और ललित के धैवत को विचित्र कहते हैं ।]

(५) ललित । धामार ।

होरि का खेलाड़ भये आज ब्रज में तुमहि अनुखि लाल ॥ १ ॥

बर जोरि कुच मुख मसलत नाचत दे दे ताल ॥ २ ॥

गारि देत और तारि बजावत छिरकत रङ्ग गुलाल ॥ ३ ॥

कृष्ण जीवन प्रभु कैसे रहेंगी ब्रज में ब्रज बाल ॥ ४ ॥

+	०		०		०		०		०		०		०
मा	मा	मा	म	मा	ग	ग	मध्या	म	मा	मा	मा	मा	ग
खे	ला	ड़	भ	यो	०	०	आ ०	०	ज	ब्र	ज	में	०
म	धा	धा	न	स	स	स	न	स	रा	न	स	न	धा
तु	म	०	हि	०	०	०	अ	नु	०	०	०	खि	०
मध्या	म	मा	मा	ग	रा	स;	नं	रा	रा	ग	मा	ग	माग
० ०	०	०	ला	०	०	ल	हो	०	०	रि	०	०	का०

म	धा	धा	न	न	स	स	स	स	स	न	स	रा	न	स
ब	र	०	जो	०	रि	०	कु	च	०	०	०	०	सु	ख
न	धाम	धा	म	म	मा	मा	मध्या	न	स	न	स	रान	स	न
म	स ०	०	ल	ह	त	०	ना ०	च	त	दे	०	० ०	दे ०	धा
म	धा	म	ग	ग	माग	रास	नं	रा	रा	ग	मा	ग	माग	का०
० ०	०	०	०	०	ता ०	० ल	हो	०	०	रि	०	०	०	०

नं	रा	ग	मा	मा	मा	मा	म	म	मा	म	म	मा	माग
गा	०	रि	०	०	दे	त	अ	उ	र	०	०	ता	रि ०
मा	मा	मा	ग	ग	ग	ग	म	धा	धा	म	म	मा	मा
ब	जा	०	व	त	०	०	छि	र	०	क	त	रं	ग
मा	ग	ग	रा	रा	स	स	नं	रा	रा	ग	मा	गमा	ग
गु	ला	०	०	०	०	ल;	हो	०	०	रि	०	० का	०

अंतरा

मा र	मा ज	ध नी	ध ०	ना ॐ	स धि	स था	सना ००	स रि	स भा	ना ०	स रि
ना का	स रि	र का	स ०	ना क	स ज	ना रा	ना ०	ध रि	ध ०	प क्रि	प लि
प क	प ल	प क	ध ०	ना भ	सना ई ०	स दा	स ०	स दु	स र	स मो	स र
र शो	र ०	स र	स श	स र	स ना स ०	स मा	स ०	ना न	ध कु	नाप ००	ध न;

सञ्चारी

मामा जु ग	पप नु०	पप जग	पथ मगा	धमा ००	पप ० त	गमा च म	धना के ०	धना च प	माप ला०	पप तेय	पप सी०
गग पब	गग न०	माध ००	माप कक	गग को०	रस ० र	माधना दे ००	माधना त ००	पध ००	गमा दु ख	धना ००	पध दुन;

आभोग

मामा चिं०	धध ता०	नन मणि	स स ब्र ज	सस चं ०	सस द्र ०	सस नं ०	सस द न	रर आ०	सस नं ०	सन द कं	धप ० द
गग किन्	गग हो०	रर मेरे	सस न थ	सना न च	सस को र	सस नि र	सर ख०	सस मुख	नाना चं ०	धना द पु	पध न०

(७) खाम्बाज । धामार ।

जाओ जी जाओ अपने द्वार जिन करो हो रार (मोँसे) ॥१॥

जिनके रस बस भये मोहन जहाँ सिधारेओ तहाँ नई बाहार ॥२॥

मेरी प्रीत को कौन भरोसो वहाँ जाओ जाहिक एतवार ॥३॥

इच्छा पूजाउ बाहि पिया कि जिन गले लिपटायो भुजा डार ॥४॥

सना	सुर	स	ना	ध	प	मा	प	ध	स	ना	ध	प
प ने	००	द्रा	०	०	र	जि	न	०	क	०	रो	०
मा	प	मा	ग	र	स	ग	माप	ध	ना	ना	स	स
हो	०	रा	र	मों	से	जा	ओजी	०	जा	०	ओ	०
मामा	नाध	ना	ना	स	स	स	स	स	ना	ना	ध	प
जिन	के ०	र	स	ब	म ०	भ	ये	०	मो	०	ह	न
मा	ना	मा	मा	ना	ध	नाना	स	स	स	ना	स	स
ज	हां	०	०	०	०	सिधा	रे	ओ	त	हां	०	०
ना	स	स	स	ना	धप	मा	प	ध	स	ना	ध	प
न	ई	बा	हा	०	० र	जि	न	०	क	०	रो	०
मा	प	मा	ग	र	स;	ग	मा	प	ना	ना	स	स
हो	०	रा	र	मों	से	जा	ओ	जी	जा	०	ओ	०
मा	पप	मा	प	मा	प	मा	ध	ना	ध	प	मा	प
मे	रि०	प्री	त	को	०	कौ	०	म	भ	रो	सो	०
मा	मा	र	स	स	स	स	गमा	प	मा	नाध	मा	प
व	हीं	जा	ओ	०	०	या	हि ०	क	इ	त ०	वा	र;
माध	ना	ना	ना	स	स	नास	र	स	ना	ना	ध	प
इच्छा	०	पू	जा	उ	०	बा ०	हि	०	पि	या	कि	०
मा	प	माना	ध	ना	स	स	स	स	ना	ना	ध	ध
जि	न	० ०	०	ग	ले	लि	प	टा	यो	०	०	०
प	प	मा	ना	ध	प	मा	प	ध	स	ना	ध	प
भु	जा	०	०	डा	र	जि	न	०	क	०	रो	०
मा	प	मा	ग	र	स;	गमा	प	ध	ना	मा	स	स
हो	०	रा	र	मों	से	जाओ	जी	०	०	०	जा	ओ

(८) खाम्बाज । धामार ।

ना	ध	अ	मा	प	अ	ध	ग	मा	प	मा	ग	र	स
ग	ग	स	गमा	धन	सर	सना	ध	अ	अ	मा	प	ना	ध
मा	प	ध	ग	मा	प	मा	ग	र	स	ग	मा	प	मा;
ध	ध	मा	ध	ध	माधन	स	नस	गग	रस	नाधन	र	सना	धप
मा	पसना	ध	मापना	ध	मा	प	ध	गमा	प	मा	गर	स	गमापमा;

[किसी किसी तन्त्रकार का मत है कि खाम्बाज में दोनों निषाद लगाना चाहिए । परन्तु जो लोग शुद्ध राग के प्रिय हैं वे केवल कोमल निषाद का व्यवहार करते हैं ।]

(९) गौड़मल्लार ।

शुद्ध षाड़व । सर मा प ध ना । चौताल ।

तुम नयन में मानो काम कि घटा सि उमड़ घुमड़ आइ ॥१॥

पलक दुन सोइ गरजत चञ्चल चमकत चपला सि कुन्दत ऐसो आइ ॥ २ ॥

और बरन धुरवासी ताइ बकपान्ति तारन कि ज्योत भिंगन सि डंग मानो इन्द्रवधु सोहाइ ॥ ३ ॥

पानी पड़त बुन्दन सो महम्मद शाह पिया कि इच्छा बरस ऐसो आई ॥ ४ ॥

+	०	१	०	२	३
मारमा रमाप मे ० ० ० ० ०	प पमा ० मा ०	धनाध ना ० ० ० ०	स स ० नो	ध ध का म	ना स ० कि
धध धध ध टा ० ०	ना प ० सि	मा प ० ०	मा र ० ०	मामा र उ म उ	मामा र धु म ड
स सनां आ ० ०	गमक सस सस ० ० ० ०	गमक रस रर ० ० ० ०	गमक मार मामा ० ० ० ०	रर रर ० ० ० ०	स स ० ०
र र ० ०	नां सनां ० ० ० ०	स स; ० इ	ध ध तु म	प प न य	मा मार न ० ०

अन्तरा

नाध प०	नाध ल०	ना क	स दु	स ०	स न	सना सो०	स इ	र ग	रस र०	र ज	स त
मामा चं०	मामा ००	र च	र ल	सना च०	र म	स क	सना त०	धना चप	स ला	र सि	स ०
धुध कु०	पमाप दत०	मामा पुय	र सो	स नाधना आ ०००	सना ००	सस ००	र ०	स र र ० ० ०	गमक मामारमामारस ००००००००		
र र ००	नास ००	धना ००	स र ००	नास नास ०० ०इ	ध तु	ध म	प न	प य	मा न	मार ००	

सञ्चारी और आभोग

(गमक)											
मामाना धना अ उ र ० व	सस र न	सस धु र	पना बा०	धप ०मि	धमा ता ०	पप इ०	माप व क	धध पां०	नास ००	धध ति०	
पप ता०	माप र न	मा कि०	मा ज्योत	मामा कि०	र गन	स मि	सस डो १	ध मा	धना नो०	धना इ०	धप द०
ध ब	ध धू	नास सोहा	नास ० इ	स ०	स ०	मानाधनासस पा नि० प इ त	स स बुँ द	सस न सो	गमक नास र र र म इम्मद शा०		
गमक मामार स स पिया कि इ छ्छा	गमक ससस नानाना ब र य मे सो०	गमक धना सर आ० ००	गमक नास धप ०० ००	गमक माप मार ०० ००	गमक रधध नास ००० ००						
गमक सर स र ०० ००	गमक मामा रस ०० ००	गमक प मा र स ०० ००	गमक धना सरस ०० ०इ०	गमक धध पप तु म नय	गमक मा मा न ००						

(१०) सुरट ।

ओड़व षाड़व । स र मा प न—ना ध प मा र स ।

चौताल ।

तिया आँखिया योगन कड़मड़ि पलकन दिगवरनि कण्ठ
 असुरन रक्त वदन सोइ भिङ्गोइ वसन कण्ठ किनि ॥ १ ॥
 श्याम श्वेत अरुन गुदरि बरुनि अञ्जन की शेलि
 अवध अँधियारि गहन तड़क छबि बिभुति गुपत त्रिशुल त्रिशुलन
 त्रिविध कटाक्षन तक तक निशि पल लागन निद छाड़ि दिनि ॥ २ ॥
 सदा असुअन नदि स्नान करन विरह अग्नि निद तपन जग दग्शन
 भोजन त्यजन पिया मन्त्र जपत सोच मान लनि ॥ ३ ॥
 उद्ध दृष्टि आस खर्पर पिया भित्ता करन को
 यह तपते जपते पायो मुक्त शाहेन मन मीन लनि छिनि ॥ ४ ॥

+	०	१	०	२	३						
न या	स ०	स यो	न ०	स ग न	स क ड़	स र म०	स र ड़ि०	ना ०	ना ०		
ना प	ना ळ	ना धनाधनाध क न ० ० ० ० ०	प ०	प दिग	ना ना धप व ३ ० ०	मापध ० ० ०	प नि	मा ०	प ०		
मा क	र ठ	प ०	मा न ०	र अ सू	स ०	स न	स र क	र ०	स ०		
स ब	सस दन	मा सो	र इ	मा भिं	प गो	ना ०	पन ०हि	स ०	स ब	स स	स न
स क	र ० ०	रस ठ ०	नाधप कि ० ०	माप ० ०	धना ० ०	धपमा नि ० ०	पमार ० ० ०	मा ति	र या	मा आं	प खि,

अन्तरा

मा श्या	प म	नाप ००	न स्वे	स न	स ०	रन अ०	स रु	स न	स गु	स द	स रि
ना ब	प रु	प नि	प ०	र आ	र ज	र न	रस ००	र न कि०	स ०	स शे	स लि
ना अ	ना व	ना ध	ना ०	ना अं	ना धि	ना या	धप ००	माना ००	धप रि०	मा ०	पमा ००
प ग	मा ह	र न	पप तड़	मा क	र ०	र छ	र वि	स वि	र भू	स ०	स ति
स गु	र प	स त	र त्रि	मा शु	प ०	प ल	प त्रि	धध शु०	माप ००	प ल	प न
नाना त्रि वि	ना ध	नाधना क टा०	धनाध ००००	प ज्ञ	प न	मा त	प क	नाप ००	न त	स ०	स क
स नि	स श	स प	स ल	न ला	स ०	स ग	स न	स ०	स नि	स ०	स द
सर छ०	सर ००	र स डि०	नाधप दि००	मा ०	ना ०	धपमा नि००	पमार ०००	मा ति	र या	मा आ	प खि;

सञ्चारी आभोग

+	०	१	०	२	३
मामार माप स दा ० श्रंशु	पप पप अन नदि	प प धमाप अस ना ० न	पप पप कर न०	नानाना नाना वि र ह अ मि	मीड़ मानाध पपप नि ० ह तपन
माप मामा ज ग द र	रर रर शन ००	पप मार भो० ज न	सस सस त्यज न ०	मा मा रमाप पि या ०००	प प प प मं ० त्र ०
मापन न ज प त सो	सस र स ० च मा ०	रना ना ० न लि	मीड़ मानाधपमापमार ० ० ० नि ० ० ० ० ० ;	पप नन उर्ध्व दृष्टि	स स स स स आ स ख र्प र
नरस ससर पिया ० ० भिन्ना	पमार स कर न को	नाधनानाना य ह त प ते	नानाना धप ज प ते ० ०	मीड़ मानाध पमा ० ० ० पाये	रमाप प प ० ० ० मुक्ति
मापन न शा ० हे न	सस सस म न मी न	रस रना ली ० ० न	ध प मापध छि ० ० ० ०	पमाप मार नि ० ० ० ०	मार माप तिया आशि

[संचारी के बाद 'तिया आँखि' (मार माप) गा कर समू रख सकते हैं । संचारी और आभोग को एक साथ भी गा सकते हैं ।]

(११) देशमल्लार ।

ओढ़ब सम्पूर्ण । सरमापन—नाधपमागरस । भाँपताल ।

ए दइ पिया बिन कैसे रतियाँ बैरन भइ तन ना कटत मोको अचल भई ॥ १ ॥

निश दिन नहीं चैन और सुभे नाहीं नयन उन तो निठुर नेक सुध ना लई ॥ २ ॥

एतनि सन्देश मेरि कहिओ जाय उनसों विरह बिसत तन तपत भई ॥ ३ ॥

हे बीर कैसे अब धरूँ धीर नयनन ते मेरि निद गई ॥ ४ ॥

+		२			०		३		
ध	ध	प	मा	ध	प	प	मा	ग	र
पि	या	बि	०	न	क	य	से	०	०
र	प मा	प	ध	मा	ग	ग	र	स	स
र	ति ०	यां	०	बै	र	न	भ	इ	०
स	स	र मा	र	मा	प	प	न	न	स
ब	ण	न ०	०	क	ट	त	मो	०	को
स	स	न	र	स	र स	ना ध	प	ध	स ना
अ	च	ल	०	०	भ ०	इ ०;	ए	द	इ ०
.									

अंतरा

मा	प	न	न	न	स	स	स	स	स
नि	श	दि	०	न	न	हीं	बै	०	न
स स	स	स	स	स	न	र	र	र	र
औ ०	र	सू	०	के	न	हीं	न	य	न
न	न	न	स	स	स	स	स	स	स
व	न	तो	०	नि	०	र	न	०	क
स	स	न	र	स	रा स	नाध;	प	ध	स ना
सु	ध	न	०	०	ल ०	इ ०	ए	द	इ ०

(१६६)

सञ्चारी आभोग ।

र ए	र त	मा र नि ०	प मा ० स	ग दे	ग स	र मे	र ०	र रि
मा क	मा मा हि ओ	ग जा	ग ० य	र उ	र न	स मो	स ०	स ०
स बि	स र	मा ह	र ० मा	प बि	प प न न	ध त	स ना न ०	ना ०
ध त	ध प	प त	मा ० ध	प भ	प है	प ०	प ०	प; ०
मा हे	प ०	न बी	न ० न	स के	स ०	स मे	स ०	स ०
स अ	स ब	स ध	स रु	र धी	र ०	र ०	र ०	र र
न न	न य	न न	न ०	स ते	स ०	स मे	स ०	स रि
स नि	स ०	न ०	र ० स	र स ग ह	ना ध ० ०	प ध ए द	स है	ना; ०

(१२) सुरट । चौताल और तेताला ।

+	०	१	०	२	३
रर माप	स स	नाध पध	मामा र	पमा र	स नंस
र मा	प धमा	नाध पमा	र	पमा र	स
रर माप	माप न स	नन स	र र	न स	नाना धप
माप नसु	मामा र	रर सना	रना धप	माप धप	मार स;

अन्तरा ।

माप	नस	सन	स	नस	र	रमा	रस	रर	स	रर	स
नाध	प	नाध	प	माप	पप	नस	नाध	पध	मार	नाध	पमा
धप	मार	प	मा	रनं	सर	पमा	रस	र र	स	नंस	रर
मामा	पप	माप	न स	रना	धप	माप	नाध	पमा	र	मार	स ;

(१३) देश । तेताला ।

+		१		०		२	
स	स	नाध	पध	माग	र	पमा	गर
स	नंस	नंस	रमा	पध	माग	रमाग	रस
माप	नस	न	स	र	नाध	ना	ध प
धमापमाग		र	स	नं नं	स	र र	माप ;
मामा	पस	न	स	नस	र	पमा	गरस
र र	स	नाध	प	माग	र	माप	माप
मा	गर	पमा	ग र स	भाप	नस	र ना	धप
माप	धप	मापमा	गर	नं	स	र र	माप ;

(१४) जयजयन्ती—चौताल ।

मिश्र सम्पूर्ण । स र गा ग मा प ध ना न ।

[किसी किसी मत के अनुसार कामल धैवत भी व्यवहार होता है]

प्रथम मानि अउमकार देवन मानि महादेव ग्याँनिन मानि गोरख नदिन मानि गंगा ॥ १ ॥

गीत की संगीत मानि संगीत की सुर मानि ताल मानि मृदङ्ग नृत्य मानि रम्भा ॥ २ ॥

राजन मानि इन्द्रराज गजन मानि ऐरावत विद्या मानि सरस्वति वेद मानि ब्रह्मा ॥ ३ ॥

कहैं बैजु बावर सुनियें गोपाल लाल दिनन मानि सूरज देव रयन मानि चंद्रमा ॥ ५ ॥

+		०		१		०		२		३	
प	मा	ग गा	र	र	र	र	र	र	र	र	स
प्र	थ	० ०	म	मा	नि	अ	उ	म	का	०	र
स	स	मा	मा	मा	माग	गार	गार	र	स	नां धं	पं
दे	०	व	न	मा	नि ०	म ०	हा ०	०	दे	० ०	व
स	स	स	स	मार	र	मा	प	न	स	स	स
ग्यां	नि	०	न	मा ०	०	०	नि	गो	०	र	ख
स	स	स	स	स र	स र	ना ध	प	मा	प ध	माग	गार
न	दि	०	न	मा ०	० ०	नि ०	०	ग	० ०	० ०	गा

२

मा गी	प ०	न त	न ०	स ०	स कि	स सं	स गी	स त	न भा	स ०	स नि
न सं	स गी	र ०	र त	स कि	स ०	ना सु	ना र	ध ०	प मा	मा ध ० ०	प नि
मा ता	र ०	र ल	मा मा	प ०	प ०	प नि	प ०	न सु	न दं	स ०	स ग
स नृ	स ०	स त्य	स ०	स र मा ०	स र ० ०	ना नि	ध प ० ०	मा र	प ध ० ०	मा ग गा र ० ० ० भा	

३

र र रा ज	र मा न मा	गार र र ० नि हं ०	र र द्र रा	र र ० ज	स स स मा ग ज न मा	गा र र र ० नि ऐ ०	र र र र रा ० व त
मा मा गा र मा बि ० ० आमा	प प ना ना ० नि स र	ना ना ० स्व	ध प नि ०	प मा वे ०	ध ध ० ०	प प प प द मा ० नि	मा ग गा र स ब्र ह ० मा ०

४

मा प न न क हं ० ०	स स स स ब ई जु ०	स न वा ०	स स व र	न स र गा र स सु न्नि ये ० ० ०	ना ना ध प गो पा ० ल	मा प मा ध प ला ० ० ० ल
मा ग गा र र र दि न ० ० न मा	प प न न ० नि सू ०	स स र ज	स स दे व	स स स स र य न मा	र स र ना मा प ध ० ० ० नि चं ० ०	मा ग गा र द ० ० मा

सम् की तिन । तीन दफा गाने से सम में आयेगा ।

र र र मा ग र रा ज न मा ० नि	र र र र र र इन्द्र ० रा ० ज	स स स मा मा मा ग ज न मा ० नि	ग ग र र र र ऐ ० रा ० ब त	मा मा गा र मा प वि ० द्या ० मा नि	ना ना ना ना ध प सर ० स्व ति ०
प मा ध प प वे ० द मा नि	मा ग गा र स ब्र ह मा ० ०	मा प न स स स क हैं ० ब इ जु	स न स स स स बा ० ० व र ०	न सर गा र स सु नि ये ० गो ०	ना ना ध प मा ध प पा ० ल ला ० ० ल
मा ग गा र मा प दि न न ० मा नि	न न न स स स सूर ज दे ० व	स स स सर सर ना र य न मा ० ० नि	मा प ध मा ग गा र च ० द्र मा ० ० ०	रा ज न मा ० नि	इन्द्र रा ० ज

(१५) जयजयन्ती । धामार ।

सखि का पत वाके ना रहे आयो फागुन मास । १ ।

और मुख मल भँवर अस करे हूँ अब के आवत सइ । २ ।

ब्रज महल पति वही मन मोहन श्याम बन्धु नहीं आये-

एतनी मिनति मेरि कहियो जाय उनसे कुब्जा के घर ठाओ । ३ ।

+	०		०		०		०
पं धं नां भ र स का ० ० ० ०	र र प ०	ग गर न ० ०	ग मा प वा ० के	मा ग ना ०	र स र हे		
स स स आ ये ०	र गा फा ०	र स गु न	नां स मा ०	र ०	नां धं नां ० ० म	पं पं म खि	

अन्तरा ।

मा प न अ ओ र	स स ० ०	स स न ० ० ०	स स स न मु ख ० ०	स स म ०	स स ल ०
र र गा भ वर ०	स स ० ०	स स अ म	न स स क रे ०	ना ध ० ०	प प हुँ ०
प स न अ ब ०	स स के ०	स स ० ०	ना ना ना आ ० ०	ध ध व ०	प प त ०
ध ना ना स इ ०	ध प ० ०	मा प ० ०	ध प मा गा ० ० ०	र स ० ०	स स स खि

२

मा बे	प ०	न स	न र	न ०	स वि	स स	स र	स डा	न ०	स रो	स ०
स क	स र	र चू	गा ०	र ड़ि	न यां०	स फो	स ०	ना र	धप डा०	मा ०	धप ०री
मा मो	र ०	र ति	मा ह	मा ०	मा र	प तो	प ०	प र	न डा	स ०	स रो
स ज	स मू	सरस ना००	रना ००	ध वि	प च	नाना ध सि	धप ए०	धमा ००	गर मा०	गर ००	स ई

३, ४

रमार मामा ऊ० चे ऊ चे	पप दोड़	माप हारी	नस देखि	रस एतो	नाधप मे ०री	माधप आ०ली	मामामा रर त नि क धरो	स धी	स र
मार माप चिर बान्धो	माधप ०००	धप कसि	माप क हैं	नन र स	सस विना	सस य क	र र गागा छाड़ो ००	स र मिल	सना वे कि
धप माधप आ० ०० स	मार स्याम	मामा कै ०	पपप मन्देस	नस ऊधो	सससससगनाध नरु कहो ००००	नाना धपमा हं सि ए००	गरग मा००	रस ०ई	

विविध राग व रागमाला ।

सूची ।

राग नाम ।	बोल	रचयिता	ताल
झाया	—(१) कुंजप हेत मोर —	(तानसेन)	— सीर ताल ।
पटमंजरी	—(२) विरहभरी सोच में—	(शिक्तक—गोपाल मिश्र)	आड़ी चौताल ।
पुलिन्दिका	—(३) प्रथमनाद मूल ते —	(बैजू बावरा)	— आड़ी चौताल ।
„	—(४) फागुन गढ़ जो —	(„)	— धाभार ।
„	—(५) सरगम —	(शिक्तक—अन्नापुरुषोत्तम धारपूरे ।)	— आड़ी चौताल ।
हिंडोल व मालकोष (६) सरगम	—	(शि०—तसद्दुकहुसेन ।)	— तेताला ।
मालाश्री व पलश्री (७) सरगम	—	(„)	— „
बड़ हंस	—(८) प्रथम राग बोल —	(बड़कू)	— सूलताल ।
मुद्राकी	—(९) सुभ घड़ी सुभ लगन	(तानसेन)	— भाँपताल ।
कौशिकी	—(१०) मेह की सुर परज—	(बैजू बावरा)	— चौताल ।
„	—(११) परज कहाँ से —	(गोपाल नायक)	— चौताल व तेताला ।
सर्वरी	—(१२) सुर प्रथम सारिगम	(गोपाल नायक)	— सीर ताल ।
कुमारी	—(१३) परज सुर साथे —	(सुरतसेन)	— ढीमा तेताला ।
नट कल्याण	—(१४) श्री गणेश विघ्नहरण	(शिक्तक—चिन्तामणि वापुलि)	ढीमा तेताला
देसी टोड़ी	—(१५) श्री गंगा पातक हरनि	(इच्छावरस)	— ढीमा तेताला ।
रागमाला	—(१६) सुंदर अति नवीन—	(बैजू बावरा) ।	
रागमाला	—(१७) शंकर हर हर —	(शि०—चिन्तामणि वापुलि)	
रागमाला	—(१८) (शि०—तसद्दुकहुसेन)		
खटरांग	—(१९) नाद समुंदर कां पार	(शि०—अन्नापुरुषोत्तम धारपूरं)	सवारी ।
सिंदुरां (सिन्धुड़ा) (२०) अंगना विरह बावरी	(वाणीविलास)	—	भाँपताल ।

(१) छाया ।

शुद्ध संपूर्ण । । स र ग मा प ध ना । ताल सीर (नौ मात्रा)

कुँजप हेत मोर चन्द्र मंजन हेत आप हेत मीन दीप हेत पतंग । १ ।

लोहा पाषाण हेत स्वाति चातक हेत जननी बालक हेत कंत हेत अनङ्ग । २ ।

शरीर दुःख हेत संतोष सुख हेत सुर हेत साधन साधू हेत असङ्ग । ३ ।

हेत कहत तानसेन सेवा हेत गुरु जन भुक्ति हेत पदारथ मुक्ति हेत श्रीगङ्ग । ४ ।

+	।	०	।	।	।	।	।	+	।	०	।	।	।	।	।	।
ना	ध	प	प	प	मा	मा	ग	गर	ग	ग	मा	प	माग	स	र	स
कुँ	ज	प	हे	त	मो	०	र	००	च	न्द्र	मं	जन	०	हं	०	त
स र ग मा र	स	स	स	ध	ना	ध	प	र	ग	माप	मा	ग	स	र	स	स
आ ० ० ० प	हे	०	त	मी	०	०	न	दी	प	हे	०	त	०	प	तं	ग;

२

प	।	।	।	।	।	।	।	धर	।	।	धना	ध	प	प	प	प
लो	स	स	स	स	स	स	स	स्वा०	ता	चा०	त	क	हं	०	०	०
नाध	ना	ध	प	प	प	प	प	र	ग	मा	प	माग	स	र	स	स
जन	नी	बा	ल	क	हे	०	त	कं	त	हं	०	त	०	अ	नं	ङ्ग०

३

धना	ध	प	प	प	प	प	प	र	ग	माप	माग	स	र	स	स
शरी	र	दु	ख	०	०	०	०	स	न्ता	०	प	सुख	हं	०	त
स	स	ध	ना	ध	प	प	प	स	र	ग	मा	प	स	र	स
सु	र	हे	०	त	सा	०	ध	न	सा	धू	हं	०	त	अ	सं

४

प	प	स	स	स	स	स	स	धर	स	ध	ध	ध	प	प	प	प
हे	त	क	हं	त	ता	न	सं	सं०	बा	हे	०	त	गुं	रुं	ज	न
धना	ध	प	प	प	प	मा	प	र	ग	माप	मा	ग	स	र	स	स
भु०	क्ति	हं	०	त	पदा	०	र	थ	मु	क्ति	हे	०	त	०	श्री	ङ्ग;

(२) पटमंजरी आड़ी चौताल ।

सम्पूर्ण ओड़व । स र ग मा प ध न—न प मा र स ।

विरह भरी सोच में रहत नित कोमल बदन तन छीन भयो री आली रहत सदा निपट मन मलीन ॥१॥

बार बार सिखावन देत सखी री होय गये प्रेम बस सुनत नई भनक गूमान पटमंजरी बियोग भारी चतुर सुघर अति नबीन ॥२॥ शिक्षक—स्वर्गीय गोपालप्रसाद मिश्र ॥

+				०				०				०	
ग	मा	पध	नस	न	स	न	प	प	प	मा	मा	र	स
वि	र	ह०	००	भ	रि	मे	च	मे	०	र	०	ह	त
ग	मा	प	प	प	प	ध	न	न	न	र	स	न	प
वि	त	को	म	ल	०	व	द	न	०	त	न	खी	न
मा	प	मा	र	स	स	प	मा	र	ग	माप	ध	मा	र
भ	ए	ऊ	रि	०	०	आ	०	ली	०	००	र	ह	त
गमा	प	नप	मा	रग	माप	ध	नस	र	स	न	पमा	र	स
सदा	०	००	०	नि०	प०	ट	००	म	न	०	म०	लि	न

अन्तरा ।

प	ध	न	स	स	स	र	ग	मा	मा	र	ग	र	स
बा	०	र	०	दा	र	मि	खा	व	न	दे	त	स	खि
न	प	मा	मा	स	र	ग	मा	प	ध	न	स	प	ध
हो	य	ग	ये	प्रे	म	ब	स	सु	न	त	०	न	ई
र	स	न	प	र	गमा	र	र	प	मा	र	ग	पध	न
भ	न	क	०	गु	मान	प	ट	मं	ज	रि	०	वियो	ग
पमा	र	गमा	प	धन	स	र	र	नप	मा	रप	प	मार	स
भा०	०	रि०	०	चतु	०	र	०	सुघ	र	अति	०	नबी	न

(३) पुलिन्दिका । आड़ी चौताल ।

शुद्ध ओड़व । स र मा ध ना ।

प्रथम नाद मूलंते ऊचार ताल बन्धान सो गावे जो आवे सो सम परै । १ ।

सप्त सूर तीन ग्राम एकीस मूरछना बाईस सूरत उनन चास कूट तान तरै । २ ।

उरिप तिरिप लाग डाँट अँस न्यास ग्रह आतक खातक स्वगन्तक ओड़व खाड़व उचरै । ३ ।

कहै बैजू बावरे सुनिए गोपाल लाल शुद्ध ओड़व राग पुलिन्दिका नाम धरै । ४ ।

शित्तक—अन्नापुरुषोत्तम धारपूरे [वीणाकार]

+				०				०				०	
स	र	स	मा	मा	मा	मा	मा	मा	र	र	सर	नार	सर
प्र	थ	म	ना	०	द	मू	ल	ते	ऊ	चा	००	००	००
ध	ध	ध	ध	ना	धमा	ध	मार	ध	ना		ना		
ता	०	ल	ब	ध	न०	सो	००	गा	०	स	वे	जो	०
ध	ना		ना		ना		ना	ध	धमा	ध	मा	र	स
आ	०	वे	०	सो	०	स	म	०	प०	०	०	०	०

२

धध धना													
स प त०	०	सू	०	र	नी	०	न	०	०	ध	ना	स	म
मा र	स	सना	स	ना	ध	मा धमा	र	र	स	नार	स	र	त
ए क	ई	स०	मू	र	क	ना००	बा	ई	स	सु०	र	र	त
ध	नार												
उ न०	चा	स	स	स	म	ध	नास	स	ना	ध	मा	र	स
		०	०	कू	ट	ता	००	न	त	रे	०	०	०

३

ध ध ध				ध ध ध				र र र				नार	सर
ऊ रि प	ति	रि	प	ला ० ग	डा ० ट	अँ ० श	न्या ० स	प्र० ० ह					
ध ध ध													
आ त क	ना	ना	ना	स स स स	र र र	स स स	ना ना ध	मा र स					
	खा	त	क	स रा न्त क	ओ ड व	खा ड ब	ऊ च रे	० ० ०					

ध ना र क ह ये	स स स वे ई जू	स स स बा व र	ध ना ना सु नि ०	स स स ए ० गो	ना ना ना पा ० ल	ध ध मा ला ० ल
र र र शु ० द्र	सनां र सस आ ० ० इ व	र र र रा ० ग	धध नार स पुलि न्दिका ०	धना सना ना ० म ०	ध ध मा ध ० रे	र र स ० ० ०

(४) पुलिन्दिका । धमार ।

फागुन गढ़ जोवनाई सखियान गोपि ग्वालिन सब जोड़ मिलि आई । १ ।

अबीर गुलाल की बुरुज बनाई तोप धरी जब बम्ब धूराई । २ ।

गेंदा कुमकुम गोला चलत है रँग बूँद कि भोरी लगाई । ३ ।

कहैं बैजू बावर सुनो हो गोपाल लाल घेरि लियो अब जदूराई । ४ ।

+	०	।	०	।	०	।	०	।	०
ना ना ना फा ० ०	ध माध गु ० न	ना ध ग द	मा मा मा यो ० ०	र र ब ना	स स ० ई				
स स स स खि ०	नां र शा ०	स र ० अ	ध ना र गा ० पी	भ स ग वा	स स लि न				
स स सना स व ० ०	स स जा इ	ना ना ० ०	ध ना स ना मि लि ० ०	ध मा आ ०	र स; ० ई				

ध ध ना अ बी ०	र स ० र	स स ० ०	स स स गु ला ०	स स ल ०	स स कि ०
ध ना स बु रु ज	ना ना ० ०	ना ना ० ०	ध ध ध ब ना ई	मा मा तो ०	र स प ०
स स स ज ब ०	नार स ० ० ०	र र ध रि	धना स ना ब ० ० व	ध म धू रा	र स; ० ई

३

स रं	स दा	स ०	नां कु	नां म	र ०	सर कुम	मा गो	मा ला	मा ०	रर चल	र न	स है	स ०	
मा रं	मा ग	मा ०	र बू	र ०	स द	स ०	ध मो	ना ०	स रि	ना ०	ध ल	मा गा	र ०	स; ई

४

ध	ना	र	स	स	स	ना	स	स	ध	ना	स	ना	ना	ना	ध	मा
क	है	०	०	वै	ज	बा	व	०	सु	ना	हो	गो	पा	ल	ला	ल
मा	मा	मा	र	र	स	स	ध	ना	स	ना	ध	मा	र	स	र	स
वे	०	रि	लि	यो	०	०	अ	व	०	०	ज	वू	रा	ई		

शिक्षक—अन्नापुरुषोत्तम धारपुरे ॥

(५) पुलिन्दिका । आड़ी चौताल ।

+				०				०				०				
नां	र	स	आ	मा	आ	आ	र	ए	र	स	र	नां	ध			
मा	र	ए	नं	र	स	ध	ना	स	स	ना	ध	मा	र			
मा	ध	ना	ई	ना	स	मा	ध	माध	ना	धमा	र	स	आ;			
मा	ध	र	स	ना	स	आ	स	मा	ध	मा	र	मा	मा	र		
र	र	स	ना	ध	मा	आ	ना	मा	आ	ना	ध	मा	र			
नं	रन	र	स	ना	मा	ना	ध	ना	मा	आ	ध	मा	र	स	आ;	
मा	मा	स	ना	ना	स	मा	ध	ना	स	मा	ध	ना	स	र	र	स
ना	ना	ध	मा	ध	ना	ध	मा	र	नां	स	र	र	ना	ध	मा	र
नां	र	स	मा	मा	र	मा	ध	ना	स	मा	मा	र	स	ना	ध	मा

शिक्षक—अन्नापुरुषोत्तम धारपुरे ।

(६) हिण्डोल या मालकोष तेताला ।

[शिक्तक—तसद्दुकहुसेन ।]

+							
ध ध	म अ	ग अ	म स	ग ग	म ध	न ध	म ग
म आ	ग आ	म ध	अ अ	म ग	अ म	स आ	ग म
ग म	ध अ	म ध	अ स	आ न	स आ	न ध	अ म
ध म	ग अ	म ध	न ग	म ध	म ग	स	आ ;
म ध	न ध	ग म	स आ	न स	ग अ	म ग	स आ
न ध	म ग	ध म	ग म	न ग	म ध	न ध	न ध
म म	ध म	ग म	स आ	म ध	ग	स ध	आ
धं धं	नं	म ध	म ग	न ध	म ग	स आ	;

इस राग में ग, म, ध, व न, कोमल करनेसे मालकोष हो जायगा ॥

(७) मालश्री व पलश्री । तेताला ।

[शिक्तक—तसद्दुकहुसेन ।]

स न	प अ	म ग	म अ	प प	ग न	स आ	आ आ
ग म	प प	न न	ग ग	म प	म प	न म	प ग
म प	न ग	म प	ग म	प न	प म	ग ग	म ग
स आ	आ आ	नं स	ग म	प प	न म	ग अ	स आ;
प अ	स	म प	न स	ग	ग	स	ग म प
ग अ	स	न स	न स	न	प	अ	म प न स
न प	म ग	म न	म ग	न प	म प	न म	ग प
स ग प	ग म प	न प	न म	ग अ	स आ;		

इस राग में ग, म, व न, कोमल करने से पलश्री हो जायगा ।

(८) बड़हंस ।

षाडव औडव । स र ग मा प ध—न प मा र स । सूल ताल ।

प्रथम राग बोल गमक अच्छर क्रिया मात्रा लघु गुरु सीखे तब गुणी कहावे ॥ १ ॥

सप्त सुर तीन ग्राम एकीस मूरछना बाईस श्रुति के ब्येरं न्यारं कर दिखावे ॥ २ ॥

धैवन रिगव मध्यम पंचम खरज निखाद गंधार रोहे अवरोहे सुर बरज के गावे ॥ ३ ॥

वादी विवादी संवादी अनुवादी संपूरण ओडव खाडव करे नाद को जोगी होवे बड़हंस
बडकू सुनावे ॥ ४ ॥

+		०						०	
स	र	स	ध	प	प	ध	मा	प	प
प्र	थ	म	रा	०	ग	बो	०	०	ल
ग	मा	प	प	न	प	न	प	मा	र
ग	म	क	०	अ	०	ब	र	क्रि	या
ग	ग	मा	मा	र	ग	र	स	मा र	स
मा	०	त्रा	०	ल	धु	गु	रु	सी ०	खे
र	ग	ग	मा	प	प	मा	मा	र	स
त	ध	०	गु	नी	०	क	हा	०	वे ;

२

मा	प								
स	स	स	स	र	ग	ग	मा	र	स
		सु	र	ती	०	न	प्रा	०	म
ब									
प	र	स	न	प	ग	मा	प	ब	माप
	०	क	इ	श	मू	र	ध	०	० ०
मा	मा								
बा	ई	र	स	स	स	नं	नं	पं	पं
		स	श्रु	ति	के	बे	यो	रे	०
स	र								
न्या	रे	ग	मा	प	प	मा	मा	र	स
		०	०	क	र	दि	खा	०	बे ;

३

ब बे	ध व	प त	र रि	ग ख	ग ब	मा म	मा ०	मा ध	मा म
प पं	प ०	न च	प म	स ख	स र	स ज	न नी	न खा	प द
ग गं	मा ०	प धा	प र	ध रो	ध हे	प अ	प व	मा रो	र हे
स सु	स र	ग ब	मा र	प ज	प कं	मा गा	मा ०	र ०	स वे;

४

ब ब बा ०	प दी	स स वि वा	स दी	मा प स वा	स दी	न न अ नु	प प वा दी	स स	स म
मा पू	मा मा र न	र र ओ ०	स ड व	ध ध खा ०	प डो	ध ध ० ०	प ०	मा र क रं	स ०
र र ना ०	स ०	ग मा ० ०	प इ	स को	न प ० ०	मा जो	र गी	स हो	स वे
स ब	र ड	ग मा हं ०	प स	मा ब	मा मा ड कू	र सु	र ना	स ०	स बं

(६) मुद्राकी । भाँपताल ।

मिश्र-सम्पूर्ण—सरगागमामपधाधनान ।

सुभ घड़ी सुभ लगन बिचार बैठे महम्मदशाह कनक छत्र धरिए । १ ।

रच पच मण्डल बनायो जौहर कंठा दर्पन रँग मृग तरिए । २ ।

बाजन बाजनि छत्र दण्ड सोभा करे सेवक स्तुति करै अरु चमर व्यजिए । ३ ।

तानसेन के प्रभु देत असीस दरस परस इन्द्रासन पाइए । ४ ।

+					०				
मा गा सु ०	मा गा भ ०	र ध	र ०	स डी	स सु	स भ	स ल	स ग	नं न
स बि	ग चा	ग ०	ग ०	ग र	म बं	ध ०	स ३	स ०	स ०

। स म	। स हम	। स म	। स ०	। स द	नाधा शा ०	नाधा ० ०	प ह	प ०	ष ०
मा क	मा मा न क	प छ	प त्र	प ०	मा ध	पधा री ०	माप मा ० ० ए		गा ०

२

मा र	प च	धा प	धा ०	न च	। स मं	। स ०	। स ड	। स ल	। स ०
। स ब	। स ना	ना ०	। स यो	। स ०	न ज	। स व	। ग ह	। ग र	। ग ०
। स क	। स डा	नाधा द र	ना प	धा न	प ०	प ०	मा ०	गा ०	गा ०
म रं	ग ग	प मृ	प ग	मा ०	मा त	पधा रि ०	माप ० ०	मा ए	गा ०

३

गा वा	गा ०	मा ज	मा त	मा ०	प वा	प ०	प ज	प नी	प ०
मा छ	प त्र	। स दं	। स ड	। स ०	न सो	ध भा	म क	म र	ग ०
नां से	स ०	र व	र क	र ०	गा स्तु	गा ति	मा क	प र	प ०
म अ	ध रु	न च	धू व	म ग र ०	मा व्य	पधा जि ०	मा ०	प ०	मागा ए ०

४

मा	प	धा	ना	स	स	स	स	स	स
ता	न	से	०	न	के	०	प्र	धु	०
ना	स	र	र	र	गा	गा	र	र	स
दे	०	त	०	०	था	०	सी	०	स
न न न		ध ध ध		मा	म	धना	धा	प	
द र स		प र स		र	स	रं ०	ग	०	
स	न	ध	म	ग	माप	धा	माप	मा	गा
ए	न्द्रा	स	न	०	पा है	०	० ०	ए	०

इस राग में हिण्डोल का संगत है ।

(१०) कौशिकी । चौताल ।

मेह की सुर षरज रिषव सुर छागरी दादुर सुरहैरी गंधार ।१।

मध्यम तमचर सुरपंचम कोकिल सुर केकी सुर धैवत निषाद कुजार ।२।

आरोह हँस सो अवरोह वृषभ सो मुरछना सर्प सो गीत सँगीत की धार ।३।

कहँ बैजू बावर सुनिए गोपाल लाल कंते गुनि पिछुड़े काहँ न पायो नाद की पार ।४।

+		०				०				
मागा	रस	सस सस	संसं	संसं	रंरं	रंरं	रंसं	रंरं	रंरं	संसं
मे ह	की०	सु ० र ०	प ०	र ज	रिप.	व ०	सु ०	र ०	झा ०	गरी
गांगां	गांगां	रंरं संसं	संरंगांमापं	धानां	नानानानां	सस	सस	गांस रस	गांस रस	
दा ०	दु र	की ० ० ०	सु ० ० ०	र ०	है ० रि ०	० ०	० ०	गं ० ०	धार	

२

मामा	मामा	गागारस	सस	सस	पमा पप	नाधा	प प	पप पप	
म ध्य	म ०	त म च र	सु ०	र ०	पं ० चम	को ०	किल	सु ० र ०	
धाधा	धाधा	नाधामामा	धाना	धामा	नानानाना	धाधा	पमा	गारसरस	
के ०	की ०	सु ० र ०	धै ०	व त	निषा ० द	सु ०	र ०	कु ० ०	जार

३;४

मीड़ सर गामा पधामा आ० ० ० ० रो हि		नानानाना ह ससो ०	मीड़ नाधा पमा गारस अ व ०० रो ही०		रस सस वृष भसो	समापं गाधारस मू ० ० ० र छना		नांसरसस स र पसो ०
गामा गी ०	गामा त ०	नानानाना सं० गी त	गारस की ००	रस धार;	सनाससस कहें बैजू ०	सस वा०	सस व र	गागा रसर सु नि ण ० ग
सस पाल	सस टाल	नानाधाधा के ते गु नि	पप पिलु	मागा डे ०	गागानाना वाहन ०	गामा पायो	गामा ना द	गारस रस की ० ० पार

प्राचीन लोगों का कथन है कि गोपाल नामक एक दक्षिण देशवासी संगीतसिद्ध पुरुष थे । उस समय पश्चिम प्रदेश में भी बैजू नामक एक सिद्ध पुरुष थे यह पागलों की भांति रहा करते, इस कारण लोग इन्हें बैजू बावरा कहा करते थे । सिकंदर शाह की अमलदारी में ये दोनों महाशय साङ्गीतिक विषय कं प्रश्नोत्तर-द्वारा कथोपकथन विचार और मीमांसा किया करते थे ।

यह ऊपर लिखा हुआ गाना बैजू बावरा का उत्तर है जिसका प्रश्न गोपाल अगले गान में करते हैं इस राग में मालकोष का मेल है ।

(११) शुद्ध संपूर्ण । कौशिकी ।

स र ग। मा प धा ना । चौताल वो तेताला ।

परज कहाँ से रिषभ कहाँ से कहाँ से उपजो सुर गंधार । १ ।

मध्यम कहाँ से पंचम कहाँ से कहाँ से धैवत निषाद नार । २ ।

आरोहि कहाँ से अवरोही कहाँ से मूर्छना कहाँ से गीत संगीत की धार । ३ ।

कहैं लाल गोपाल सुनिए बैजू बावर नाद अथाह जाकी गति अगम अपार । ४ ।

+	०		०		०	
सस सस पर ज०	गामा गामा क हां ० ०	गागा मागा ते ० ० ०	मामा धाना रि ० ष भ	नाधा नाधा क हां ० ०	पमा गा ते ० ०	
मामा धाधा कह हां ०	नाना सस ते ० ० ०	सस सस उ प ज वो	सना र स सु ० ० र	नाधा पमा गन्धा ० ०	गार सर ० ० ० ०	

२

मामा पप म० ध०	धाना स स म० ० ०	स स नास क हां ० से	र स र र पं० च म	गामा गामा क हां ० ०	स स स स से० ० ०
नना नाना क हां ० ०	धाना स स ० ० से ०	स स स स धै० व त	स न र स निपा ० द	नाधा पमा ना० ० ०	गार सरस ० ० ० ० र

३; ४

गामा गामास आ० रो हि०	स सस क हां से	नांथां धां नां स अ व० रो हि०	गामा गामास क हां ० ० से	रर गागा मुर छ न	माप नाधा क हां ते०
धां नां सर गी० ० त	गागा मागा से गी० ० ०	रस स रस तकी धार०	माप धानास क है ० ० ०	स स स स स लाल गोपाल	नास र र सु नि ए०
स स नाधामा वैजू बा व र	गामा गामास ना० ० ० द	स स स स अथा ० ह	गामा गामास जाकि ० ग ति	नानाना नाधाप अ ग म अ पा ०	मागार सरस ० ० ० ० ० र

(२) मिश्र सम्पूर्ण । सर्वरी ।

स रा र गा ग मा म प धा ध ना न । ताल सौर

सुर प्रथम सारि ग म ना द रे ताहे प्रगट वेद रे । १।

धारु ध्रुपद संगीत प्रबन्ध छंद गुनि गावत शेष रे । २।

चतुरंग त्रेवट तेलाना शब्द सुरन को भेद रे । ३।

कहै नायक गोपाल सरेगम अगम सुर देख रे । ४।

+		०							
गा	गा	र	स	स	स	र	ग	मा	
सु	र	प्र	थ	म	स	रि	ग	म	
ना	ध	प	प	प	ग	ग	मामा	मा	
ना	द	रे	०	०	ता	हे	प्र ग	ट	
ग	मा	प	धा	प	मा	ग	ग	ग	
वे	०	०	०	द	रे	०	०	०	

२

धा	प	माप धना	सस	सस	स	नधा	प
धा	रु	ध्रु ० ० ०	प द	सं गी	त	प्र ब	न्ध
प	स	गा	गा	गा	ग	मा	प
छ	न्द	गु	नी	०	गा	०	व
ग	मा	प	धा	प	मा	ग	ग
से	०	०	०	स	रे	०	०

३

ग	मा	स	ग	मा	धना	ना	मम	ध
च	तु	रं	०	ग	त्रे व	ट	तिला	ना
नं	र	गा	नां	नं	स	धा	पं	स
श	ब्द	सु	०	०	र	न	को	०
ग	मा	प	धा	प	भा	ग	ग	ग
भे	०	०	०	द	रे	०	०	०

४

मा	म	र	स	स	ग	मा	स	स
क	हैं	ना	य	क	गो	०	पा	ल
स	र	ग	मा	प	म	प	ग	मा
स	रि	ग	म	अ	ग	म	सु	र
ग	मा	प	धा	प	मा	ग	ग	ग
दे	०	०	०	ख	रे	०	०	०

(१३) कुमारी ।

शुद्ध षाड्ज । स रा ग म प न । ढिमा तेताला ।

षरज सुर साधे सोई गुनि जो सुध मुद्रा सुध वानी सुध राग अँग गावै । १ ।

द्रुत मध्य विलंबित करै देखावै आरोहन अवरोहन लाग डाँट सो बतावै । २ ।

करत कंठ प्रकाश उक्त युक्त अनुप्रास तब बढ़त घटत साँस गुरन ते भेद पावै । ३ ।

कहैं मियाँ सुरतसेन सुनिए सब गुनिजन ध्रुपद विद्या कठिन एक जनम नहिं आवै । ४ ।

+				०			
स स	स स	प प	प प	म म	म म	ग ग	ग ग
ष र	ज ०	सु ०	० र	सा ०	० ०	धे ०	० ०
म म	प प	न न	न न	ष प	प प	म म	म ग रा
सो ०	० ०	ई ०	० ०	गु ०	नि ०	जो ०	० ० ०
ग ग	ग ग	रा प	प प	म म	म ग रा	ग रा स	स स
सु ०	ध ०	सु ०	दा ०	सु ०	ध ० ०	वा ० ०	नि ०
प प	प प	म म	म म	प म ग	ग रा	ग रा	स स
सु ०	ध ०	रा ०	ग ०	अं ० ०	ग ०	गा ०	वे ० ;

२

प प	म प	न न	न न	स रा	रा स	स स	स स
दु र	त ०	म ०	ध ०	वि लं	० ०	वि त	० ०
रा रा	रा रा	ग ग	रा रा	स स	स स	स न	प प
क र	० ०	० ०	० ०	दे खा	० ०	० ०	वे ०
न न	स स	स स	स स	न न	न न	प प	प प
अ रो	० ०	ह ०	न ०	अ ०	व ०	रो ह	न ०
म प	प प	म प	प प	म प न प	म ग	रा स	स स
ला ०	ग ०	डाँ ०	ट ०	सो ० ० ०	व ता	० ०	वे ० ;

8

(१४) नट कल्याण । धिमा तेताल् ।

२

प ना	स ग	स ध	स द	स न	न ए०००क	स र	स द	स न	स सिं	स न्हु	स र	स सि	स र	ध धा०००	न ०००	स ०००	ध ०००	प री
मा सि	मा ख	प ख	प ख	स ख	स वर०	स क	स र	स त	स अ	स वर	ध गु	प ज	ग मा	प मा	मा ०००	प री	प ०	

३

मा मा डु डि	प प ना थ	प प भा ल	प प च न्द्र	सध नस सो० भित	स स भु ज	ध ध चा ०	प प री ०
ग र वि धि	ग र ह रि	ग मा ह र	प प रु प	ग ग प्र घ	मा र ट त	स र ळ वि	स स न्या री;

४

प प दे व	स स दे व	स स स आ न न	स स ध र	स स जी व	स स स ध र न	ध न स र धा ० ० ०	न स ध प ० ० ० री
मा मा दे व	मा प न के	स स न ध मि ल न०	स स स ऊ प र	स स तृ भु	ध प प प व न व लि	ग मा हा ०	प प री ०;

शिक्षक स्वर्गीय चिन्तामणि वापूली ।

(१५) देसी टोड़ी । ढिमा तेताला

मिश्र सम्पूर्ण-स रा र गा मा प धा ना न

श्री गङ्गा पातक हरनि तारिनी दायिनी मुक्त जनन की ।१।

नारदादि वानि बैकुण्ठ की निसानी इच्छा पूजावत है और हार मनन की ।२।

ग्रन्थन बरनि जात उत्तम जल तेरो तन परस जात ताप तनन की ।३।

चरन स्तुति तेरो कहाँ लों बखानों कर दाता असरन सरन की ।४।

+	।	०	।	१	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।
मा पा	मा ०	मा त	मा क	प ह	प र	प नी	प ०	ना ता	ना ०	ना री	ना नि	धा ०	प ०	मापमागामा ०००००
गा मु	गा ०	गा क	गा ०	रा ज	रा ०	रा न	स ०	र न	नांस की०;	नां श्री	स ०	पमा गंगा	गा ०	सर मा ०००

२

मा प ना र	धा नस दा दि०	स स बा नि	नासरसरगा बैकु न ००ट	र स की ०	ना धाप नी सानी	ना धाप इ च्छा०	नस स स पू० जा०
स स व त	ना धाप ह ००	ना नाना औ ० र	धा प हा र	गामारस म न नकि;	नां स श्री ०	पमा गा गंगा ०	सर मा ० ० ०

३

मा प्रं	मा ०	मा थ	मा न	प प प ब र न	प प प नि जा त	ना ना ना ऊ त्त म	धाप नास ० ० ० ०	ना ना ज ल	धा प ते रो
मा त	मा न	गागा रस प र सत	र मा जा त	प प ता प	नाना धाप त न न की;	मागारस नांस ० ० ० ० श्री०	पप मागा गंगा ० ०	सर मा ० ० ०	

४

मा च	प र	धा न स न ० ०	स स स्तु ति	ना सस ते रो ०	सरा सरागा क हां ० ० ०	रा स लो ०	ना ना ब खा	धा प ० नो
मा क	प र	धा ना स दा ता ०	स ना अ स	धा पमा र न ०	पमा गार सर न ०;	स नांस की श्री०	प मा गा गंगा ०	सर मा ० ० ०

इस राग में भीम पलासी का संगत है; दोनों "धैवत" का व्यवहार कोई कोई करते हैं।

(१६) रागमाला ।

शिक्षक स्वर्गीय गोपालचंद्र चक्रवर्ती [नूलो गोपाल] ।

सुन्दर अति नवीन प्रवीन महा चतुरता मृगनैनी मनहरनी चम्पक वरनी नार ॥१॥

कंसरी कटि कदली जंघा नाभी सरोज श्रीफल उरोज चन्द्रवदनी सुकनासिका भैंहिं धनुष कामदार ॥२॥

अंग अंग सुदृङ्ग पद्मिनि भँवर गूँजत सुवास आवनी क्रोध नहीं सतस्वरूप नद वीजत बागन कं भार ॥३॥

धन्य धन्य वाको भाग ऐसी तीय जाको जागे बैजू कं प्रभू रसवस कर लीन्हो मायाजाल डार ॥४॥

धीमा तेताला ।

धा धा । दिं ता	क त्तग् दिन ता	तिटि कत् कद ता	तिटि कत गदि घिन
कल्यान	कल्यान	कल्यान	कल्यान
न ध प मप मप मग सुं ० ० ० ० द ० र ०	ममगमप पपमप अ०ति०० नवी०न	पपमधप धमधन प्रवी०न० महा ० ०	धपमप मपमग चतु०० र०ता०
रगममप पमगर मृगन०य नी०००	गगरर नरसस मन०० ह ०र नी	सस रग मगमप धमध च ० पक व०० र नी ००	नधपम पगमप; ० ० ० ० ० ना०र

(२)

मालश्री		हिण्डोल	
म प प म प ग स के० स रि० क टि	स स न क द लि	स स न ध ध ना भी स रो ज	म ध न ध म ग श्री० फ लू रो ज
भूपाली		कल्यान	
ग र ग गग ग चं० द्र वद नी	र र स सधं शु क ना सिका	पम गम प पप भौ० हें० ध नुष	न धु गम प; का म ढा० र

(३)

भूपाली		कल्यान	
ग र ग ग र श्रं ग श्रं ग०	गग रग ग ग सुढं गप ञ नि	पपप धधधनध प भंवर ग्ज तसु वा स	म म ग ग श्रा० व नी
हिण्डोल		मालश्री	
स स स स न ध क्रो० ध० न हि	म ग ग गग स त स्व रूप	सस ग ग ग म प प न द वी ज त वा र न	न न ग मप; के० भा० र

(४)

भूपाली		मालश्री	
प ध ध स स ध न्य० ध न्य	स र स स वा को भा ग	ग ग स स न प अ य सी० ति य	मप मप ग ग जा० को० जा गे
हिण्डोल		कल्यान	
स सग ग ग ग वै इङ्ग के प्र भु	न न धध मग र स बस कर	गर ग मप पप ली० न्हो०० माया	नध पमद ग मप जा० ल०० ढा० र;

भाँपताल

+			०			+			०		
नध	प	मष मग	म	ग	मप प	प	मध	पधमधन	ध	प	प म ग
सु०	०	द० र०	अ	ति	नवी न	प्र	वी०	न म हा००	च	तु	र ता ०
र	ग	म प पम	ग	र	नं र स	स	रग	मगमपध	म	न	ग म प;
मृ	ग	नै ० नी०	म	न	ह र नी	चं	पक	व० र० नि	०	०	ना० र
म	प	मप ग स									
के	स	रि० क टि	स	स	न स स	ग	स	न ध ध	मध नन	ध म ग	ध म ग
			क	द	लि जं घा	ना	भि	स रो ज	श्री० फल	उ रो ज	उ रो ज
ग	र	ग ग ग	र	र	स स धं	पम	गम	प प प	न ध	ग म प	ग म प
चं	द	व द नी	शु	क	ना सि का	भौ०	हें०	ध ध ध	का म	डा० र;	डा० र;
ग	र	ग ग र	ग	र	ग ग ग	प	पप	ध ध ध	नध प	म ग ग	म ग ग
अं	ग	अं ग सु	ढं	ग	प ग नी	भं	वर	गुं ज त	सुवा स	आ व रि	आ व रि
स	स	स स स	न	ध	म ग ग	स	स	ग ग ग	म पध	न ग म प	न ग म प
क्रो	ध	न हि ०	स	त	स्वरूप	न	द	वि ज त	बा रन	के भा ० र	के भा ० र
प	धप										
ध	न्य०	स स स	स	र	स स स	ग	ग	स न प	म प	मप ग ग	मप ग ग
		ध ० न्य	वा	को	भा ० ग	पे	सी	ति ० य	जा को	जा० गे ०	जा० गे ०
स स ग	ग ग ग	ग ग ग	नन धध	म ग ग	गर ग	म प प	नध प	ग म प	ग म प	डा० र;	डा० र;
बै ० जू	के प्र भु	र स व स	क ० र	ली० नो	माया ०	जा० ल	डा० र;				

सलताल

—	ग ता प र;	ग ज ग र;	ग ति प र;	प ने प र;
०	म र गम ता०	भे रो गम डा०	ग व गम भा०	ग जा गम डा०
—	प तु न ०	ध ड ध म म ०	न ०	प के प ल
—	ध व म ०	न ल न का म अ	न के म जा न ध जा०	
—	धन ०० ध नी	ध फ प प धप वास	पप रन प य प या	
—	धम महा प र	म श्री पप धनु न सु	म बा न ती प मा	
—	ध न म व	ध ज प ० ध त	प त — स ० म ०	
०	ध ० ग क	न ध सरो प ० ध ध ग ज	म ज — स सी ग नो	
—	ध की र प	— स भि गम हे० पप वर	ग वि — ग ० र ०	
+	प म स चं	— ग ता पम भौ० प भं	स स न द — ग ऐ ग ली	
—	प न स नी	— स धा धं का ग नी	ग ० — स ग ग र	
०	प की स र	— स जं स स नासि ग म	ग प — स भा म क	
—	म न र ०	न ली र क ग द	ग रु — र ० न ध ध व स	
—	ग ० नं ह	— स कद र शु ग प	म स्व — र को न न र स	
—	ग ति र न	स टि ग ० गर हंग ध त	— स ० ग भू	
—	म अ ग म	ग क ग नी ग सु	न स — स वा ग प्र	
—	म र पम नी०	प ० ग द गर ग०	— स हि — स ल्य ग ०	
०	मप दं मप नै०	म रि ग व ग अ	— स न — स ध ग के	
—	प ० ग ग	प स र द र ग	— स ध धप ल्य० स स ग स	
+	न ध र शु	म के ग चं ग अ	— स को प व स स ग स	

सम्पूर्ण (कल्याण) मेल से ओढ़व (भूपाली, मालश्री, हिण्डोल) मेल निकले हैं।

इन चारों रागों को उत्तम रूप से शिक्ता कर लेने से शिस्तार्थी लोग इस रागमाला को चारों रागों से भिन्न भिन्न गा सकते हैं। निम्नलिखित स्वरलिपि के अनुसार गाना प्रथम कर्तव्य है। फिर भिन्न भिन्न तालों में गा सकते हैं।

१

+	कल्याण	।	तेताला	०	कल्याण	।	तेताला
नध पमप	मप मग	मम गमप	पपमप	पपमधप	धमधन	धपमप	मपमग
सुं० ०००	द० र०	थ० ति००	नवी०न	प्रवी०न०	महा००	च तु००	रता००
रग मम	पम गर	गगरर	नंरसस	ससरग	मगमपधमध	नधपम	पगमप;
मृग नय	नी० ००	मन ००	ह० रनी	चमप क व० ०र नि००		००००	०ना०र

२

मालश्री	कांपताल	हिण्डोल	कांपताल
मप	स स	ग स	मधन
केस	क द	ना भि	श्री फ
मपगस	न स स	न ध ध	ध म ग
रि०कटि	ली जं घा	स रो ज	लू रो ज
भूपाली	कांपताल	कल्याण	कांपताल
ग गर	र र	प म गम	न ध
चं द०	शु क	भौं० हें०	का म
ग ग ग	स स थं	प प प	ग म प
व द नी	ना सि का	ध नु प	डा० र;

३

भूपाली	सूलताल	कल्याण	सूलताल
ग र	ग ग र	पपप	म म
अं ग	सु ढं ग	धुधध	आ०
गग र	गग गग	निधप	ग ग
अंग०	पद मनी	भवर गूजत सुवास	व नि
हिण्डोल	सूलताल	मालश्री	सूलताल
स स	म ग	सस	न न
स स	ग ग	गगग	ग म प
न ध	स्वरु	मपप	के०
क्रोध	० प	न द	भा० र;
न हिं		विजत वारन	
स त			

४

भूपाली	धमार	मालश्री	धमार
पधप	सर र	ग ग ग	म प प
धन्य०	वाकी०	अ य सी	जा० को
सस सस	स स स स	स स न प	म प ग ग
ध० न्य०	भा० ग०	०० ति य	०० जा गे
हिण्डोल	धमार	कल्याण	धमार
स स ग	न न न	ग र ग	न ध प
बै० जू	र स०	म प प प	मप गमप
के० प्र भु	व स क र	ली० ना०	जा० ल०
		०० माया	०० डा०र;

१७) रागमाला । भैरवी चौताल व धीमा तेताल ।

[शिक्षक स्वर्गीय चिन्तामणि बापूली ॥

शंकर हर हर वरदाता महेश्वर भोला दिगम्बर । गिरिजापति गङ्गा धरन कैलाश सुख करुणा-
नेधान । १ । पंचवदन पंचराग सर्वप्रथम उक्ति किनि आंड़व षाड़व संपूर्ण ताल तान सुर प्रमाण । २ ।
अथम राग भैरव भाल रूप दरसायो द्वितिय मालकोष सुर नर मुनि मोहे राग हिण्डोल बढ़ायो मेघ उमड़ि
मुमड़ि आनन्दि वरषा आयो श्री राग विनायको विदु सो किनि आयो आज आयो अचल भक्ति सुख समृद्धि
तज लाज सुख सुदृष्टि दीजै हो वरदान । ३ ।

+	।				०				।						
मा	मा	गा	गा	रा	रा	स	स	धां	नां	स	स	गा	गा	रा	स
शं	०	क	र	ह	र	ह	र	व	र	दा	ता	म	हे	ख	र
धा	प	गामा	प	मा	गा	रा	स	धा	धा	ना	स	स	स	गा	स
भो	ला	०	०	दि	गं	व	र	गि	रि	जा	०	प	ति	गं	गा
ना	ना	धा	प	मा	प	मा	धा	प	प	गा	मा	गा	रा	स	स
ध	र	०	न	कं	ल	०	श	सु	ख	क	रु	णा	नि	दा	न;

अन्तरा

प मा धा ना	स स गा रा	स ना स स	गा गा मा गा
प ° च व	द न पं °	च रा ° ग	म व्वं प्र °
रा स स स	सनासनारा सनाधाप	गा गा गा रा	स स ना नाधा
थ म ऊ °	क्ति° ° ° ° ° नि	ओ ड व पा	ड व स म °
ना धा प प	मा प प मा	धा प गा मा	गा रा स स
° पू र न	ता ° ल ता	° न सु र	प्र मा ° ण;

द्वितीय अन्तरा

ग ग मा ग मा प मा	ग ग रा स	स रा ग मा	मा ग प मा ग रा स
प्र थ म रा ° ° ग	भै ° र व	भा ल रु प	द र ° सा ° यो °
मा मा गा मा	गा मा स स स	धां नां स गा मा	मा मा गा मा स
द्वि ति ° य	मा ° ल को प	सु र न र °	सु नि मो ° हे
स स स न ध म ग	म ग स स	ना स ध ध प	ध ध प मा र र
रा ग हिं डो ° ° ल	ब क आ यो	मे घ उ म डि	घु म डि आ न नि

मा मा र स स व र पा आ यो	रा रा रा स स स श्री ० ० रा ० ग	स स रा ग म प धा प वि ना ० ० ० ० य कि	म प धा प म ग रा स वि दु सो ० ० ० ० ० ;
गा गा गा गा कि नि आ यो	रा रा स स आ ज आ यो	ना ना ना धा धा अ च ल भ क्ति	प प प प प सु ख स सृ द्वि
मा प मा ना धा प रा ज ला ० ० ज	धा धा प प प सु ख सु द टि	गा मा प मा गा दी जै हो ० ०	रा रा स स व र दा न;

भिन्न भिन्न रागों व तालों की स्वरलिपि नीचे दिखाई जाती हैं ।

भैरवी रागमाला के प्रथम दो पद (स्थायी अन्तरा) भैरवी राग में गाना चाहिए । तृतीय पद अथवा द्वितीय अन्तरा “प्रथम राग भैरव भालरूप दर्शायो” भैरव राग व तेताले के ताल में गाना चाहिए । “द्वितीय मालकोष सुर नर मुनि मोहे” इस अंश का मालकोष राग वो सूल ताल में गाना चाहिए । “राग हिण्डोल बढ आयो” यह अंश हिण्डोल राग वो तेवरे के ताल में गाया जाय । “मेघ उमड़ि घुमड़ि अनन्दि वरषा आयो” यह अंश मेघ राग वो भाँपताल के ताल में गाया जाय । “श्री राग विनायकि विदुसि” इस अंश का श्री राग वो धमार के ताल में गाया जाय । “किनि” से लेकर “वरदान” तक भैरवी राग वो तेताले अथवा चौताले के ताल में गाया जाय ।

मालकोष—सूल ताल ।

मा मा गा मा	गा मा	स	स	स	धांनां सगामा	मामा गामास
द्वि ति ० य	मा ०	ल	को	श	सु र न र ०	मु नि मो ० हं

हिण्डोल तेवरा

स स स	न	ध	म	ग	म ग ग	स	स	स	स
रा ग हि	डे	०	०	ल	ब द ०	आ	०	यो	०

मेघ—भाँपताल

नां	स	ध ध प ध ध प	मा	र र	मामा र सस
मे	घ	उ म डि धु म डि	आ	नान्द	व र पा आयो

श्री—धमार

रा स स	स	रा	गमप धा प	म प धा	प म ग	रा	स
श्री रा ग	वि	ना	य ० ० ० कि	वि दु सो	० ० ०	०	०

द्वितीय अन्तरा में

प्रथम राग भैरव भाल रूप दरसायो	... धीमा तेताला	... १६ मात्रा
द्वितीय मालकोप सुर नर मुनि मोहे	... सूल ताल	... १० मात्रा
राग हिण्डोल बढ़ायो	... तेवरा	... १४ मात्रा
मेघ उमड़ि घुमड़ि आनन्दि बरषा आयो	... भाँपताल	... १० मात्रा
श्री राग विनायकि विदुसो	... धमार	... १४ मात्रा
शेष की दो आवृत्ति	... धीमा तेताला	... ३२ मात्रा

८६ मात्रा (२४ ताल)

संपूर्ण रागमाला धीमा तेताला अथवा चौताला में गाया जा सकता है। दूसरा अन्तरा भिन्न भिन्न ताल में भी गाया जा सकता है। इस रागमाला का सुर बहुत अच्छी तरह से याद हो जाने पर भिन्न भिन्न ताल का प्रयोग अथवा प्रवेश तेताला वा चौताले में शिष्यार्थी लोग कर सकते हैं।

यही गुरु का उपदेश है।

(१८) रागमाला चौताल और त्रिताल

शिक्षक तसद्दुकहुसेन

+	।	०	।	।	।	०	।	।	।	।	।
सग	माप	धन	पम	पमा	गर	माग	पर	ग म	प र	गनं	रग
रस	नांस	रगा	गाधां	धांनां	मांपं	धांधां	नांर	सनां	सगा	माप	मानां
समा	गार	सप	मगा	मप	धाप	नरा	सस	धाप	मप	गरा	गमा
पमा	रामा	धाधा	नाप	माप	गामा	नाधा	मागा	नास	पमा	पमा	ग०;

२

मम	गमा	धन	रास	नस	गम	गस	नस	धप	धग	माप	धना
धप	माप	मागा	रगा	नध	मग	रामा	धाना	मागा	मग	रानं	राग
माम	धाम	माग	सध	पध	गप	नाध	पर	गमा	पनं	नंस	रप
मप	धध	सर	रर	माप	नस	रस	नाध	पमा	पध	पमा	र०;

पम	पग	माध	धस	नस	र प	मा र	समा	माम	पन	धप	माम
पध	पग	रस	रधं	नंस	गमा	धन	गमा	गरा	सनं	सर	गाप
गार	सग	गम	पन	पम	गम	धप	सन	धम	नध	नमा	पध
पमा	रनं	सर	रर	माप	नस	रस	नाध	माप	धप	माग	र०;

पहले दस रागः—

सरपरदा—सगमाप ध नप; गौडसारंग—मपमाग रमागपर; कल्याण—गमपरग नरगरस;
 दरबारी कानडा—नासरगा गाधाधा नामा पधा धाना रस; भीमपलासी—नासगामा
 पमा नास मागार स; मुलतानी—पम गा मप धाप; श्री—नरा सधाप मप गरा;
 भैरव—गमाप मा रा; बहार—माधाधा नाप माप गामा; मालकौंस—नाधा माग
 नास; विहाग—पमा पमाग :—

दूसरा ग्यारह राग :—

वसंत—ममगमा धनरास; हिंडोल—नसागमगस; अल्हैया—नस धप धगमाप; बागेश्री—
 धना धप माप मागार गा; पंचम—नध मग रामा धाना मागा मगरा; ललित—नरा
 गमा म धाम माग; विभास—सधप धगप; छायानट—नाधप र गमाप; कामोद—नन
 सर पमप धपसर; सोरठ—र रमापन सरस नाधप मा पधप मार; ।

तीसरा ग्यारह रागः—

हंमीर—पमप गमा ध धस; वृंदावनी सारंग—न स र प मा र स;
 केदारा—मामा मप न ध प मा मप; भुपाली—धपगर स र ध;
 सोहनी—न सगमाधन गमाग रा स; हंसध्वनि—ना स र गा प गा र स;
 मालश्री—गग मप न प म ग; शंकरा—मधपस न ध म न ध न;
 सावेरी—माप धप मा र न सर; देश—र र मापन सरस नाध पमाप धप मागर० ।

[शिक्षक अन्नापुरषोत्तम धारपूर (वीणाकार) पुना]

नाद समुंदर को पार कोऊ न पायो अनरथ गुनि कहायो । १ ।

आदि ब्रह्मा वेद उचरायो ताको देवन देव प्रथम गायो । २ ।

अनेक सृष्टि रचने विरचने सिद्ध न हारे साँरग बैरायो । ३ ।

सरस्वति इव न ते डरीं तब हिए देऊ तूम्बा धरि डारयो । ४ ।

भरत मतंग कल्लिनाथ हनुमत सप्त अध्याय लखायो । ५ ।

गीत छन्द धारु ध्रुपद मार्ग देसी दोऊ विध बनायो । ६ ।

सप्त दौंडी गुप्त प्रगट लिए नायक गोपाल नाम धरायो । ७ ।

बैजू के साथ सप्त सुर बाजे बूडे ताल पाषाण पिथलार्यो । ८ ।

धवल श्रीटक सावेरी तिलक मोर गंधहीन षडव गुनकी पुलिन्दी नागधानी ।

हंसध्वनि गनिगप रिनि मध हीन ओडव षट राग श्रीपति बनायो । ६।

धवल श्री—स रा ग प धा न

[illegible]

गुनर्केली—स रा मा प धा

[illegible]

टंक—स गा मा प ध ना

नां स गा मा प ध ना गा मा प ध ना मा प ध ना मा गा स
अ ० ने क र च ने ० खिर ना स च ने सि ० ड ० न ० हारे मारं ग बारा यो

पुलिन्दिका—सर मा ध ना

सर मा मा र मा ध ना ना ना ध मा मा मा स ना स मा र स
मर स्वति डू ० व न ते ० त ब हि ये दो ऊ ० ० तू म्बा ० ० ध मारी ० डारे यो

सावेरी—सर मा प ध न

प मा र र मा स ना ध र मा स मा प ध न स स स स
भर त ० म ते ० ग क लि ह डु ० ० ० म त ० ० र मा प ध न स स लखा यो

नागध्वनि—स गा मा प धा

गा मा गा मा स गा मा प धा धा धा प प धा धा प धा स
मी ० त ० छं ० द ० धा ० र ० धुर प द मा ० र ग दे ० सी ० नो वि ध व ना यो

तिलक—सर ग मा प न

न न स स न मा ग मा प प ग मा र स सर ग ग मा प न स न प
स स ० ० गु स ० ० प्र कट लि ए ना ० थ क गो ० पाल ना ० म ध रा यो

हंसध्वनि—सर गा प ना

नां स र स गा गा प प गा गा प प गा ना प गा प ना गा र स
बैजू ० ० के ० सा थ स स ० ० सुर बा ज बू डे ० ० ता ० ० ल पा पान पि घ ला यो

रा ग प धान ध पर मा प ध ना र ग न प मा मार ग ध स र मा प धा ना ध मा र
धवल सरी टं ० ० क ० सा ० ० ० वेरी तिल क ० ० मोर ग ध ही न पा डू व ० ० गु न क्री ० पुलिन्दि ०

गा मा प धा स ना प गा र ना प गा र रि नि म ध स स स स र स न ध प ध मा र ग स
ना ग ध्वनी ० हं स ध्वनी ग न ग प र न म ध ही न ओ डू व प ट रा ग श्री प लि र ब ना यो

अकबर बादशाह के दरबार में श्रीपति नाम एक गवैया थे, उन्हीं का बनाया हुआ यह गाना है।

(२०) सिंदूरा । भाँपताल ।

मिश्र सम्पूर्ण । स र गा मा प ध ना न ।

क्रान्ता विरह बावरी सी डोले चंचल चकित कैसे दिन न कटत री ॥१॥

और चक उचक ताक भुक लागि हेर पिया कं पंथन एक निस न घटत री ॥२॥

झँसुअन जल भरे मीन घर भर लाए पिया बिसरत होत हिया में हटत री ॥३॥

बानी विलास पिया सुरत मुरत बनि पिया पिया जपत पिया पिया रटत री ॥४॥

+				०				+				०			
गा गा		र स र		नां स		र मा गा		मा प		स ना ध प		मा प		मा गा र	
श्रं ०		ग ० ना		वि र		ह ० ०		वा व		री ० ० मी		डो ०		ले ० ०	
र र		मा प प		न स		स स न र		स ना		ध प ध ना		ध प		मा गा र	
चं ०		च ल च		कि न		कं ० ० मे		दि न		ना ० ० ०		क ट		त ० री;	

२

मा प		न न स		स स		न स स		स स		स न र		स ना		ध प प	
औ र		च क उ		च क		ता ० क		कु क		ला ० गी		हं ०		र ० ०	
र र		र गा गा		र स स		स न स		ना ना		ध प ध ना		ध प		मा गा र	
पि या		के ० ०		पं ० थ		न ए क		नि म		न ० ० ०		घ ट		त ० री;	

३

मा मा		प प प		प प		प प प		मा ना		ध प प		मा प		मा गा र	
श्रं सु		अ ० न		ज ल		भ ० रे		मी ०		न घ र		ऊ र		ला ० ए	
ध प		मा प प		मा गा		र स स		मा गार		मा प प		ध प		मा गा र	
पि या		वि म ०		र त		हो ० त		हि या ०		मे ० ०		ह ट		त ० री;	

४

मा प		न स स		स स		स स स		र र		गा र स		ना ना		ध प प	
वा ०		नि ० वि		ला स		पि या ०		सु र		त ० सु		र त		ब नि ०	
गा गा		गा गा गा		र र		स स स		ना ना		ध प ध ना		ध प		मा गा र	
पि या		पि या ०		ज प		त ० ०		पि या		पि ० ० या		र ट		त ० री;	

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	संलग्न	अशुद्ध	शुद्ध
५	१३	मां	मा
७	८	मा म	मा मा
८	१७	रा र	रा रा
१२	२६	धा ध	धा धा
१३	३	स न	स न
१७	२	म	मा
२५	२३	ग	गा
२६	४	गा ग	गा गा
३८	५	म ग म ग	म ग म ग
४४	३	निदान	निधान
४८	१२	ध धं नं	धं धं नं
४८	१८	न र	न र
४९	२१	मं	नं
५०	१७	छुवि	दुबि
६०	१६	न	न
६१	४	चाद	याद
६९	१२	न र	न र
७८	२३	गा म	गा मा
७९	१७	माधा ना स	मा धा न स
७९	१७	स स	स स
८०	१	बिलसखनी	बिलासखानी
८०	५	बाजवे	वजावे
८०	७	गघत	गाघत
८८	१०	धा	ध
८९	२४	न ध	न प
९६	१६	न धा	न धा
१०३	१४	स न	स न
१०३	१६	न स	न स
११०	३	दीनो	दीनो

पृष्ठ	सतर	अशुद्ध	शुद्ध
१११	४	ना स र	नां स र
११६	१६	मा गा मा	मा गा मा
११७	२	धां	ध
११८	६	सा	मा
१२२	६	प म	प.मा
१२२	२४	माप न स	मा प न स
१२२	२३	ग ग मा प ना	ग ग मा प मा
१३०	४	मा प	म प
१३७	४	सं न	सं ना
१३६	१६	ना स ना स	ना स नां स
१५०	१५	ध म ग रा स .	स रा ग म
१५७	८	मा मा र	मा मा र
१५६	२५	न स रा न	न स रा न
१६१	२०	स ना	स ना
१८४	१३	मा मा मा र र स	मामामा ररस
१८८	७	नां धां प	नां धां पं
